प्रारम्भिक स्तरीय पाठ्यक्रम

उत्तर प्रदेश

(कक्षा ६, ७, ८)

NIEPA DC
D11052

बेसिक शिक्षा परिषद्
उत्तर प्रदेश
2000

संस्करण-२०००

-5112
375
UTT-P

LIBRARY & DOCUMENTATION CENTRE
DOC, No D-11052
Date 23-04-2001

© उत्तर प्रदेश शासन

चित्रांकन एवं उत्पादन — पाठ्य पुस्तक विभाग
शिक्षा निदेशालय (बेसिक) उ० प्र०

राजनियुक्त प्रकाशक एवं मुद्रक: — **गोयल स्टेशनर्स**
जी-4, अन्सल सिटी कॉम्प्लेक्स, 2 चाईना बाजार रोड,
(तुलसी टाकिज के पीछे), लखनऊ,
दूरभाष : 282745

मुद्रण यूनिट : — बी-36/9, जी. टी. करनाल रोड, इण्डस्ट्रियल एरिया, दिल्ली-110034
दूरभाष: 7242798, 7437739

पुस्तक का ट्रिम साइज 21 सेमी. x 27 सेमी. तथा प्रिन्ट एरिया 18.5 सेमी x 25 सेमी., प्रयुक्त कागज का आकार 57 सेमी. x 87 सेमी. तथा आवरण पृष्ठ का आकार 59 सेमी. x 91 सेमी. तथा कागज का भार 90 ग्राम प्रति वर्ग मीटर वर्जिन पल्प मैपलिथो वाटर मार्क्ड एवं कवर के कागज का भार 210 ग्राम प्रति वर्ग मीटर आर्ट कार्ड लैमिनेटेड प्रयुक्त।

प्राक्कथन

ज्ञान, विज्ञान, प्रविधि और प्रत्याशा के क्षेत्र में निरन्तर, प्रगतिमान वर्तमान समाज में शिक्षा सतत् प्रवाहमान रहकर ही समाज की अपेक्षाओं के अनुरूप सक्षम नागरिकों का निर्माण करने में समर्थ हो सकती है। प्रदेश के प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम के युग की आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित करने के उपरान्त उस की अगली सीढ़ी के रूप में विद्यमान उच्च प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम की समीक्षा एवं तदनुसार आवश्यक संवर्द्धन करना अपरिहार्य हो गया था। इसी मध्य हाईस्कूल स्तर का पाठ्यक्रम भी संशोधित किया जा चुका था अत: उच्च प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम का सम्बन्ध एक ओर प्राथमिक स्तर के नवविकसित पाठ्यक्रम से तथा दूसरी ओर हाईस्कूल के पाठ्यक्रम के साथ स्थापित किया जाना युगीन आवश्यकता थी।

उच्च प्राथमिक स्तर का पूर्व प्रचलित पाठ्यक्रम वर्ष 1989 से प्रचलन में था। लगभग 10 वर्षों के अन्तराल में विकसित किया गया वर्तमान पाठ्यक्रम नवीन युग एवं समाज की आशाओं और अपेक्षाओं का प्रतिबिम्ब है। पाठ्यक्रम विकास के पूर्व प्रदेश के विभिन्न समाजिक सेवा विभागों के प्रमुखों के मन्तव्य प्राप्त किये गये एवं विशिष्ट वर्गों के प्रतिनिधियों से विचार विमर्श किया गया। पाठ्यक्रम विकास की प्रक्रिया में उच्च प्राथमिक स्तर हेतु विकसित न्यूनतम अधिगम स्तरों को ध्यान में रखा गया है। साथ ही 10 सामान्य केन्द्रिक घटकों को स्वाभाविक रूप से पाठ्यक्रम में समाहित किया गया है। शिक्षा के व्यवहार परक उद्देश्यों, कक्षा-कक्ष, अन्तर्क्रियाओं, मूल्यांकन प्रक्रिया तथा अध्यापक हेतु आवश्यक समर्थन को उपर्युक्त स्थान प्रदान किया गया है।

प्रस्तुत पाठ्यक्रम का विकास श्री शरदिन्दु, निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उ.प्र. के निर्देशन में विशेषज्ञों द्वारा किया गया है। इस हेतु मैं उन्हें अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। इस प्रयास में श्री नवीन चन्द्र कबड्वाल, प्राचार्य, राज्य शिक्षा संस्थान, उ. प्र., इलाहाबाद द्वारा अथक परिश्रम व मनोयोग से दिये गये सहयोग की भी मैं सराहना करता हूँ। मैं सुश्री वृन्दा सरूप, राज्य परियोजना निदेशक, उ. प्र. सभी के लिए शिक्षा परियोजना परिषद का भी हृदय से अभारी हूँ जिनकी विशेष अनुकम्पा से इस पाठ्यक्रम के प्रकाशन हेतु वित्तीय व्यवस्था सम्भव हो सकी है। मैं पाठ्य पुस्तक अधिकारी तथा उनके सहयोगियों की टीम को भी साधुवाद देता हूँ जिनके अथक प्रयास से इस पाठ्यक्रम का प्रकाशन सम्भव हो सका है।

मुझे विश्वास है कि यह पाठ्यक्रम शिक्षकों, शिक्षार्थियों, निरीक्षकों, शैक्षिक प्रशासकों और अभिभावकों के लिये उपयोगी होगा।

लखनऊ
दिनांक : दिसम्बर 4, 2000

महेश चन्द्र पंत
शिक्षा निदेशक (बेसिक शिक्षा)
एवं
अध्यक्ष, बेसिक शिक्षा परिषद्
उत्तर प्रदेश

❋ पाठ्य क्रम : कक्षा ६, ७ तथा ८ ❋

❖ अनुक्रमणिका ❖

क्रं सं.	पाठ्य विषय	पृष्ठ संख्या	क्रं सं.	पाठ्य विषय	पृष्ठ संख्या
1.	भाषा-हिन्दी	3	21.	भूगोल	210
2.	अंग्रेजी	17	22.	चित्रकला	218
3.	संस्कृत	33	23.	संगीत गायन	227
4.	उर्दू	47	24.	वाणिज्य	235
5.	पंजाबी	53	25.	कृषि-विज्ञान	241
6.	बंगला	61	26.	भेड़ एवं बकरी पालन	252
7.	गुजराती	65	27.	कुकुट पालन एवं मौन पालन	255
8.	मराठी	70	28.	वन उद्योग	258
9.	कन्नड़	75	29.	फल संरक्षण	261
10.	असमिया	81	30.	उद्यान विज्ञान	264
11.	उड़िया	85	31.	काष्ठ शिल्प	269
12.	कश्मीरी	90	32.	कताई-बुनाई	275
13.	मलयालम	96	33.	पुस्तक कला	279
14.	तमिल	100	34.	धातु कला	282
15.	तेलुगू	104	35.	चर्म कला	285
16.	अरबी	108	36.	सिलाई एवं सम्बन्धित कला	288
17.	फारसी	116	37.	गृह शिल्प	291
18.	गणित	123	38.	शारीरिक शिक्षा, खेल, व्यायाम तथा योगासन	301
19.	विज्ञान	140	39.	स्काउट/गाइड	312
20.	इतिहास/नागरिक शास्त्र	195	40.	नैतिक शिक्षा	319
			41.	पर्यावरणीय अध्ययन	323

❋ कालांशों का विभाजन तथा मूल्यांकन व्यवस्था ❋

क्रम-संख्या	पाठ्य विषय	प्रति सप्ताह कालांश	पूर्णांक	उत्तीर्णांक
1	2	3	4	5
विषय : ज्ञानात्मक :-				
1	**हिन्दी तथा अनिवार्य संस्कृत, सामान्य हिन्दी**	7	100	33
2	**अंग्रेजी**	5	50	17
3	**तृतीय भाषा–** संस्कृत, उर्दू, पंजाबी, बंगला, गुजराती, मराठी, कन्नड़, असमिया, उड़िया, कश्मीरी, मलयालम, तमिल, तेलुगू, अरबी, फारसी	3	50	17
4	**गणित** (अंकगणित, बीजगणित तथा ज्यामिति)	7	100	33
5	**विज्ञान**	5	100	33
6	**सामाजिक विषय**–इतिहास, भूगोल तथा नागरिक शास्त्र	5	100	33
7	**वैकल्पिक विषय**–निम्नलिखित में से कोई एक विषय–कला / संगीत / वाणिज्य	3	50	17
8	**बुनियादी शिल्प तथा संबंधित कला** निम्नलिखित में से कोई एक विषय : कृषि, भेड़ तथा बकरी पालन, कुक्कुट पालन एवं मौन पालन, वन उद्योग, फल संरक्षण, उद्यान विज्ञान तथा फल संरक्षण, काष्ठ कला, कताई-बुनाई, पुस्तककला, धातुकला, चर्मकला, सिलाई एवं संबंधित कला, गृह शिल्प। **नोट :–** बुनियादी शिल्प के प्रश्न-पत्र में संबंधित कला का एक प्रश्न अनिवार्य होगा।	3	50	17
	क्रियात्मक :-			
9	**समाजोपयोगी उत्पादक कार्य के अन्तर्गत बुनियादी शिल्प के क्रियात्मक कार्य**	3	50	17
10	**शारीरिक शिक्षा, खेल, व्यायाम तथा योगासन, स्काउटिंग एण्ड गाइडिंग**	5	50	17
11	**नैतिक शिक्षा**	1	25	08
12	**पर्यावरणीय शिक्षा**	1	25	08
	योग	**48**	**750**	

भाषा – हिन्दी

अनुक्रम

1. भूमिका (प्राथमिक स्तर पर निर्धारित पाठ्यक्रम के क्रम में प्रस्तुत उच्च प्राथमिक स्तर का पाठ्यक्रम)
2. सामान्य उद्देश्य : (उच्च प्राथमिक स्तर पर हिन्दी भाषा शिक्षण)
3. विशिष्ट उद्देश्य : (प्रमुख भाषिक कौशल तथा अपेक्षित दक्षताएँ, तत्सम्बन्धी विषयवस्तु व्याकरण, अपेक्षित योग्यताएँ तथा व्याकरणिक अवयव)
4. सम्भावित विधागत पाठों का विभाजन
5. विषयों / प्रकरणों की सूची (पाठ निर्माण की दृष्टि से)
6. विधाओं का संक्षिप्त परिचय
7. विधा / प्रकरण / शिक्षण अधिगम प्रक्रिया / क्रियाकलाप / मूल्यांकन
   (समाविष्ट सभी विधाओं की शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया / क्रियाकलाप तथा मूल्यांकन संकेत)

हिन्दी पाठ्यक्रम

भूमिका

मातृभाषा के रूप में हिन्दी भाषा की शिक्षा का विशेष महत्व है। भाषा ही समस्त सामाजिक व्यवहार तथा क्रियाकलापों के संदर्भ में परस्पर भाव, विचार आदि के सम्प्रेषण का माध्यम होती है। प्राथमिक स्तर (कक्षा एक से पाँच) पर शिक्षार्थियों द्वारा अर्जित भाषिक ज्ञान और कौशलों के संदर्भ में उल्लेखनीय है कि मातृभाषा की ध्वनि-व्यवस्था के अन्तर्गत शुद्ध उच्चारण और वर्तनी पर विशेष बल दिया जाता है। साथ ही सामान्य रूप से शब्द-प्रयोग, शब्द रचना तथा सरल वाक्य-रचना की जानकारी भी प्रदान कर दी जाती है। इस प्रकार प्राथमिक स्तर पर भाषिक तत्वों की जानकारी और कौशलों (श्रवण-बोध, मौखिक अभिव्यक्ति, पठन-बोध तथा लिखित अभिव्यक्ति) के विकास पर यथेष्ट बल दिया जाता है।

यह उल्लेखनीय है कि प्राथमिक स्तर (कक्षा एक से पाँच) के लिए हिन्दी भाषा के पाठ्यक्रम का निर्माण किया जा चुका है। उसी क्रम में उच्च प्राथमिक स्तर (कक्षा छः से आठ) के लिए हिन्दी भाषा के इस पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया है।

उच्च प्राथमिक स्तर पर भाषिक पक्ष के साथ ही साहित्यिक पक्ष का समावेश विशेष रूप से महतवपूर्ण हो जाता है। अतः इस स्तर पर भाषा की शिक्षा में भाषिक तथा साहित्यिक दोनों पक्षों के संतुलित विकास पर ध्यान दिया गया है। भाषा यद्यपि कौशल प्रधान विषय है किन्तु भाषिक तत्वों (उच्चारण, वर्तनी, शब्द, वाक्य आदि) का ज्ञान बोलने, पढ़ने, लिखने आदि के कौशलों के समुचित विकास में सहायक होता है। इस दृष्टि से भाषा ज्ञान और कौशल दोनों है। साथ ही भाषा का एक सर्जनात्मक पक्ष भी है। विभिन्न विधाओं में साहित्यिक रचनाएँ सर्जनात्मक पक्ष को उजागर करती हैं। अतः स्तर पर भाषा शिक्षण के उद्देश्यों के निर्धारण में इन्हीं पक्षों (ज्ञान, कौशल, सर्जनात्मकता आदि) को आधार बनाया गया है। ये पक्ष इस प्रकार हैं :

* ज्ञानात्मक
* कौशलात्मक
* सौन्दर्य बोधात्मक
* सर्जनात्मक
* अभिवृत्यात्मक

ज्ञानात्मक पक्ष के अन्तर्गत भाषिक तत्वों का ज्ञान, साहित्य की विधाओं (कविता, कहानी, संवाद, जीवनी, पत्र आदि) का परिचय तथा पठन-सामग्री की विषयवस्तु का बोध अपेक्षित हैं कौशलात्मक तथा बोधात्मक पक्ष भाषिक योग्यता के महत्वपूर्ण अंग हैं। इनके अन्तर्गत सुनकर समझने, शुद्ध उच्चारण के साथ प्रभावपूर्ण ढंग से बोलकर भावों, विचारों आदि को व्यक्त करने, गद्यांश या पद्यांश को पढ़कर अर्थ ग्रहण करने तथा लिखकर अपने भावों, विचारों आदि को व्यक्त करने की योग्यताएँ समाहित हैं। सौन्दर्यानुभूति के अन्तर्गत कविता या भावपूर्ण रचना में निहित नाद-सौन्दर्य, भाव तथा अर्थ सौन्दर्य को पहचान कर आनन्द प्राप्त करने और उनकी सराहना करने की क्षमता महत्वपूर्ण है। सर्जनात्मक पक्ष के अन्तर्गत रचनात्मक कार्य में नूतनता तथा मौलिकता अपेक्षित है। अभिवृत्यात्मक पक्ष के अन्तर्गत भाषा और साहित्य में रुचि के विकास के साथ-साथ सत्प्रवृत्तियों के विकास पर विशेष बल दिया जाता है।

सामान्य उद्देश्य :

भाषा के उपर्युक्त पक्षों को दृष्टि में रखते हुए उच्च प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षण के सामान्य उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है। हिन्दी भाषा के मानक रूपों (ध्वनि, शब्द, वाक्य-रचना) और उनके प्रयोगों से परिचित कराना जैसे–

क. मानक वर्तनी का प्रयोग।

ख. वाक्य-संरचना का मानक रूप।

ग. भाषा के अशुद्ध प्रयोगों के शुद्ध रूप बना सकने की योग्यता का विकास करना।

* सुनकर अर्थ ग्रहण की क्षमता का विकास करना।
* शुद्ध उच्चारण तथा उचित हाव-भाव के साथ बोलकर बपने भावों, विचारों आदि को व्यक्त करने की योग्यता विकसित करना।
* उचित आरोह-अवरोह तथा विराम चिह्नों का ध्यान रखते हुए सस्वर वाचन की क्षमता का विकास करना।
* साहित्य की प्रमुख विधाओं (गद्य, पद्य, निबन्ध, कहानी, जीवनी, एकांकी, आत्मकथा, पत्र आदि) की विशेषताओं से अवगत होना।

* विविध विधाओं की रचनाओं में निहित सौन्दर्य-तत्वों की पहचान और अनुभूति करना।
* अर्थ ग्रहण करते हुए मौन पठन की योग्यता विकसित करना।
* पठित तथा परिचर्चित विषयवस्तु के आधार पर कल्पना-शक्ति, तार्किक चिंतन तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना।
* ज्ञान तथा मनोरंजन के लिए स्वाध्याय की प्रवृत्ति का संवर्द्धन करना।

क. प्रार्थना पत्र, पारिवारिक पत्र, शिकायती पत्र, बधाई पत्र, निमंत्रण पत्र, व्यवसायिक पत्र आदि लिखने की योग्यता विकसित करना।

ख. मनीआर्डर फार्म, यात्रा के लिए आरक्षण फार्म, प्रवेश परीक्षा सम्बन्धी प्रपत्र, बैंक या डाकघर से धन निकालने का प्रपत्र आदि भरना।

* पठित सामग्री अथवा श्रुत विषयवस्तु के बाधार पर निर्देशानुसार उनका केन्द्रीय भाव, सारांश, व्याख्या, प्रश्नों के उत्तर आदि लिखना।
* परिचर्चित विषय तथा दी गयी रूपरेखा के आधार पर छोटा निबन्ध या लेख लिखना।
* किसी विषय पर चर्चा के बाद दिये गये मुख्य संकेत शब्दों की सहायता से निबन्ध लिखना या वर्णन को पूरा करना।
* स्तरानुकूल विषय पर रोचक हास्य, व्यंग्य या विनोदपूर्ण रचना लिखना, अधूरी कहानी पूरा करना, किसी सरल प्रसंग पर संवाद लिखना।
* परिचित विषय पर लघु संवाद, पहेली, वार्तालाप, आदि के रूप में छोटी रचनाएँ लिखना।
* भारतीय संस्कृति के मूल्यों, राष्ट्रीयता, सर्वधर्म समभाव, समाज तथा राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व, तार्किक चिन्तन तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण जैसे गुणों का विकास करना।
* साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों आदि के माध्यम से मानवीय संवेदना विकसित करना।

भाषिक कौशल तथा व्याकरण

क्रमांक	कौशल	अपेक्षित दक्षताएँ	विषय-वस्तु
१.	समझते हुए सुनना	* ध्यानपूर्वक सुनना। * वक्ता के कथनों के महत्वपूर्ण तथ्यों, विचारों, भावों आदि को समझना। * सुनी हुई छोटी कहानी, कविता आदि को सुनना तथा उनके अंशों का सारांश ग्रहण करना। * आनन्द, सूचना और प्रेरणा के लिए सुनना। * वक्ता के हाव-भाव एवं भंगिमाओं से उनके कथन के आशय को समझना। * कक्षाओं, सभाओं तथा पास-पड़ोस के सांस्कृति कार्यक्रमों में होने वाले संवादों को अर्थ ग्रहण करते हुए सुनना। * रेडियो, दूरदर्शन के विविध कार्यक्रमों को समझते हुए सुनना। * औपचारिक एवं अनौपचारिक कथनों में अंतर करना। * श्रुत सामग्री में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों का प्रसंगानुकूल अर्थ समझ लेना। * सुनकर भाषा के बोलीगत और मानक रूप का अंतर कर सकना।	* गद्य तथा पद्य के अंश। * कहानी, एकांकी, निबन्ध, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण आदि के सरल अंश। * गद्य-पद्य के अंशों का सस्वर वाचन। * शिक्षक के आदेश एवं निर्देश। * वार्तालाप, वाद-विवाद, कथोपकथन। * शिक्षक-कथन। * कक्षा और सभाओं में दिये गये भाषण। * आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से प्रसारित होनेवाले विविध कार्यक्रम।
	अनिवार्य संस्कृत	* संस्कृत के छोटे-छोटे वाक्यों, श्लोकों आदि को सुनकर समझना।	* संस्कृत की पाठ्य सामग्री।
२.	बोलना	* हिन्दी की सभी ध्वनियों, संयुक्ताक्षरों, व्यंजनों तथा व्यंजनगुच्छों का शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण करना। * उचित विराम, आरोह-अवरोह तथा प्रवाह के साथ बोलना। * अपने भावों तथा विचारों को तर्कपूर्ण एवं रोचक ढंग से क्रमबद्ध रूप में व्यक्त करना। * पढ़ी, सुनी अथवा देखी हुई घटना तथा दृश्य का अपने शब्दों में वर्णन करना। स्थानीय बोली के प्रभाव से मुक्त होकर मानक भाषा का ही प्रयोग करना। * किसी विषय को सुनकर / पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करना एवं सम्बन्धित विषय पर प्रश्न पूछना। * स्तरानुकूल प्रसंगों पर सहपाठियों के साथ वार्तालाप करना। * प्रभावपूर्ण ढंग से नाटकीय संवाद बोलना। * अन्त्याक्षरी में भाग लेना। * उपयुक्त शब्दों, मुहावरों, वाक्यांशों आदि का प्रयोग करते हुए उचित उतार-चढ़ाव के साथ वार्तालाप करना। * औपचारिक अवसरों पर (जैसे- स्वागत, बधाई, शोक-संवेदना, परिचय आदि) उपयुक्त भाषा का प्रयोग करते हुए बोलना। * विद्यालय में आयोजित सांस्कृतिक एवं साहित्यिक कार्यक्रमों-वाद-विवाद, भाषण, कविता सुपाठ, कवि दरबार तथा अन्य साहित्यिक प्रतियोगिताओं में प्रभावपूर्ण ढंग से बोलना।	* सरल प्रसंगों पर वार्तालाप, दृश्य वर्णन, कहानी सुनाना, कविता-पाठ, भाषण, नाटक, संवाद, वाचिक अभिनय आदि। * पुस्तक के पाठांश, पत्र-पत्रिकाएँ। * दूरदर्शन, आकाशवाणी के कार्यक्रम तथा वर्णन एवं दृश्य घटनाएँ आदि। * जन्म दिवस, स्वागत, विदाई, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, त्योहारों / पर्वों से सम्बन्धित प्रसंग।

	अनिवार्य संस्कृत	* शब्दों, श्लोकों, वाक्यों को शुद्ध उच्चारण के साथ बोलना। * संस्कृत के श्लोकों को सुनाने की दक्षता का विकास करना। * संस्कृत के सरल वाक्यों को बोलने की क्षमता का विकास करना।	* श्लोक एवं सरल वर्णन। * संस्कृत सुभाषित एवं सूक्तियाँ।
	पढ़ना सस्वर पठन मौन पठन	* शुद्ध उच्चारण, आरोह-अवरोह तथा उचित गति के साथ पढ़ना। * विराम चिह्नों का ध्यान रखते हुए पढ़ना। * भावानुकूल काव्य-पाठ करना। * अर्थग्रहण करते हुए उचित गति से मौन पठन करना। * मौन पठन द्वारा पठित अंश का केन्द्रीय भाव समझना। * पठित अंश में निहित तथ्यों, भावों तथा विचारों को समझना। * पठित सामग्री विशेषत: कविता में निहित भाव एवं विचार-सौन्दर्य की सराहना करना। * पठित कहानी के तत्वों (कथानक, पात्र, संवाद, वातावरण, उद्‌देश्य तथा भाषा शैली) से परिचित होना। * प्रमुख पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं को समझना। * जीवनी में वर्णित चरित नायक के गुणों तथा आदर्शों से प्रेरणा ग्रहण करना। * विविध विधाओं (कविता, निबन्ध, कहानी, एकांकी, यात्रावृत्तान्त, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र, पत्र) के रचना-प्रकारों तथा शैली का अन्तर समझना। * पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त पत्र-पत्रिकाओं, कहानियों को समझ के साथ पढ़ना। * शब्दकोश की सहायता से प्रसंगानुसार कठिन शब्दों के अर्थ ढूँढ लेना। * पठित अंश से जीवन मूल्यों को समझना और प्रेरणा लेना। * अधिकाधिक पठन की आदत विकसित करना।	* गद्य, पद्य, कहानी, एकांकी, दृश्य वर्णन, घब्ना, आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, निबन्ध आदि। * पत्र-पत्रिकाएँ, संवाद / वार्तालाप * सामाजिक रूढ़ियों, कुरीतियों, अन्ध विश्वासों आदि से जुड़े प्रसंग और उनके निवारण हेतु पठन-सामग्री। * तत्सम एवं तद्‌भव शब्दों की पहचान। * उपसर्ग, प्रत्यय, सन्धि, समास का ज्ञान। * संदर्भ के अनुसार शब्दों का अर्थ। * समानार्थ शब्द, विलोम, शब्द-युग्म, वाक्यांश के लिए एक शब्द। * मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ
	अनिवार्य संस्कृत	* अनुस्वार, हलन्त, विसर्ग आदि का ध्यान रखते हुए संस्कृत के शब्दों, वाक्यों, श्लोकों आदि को शुद्ध और स्पष्ट उच्चारण के साथ पढ़ना। * संस्कृत के वाक्यों तथा श्लोकों को पढ़कर उनका अर्थग्रहण करना।	* श्लोक, सुभाषित, नीति एवं भक्ति सम्बन्धी श्लोक, गद्यांश। * संस्कृत के संवाद।
४.	लिखना एवं रचना कार्य औपचारिक लेखन निर्देशित लेखन स्वतंत्र लेखन	* सुलेख में गतिपूर्वक लिखना। * शब्द और वाक्य रचना में शुद्ध वर्तनी का प्रयोग। * वाक्यों तथा अनुच्छेदों में विराम चिह्नों का यथास्थान सही प्रयोग करना। * विभिन्न प्रकार के पत्र लिखना तथा प्रपत्र भरना। * गद्यांशों को सुनकर शुद्ध रूप में लिखना। * सरल कानी, घटनाओं, दृश्यों आदि के वर्णन को लिखित रूप में प्रस्तु तकरना। * पठित गद्य या पद्य के कठिन अंश का भावार्थ या व्याख्या लिखना। * कक्षा में परिचित तथा दी गयी रूपरेखा के आधार पर निबन्ध लिखना।	* सरल गद्य-पद्य के अंश। * सुने हुए या अनुभव पर आधारित प्रसंग। * कक्षा ६ के लिये श्रुतलेख से सम्बन्धित गद्यांश या अनुच्छेद। * विभिन्न प्रकार के पत्र-पारिवारिक पत्र, व्यावसायिक पत्र, निमंत्रण-पत्र, बधाई पत्र आदि तथा मनीआर्डर फार्म, यात्रा सम्बन्धी आरक्षण फार्म, धन निकालने का फार्म आदि। * वाक्य समूह तथा गद्यांश।

	(मौलिक रचना)	* निर्देशानुसार किसी विषय पर अपने भावों, विचारों आदि को लिखित रूप में व्यक्त करना। * परिचित तथा सरल विषयों पर छोटे-छोटे लेख लिखना। * स्वतंत्र रूप से अपनी कल्पना के आधार पर छोटी-छोटी कहानियाँ, संवाद आदि लिखना। * सुनी या पढ़ी हुई सामग्री को संक्षेप में लिखना। * पठित अवतरण या अंश का सारांश लिखना। * चुटकुले, व्यंग्य तथा हास्य-विनोदपूर्ण रचनाएँ लिखना। * विशिष्ट शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों आदि का यथा प्रसंग लिखित भाषा में प्रयोग करना।	* सरल कहानियों, घटनाओं, दृश्यों आदि के वर्णन।। * पद्य तथा गद्य के कठिन अंश। * स्तरानुकूल निबन्धण लेखन के लिए सरल विषय।। * स्वतंत्र लेखन के लिए रुचि तथा स्तरानुकूल्ल विषय। * स्तरानुकूल कविताएँ, कहानियाँ, संवाद आदि।। * हास्य विनोदपूर्ण रचनाओं तथा चुटकुले के लिय्ये रोचक विषय। * संक्षिप्तीकरण या सारांश लेखन के लिए दिये गय्ये पठित अंश।
	अनिवार्य संस्कृत, लिखना एवं रचना कार्य	* अनुस्वार, विसर्ग, हलन्त आदि को ध्यान में रखते हुए संस्कृत के वाक्यों एवं श्लोकों को स्पष्ट तथा शुवर्तनी में लिखना। * हिन्दी के सरल वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करना एवं स्वतंत्र रूप से दो-तीन वाक्य लिखने की क्षमता का विकास करना। * क्रिया एवं संज्ञा शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करना।	* संस्कृत के गद्य एवं पद्य पाठ। * परिचित प्रसंगों पर आधारित पठन-सामग्री। * हिन्दी के सरल तथा छोटे वाक्यों का संस्कृत ग्में अनुवाद। * सरल संज्ञा शब्दों के रूप– पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग (अकारान्त, इकारान्त स्त्रीलिंग व्के रूप) * सरल क्रियापदों के रूप के प्रकार (लट्, लोट्, लङ्, विधिलिंग, लृट्)
	व्याकरण एवं अलंकार	* भाषिक तत्वों का ज्ञान प्राप्त करना तथा उनका सही-प्रयोग करना जैसे– ध्वनि, शब्द, वाक्य आदि की जानकारी तथा उनका स्वाभाविक रूप से प्रयोग। * समानार्थी एवं विलोम शब्दों के अर्थ जानना और उनका प्रयोग करना। * प्रमुख विराम चिह्नों को पहचानना तथा उनका प्रयोग करना। * शब्दों के व्याकरणिक रूपों - संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण, अवयव आदि से परिचित कराना। * लिंग तथा वचन के अनुसार संज्ञा शब्दों के रूप-परिवर्तन से परिचित होना तथा उनका सही प्रयोग करना। * कर्ता तथा कर्म के अनुसार क्रिया में परिवर्तन करना। * वाक्य में पद-क्रम के नियम से परिचित होना। * शब्दों के तत्सम, तद्भव एवं देशज रूपों से परिचित होना। * उपसर्ग, प्रत्यय, सन्धि तथा समास के प्रयोग द्वारा शब्द निर्माण करना। * सरल, संयुक्त तथा मिश्रित वाक्यों की रचना करना। * मुहावरों तथा लोकोक्तियों के अर्थ को जानना। * परिचित मुहावरों एवं लोकोक्तियों का यथास्थल प्रयोग करना। * वाक्यांश के लिए एक शब्द का प्रयोग करना। * बताये गये लक्षणों के आधार पर अलंकारों को पहचानना। * अलंकारों के प्रयोग से भाषा में उत्पन्न सौंदर्य की सराहना करना। * शुद्ध-अशुद्ध भाषा की पहचान करना। * शुद्ध तथा मानक भाषा के प्रयोग की आदत डालना।	१. हिन्दी वर्ण विचार स्वर, स्वर की मात्राएँ, व्यंजन तथा व्यंजन गुच्छ (उच्चारण, वर्तनी) २. शब्द विचार * क. शब्द स्रोत– तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी शब्द। * ख. सन्धि, सन्धि के भेद, स्वर तथा व्यंजान सन्धियाँ (स्वर सन्धि–दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण्) * समास, समास के भेद, समास-विग्रह। * उपसर्ग एवं प्रत्यय से शब्द रचना। * ग. समानार्थी तथा विलोम शब्द। * घ. शब्द युग्म। ३. पद भेद : * क. संज्ञा, संज्ञा के भेद (लिंग, वचन, कारक) * ख. सर्वनाम, सर्वनाम के भेद। * ग. विशेषण, विशेषण के भेद। * घ. क्रिया, क्रिया के भेद, काल। * च. अव्यय, अव्यय के भेद। ४. वाक्य रचना : * वाक्य, वाक्य के भेद (सरल, संयुक्त एवं मिश्रित वाक्य) वाक्यांश के लिए एक शब्द। ५. मुहावरें, लोकोक्तियाँ। ६. विराम चिह्न– प्रमुख विराम चिह्नों की पहचान एवं प्रयोग। ७. अलंकार : * अनुप्राश, यमक। * श्लेष, उपमा। * रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति।

कक्षा ६, ७, ८ की पाठ्यपुस्तकों में निम्नलिखित साहित्यिक विधाओं के पाठों का कक्षावार समावेश

विधाएँ	कक्षा ६ (पाठों की संख्या)	कक्षा ७ (पाठों की संख्या)	कक्षा ८ (पाठों की संख्या)
कविता	०९	०९	१०
निबन्ध	०५	०६	०८
कहानी	०४	०४	०३
एकांकी	०१	०१	०१
यात्रा-वृत्तान्त	०१	–	-
जीवनी	०४	०४	०३
आत्मकथा	-	०१	०१
संस्मरण	–	०१	०१
रेखाचित्र	–	–	०१
पत्र	०१	–	–
योग	**२५**	**२६**	**२८**

टिप्पणी –

इन कक्षाओं के लिए विविध विधाओं में पाठों की संख्या का सुझाव एक प्रस्ताव मात्र है, प्रसंगों की रोचकता, व्यावहारिक जीवन में उपयोगिता तथा प्राकृतिक-सामाजिक परिवेश की अपेक्षाओं के अनुसार इन विधाओं के पाठों की संख्या में परिवर्तन किया जा सकता है।

गहन अध्ययन की दृष्टि से निर्धारित पाठ्पुस्तकों के अतिरिक्त कक्षा ६, ७, ८ के लिए दो-दो पूरक पाठ्यपुस्तकों का निर्धारण भी समीचीन होगा।

निम्नांकित विषयों में से सम्बन्धित विषयों का चयन कक्षानुसार किया जायेगा–

* भारत के पिभिन्न भागों का लोक जीवन, पर्यटन।
* ग्रामीण जीवन दृश्य एवं उपयोग के सन्दर्भ में।
* औद्योगिक एवं आर्थिक जीवन।
* स्वच्छता, स्वास्थ्य, शिष्टाचार, साहस और नैतिकता।
* जीवन मूल्यों पर आधारित सामग्री।
* खेल-कूद, मनोरंजन, हॉबी।
* वैज्ञानिक आविष्कार और उसका मानवजीवन पर प्रभाव।
* संचार साधन प्रौद्योगिकी, टेलीफोन, कम्प्यूटर, टेलीविजन आदि।
* प्रकृति एवं वन्य जीवन।
* बालश्रम।
* नशाखोरी।
* कला (ललित कलाएँ - मूर्ति, चित्र, संगीत)
* अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग एवं हमारे पड़ोसी देश।
* श्रम का महत्व।
* साम्प्रदायिक सद्भावना।
* सामाजिक वानिकी।

उपर्युक्त के अतिरिक्त राष्ट्रीय शिक्षा नीति (१९८६) द्वारा सुझाये गये केन्द्रिक पाठ्यक्रम सम्बन्धी निम्नांकित दस घटकों एवं राष्ट्रीय महत्व से सम्बन्धित विषयों को भी स्तरानुकूल, यथास्थान सम्मिलित किया जाय :

1. भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष।
2. संवैधानिक दायित्व।
3. राष्ट्रीयता के पोषक तत्व।
4. हमारी सांस्कृतिक विरासत।
5. नर-नारी समानता।
6. पर्यावरण संरक्षण।
7. सामाजिक प्रगति में बाधक तत्व (कुरीतियाँ)
8. वैज्ञानिक दृष्टिकोण।
9. सीमित परिवार की संकल्पना।
10. लोकतंत्र, धार्मनिरपेक्षता, समतामूलक समाज।

विधाओं का संक्षिप्त परिचय :

विषय वस्तु संयोजन तथा भाषा शैली की पृथक-पृथक विशेषताओं के कारण हिन्दी साहित्य में अनेक विधाएँ विकसित हुई हैं। इनमें से उन विधाओं का उल्लेख पहले किया जा चुका है जिनसे सम्बन्धित पाठ उच्च प्राथमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों में लिये गये हैं।

इन विधाओं से सम्बन्धित विशेषताओं का संक्षेप में उल्लेख किया जा रहा है ताकि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में उन विशेषताओं को उभारा जा सके और छात्रों को उनका बोध कराया जा सके।

कविता

कविता छन्दोबद्ध तथा लय प्रधान रचना है, यहाँ तक की जिन कविताओं में छन्द और तुक का बन्धन नहीं है उनमें भी लयात्मकता बनी रहती है। कविता मानव हृदय में रस का संचार करती है इसीलिये आदिकाल से ही मानव-हृदय इसके प्रति मुग्ध होता रहा हैं छात्रों की भी यह प्रिय विधा है।

कविता के सौन्दर्य तत्वों पर अनेक विद्वानों ने अलग-अलग ढंग से अपने-अपने विचार व्यक्त किए हैं-

* रसात्मक वाक्य ही काव्य है।
* रमणीय अर्थ का प्रतिपादक शब्द ही काव्य है।
* अलंकार ही काव्य की शोभा है।
* संगीतमय विचार ही कविता है।

वस्तुत: ये भिन्न-भिन्न गुण ही कविता के सौन्दर्य तत्व हैं। जिस कविता में जो गुण और सौन्दर्यतत्व हों उन्हें शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में उभारना चाहिए और छात्रों को उनकी सौन्दर्यानुभूति का अवसर देना चाहिए। लयात्मक रचना होने के कारण कविता शिक्षण में शिक्षक के आदर्श पाठ और छात्रों के सस्वर वाचन का विशेष महत्व है। कविता शिक्षण में मौन पठन का स्थान नहीं है।

निबन्ध

गद्य साहित्य में 'निबन्ध' सर्वाधिक महतवपूर्ण विद्या है। कहा जाता है कि "यदि गद्य कवियों की कसौटी है तो निबन्ध गद्य की कसौटी है, क्योंकि भाषा की पूर्ण शक्ति का विकास निबन्धों में ही सबसे अधिक संभव होता है।"

इसी कारण निबन्ध शिक्षण में पाठ में निहित भाषिक तत्वों के अध्ययन पर विशेष बल दिया जाता है।

'निबन्ध' शब्द नि+बन्ध से बना है जिसका अर्थ है-- भली प्रकार से बंधी रचना। निबन्ध में लेखक किसी विषय पर अपने विचार सुसम्बद्ध रूप में प्रस्तुत करता हैं वह विषय प्रतिपादन के लिये तथ्यों, विचारों, तर्कों और प्रमाणों का सहारा लेता है।

अत: शिक्षण अधिगम में कठिन अंशों की व्याख्या और विश्लेषण अवश्य करना चाहिए। ध्यान देने की बात यह है कि निबन्ध शिक्षण में भाषा अध्ययन तथा वैचारिक विश्लेषण दोनों क्रियाओं को प्रश्नोत्तर विधि से छात्रों की सक्रिय सहभागिता लेते हुए सम्पन्न करना चाहिए।

कहानी

कहानी गद्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा हैं विद्यार्थी कहानी सुनने / पढ़ने में बड़ा आनन्द लेते हैं। मनोरंजकता इसका सबसे बड़ा गुण हैं कहानी में घटनाओं और पात्रों के चरित्र चित्रण से जीवन की परिस्थितियों पर प्रकाश पड़ता हैं साथ ही जीवन मूल्यों **की** शिक्षा भी मिलती है।

कहानी एक ऐसी रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंश अथवा एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्‌देश्य होता है। यह ऐसा रमणीय उद्यान नहीं, जिसमें भाँति-भाँति के फूल, बेल-बूटे सजे हों, बल्कि यह एक ऐसा गमला है जिसमें एक ही पौधे का माधुर्य अपने समुन्नत रूप में दृष्टिगोचर होता हैं

कहानी के मुख्य तत्व हैं-

कथानक, पात्र (चरित्र-चित्रण), संवाद (कथोपकथन), वातावरण (देशकाल परिस्थिति), उद्‌देश्य और भाषा-शैली इन्हीं के आधार पर कहानियों को घटना प्रधान, चरित्र प्रधान, वातावरण प्रधान आदि वर्गों में बाँटा जा सकता हैं। कहानी शिक्षण के दौरान उसमें निहित तत्वों को उभारना चाहिए। कहानी शिक्षण में पूरी कहानी को कहने-सुनने का विशेष महत्व होता हैं अत: शिक्षक द्वारा रोचक ढंग से कहानी सुनायी जानी चाहिए तथा इसी प्रकार छात्रों से भी कहानी कहलवानी चाहिए।

एकांकी

'एकांकी' नाम से ही स्पष्ट हे कि यह एक अंक का नाटक होता है जिसमें एक या एक से अधिक दृश्य हो सकते हैं। यह नाटक से पृथक एक स्वतंत्र विधा है। इसमें केवल एक घटना, परिस्थिति या समस्या होती हैं **वह** एक ही घटना नाटकीय कौशल के साथ चरम सीमा तक पहुँचती है। इसमें कोई गौण प्रसंग नहीं होता है।

एकांकी संवाद प्रधान रचना है। अत: इसमें सस्वर वाचन का अधिक महत्व है। छात्रों से पत्रानुसार कथोपकथन हाव-भाव के साथ प्रस्तुत कराना चाहिए। ध्यान रखा जाय कि कक्षा में केवल पात्रानुसार वाचिकअभिनय ही कराना चाहिए पूरा अभिनय किसी सांस्कृतिक कार्यक्रम अथवा समरोह में कराना उचित होगा।

यात्रा-वृत्तान्त :

किसी भी प्रकार की यात्रा के विविध अनुभवों एवं प्रतिक्रियाओं की कलात्मक अभिव्यक्ति 'यात्रावृत्तान्त' हैं यद्यपि इसमें वर्णनात्मक निबन्ध एवं संस्मरण दोनों के तत्व मिले रहते हैं किन्तु यह उनसे भिन्न विधा है। यात्रा क्रम में घटना की गतिशीलता, समय-समय पर परिवर्तित दृश्य चित्रों की सजीवता, मार्ग में उपस्थिति अप्रत्याशित घटनाओं की रोचकता, कठिनाइयों का सामना करने की साहसिकता आदि यात्रा वृत्तान्त को एक ऐसा अनूठा आकार प्रदान करते हैं जो उसे निबन्ध और संस्मरण से भिन्न रूप दे देते हैं। यात्रा वृत्तान्त में यात्री जिन-जिन स्थानों से भ्रमण करता हुआ आगे बढ़ता है वहाँ की सामाजिकता, आर्थिक जीवन की झलक भी देता चलता है। इसमें रोचकता एवं ज्ञानबर्द्धकता दोनों तत्व बने रहते हैं। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में इन्हीं बिन्दुओं को उभारना चाहिए तथा छात्रों को उनका बोध कराया जाना चाहिए।

जीवनी

'जीवनी' किसी व्यक्ति के जीवन का लिखित अथवा वर्णित वृत्तान्त है। उसे किसी सीमा तक व्यक्ति का इतिहास कहा जा सकता है। इतिहास और जीवनी सत्य घटनाओं पर आधारित होने के कारण एक समान रचनाएँ मालूम होती है, पर ऐसा नहीं हैं इतिहास सामूहिक जीवन के वर्णन पर बल देता है परन्तु जीवनी में व्यक्तिगत जीवन का ही महत्व है। लेखक जीवनी में चरित्र नायक के जीवन की उन घटनाओं, विचारों, जीवन मूल्यों को उभारता हे जो हमारे लिए प्रेरणादायक हो।

जीवन में कल्पित घटनाओं का कोई स्थान नहीं है क्योंकि वह जीवन का सही इतिहास प्रस्तुत करने वाली साहित्यिक विधा है। जीवनी के शिक्षण में हमें ऐसे गुणों पर प्रकाश डालना चाहिये।

आत्मकथा

'आत्मकथा' किसी व्यक्ति की स्वलिखित जीवन गाथा है। लेखक अपनी दृष्टि से अपने जीवन का वर्णन और उसकी व्याख्या करता है अच्छी आत्मकथा वह मानी जाती है जिसमें जीवन के भले-बुरे दोनों पक्षों का समावेश होता है, यद्यपि अपनी कमियों को खोलकर रखना बड़े साहस का काम है। इस दृष्टि से महात्मा गाँधी की आत्मकथा को आदर्श मान सकते हैं।

आत्मकथा से लेखक के अनुभवों का लाभ पाठक को सहज ही सुलभ हो जाता है। महापुरुषों की आत्मकथा में उनके युग की गतिविधियों की भी झलक मिल जाती है। जैसे- गाँधीजी, पंडित नेहरू, बाबू राजेन्द्र प्रसाद की आत्मकथाएँ।

संस्मरण

लेखक के स्मृतिपटल पर अंकित किसी व्यक्ति विशेष के जीवन की घटनाओं का रोचक वर्णन 'संस्मरण' कहलाता है। लेखक स्वयं देखी हुई घटनाओं तथा अनुभूतियों का ही वर्णन करता है। चूँकि संस्मरण निकटता से देखे गये व्यक्तियों से सम्बन्धित होता है, अत: उसका विवरण प्रामाणिक होता है किन्तु प्रस्तुतीकरण में संस्मरण लेखक स्वतंत्र होता है। वह अपने दृष्टिकोण के अनुसार घटना तथा चरित्र का विश्लेषण करता चलता है जिसके कारण संस्मरण में सजीवता बनी रहती है।

रेखाचित्र

'रेखाचित्र' शब्द चित्र कला से लिया गया हैं जिसका अर्थ है– थोड़ी सी रेखाओं द्वारा किसी व्यक्ति की आकृति, चाल-ढाल, स्वभाव सम्बन्धी विशेषताओं का सजीव चित्रण करना। कम से कम शब्दों में किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु या घटना को चित्रित कर देना कुशल रेखा चित्रकार का कार्य हैं रेखाचित्र को शब्दचित्र या स्केच भी कहते हैं। संक्षिप्तता और सजीवता रेखाचित्र के प्राण हैं। किसी व्यक्ति के रेखाचित्र में उसकी विशिष्ट शारीरिक रचना, मुद्राओं, कल्पनाओं आदि को शब्द चित्रों के माध्यम से ज्यों का त्यों उभार दिया जाता है।

टिप्पणी :

1. विधागत विशेषताओं के संक्षिप्त परिचय से प्रत्येक विधा की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया समझने में सहायता मिलेगी।
2. विधागत शैक्षणिक उद्देश्यों के संकेतों का उल्लेख प्रमुख कौशलों (विशेषत: पढ़ना) के अन्तर्गत विकसित होने वाली दक्षताओं / योग्यताओं के अन्तर्गत कर दिया गया है।
3. आगे प्रत्येक विधा से सम्बन्धित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया तथा क्रियाकलाप एवं मूल्यांकन का उल्लेख किया जा रहा है।

क्रमांक	विधाएँ/प्रकरण	विधागत क्रियाकलाप / शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया	मूल्यांकन
१.	कविता	* **प्रस्तावना / पूर्व ज्ञान से जोड़ना** : समान भाव वाली कविता का वाचन अथवा शिक्षक-कथन द्वारा उपयुक्त वातावरण का निर्माण। * **आदर्श पाठ** : शिक्षक द्वारा उचित भाव-भंगिमा के साथ कविता का भावानुकूल सस्वर वाचन। * **सस्वर वाचन** : शिक्षार्थियों द्वारा सस्वर वाचन। * **केन्द्रीय भाव-ग्रहण** : कविता के केन्द्रीय भाव का प्रश्न विधि द्वारा स्पष्टीकरण। * **भाव तथा विचार-सौन्दर्य-विश्लेषण** : (प्रश्नों / कथनों / चर्चा द्वारा) * शिक्षक कठिन शब्दों या अंशों का अर्थ-स्पष्टीकरण तथा व्याख्या करें और बच्चों से भी करायें। * पाठ-विकास की प्रक्रिया में कठन शब्दों और अर्थों को श्यामपट्ट पर लिखें। * कविता का भाव-बोध कराते हुए नाद-सौन्दर्य, भाव-सौन्दर्य, कल्पना तथा विचार-सौन्दर्य का बोध छात्रों को करायें। * मर्मस्पर्शी स्थलों की पहचान तथा बोध करायें। * छात्रों को समान भाव वाली कविताओं के संकलन हेतु प्रेरित करें। * पूर्व पठित समान भाव वाली कविताओं / अंशों का भी तुलना के लिए उल्लेख किया जा सकता है जिससे उसके भाव सौन्दर्य के बोध में सहायता ली जा सके। * सौन्दर्य तत्व सम्बनधी अंशों का भी श्यामपट्ट पर उल्लेख करें। * अन्त में कविता का पुन: सस्वर वाचन बच्चों द्वारा करायें।	* उपयुक्त प्रश्नों द्वारा छात्रों की सम्प्राप्ति की जाँच करना। * कविता के भाव पक्ष का बोध। * भावार्थ स्पष्टीकरण। * मर्मस्पर्शी स्थलों की पहचान एवं बोध। * विशिष्ट / कठिन स्थलों के अर्थ, उनका स्पष्टीकरण। * कविता में प्रयुक्त अलंकारों की पहचान। * कविता की एक पंक्ति देकर छात्रों द्वारा दूसरी पंक्ति की पूर्ति कराना।
२.	निबन्ध	* **सस्वर पठन** : शिक्षक द्वारा शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण, उचित आरोह-अवरोह तथा प्रवाह के साथ सस्वर पठन। * **मौन पठन** : बच्चों द्वारा अर्थ ग्रहण करते हुए प्रवाह के साथ (बिना बुदबुदाये) मौन पठन। * **भाषा अध्ययन कार्य** : * **शब्द भंडार में वृद्धि** : प्रसंगानुसार विविध युक्तियों से छात्रों के शब्द भण्डार में वृद्धि करना – * समानार्थी एवं विलोम शब्दों द्वारा। * वाक्यों में शब्द प्रयोग द्वारा तथा प्रसंगानुकूल अर्थ निकलवाकर। * **शब्द रचना** : उपसर्ग और प्रत्यय द्वारा शब्द-रचना कराना। * सन्धि विच्छेद एवं समास-विग्रह द्वारा शब्दार्थ स्पष्ट करना। * (शब्दार्थ स्पष्टीकरण में आवश्यक शब्दों का श्यामपट्ट पर भी उल्लेख किया जाय।) * **वाक्य रचना** : शब्दों एवं पदों का वाक्य प्रयोग। * वाक्य रचना सम्बन्धी जानकारी। * प्रचलित मुहावरों एवं लोकोक्तियों का अर्थ तथा वाक्य प्रयोग। * **विषयवस्तु विश्लेषण** : (प्रश्नों / चर्चा द्वारा)	उपयुक्त प्रश्नों / चर्चा द्वारा छात्रों की सम्प्राप्ति का मूल्यांकन करना : * भाषिक एवं वैचारिक सामग्री सम्बन्धी प्रश्नों द्वारा। * विषयवस्तु एवं भाषा ज्ञान परीक्षण सम्बन्धी प्रश्नों द्वारा। * पाठ में निहित जीवन मूल्यों, संदेशों, नैतिक मूल्यों के बोध से सम्बन्धित प्रश्नों द्वारा। * केन्द्रीय भाव ग्रहण, तथ्यों, भावों के बोध की जाँच सम्बन्धी प्रश्न द्वारा। * परिचित विषय पर छोटे-छोटे निबन्ध लिखवाकर निबन्ध लेखन की क्षमता की जाँच करना।

		* पठित सामग्री का केन्द्रीय भाव ग्रहण। * विविध तथ्यों, भावों, विचारों का प्रसंगानुकूल अर्थ ग्रहण करना। (विचार विश्लेषण की प्रक्रिया में प्रमुख तथ्य, भाव, विचार आदि का उल्लेख श्यामपट्ट पर किया जाय।) * मार्मिक एवं वैचारिक स्थलों की व्याख्या। * पाठ में निहित जीवन मूल्यों, संदेशों, भावों को समझकर नैतिक मूल्यों का विकास करना। * सरल और परिचित विषयों पर छात्रों द्वारा लघु निबन्ध लिखवाना। * साहित्यिक अभिरुचि एवं रचनात्मक क्षमता का विकास करना।	
३.	कहानी	* **प्रस्तावना :** प्रसगचर्चा, चित्र-प्रदर्शन आदि तथा शिक्षक कथन द्वारा छात्रों में कहानी के प्रति कौतूहल उत्पन्न करना। * **शिक्षक द्वारा कहानी कथन :** पूरी कहानी संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत कर छात्रों को उसका बोध कराते हुए बीच-बीच में उपयुक्त प्रश्नों द्वारा कथा सूत्र को आगे बढ़ाना। * **छात्रों द्वारा कहानी कथन :** कुछ बच्चों से पूरी कहानी अथवा क्रमिक अंशों (कड़ियों) को जोड़कर कहानी कहलवाना। (उचित हावभाव, भंगिमा तथा उतार-चढ़ाव के साथ बच्चे कहानी कहेंगे।) * **कहानी का मौन पठन :** तथ्य, भाव, विचार, सन्देश ग्रहण करते हुए बच्चों द्वारा मौन पठन। (यदि कहानी या उसके किसी अंश की भाषा काव्यात्मक या ललित शब्दावली में है तो उस अंश का सस्वर पठन भी उपयोगी होगा) * **विषयवस्तु विश्लेषण :** उपयुक्त प्रश्नों, चर्चा द्वारा छात्रों की सहभागिता से विषयवस्तु का विश्लेषण निम्नलिखित को ध्यान में रखते हुए किया जाय : * कहानी की प्रमुख घटनाओं का बोध। * पात्रों की चरित्रगत विशेषताएँ। * नैतिक गुणों, संदेशों का बोध। (कथानक, पात्र, जीवन मूल्य से सम्बन्धित मुख्य बिन्दुओं को श्यामपट्ट पर भी लिखा जाए)। * मर्मस्पर्शी स्थलों की पहचान एवं स्पष्टीकरण। * कहानी के संदर्भ में बच्चों की कल्पना शक्ति का विकास, जैसे यदि तुम अमुक पात्र के स्थान पर होते तो क्या करते? * बच्चों को कहानी सुनाने के लिये प्रेरित करना।	* उपयुक्त प्रश्नों द्वारा छात्रों की सम्प्राप्ति की जाँच करना। * केन्द्रीय भाव, तथ्यों एवं विचारों का बोध। * पात्रों, उनकी चरित्रगत विशेषताओं, संदेशों, नैतिक मूल्यों का बोध। * अधूरी कहानी को पूरा कराकर इस क्षमता की जाँच। * घटनाप्रधान चित्रों को देकर कहानी बनाने की क्षमता की जाँच। * पढ़ी / सुनी हुई कहानी को अपने शब्दों में संक्षेप में लिखने की योग्यता की जाँच।
४.	एकांकी	* **प्रस्तावना :** शिक्षक-कथन द्वारा या पूर्व पठित पाठों अथवा एकांकी के विषय से सम्बन्धित प्रसंग पर चर्चा द्वारा बच्चों का एकांकी की कथावस्तु की ओर ध्यानाकर्षण। * **शिक्षक द्वारा आदर्श पठन :** उचित भाव-भंगिमा के साथ सस्वर वाचन (यदि कोई मर्मस्पर्शी या भावपूर्ण अंश हो तो छात्रों द्वारा भी सस्वर वाचन करायें)। * **केन्द्रीय भाव ग्रहण :** कथा वस्तु पर आधारित प्रश्नों द्वारा केन्द्रीय भाव को बोध कराना।	* उपयुक्त प्रश्नों द्वारा छात्रों की सम्प्राप्ति की जाँच: * कथानक (कथा का विकास मोड़) के बोध की जाँच। * चरित्रगत विशेषताओं के बोध की जाँच। * जीवन मूल्यों, संदेशों आदि के बोध की जाँच। * संवादों में भाषा का प्रयोग की समझ की जाँच। * स्थल विशेष के वाचिक अभिनय की क्षमता की जाँच।

		* **विषयवस्तु विश्लेषण :** उपयुक्त प्रश्नों / चर्चा द्वारा एकांकी की कथावस्तु (कथानक) का निम्नलिखित के सन्दर्भ में बोध कराना: * चरित्रगत विशेषताएँ। * नैतिक मूल्य, संदेश आदि। * भावात्मक स्थलों की व्याख्या एवं स्पष्टीकरण। * संवादों की सार्थकता, मार्मिकता एवं प्रासंगिकता। * कठिन शब्दों / स्थलों की व्याख्या। (इनका श्यामपट्ट पर भी उल्लेख किया जाय)। * **अभिनय :** कथोपकथन पर विशेष बल देते हुए पात्रानुसार भाव-भंगिमा के साथ सस्वर वाचिक अभिनय कराना।	
		* **टिप्पणी –** यात्रा वृत्तान्त, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण तथा रेखाचित्र की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के अन्तर्गत निबन्ध की भाँति सस्वर पठन, मौन पठन, केन्द्रीय भाव बोध, भाषा अध्ययन एवं विषयवस्तु विश्लेषण की प्रक्रिया अपनायी जाती है किन्तु इन विधाओं की पृथक-पृथक विशेषताओं के कारण विषय-वस्तु विश्लेषण में निम्नांकित बातों का विधावार ध्यान रखना पड़ता है।	* इन विधाओं के मूल्यांकन की प्रक्रिया भी बहुत कुछ निबन्ध के मूल्यांकन की तरह ही होगी परन्तु भाषिक तत्वों पर जोर नहीं दिया जायेगा।
५.	**यात्रा वृत्तान्त**	**विषयवस्तु विश्लेषण** – (उपयुक्त प्रश्नों / चर्चा द्वारा निम्नांकित बिन्दुओं पर प्रकाश डाला जाय) * यात्रा पूर्व यात्री के मन का कौतूहल। * मार्ग में आने वाले प्राकृतिक दृश्य, स्थान। * भिन्न-२ स्थानों के लोगों का रहन-सहन, खान-पान, स्वभाव। * उनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति। * मार्ग में आने वाली कठिनाइयाँ एवं उनका सामना करने में यात्री का धैर्य एवं सूझ-बूझ का परिचय। * पाठक के मन पर पड़ने वाला प्रभाव। * बच्चों द्वारा की गयी यात्रा का वर्णन।	* उपयुक्त प्रश्नों / चर्चा से छात्रों की सम्प्राप्ति का मूल्यांकन किया जाय। * यात्रा-मार्ग के प्राकृतिक दृश्यों, वहाँ के निवासियों, रहन-सहन, खान-पान, स्वभाव के विषय में बोध। * मार्ग की कठिनाइयों में यात्री की सूझ-बूझ, धैर्य तथा मन पर पड़ने वाले प्रभाव का बोध।
६.	**जीवनी**	**विषयवस्तु-विश्लेषण :** (उपयुक्त प्रश्नों / चर्चा द्वारा निम्नांकित बिन्दुओं पर प्रकाश डाला जाय) : * नायक का व्यक्तित्व, विचार, जीवन मूल्य। * नायक के जीवन की प्रमुख घटनाएँ एवं सूझ-बूझ। * जीवनी पढ़ने से मन पर पड़ने वाला प्रभाव तथा मिलने वाली प्रेरणा।	* उपयुक्त प्रश्नों / चर्चा से छात्रों की सम्प्राप्ति का मूल्यांकन किया जाय। * घटित घटनाओं में नायक के विचार, व्यवहार, जीवन मूल्य, सूझ-बूझ का बोध तथा मिलने वाली प्रेरणा एवं अनुभूति का बोध।
७.	**आत्मकथा**	**विषयवस्तु-विश्लेषण :** (उपयुक्त प्रश्नों / चर्चा से) : * लेखक ने स्वयं अपने जीवन की किन-किन घटनाओं एवं परिस्थितियों का वर्णन किया है? * उसमें उसके जीवन की किन-किन अच्छाइयों एवं कमजोरियों पर प्रकाश पड़ता है? * उसके अनुभव, आचरण तथा उसकी प्रतिक्रियाएँ।	* उपयुक्त प्रश्नों / चर्चा से निम्नलिखित बिन्दुओं पर छात्रों की सम्प्राप्ति की जाँच की जाय। * लेखक के स्वयं जीवन में घटित घटनाओं में उसके अनुभव, अच्छाइयों एवं कमजोरियों की जानकारी। * लेखक के अनुभवों से होने वाले लाभ।
८.	**संस्मरण**	**विषयवस्तु-विश्लेषण :** (प्रश्नों / चर्चा द्वारा निम्नांकित बिन्दुओं पर प्रकाश डाला जाय)	* उपयुक्त प्रश्नों / चर्चा द्वारा छात्रों की सम्प्राप्ति की जाँच की जाय।

		* संस्मरण लेखक के मानस-पटल पर अंकित किसी व्यक्ति, घटना के रोचक वर्णन से पाठक के मन पर पड़ने वाला प्रभाव। * लेखक का उससे जुड़ाव। * लेखक का उसके प्रति दृष्टिकोण। * अध्यापक द्वारा यथा सम्भव किसी रोचक संस्मरण का उल्लेख। * बच्चों को कोई संस्मरण सुनाने की प्रेरणा।	* लेखक द्वारा वर्णित व्यक्ति, घटना विशेष का बोध। * उसके गुणपों / अवगुणों के प्रति लेखक का दृष्टिकोण तथा मन पर पड़ने वाले प्रभावों की जाँच।
९.	रेखाचित्र	**विषयवस्तु-विश्लेषण** : (प्रश्नों / चर्चा द्वारा निम्नांकित बिन्दुओं को उभारा जाय) : * वर्णित व्यक्ति विशेष, जीव की आकृति, वेशभूषा, चेष्टाओं, स्वभाव कर चित्रात्मक रूप। * विविध प्रश्नों से उपर्युक्त को बोध कराने एवं चित्रात्मक कल्पना करने की दक्षता का विकास।	
	लिखित रचना निबन्ध वर्णन	**प्रस्तावना –** * लिखित रचना के विषय / प्रकरण से सम्बन्धित उपयुक्त ढंग से चर्चा / शिक्षक कथन / पूर्व ज्ञान से सम्बन्धित प्रश्न करते हुए निबन्ध / वर्णन प्रस्तुत करने हेतु छात्रों को जिज्ञासु बनाएँ। * चर्चा / उपयुक्त प्रश्नों के द्वारा छात्रों से प्रकरण सम्बन्धी अधिकाधिक सामग्री प्रकाशित कराने का प्रयास। * यथा प्रसंग शिक्षक द्वारा विषय-सामग्री बनाने का प्रयास। * छात्रों को प्रकरण सम्बन्धी अपने निजी विचार, अनुभव अथवा प्रतिक्रियाएँ प्रकट करने का यथेष्ट अवसर। * उपर्युक्त विधि से व्यक्त सामग्री का यथासम्भव श्यामपट्ट पर उल्लेख। * व्यक्त सामग्री के आधार पर निबन्ध / वर्णन की रूपरेखा तैयार करना। * रूपरेखा के आधार पर छात्रों को निबन्ध लेखन का निर्देश / उन्हें स्वतंत्र रूप से अपने विचार व्यक्त करते की छूट। * छात्रों द्वारा निबन्ध लेखन।	* छात्रों द्वारा प्रस्तुत रचना (निबन्ध / वर्णन) की शिक्षक द्वारा जाँच कार्य। * रचना में पाई गयी त्रुटियाँ तथा उनका संशोधन तथा चर्चा द्वारा रचना का मूल्यांकन। * रचना को सही क्रम में प्रस्तुत करने के सुझाव ही छात्रों के लिए अधिक प्रेरणाप्रद होंगे।
	व्याकरण	**प्रस्तावना –** * पूर्व परिचित व्याकरणकि शब्दावली के प्रयोग से सम्बन्धित उदाहरण देना। * प्रकरण से सम्बन्धित उपयुक्त उदाहरण प्रस्तुत करना। * उदाहरणों से आधार तुलना तथा व्याख्या सम्बन्धी प्रश्न। * निष्कर्षों के आधार पर सिद्धान्त तथा नियम निरूपण। (उपर्युक्त प्रक्रिया में आवश्यक सामग्री का उपयोग) * नियमों की पुष्टि के लिए विविध प्रकार के प्रयोगात्मक अभ्यास। * इसी प्रकार आगमन विधि द्वारा व्याकरणिक प्रकरणों का शिक्षण सर्वोपयुक्त विधि है। * उदाहरणों पर तुलना, व्याख्या कराते समय और नियम निरूपण में भी यथोचित प्रश्नों द्वारा छात्रों का सक्रिय सहयोग लिया जायेगा।	* प्रकरण से सम्बन्धित उदाहरण पूछे जाए। * सिद्धान्त या नियम या परिभाषाएँ भी पूछी जाए। * विविध प्रकार के उदाहरणों में से नियम सम्बन्धी अभीष्ट उदाहरण की पहचान करायी जायेगी।

शिक्षकों के लिए ज्ञान संवर्द्धन की सामग्री (Teacher Support)

हिन्दी शिक्षण के समुन्नयन की दृष्टि से निम्नांकित सामग्री शिक्षकों (हिन्दी) के लिए सहायक और उपयोगी सिद्ध होगी :

1. पाठ्य पुस्तक शिक्षण संदर्शिका।
2. शिक्षक – प्रशिक्षण।
3. उच्च प्राथमिक स्तर की दृष्टि से हिन्दी भाषा शिक्षण संदर्शिका।
4. उपकरणों का प्रयोग – टेप्स (उच्चारण और कविता पाठ सम्बन्धी)।
5. पूरक पाठ्य पुस्तकें।

पाठ्यक्रम – अंग्रेजी

अंग्रेजी (कक्षा VI, VII - VIII)

अभी तक उत्तर प्रदेश में अंग्रेजी भाषा शिक्षण एवं अधिगम कक्षा ६ से प्रारम्भ होता था किन्तु सम्प्रति शासन द्वारा अंग्रेजी विषय का पठ्न-पाठन विद्यालयों में कक्षा ३ से प्रारम्भ कर दिया गया है। यह स्वयं में एक उत्साहवर्धक एवं चुनौतीपूर्ण कदम है। अब कक्षा ६, ७ एवं ८ की अंग्रेजी के पठन-पाठन का समय ३ वर्षों का न रहकर छः वर्षों का होगा। इस प्रकार दक्षताओं के अर्जन हेतु यथेष्ट समय उपलब्ध होगा। इस प्रकार अब अंग्रेजी भाषा के शिक्षण अधिगन पाठ्यक्रम पाठ्यविधि एवं मूल्यांकन में भी तदनुसार परिवर्तन, परिवर्द्धन, परिमार्जन एवं अभ्यास संवर्धन समीचीन होगा। तदनुसार प्रस्तुत पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया है।

सामान्य उद्‌देश्य :

प्रदेश में अंग्रेजी भाषा शिक्षण अधिगम का मुख्य उद्‌देश्य चार मूलभूत कौशलों का विकास है।

1. श्रवण कौशल :
   * अंग्रजी शब्दों / वाक्यों को सुनकर समझना।
   * भाषा शब्दों एवं वाक्यों को सुनकर पहचानना एवं उनमें अन्तर को समझना।
   * अंग्रेजी में दिए गए निर्देशों को सुनकर समझना और तदनुसार कार्य करना।
   * बोलचाल में प्रयुक्त आरोह-अवरोह आधारित अर्थ को समझना।
2. वाचन कौशल :
   * अंग्रेजी शब्दों एवं वाक्यों को उनकी उचित ध्वनियों, बलाघात (accent) एवं लय से उच्चारित करना।
   * प्रश्न पूछना और प्रश्न का उत्तर देना।
   * दिए गए चित्र / वस्तु / विषय / परिस्थिति में सहज एवं सुसंगठित वर्णन।
   * भाषा का सम्प्रेषण एवं वार्तालाप में प्रयोग।
3. पठन कौशल :
   * मौखिक रूप से सीखी हुई भाषा के लिखित स्वरूप को पढ़ना।
   * पाठ्यपुस्तक के साथ-साथ पत्रों / पत्रिकाओं / अन्य अंग्रेजी भाषा सामग्री को पढ़ना।
   * छोटी-छोटी अंग्रेजी कहानियाँ पढ़ना / कॉमिक्स पढ़ना।
4. लेखन कौशल :
   * उपर्युक्त कौशलों द्वारा सीखी गई भाषा को लिखना।
   * दिए गए विषय पर क्रमबद्ध एवं सुसंगठित रूप में लिखना।
   * पत्र, प्रार्थनापत्र आदि लिखना।

अध्यापक हेतु आवश्यक समर्थन

1. शिक्षण प्रशिक्षण
2. शिक्षक मार्गदर्शिका
3. श्यामपट्ट रेखा चित्रण
4. चित्र
5. चार्ट
6. फ्लैश कार्ड
7. ऑडियो कैसेट
8. स्लाइडज़
9. मॉडल्ज़
10. अखबार और पत्रिकाओं से चित्रों का संकलन
11. शब्दकोश (उच्चारण सहित)

पाठ्यक्रम कक्षा VI, VII व VIII विधागत पाठों के व्यवहारपरक उद्देश्य एवं शैक्षणिक प्रक्रिया विधि

व्यवहारपरक उद्देश्य	प्रकरण / उपप्रकरण तार्किक क्रम में	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन विधि
क. गद्य शिक्षण १. प्रत्येक गद्य पाठ में आए नये व्याकरण बिन्दुओं (स्ट्रक्चर्ज़) को समझना एवं उन्हें स्वयं नए संदर्भों में प्रस्तुत करना। २. गद्य पाठ में आई नई शब्दावली के अर्थ समझना व उन्हें नए संदर्भों में भी समझना व स्वयं प्रयोग करना। ३. प्रत्येक पाठ में आए नए शब्दों व वाक्यों को उनकी उचित ध्वनियों, बलाघातों (accent) लय व स्वर के उपयुक्त उतार-चढ़ाव व भाव के साथ सुनकर समझना, बोलना व पढ़ना। ४. अंग्रेजी वर्तनी की विशिष्टताओं को समझना; लिखित शब्दों, वाक्यों को पढ़ना व शुद्ध वर्तनी में लिखना। ५. उपर्युक्त कौशलों में दक्षता प्राप्त कर पाठ की विषय- वस्तु को सहजता व गति के साथ पढ़ना व समझना। ६. विभिन्न क्षेत्रों जैसे इतिहास, भूगोल, गणित, विज्ञान, समाज, संस्कृति, पर्यावरण, खेल-कूद आदि से संबंधित शब्द भंडार का विकास होना।	**कक्षा– VI** पाठ्यक्रम में दिये हुए स्ट्रक्चर्ज़ व शब्दावली पर आधारित पुस्तक के निर्माण में कुल १५ अध्यायों में गद्य के ६ पाठ होंगे। इनकी विषय-वस्तु सामान्य रुचि, राष्ट्रीय कोर बिन्दुओं व ग्रामीण परिवेश, समान आर्थिक सामाजिक पृष्ठभूमि, भावनात्मक वय को ध्यान में रखते हुए होगी। **कक्षा–VII** पाठ्यपुस्तक में प्रस्तावित १७ अध्यायों में ७ अध्याय गद्य के होंगे। अध्यायों का आकार वाक्य विन्यास की जटिलता शब्दावली क्रमशः विस्तृत होगी। **कक्षा–VIII** पाठ्यपुस्तक के लिये प्रस्तावित १९ पाठों में गद्य पाठ-९ होंगे।	१. सर्वप्रथम पाठ में आए नए स्ट्रक्चर्ज़ को नए अर्थपूर्ण संदर्भों में चित्रों, कक्षा में स्थिति उत्पन्न करके या शब्द संदर्भों में प्रस्तुत करके उनका ड्रिल्स द्वारा अभ्यास कराया जाएगा। २. अध्यापक द्वारा गद्यांश का उपयुक्त उच्चारण एवं भावों सहित सस्वर पाठ किया जाएगा। ३. नए एवं कठिन शब्दों का विविध तकनीकों (शब्दावली शिक्षण में विस्तार से दी गई) के माध्यम से अर्थ स्पष्ट किया जायेगा व उन्हें सक्रिय प्रयोग के लिए अभ्यास कराया जायेगा। ४. छात्र / छात्राओं द्वारा गद्यांश का उचित ढंग से मौन पाठ किया जायेगा। ५. छात्र / छात्राओं को गद्यांश समझने व समझाने के लिए प्रश्नोत्तर विधि का प्रयोग किया जायेगा। ६. मौखिक रूप से सीखे हुए शब्दार्थ व प्रश्नोत्तरों को छात्रों द्वारा अभ्यास पुस्तिका पर लिखा जायेगा। ७. भाषायी अभ्यास (Language Exercises) कराई जाएगी। उपकरण – वास्तविक वस्तु, चित्र, चार्ट, श्यामपट्ट, लेखन व चित्रण, फ्लैश कार्ड्ज, शाब्दिक संदर्भ रचना (verbal situations), ऑडियो कैसेट, शारीरिक हाव-भाव, अभिनयन व भाषायी खेल (Language games)	१. भाषायी अभ्यासों (Language Exercise) द्वारा मौखिक एवं लिखित रूप से सीखें हुए शब्दों व स्ट्रक्चर्ज की जानकारी का मूल्यांकन किया जायेगा। २. प्रश्नोत्तर विधि से सुनने, पढ़ने, समझने, बोलने व लिखने के कौशलों का सतत् मूल्यांकन किया जायेगा। ३. रोल प्ले, खेल, आशु भाषण आदि की कक्षा ही में छोटी-छोटी प्रतियोगिता आयोजित की जाए। इन्हें अनिवार्य न बनाकर ऐच्छिक रक्खा जाए पर प्रतिभागिता के लिए प्रेरित किया जाए।
ख. संवाद एवं कथोपकथन १. उपर्युक्त गद्य पाठ के उद्देश्यों की पूर्ति, विकास एवं सुदृढ़ीकरण के साथ-साथ सम्प्रेषण कौशलों (communicative skills) का विकास होना। २. मौखिक वार्तालापी (Conversational) क्रियाकलापों का अभ्यास व विकास होना। ३. वाचित अंग्रेजी की विशिष्टताओं जैसे–उपयुक्त ध्वनि का प्रयोग, शब्दों व कथोपकथन का उचित	**कक्षा–VI** संवाद व कथोपकथन विधा के अध्याय-२ **कक्षा–VII** संवाद अध्याय – २ **कक्षा–VIII** संवाद अध्याय – २	१. उपर्युक्त गद्य पाठ की विध को अपनाते हुए विशेष बल अभिनयन तकनीक पर होगा। २. छात्र / छात्राओं को विभिन्न पात्रों की भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया जायेगा। ३. छात्र / छात्राओं द्वारा सस्वर पाठ पर विशेष बल दिया जायेगा। ४. वाचित अंग्रेजी के विशिष्ट पहलुओं का विशेष रूप से अभ्यास कराया जायेगा। ५. उपलब्धता के आधार पर अध्यापक द्वारा पूर्व में, तत्संबंधी कैसेट तैयार किया जायेगा।	१. उपर्युक्त गद्य पाठ के मूल्यांन की विधियों को अपनाते हुए छात्र-छात्रओं द्वारा सस्वर पाठ व अभिनयन कराकर उनकी वाचिक अंग्रेजी के मूल्यांकन पर विशेष बल दिया जायेगा। २. रोल प्ले व खेलों (भाषायी) द्वारा प्राप्त कौशलों का मूल्यांकन होगा। ३. छोटे-छोटे संवाद लिखने को प्रेरित कर

बलाघात (accent) लय व स्वर के उतार-चढ़ाव व भावों के साथ बोलना।			उनके रचनात्मक कौशलों का मूल्यांकन होगा। इसके लिए नई परिस्थितियों/ संदर्भ दिए जायेंगे।
ग. लघु कथा १. रोचक कहानियों द्वारा अंग्रेजी भाषा पढ़ने व सीखने के प्रति रूचि जागृत होना। २. समय, स्थान, घटनाक्रम के विकास व मानवीय संबंधों के तार्किक क्रम की अंग्रेजी भाषा अभिव्यक्ति को समझना व मौखिक और लिखित रूप में प्रयोग करना। ३. कहानी विधा की वर्णनात्मक शैली से परिचित होना व मौखिक व लिखित रूप से प्रयोग करना।	**कक्षा–VI** में प्रस्तावित १५ पाठों में कहानी विधा के ३ अध्याय। **कक्षा–VII** में प्रस्तावित १६ पाठों में कहानी विधा के ३ अध्याय। **कक्षा–VIII** में प्रस्तावित १९ पाठों में कहानी विधा के ३ अध्याय।	१. चित्रों की सहायता से कहानी की घटनाओं के क्रमिक विकास को पढ़ाया जायेगा। २. प्रारम्भ में अध्यापक द्वारा कहानी के सारांश को सरल भाषा में प्रस्तुत किया जायेगा। ३. प्रश्नोत्तर विधि से श्यामपट सारांश तैयार किया जायेगा। ४. श्यामपट सारांश को छात्र / छात्राओं द्वारा पढ़ा जायेगा। ५. सारांश को अभ्यास पुस्तिका पर लिखा जायेगा। ६. गद्य पाठ के अन्य चरणों का भी प्रयोग किया जायेगा।	१. गद्य पाठ की मूल्यांकन विधियों को अपनाते हुए विशेष रूप से घटनाक्रम के विकास के लिए प्रयुक्त विशेष शैली का मूल्यांकन किया जायेगा। २. अव्यवस्थित वाक्यों को घटनाक्रमानुसार सुसंगठित किया जायेगा। ३. प्रमुख बिन्दु देकर कहानी को पूर्ण कराया जायेगा। ४. आधी कहानी देकर उसे पूर्ण करने को कहा जायेगा। इससे रचनात्मक एवं कल्पनात्मक कौशलों का मूल्यांकन होगा।
घ. पद्य शिक्षण १. पद्य के लय, गीतात्मकता से आनन्द की अनुभूति करना। २. कविता के भावात्मक पक्ष व रचनात्मक पक्ष के प्रति संवेदनशील होना। ३. पद्य शैली की विशिष्ट वाक्य संरचना, शब्दों के विशेष प्रयोग, शब्द चित्रों, अलंकारों, रूपकों, समझना व रसास्वादन करना व स्वयं भी २-२, ४-४ पंक्तियों में पद्य शैली में भावाभिव्यक्ति करना। ४. भाषा के वाचित पक्षों विशेष रूप से लय व स्वर के उतार-चढ़ाव का अभ्यास होना।	**कक्षा–VI** कविता संख्या – ४ **कक्षा–VII** कविता संख्या – ५ **कक्षा–VIII** कविता संख्या – ५ कविता की विषयवस्तु प्रकृति जानवर, देशप्रेम, काल्पनिक या यथार्थ अनुभव आदि से संबंधित हो सकती हैं। कविता का आकार, पंक्तियों की संख्या व पदों की संख्या क्रमशः विस्तृत होती जायेंगी।	१. कविता का प्रस्तुतीकरण कई प्रकार से किया जा सकता है। * चित्रों की सहायता से। * कविता का सरल भाषा में सारांश बताकर। * मातृभाषा में समानान्तर भाव का अर्थ वाली कविता का पाठ करके। * अध्यापक द्वारा, पढ़ाई जाने वाली कविता का सस्वर पाठ करके। २. पुनः कविता का आदर्श पाठ किया जायेगा व छात्र / छात्राएँ पुस्तक से भी इसे मौन पढ़ेंगे। ३. अध्यापक सस्वर पाठ की पूर्व तैयारी करेंगे। (सक्रियात्मक) ४. कतिपय कठिन शब्दों के अर्थ स्पष्ट किए जायेंगे। ५. कविता की विषयवस्तु को समझने व उसकी विशिष्ट शैली के रसास्वादन हेतु प्रश्नोत्तर विधि का प्रयोग किया जायेगा। ६. आनन्दानुभूति व रसास्वादन के लिए छात्र / छात्राओं द्वारा अध्यापक के साथ पहले समूह में व फिर व्यक्तिगत रूप से कविता का सस्वर पाठ कराया जायेगा। ७. छात्र / छात्राओं को कविता कंठस्थ	१. पढ़ाई गई कविता की विषयवस्तु व उसकी शैली के बोध के मूल्यांकन हेतु प्रश्नोत्तर। २. कक्षा में कविता पाठ प्रतियोगिता आयोजित की जायेगी। प्रतिभागिता अनिवार्य न होकर उसके लिए छात्र-छात्राओं को प्रेरित किया जायेगा। ३. कविता को छात्र-छात्राओं द्वारा कंठस्थ कराया जायेगा। इससे उनकी काव्य शैली के प्रति संवेदनशीलता व रूचि का मूल्यांकन होगा।

ङ लघु निबन्ध (Composition) १. सुनने, बोलने व पढ़ने के कौशलों में, जो स्ट्रक्चर आइटम्स व शब्दावली सीखी है उसे व्यवस्थित एवं सुसंगठित रूप से बोलना व लिखना। २. विषयवस्तु को भावानुसार अनुच्छेदों में विभाजित करना। ३. दिए गए विषय पर व्यवस्थित क्रमिक व संगठित रूप से विचार प्रस्तुत करना। ४. किसी विषय की प्रस्तावना व उपसंहार तैयार करना। (मौखिक एवं लिखित रूप से) ५. पत्र लेखन की तकनीकों को जानकर औपचारिक व अनौपचारिक पत्र लिखना।	१. कक्षावार सीखे गये व्याकरण बिन्दुओं (Structures) शब्दावली व वाक्य संरचना पर आधारित निबन्ध लेखन कार्य होगा। २. निबन्ध का आकार कक्षानुसार क्रमशः विस्तृत होगा। ३. सामान्यतः छात्र / छात्राएँ अनुभूत विषयों एवं उनके पर्यावरण में उपलब्ध उपकरणों, पात्रों, भावों पर परिवार के सदस्य, मित्र, अध्यापक, विद्यालय, नगर, प्रमुख महापुरुष, डाकघर, रेलवे स्टेशन, त्योहार, खेलकूद, उत्सव, जानवर, ऐतिहासिक स्थान आदि। **कक्षा–VI** में १०–१२ वाक्यों का। **कक्षा–VII** में १५–२० वाक्यों व २–३ अनुच्छेदों का। **कक्षा–VIII** में २०–३० वाक्यों व ३–५ अनुच्छेदों का	करने के लिए प्रेरित किया जायेगा। कक्षा – VI में निम्नलिखित क्रिया कलापों द्वारा निबन्ध लेखन सुनिश्चित किया जायेगा व समस्त प्रक्रिया अध्यापक द्वारा पूर्णरूपेण नियन्त्रित होगी। १. सुलेख (शब्दों एवं वाक्यों का) २. रिक्त स्थानों की पूर्ति ३. अव्यवस्थित शब्दों को सही वाक्य संरचना हेतु व्यवस्थित करना। ४. अव्यवस्थित वाक्यों को भावों व घटनाक्रमानुसार व्यवस्थित करना। ५. सीखे निबन्ध को काल व पुरुष (tense and person) बदलकर लिखना। ६. एक अनुच्छेद देकर कहानी अथवा निबन्ध को पूरा करना। ७. दिए गए संकेतों के आधार पर निबन्ध लिखना। कक्षा – VII व VIII में क्रमशः अध्यापक के नियंत्रण में ढील आयेगी। १. उपर्युक्त समस्त क्रियाकलाप पहले मौखिक रूप से किए जाएँगे। २. मौखिक कार्य के आधार पर प्रश्नोत्तर विधि से श्यामपट सारांश तैयार होगा। ३. श्यामपट सारांश छात्र / छात्राएँ सस्वर पढ़ेंगी। (Reading aloud) ४. सारांश अभ्यास पुस्तिका पर लिखा जायेगा। ५. स्वतंत्र लेखन से पूर्व विचार विमर्श होगा। छात्रों को अपने विचार जोड़ने की स्वतंत्रता होगी।	१. मूल्यांकन विभिन्न प्रकार के अभ्यासों (Exercises) द्वारा किया जा सकता है। जिन अभ्यासों द्वारा सिखाया गया है। उन्हीं द्वारा मूल्यांकन भी किया जायेगा। २. कक्षा में छोटे-छोटे विषयों पर आशु भाषण आयोजित किए जा सकते हैं। ३. विद्यालय पत्रिका में लेख लिखने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। ४. विद्यालय पत्रिका हस्त लिखित भी हो सकती है। ५. सुलेख का भी अभ्यास व मूल्यांकन होगा।
च. उच्चारण शिक्षण १. उचित सम्प्रेक्षण कौशलों हेतु उचित उच्चारण को समझना व भाषा को सही रूप से उच्चारित करना।	१. किसी भी विधा को पढ़ाते समय उच्चारण का अभ्यास कराया जाएगा। २. समस्या उत्पन्न करने वाली ध्वनियों जैसे– (s) (z) (iz) (f) (dz) आदि को अलग से लिया जा सकता है। ३. शब्दों व वाक्यों में उपयुक्त बलाघात का अभ्यास। ४. लय का अभ्यास। Weak forms की सहायता से। ५. स्वरों का उतार-चढ़ाव। * साधारण वाक्यों में * अपूर्ण वाक्यों में। * हाँ / नहीं प्रश्नों में। * अनुरोध व आदेशों में।	१. अध्यापक प्रारम्भ में स्वयं शब्दों व वाक्यों के सही उच्चारण की तैयारी व अभ्यास करेगा। शब्दकोष व कैसेट की सहायता से या विद्यालय के वरिष्ठ व अनुभवी अध्यापकों की मदद से। २. कठिन ध्वनि वाले शब्दों को Minimal Pairs की सहायता से सिखाया जायेगा। ३. पुनरावृत्ति द्वारा अभ्यास किया जायेगा। ४. अशुद्ध उच्चारण को तत्काल शुद्ध किया जायेगा। ५. मौखिक कार्य के समय उच्चारण पर विशेष ध्यान दिया जायेगा।	१. सस्वर पाठ द्वारा। २. प्रश्नोत्तर द्वारा। ३. वार्तालाप द्वारा। ४. अभिनय द्वारा। ५. आशु भाषण प्रतियोगिता द्वारा।

कक्षा - VI

व्यवहारपरक उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन विधि
संरचनाएँ (स्ट्रक्चर्ज़) १. भाषा मूलत: अपनी संरचना (स्ट्रक्चर्ज़) पर आधारित **होती** है अत: स्तरानुसार भाषा के स्ट्रक्चर्ज़ का बोध होना। २. स्ट्रक्चर्ज़ को समझना व उन्हें नई परिस्थितियों में मौखिक	एवं लिखित रूप में प्रयोग करना। **कक्षा ६ :** सरचनाएँ (स्ट्रक्चर्ज़) 1. Use of Present Continuous Tense and its extensions e.g. Hari is sitting. Hari is sitting on the chair. (a) Positive, Negative Statements (Question & Answer) with objects and without objects. **e.g.** Sita is not reading a book. What is Sita doing? She is playing. Moti is not standing. He is sitting. (b) With all persons/numbers **e.g.** I am sitting on the bench. we are sitting in the classroom. you are learning English. (c) With object of preposition : **e.g.** Rahim is coming to me. Atul is going to you. (d) With direct object and as object of a preposition : **e.g.** I am giving these books to you. Now, I am taking them from you. (e) With into/out of **e.g.** I am putting my hand into my pocket. Ravi is taking his book out of his bag.	१. इस कक्षा के लिए निर्धारित संरचनाओं की क्रमबद्धता को आवश्यकतानुसार परिवर्तित एवं शिथिल किया जा सकता है। २. पाठ में आये हुये नये स्ट्रक्चर्ज़ को पाठ प्रारम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित रूप से प्रस्तुत किया जाये। उन्हें अर्थपूर्ण नये ३–४ संदर्भों में प्रयुक्त किया जायेगा जिससे उनका अर्थ, संबोध एवं प्रयोग स्पष्ट हो सके। ३. तत्पश्चात् विभिन्न प्रकार के अभ्यासों द्वारा अभ्यांतरीकरण कराया जायेगा। ४. तदुपरान्त प्रश्नों द्वारा यह सुनिश्चित किया जायेगा कि छात्र / छात्राएँ उनका उचित अनुप्रयोग कर सकते हैं। उपकरणों में चित्र, श्यामपट चित्रण, मॉडल, वास्तिविक वस्तु फ्लैश कार्ड्स व शब्दचित्र संदर्भ प्रस्तुत करने में अत्यधिक सहायक होंगे।	६. स्टट्रेक्चर्ज का मूल्यांकन गद्य, पद्य, कहानी संवाद एवं निबन्ध लेखन के मूल्यांकन के साथ-साथ किया जायेगा। ७. चित्रों एवं शब्दों द्वारा बनाये गये नये संदर्भों पर प्रश्नोत्तर विधि से सिखाये गये स्ट्रक्चर्ज के अनुप्रयोग का मूल्यांकन किया जायेगा।
	2. Use of adjectives - (a) Adjectives of colour & size (predicative use) **e.g.** What colour is this flower? It is red. The tree is tall. (b) Intensifier - very **e.g.** The box is very heavy. (c) Behind/infront of/between **e.g.** Atul is in front of Deepak. Ritu is behind Deepak. Deepak is in between Atul and Ritu.	क्रिया के माध्यम से संरचना का बोध कराया जायेगा।	
	3. Use of will/Shall (indicating future time) (a) full verbs **e.g.** Tommorrow Raju will go to Kanpur. (b) Preposition of time on/in **e.g.** Mohan will come on Sun day.	प्रदर्शन एवं श्यामपट चित्रों और चार्ट द्वारा संरचना का बोध कराया जायेगा।	

	My friend will come in May. (c) Days of the week and Names of the months. 4. Use of verbs 'to be' past tense (was/were) with positive and negative statements. (a) adverbials : Yesterday evening I was at school. I was not at home. 5. Use of 'to be' present tense- Question and short answers- Negative/Positive **e.g.** Is this a dog? Yes, it is. Is it a holiday today? No, it is not. (isn't) 6. Use of will/was/were questions and answer (Positive/Negative) **e.g.** Was Rita at home yesterday? Yes, she was. Were the boys in the playground on Sunday? No, they were not. (weren't) Will the teacher come to school tommorrow? Yes, she will. 7. Use of what/where : Question/answer with action verbs. What is Alka doing? She is dancing. (a) Polite requests/commands. **e.g.** Will you please give me a pen? Sit down. 8. Use of question beginning with where and answers with will be/full verbs. (a) was/were/irregular verbs. **e.g.** Where will your father go tommorrow? He will go to Delhi. Where will you be this evening? I will be at my friend's place. Where were you this morning? I saw his uncle too.	संरचना का बोध कराने के पश्चात् अभ्यास छात्र / छात्राओं के जोड़े बनाकर होगा। एक प्रश्न करे, दूसरा उत्तर दे। फिर स्थिति में परिवर्तन कर क्रियान्वयन किया जायेगा। प्रश्न करने संबंधी संरचना का विशेष रूप से अभ्यास कराया जायेगा एवं प्रश्नात्मक वाक्यों के स्वर के उतार-चढ़ाव पर विशेष ध्यान एवं बल दिया जायेगा।	

	9. Use of question words what did/did-short answers. **e.g.** What did your father do yesterday? Did he go to the bazar? Yes, he did. (a) Adverb 'then' **e.g.** What did he do then? 10. Use of questions beginning with where/what did, do and extension with simple past tense and answers. e.g. Where did you see Ashok? I saw him in the garden. What did the girls do in the hall? They sang and danced. (a) at-referring to a point of surface **e.g.** The train is going to Delhi. Where is it now? It is at Kanpur (now). 11. Use of Conjunction 'But' and 'or' (a) Contrast in adjectives/ space/time (Positive and Negative answers) **e.g.** This is an old man but that is a young man. Rakesh went to the station yesterday but his wife did not. (didn't) Sohan's mother is in the room but his father is not. (Isn't) 12. Use of questions beginning who....? and answers. (a) With is/are e.g. Who is there? Farida is there. (b) With full verbs (present continuous tense) **e.g.** Who is singing in the room? Girls are singing in the room. (c) With will/shall **e.g.** Who will play cricket this evening? Boys will (play cricket this evening) (d) With simple past tense of full verbs (short answers) **e.g.** Who brought these mangoes? My mother did.	'But' के लिए संदर्भ बनाते समय विरोधात्मक वस्तुओं एवं भावों पर विशेष रूप से बल दिया जायेगा। 'or' की संरचना को स्पष्ट करने के लिये दो या उससे अधिक वस्तुओं में चयन द्वारा प्रदर्शित किया जायेगा।	

	13. Use of questions beginning 'where' ..... is/are and answers with possessive pronouns mine/his/hers/yours/Sarla's/farmers' **e.g.** Whose pencil is this? It is mine/his/hers/yours. Whose goats are these? They are the farmers'. 14. Use of the words with together/up-down/over-under. **e.g.** I went to the cinema with my friend? We went together. Dilip went up the hill and Atul came down the hill. The bridge is over the river and the boats are under the bridge. 15. Questions beginning what/when and the answers with expression of time 'at' (half, a quarter etc.) **e.g.** When are you at school? I am at school at half past ten. When did you see that film? I saw it two days ago.	समय बोध घड़ी या उसके मॉडल द्वारा प्रस्तुत कर 'at' संरचना का बोध कराया जायेगा।	
व्यवहारपरक उद्देश्य	**प्रकरण / उप प्रकरण**	**शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण**	**मूल्यांकन विधि**
शब्दावली : भाषा मूलत: शब्दों पर आधारित है। किसी भी विशिष्ट विषयवस्तु पर बोलने लिखने के लिये उस विषयवस्तु से संबंधित शब्दों की जानकारी आवश्यक है। १. कक्षा, घर एवं आस-पास के वातावरण में उपलब्ध वस्तुओं के अंग्रेजी शब्द जानना। २. सही संदर्भ में सही शब्दों का प्रयोग करना। ३. शब्दों के उचित वाचित रूप को पहचानना और बोलना। ४. शब्दों को उनकी उपयुक्त वर्तनी में लिखना।	**शब्दावली के प्रस्तावित क्षेत्र :** सक्रिय – ४०० पहचान स्तर तक – ५० १. विभिन्न व्यवसायों से संबंधित शब्द जैसे– carpenter, potter, gardener. २. जीवन के अनुभवों एवं पर्यावरण से संबंधित। ३. जीवन के विभिन्न क्रियाकलापों से संबंधित। ४. कपड़ों एवं घर के उपकरणों से संबंधित। ८. त्योहारों से संबंधित शब्द। ९. नये एक्शन शब्द (action words) १०. कक्षा ५ तक सीखी हुई शब्दावली की पुनरावृत्ति के साथ उस क्षेत्र के अन्य शब्दों से शब्दावली का विस्तार। पूर्व संदर्भित संरचनाओं (Structure) एवं शब्दावली पर आधारित पाठों की संख्या १५ गद्य पाठ – ६ संवाद एवं कथोपकथन – २ लघुकथा – ३ पद्य – ४	१. पाठ में आये हुए नये शब्दों को पढ़ाने के लिये यथास्थिति निम्नलिखित तकनीकें प्रयोग में लायी जायेंगी– * वास्तविक वस्तु दिखाकर। * चित्र द्वारा। * श्यामपट्ट पर रेखाचित्र द्वारा। * मातृभाषा के समानान्तर शब्दों द्वारा। * पर्यायवाची / विलोम शब्दों द्वारा। * शाब्दिक संदर्भों द्वारा। * संक्रियात्मक अभिनयन एवं शारीरिक हाव-भाव द्वारा। २. आये हुए नये शब्दों के उच्चारण का अभ्यास अध्यापक स्वयं पूर्व में करेगा और प्रारम्भ से ही छात्रों के सामने सही वाचित रूप प्रस्तुत करेगा और छात्रों से अभ्यास करायेगा। ३. अध्यापक यह सुनिश्चित करेगा कि छात्र सही संदर्भ में सही उच्चारण सहित शब्दों का प्रयोग कर रहे हैं एवं सही वर्तनी में लिख रहे हैं।	१. विभिन्न प्रकार के अभ्यासों द्वारा मूल्यांकन किया जायेगा। जैसे– * शब्दों में अक्षरों की रिक्ति पूर्ति। * वाक्यों में शब्दों की रिक्ति पूर्ति * शब्द और अर्थ का मिलान।

कक्षा - VII

व्यवहारपरक उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, विधि युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन विधि
संरचनाएँ (स्ट्रक्चर्ज़) १. स्ट्रक्चर्ज़ के शिक्षण अधिगम के उद्देश्य कक्षा–७ में कक्षा–६ के समान ही रहेंगे। २. पढ़ाए गए नए स्ट्रक्चर्ज़ को समझना। उन्हें नई परिस्थितियों में मौखिक एवं लिखित रूप से प्रयोग करना।	**कक्षा 7 :** संरचनाएँ (स्ट्रक्चर्ज़) 1. Questions beginning what / when / which and answer. **e.g.** When will the teacher come? She will come at a quarter past nine. When were you born? I was born on 1st July 1989. Which book is Gita's? The book on the table is Gita's. 2. Use of one (Pronoun) All these/those/ the/Both these/those/the Questions and answers. **e.g.** Which book is yours the, black one or the red one? The black one (is mine) All these flowers are yellow. Both these cups are dirty. 3. Use of (habitual) present tense Positive & Negative) **e.g.** John goes to Church every Sunday. We don't go to the school on Sundays. (a) to like + object **e.g.** I like ice-cream. I like sweets too.	कक्षा ७ में भी कक्षा ६ की ही तरह अधिगम प्रक्रिया व तकनीकों का प्रयोग होगा। शनै:-शनै: चित्रों के स्थान पर शाब्दिक संदर्भ अधिक होते जायेंगे। संदर्भों के आकार व जटिलता में भी वृद्धि आयेगी। अभ्यास में भी नॉन मिकैनिकल ड्रिल अधिक की जायेंगी।	१. मूल्यांकन विधि पूर्व की ही भाँति। २. स्ट्रक्चर्ज़ का मूल्यांकन गद्य, पद्य, कहानी, संवाद, निबन्ध पढ़ाते समय भी प्रश्नोत्तर विधि से किया जायेगा। ३. चित्रों व शाब्दिक प्रसंगों व संदर्भों में छात्र / छात्राएँ उनका अनुप्रयोग कर सकते हैं, इसका मूल्यांकन भी प्रश्नोत्तर विधि से किया जायेगा। रोल प्ले व खेलों द्वारा भी किया जायेगा।
	4. Use of questions with do/does (what/ when/where) and short answers (Positive/Negative) : **e.g.** Do you live in Allahabad? Yes, I do. Does Sita like guavas? No, she doesn't. Where do they go on Tuesday? They go to the temple. What does manjeet like? He likes toys. 5. Use of ordinal numbers/of/first/last/next and before/after : **e.g.** January is the first month of the year. May is the fifth month of the year. Last month was June, Next month will be August. Monday comes before Tuesday. Tuesday comes after Monday.	संख्या, माह एवं सप्ताह के दिवसों को सिखाने के लिये कैलेन्डर का प्रयोग किया जायेगा।	

	6. Use of countable/uncountable nouns, some/any and introductory there- Question and answer. **e.g.** Is there any water in the bottle? Yes, there is some water. No, there isn't any water. How may boys are in this picture? There are five boys in this picture. 7. Use of have/has (possession)/ negative/ positive/statements/questions. **e.g.** I have two sisters. Rahim has three brothers. Have you got a car? No, I haven't. (got) Has Sarita a house? Yes, She has. (got) 8. Use of someof/any of/none of/of (measures) and will have **e.g** Some of the boys have pencils but none of them have pens. Have any of them got rubbers? Alok has two kgs. of grapes. I haven't got any time today, but I will have some tomorrow. 9. Use of had (past tense of to have) statements (Positive/Negative) questions and answers?short answers : **e.g.** King Dasharatha had four sons. Mitali didn't have a scooter last year. Did she have a bicycle last year? Yes, she had. (a) Listen to/speak to / look at : **e.g.** She listened to the radio programme last evening. First, look at the black-board. 10. Use of for (purpose) **e.g.** The almirah is for clothes. (a) with (instrument) can... can not : **e.g.** I can touch the floor with my hands but I cannot touch the ceiling. (b) It (for weather/time : **e.g.** It is very hot today. It is 4, O'clock, (c)One.......of.......the other/another : **e.g.** One of these pens is mine, but the other is not mine. That mango is bad. Take another. 11. Use of some of.........the others **e.g.** Some of the boys learn Science, the others don't. (a) Some thing/any thing/nothing/ every thing : **e.g.** Do you have anything in your hand? Yes, I have something in my right had but I have nothing in my left hand. (b) Somebody/any body/ nobody/ everybody : **e.g.** Has anybody got a pen? Everybody has got a pen but nobody has got a pencil.	नित्य प्रति के क्रियाकलापों में अध्यापक स्वयं ही इन संरचनाओं का प्रयोग करेगा। कक्षा में उपलब्ध वास्तविक वस्तुओं की सहायता से इन स्ट्रक्चर्ज़ का अभ्यास कराया जा सकता है।	

	(c) Except/made of : e.g. Five chairs are made of wood. One chair is made of plastic. All chairs except one are made of wood.		
	12. Use of Direct and Indirect objects (with verbs give, send, show and bring) : e.g. He gave me ten rupees. He gave ten rupees to me. Mohan called a taxi for Lata. Mohan called Lata a taxi.? much/many/a lot of/a little/a few (statements and questions) e.g. How much money do you have? I have a lot of money. How many students are there in the classroom? There are a few students (in the class room) How much does this book cost? It costs twenty rupees.	मात्रा सूचक एवं संख्या सूचक वस्तुओं की सहायता से इस संरचना का अभ्यास किया जायेगा।	
	13. Use of have/has (habitual) with always/ often/sometimes/never/how many times: e.g. I have a bath always in the morning. How many times a week do you play cricket? I often play cricket but Mohan never plays. Sometimes Ramu also goes with me.	दैनिक दिनचर्या के आधार पर इस संरचना का अभ्यास कराया जायेगा।	
	14. Use of near, not far (from), a long way (from), how far?, how old?, how high? : e.g Kanpur is near Allahabad. Agra is not far from Delhi. How far is your house from the Station? It is a long way. How old are you? How high is that building?		
	15. Use of most, more..........than/ fewer.....than/less.....than(countable and uncountable) : e.g. There is more water in Moti's glass than in Rita's. There is less water in Rita's than in Moti's. There are more books on the rable than on the stool. There are fewer books on the stool than on the table. Most of the books are in English. (a) Some more of/Any more of : e.g. Please give some more of these toys. Have you got any more of that sugar?		
	16. Use of comparative and superlative degrees : e.g. Dinesh is taller than Mukesh. Mahesh is not as tall as Dinesh. Gita is wiser than Zubeda. Mary is wiser than Geeta. Who is the wisest?	इस संरचना का संबोध कराते समय 'more than' या विशेषण में 'er' द्वारा संरचना का प्रयोग होगा। इसे स्पष्ट करते हुए अभ्यास कराना होगा। Superlative degrees पढ़ाते समय 'The article' के प्रयोग पर विशेष ध्यान दिया जायेगा।	

	Mary is wisest of all. 17. Use of about(talk/write/hear) **e.g.** What are they talking about? They are talking about a book. (a) So(therefore) : **e.g.** Ragini was sick so she was absent. (b) wait for & ask for(some one/something) : e.g. Rohit asked for a cup of tea. Manu waited for Richa. **शब्दावली के प्रस्तावित क्षेत्र** : सक्रिय – ६०० पहचान स्तर – १०० १. कक्षा ६ तक प्रस्तवित क्षेत्रों के शब्दों का विस्तार। २. अपने आस-पास के वातावरण में उपलब्ध शब्दों का विस्तार। ३. कक्षा में पढ़ाये जाने वाले अन्य विषयों में प्रयोग किए जाने वाले कतिपय महत्वपूर्ण शब्द। ४. सम्प्रेषण कौशलों में सहायक शब्द एवं वाक्यांश। पूर्व संदर्भित संरचनाओं (Structure) एवं शब्दावली पर आधारित पाठों की कुल संख्या – १७ गद्य पाठ – ७ संवाद एवं कथोपकथन – २ लघुकथा – ३ पद्य – ५		

कक्षा - VIII

व्यवहारपरक उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, विधि युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन विधि
संरचनाएँ (स्ट्रक्चर्ज़) १. कक्षा–६ व कक्षा–७ की ही भाँति। २. पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त भी नए प्रसंगों में भी सीखे गए स्ट्रक्चर्ज़ को समझ सकें। मौखिक व लिखित रूप में प्रयोग कर सकें।	कक्षा ८ : 1. Use of simple present, present continuous, simple past etc. with the verbs know, remember, understand and want with object : **e.g.** Alka knows Sonia very well I want a glass of water, please. Veena often remembers her friend Sheela. Ajai does not understand Maths well. 2. Use of at and from.........till(point of time) with past and future continuous. **e.g.** What were you doing at 4,O'clock yesterday evening? I was playing at that time. What were you doing from 7,O'clock till 9,O'clock in the morning? I was studying. 3. Use of present perfect continuous tense: **e.g.** How long have you been in the library? I have been there for three hours. I have been there sine 2,O'clock. 4. Use of future with intention (going to) : **e.g.** I am going to draw a picture. (a) Present perfect tense with away, already, yet, not yet, just : **e.g.** My friend has gone away. I have already had lunch. Has the class started? It has just started/It has not started yet. 5. Use of present perfect and simple past (in contrast) **e.g.** I wrote a letter yesterday. I have written another letter today. (a) Let's (propose), gerund (in object position), without : **e.g.** Let's read a story book. I like reading story books but I can't read a book without my glasses. 6. Use of too(excessively), too much/too many/not enough/why.........because : **e.g.** Why can't you buy a scooter? Because it is too expensive for me. Don't you have enough money? Why did Meeta get so less marks? Because she committed too many mistakes. Why are you not taking this soup? Because there is too much salt in it.	१. पूर्व की ही भाँति। स्तरानुसार नए संदर्भ जटिल, विस्तृत व शाब्दिक अधिक होंगे। संदर्भ निर्माण में भी शब्दावली का विस्तार होगा। २. अर्थपूर्ण संदर्भों में नए स्ट्रक्चर्ज़ प्रस्तुत किए जायेंगे व उनका पुनरावृत्ति द्वारा अभ्यास किया जाएगा। ३. इस स्तर पर शाब्दिक प्रसंग व संदर्भ अधिक होंगे। 'Present perfect' पढ़ाते समय संदर्भ 'Present continuous' से बनाया जायेगा। जैसे– I am cutting the paper. I have cut the paper.	१. मूल्यांकन पूर्व की ही भाँति किया जायेगा। २. नए-नए संदर्भों में सीखे गये स्ट्रक्चर्ज्ज़ को प्रयोग कराया जायेगा। ३. रोल प्ले व भाषायी खेलों का प्रयोग किया जायेगा।

	7. Use of Beside (at the side of)/across/ through : **e.g.** Ruchi's house is beside the river. They walked across the street. the bus went through the bridge. (a) Used to (habit in the past) could (not) (ability in the past) : **e.g.** Kapil Dev used to play cricket ten years ago but last year he could not play because of his poor health. 8. Use of either........or/neither.........nor/ do......make : **e.g.** What are you doing? I am neither studying nor playing. I am making a doll. Please, make a doll either for me or for my sister. 9. Use of questions beginning How......?, adverbs of manner and adverbial pharases : **e.g.** How did you come from Shimla? I came by train. How was the train moving in the tunnels. It was moving slowly. How was it moving up the hill? It was moving more slowly than before. 10. Use of earlier, later, comparisons(not) as....as, like (similar to) and present participle : **e.g.** Rahim reached the hospital earlier than Mahesh but later than Raju. Rani does not skip as fat as Manju. Her face is like the moon. I saw a falling star. 11. Use of infinitives and look/feel/taste/ seem : **e.g.** He went to the shop quickly to buy the medicine. I love to see a smiling face. He wants to become an engineer. It looks that Suman finds English difficult to learn. I wanted to go to the market. It was late. My mother did't let me go. 12. Use of Reported speech(present tense): **e.g.** Anu — "It is very cold today." "What does Anu say?" She says that it is very cold today. 13. Use of ask/tell some one to, how to, what to, where to and when to + (Infinitive) **e.g.** I asked my friend to help me. She told me how to make tea. Mohan asked his friend to tell him what to do He told him to make a picture then he asked when to make it where to make it.	चित्रों की सहायता से इस संरचना का संबोध स्पष्ट कराया जायेगा। 'Reported speech' की संरचना को सिखाने एवं अभ्यास कराने में गुब्बारा तकनीक अत्यंत उपयोगी होगी।	

	14. Use of Reported speech (simple past and simple future) : **e.g.** Prem- "I did not go to the school." Renu- "What does Presm say?" She says she did not go to the school. Vijay- "My friend Vinaya will show him me a film" "What does Vijaya say?" He says his friend Vinaya will show him a film. (a) know/hope/think/besure/ believe + (that) : **e.g.** Are you sure it is 12,O'clock? No, I am not sure but I think it is. (b) Passive voice (past and future) : **e.g.** Kanti was bitten by a seake. Her house was built many years ago. When we go far a picnic, a bus will be hired. 15. Use of introductory it + adjective to + Infinitive **e.g.** It is difficult to lift this bag because it is very heavy. (a) It is + adjective for noun (pronoun) to + Infinitive : It is not easy for you to learn French. (b) about (meaning approximately): **e.g.** He came here at about 6,O'clock. The train will depart in about two hours. 16. Use of may (possibility), if (conditional) and as soon as and before (clause of time) : **e.g.** The sky is covered with clouds. It may rain. If it rains, you may come with me. When you come with me, I will drop You at your place. As soon as we complete our work, we will leave. I will finish writing before the bell rings. 17. Use of when (simultaneously after) : **e.g.** When the teacher came into the class, the boys stood up. (a) e.g. While I was reading she was writing. While Mini was singing the doorbell rang. (b) Till (until) : **e.g.** the child did not stop weeping till his mother gave him milk. 18. Use of have to/had to and who/who(m) : **e.g.** If you want to succeed, you will have to work hard. She had a large family. She had to cook for them. This is the girl who got first prize. This is the woman who(m) you were looking for.	१. इस संरचना को गुब्बारे की तकनीक द्वारा सिखाया जा सकता है। २. इसके ऐसे संदर्भ बनाये जायेंगे। जिसमें कर्त्ता (subject) अपेक्षाकृत कम महत्वपूर्ण रहेगा। 'Conditional clause' — If conditions पढ़ाने के लिये संदर्भ बनाते समय दो घटनाओं को लिया जायेगा जो एक दूसरे से प्रभावित होंगी। 'While' संरचना सिखाते समय दो ऐसी घटनायें जो एक साथ हो रही हैं या होना सम्भव है का उदाहरण लिया जायेगा।	

	19. Use of which, that (relative) : **e.g.** There is a parrot which comes to our mango tree daily. The woman that is wearing pink saree is my friend. Reported Speech (simple past, simple present, present continuous and future continuous) : **e.g.** Arti — "I like driving a car." Anjali — "What did Arti say?" She said she liked driving. Arti — "I am going to the station." "What did Arti say?" She said that she was going to the station. Chhaya — "I will go home soon." Mukta — "What did Chhaya say?" Lata — "Chhaya said that she would go home soon." **शब्दावली के प्रस्तावित क्षेत्र :** सक्रिय – ८५० पहचान स्तर तक – १५० १. कक्षा ६ व ७ तक प्रस्तावित क्षेत्रों के शब्दों का विस्तार। २. खेलों, त्योहारों, उत्सवों एवं सांस्कृतिक क्रियाकलापों से सम्बद्ध शब्द। ३. विज्ञान एवं तकनीकी से संबंधित सामान्य शब्द। ४. सम्प्रेषण कौशलों एवं वार्तालाप की विशिष्ट शब्दावली। पूर्व संदर्भित संरचनाओं (Structure) एवं शब्दावली पर आधारित पाठों की संख्या – १९ गद्य पाठ – ९ संवाद एवं कथोपकथन – २ लघुकथा – ३ पद्य – ५	गुब्बारा तकनीक के साथ-साथ कक्षा में छात्र / छात्राओं द्वारा विभिन्न पात्रों का अभिनयन कराकर 'Reported Speech' का अभ्यास कराया जायेगा।	

पाठ्यक्रम

संस्कृत (कक्षा ६, ७, ८)

शिक्षण के सामान्य उद्देश्य –

1. संस्कृत भाषा के अध्ययन के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करना।
2. संस्कृत भाषा के अध्ययन द्वारा राष्ट्रीय एकता की भावना तथा सांस्कृतिक मूल्यों का विकास करना।
3. संस्कृत भाषा से संबंधित सुनने (सुनकर समझने), बोलने पढ़ने तथा लिखने के कौशलों का विकास करना।
4. संस्कृत श्लोकों का शुद्ध उच्चारण के साथ पाठ करना तथा उनका अर्थ समझना।
5. मातृभाषा हिन्दी के सरल वाक्यों का संस्कृत में तथा संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद करने की क्षमता विकसित करना।
6. अपने भावों एवं विचारों को संस्कृत भाषा में व्यक्त करने का कौशल विकसित करना।
7. शब्द-भंडार की अभिवृद्धि।
8. संस्कृत के कतिपय साहित्यकारों एवं उनकी कृतियों से छात्रों को परिचित कराना।

कक्षा -6 संस्कृत

क्रमांक	व्यवहारपरक उद्देश्य	प्रकरण / उपप्रकरण	शिक्षण अधिगन प्रक्रिया	मूल्यांकन प्रविधि
१.	* ध्यान पूर्वक सुनना। * संस्कृत भाषा के वर्णो और शब्दों को सुनकर ध्वनियों की पहचान करना। * श्रुत सामग्री के विषय को एमझना तथा महत्वपूर्ण तथ्यों को समझना। * संस्कृत के श्लोक सुनकर उसका अर्थ ग्रहण करना। * संस्कृत में दिये गये आदेशों, निर्देशों एवं पूछे गये प्रश्नों को सुनकर समझना तथा तदनुसार व्यवहार करना।	**सुनना –** * श्लोक * गद्य * सुभाषित * कथा * संवाद	* शिक्षक द्वारा श्लोकों का शुद्ध उच्चारण करते हुए सस्वर पाठ। * गद्य अनुच्छेद का उचित उतार-चढ़ाव, विराम चिह्न, बलाघात आदि के साथ आदर्श वाचन। * उचित हाव-भाव के साथ कथा सुनाना। * आडियो कैसेट्स (रिकार्डेड श्लोक) का अनुश्रवण। * शिक्षक द्वारा रोचक स्थानीय परिवेश से संबंधित विषय जैसे– घर, विद्यालय, गाँव, मेला आदि विषयों पर छात्रों का वर्णन सुनना। * संस्कृत में चुटकुले एवं पहेलियाँ सुनाना।	
२.	* श्लोक एवं अनुच्छेद का शुद्ध उच्चारण के साथ अनुकरण वाचन। * परिचित, सुनी हुई कहानी के सारांश को संस्कृत में बोलना। * अपने सहपाठियों के साथ संस्कृत में वार्तालाप करना। * कण्ठस्थ श्लोकों, सुभाषितों को उचित गति एवं शुद्ध उच्चारण के साथ बोलना।	**बोलना –** * श्लोक * गद्य * वार्तालाप * वाद-विवाद * कहानी	* कठिन शब्दों को श्यामपट पर लिखकर छात्रों द्वारा अनुकरण वाचन करवाना। * परिचित कथा को छात्रों से क्रमानुसार बोलवाना। * स्थानीय परिवेश से संबंधित विषयों पर विद्यार्थियों में परस्पर संस्कृत में वार्तालाप। * छात्रों द्वारा कण्ठस्थ श्लोकों, गीतों, सुभाषितों को सुनना। * छात्रों से संस्कृत में पहेलियाँ सुनना।	* अर्थसहित श्लोक सुनना। * कठिन शब्दों के अर्थ पूछना। * छात्रों से सन्धि विच्छेद कराकर सन्धि के नाम पूछना। * परिचित स्थिति देकर संस्कृत में वार्तालाप करवाना।
	* संस्कृत के श्लोकों, वाक्यों तथा अनुच्छेदों का उचित बलाघात के साथ सस्वर वाचन करना। * अर्थबोध के साथ सरल संस्कृत वाक्यों एवं श्लोकों को सस्वर पढ़ना। * छोटे-छोटे प्रश्नों के उत्तर पाठ्य पुस्तक में देखकर सरल संस्कृत में देना। * संस्कृत के गद्यांशों तथा पद्यांशों का अपनी मातृभाषा में अर्थ बताना।	**पढ़ना (वाचन) –** * श्लोकपरक पाठ एवं गद्यपरक पाठ	* शिक्षक द्वारा श्लोकों एवं अनुच्छेदों का आदर्श वाचन। * छात्रों द्वारा सामूहिक एवं अनुकरण वाचन। * छात्रों द्वारा व्यक्तिगत वाचन। * कठिन शब्दों को श्यामपट पर लिखकर उच्चारण अभ्यास। * श्लोकों तथा अनुच्छेदों में आये संधियुक्त पदों का विग्रह, विभक्ति एवं वचन का अभ्यास। * श्लोक एवं अनुच्छेद-वाचन की प्रतियोगिता करवाना।	* शमपट पर वाक्य लिखकर उन्हें पढ़वाना * श्यामपट पर वाक्य लिखकर उनमें से अव्यय छँटवाकर पढ़वाना। * श्यामपट पर संधियुक्त पदों को लिखकर उनका विग्रह करवाकर पढ़वाना। * श्लोकों एवं अनुच्छेदों को पढ़वाना।

	* संस्कृत वाक्यों को सुनकर शब्द लिखना। * विराम चिह्नों का प्रयोग यथास्थान करते हुए लिखना। * संधियुक्त पदों को पहचान कर लिखना। * संस्कृत में वाक्य रचना करना।	**लिखना–** * लेखन तथा रचना कार्य * पाठ्यपुस्तक के अंशों से सुलेख, अनुलेख एवं श्रुतलेख	* शिक्षक द्वारा पाठ्यपुस्तक में आये श्लोकों एवं गद्य खण्डों का आदर्श वाचन एवं विद्यार्थियों द्वारा श्रुतलेख (प्रत्येक पाठ का) * शिक्षक द्वारा निर्देशित अनुच्छेद अथवा श्लोक का अनुलेखन। * परिचित विषय लेकर विद्यार्थियों की सहभागिता से वाक्य रचना कर श्यामपट लिखना। * परिचित स्थित/विषय जैसे– घर, कक्षा, विद्यालय, मेला, त्योहार देकर छात्रों से दस वाक्य लिखने को कहना। * चित्र देखकर विद्यार्थियों से कथा अथवा दस वाक्य लिखवाना।	* श्रुतलेख लिखवाकर विद्यार्थियों द्वारा परस्पर मूल्यांकन करवाना। * शिक्षक द्वारा पाठ में आये हुए कठिन शब्दों का वाचन एवं छात्रों से लेखन करवाकर जाँच। * छात्रों द्वारा पाठ में आये संधियुक्त पदों को विग्रह कर लिखना। * किसी भी धातु के रूप को लिखवाना। * दिये गए विषय/चित्र पर वाक्य रचना करवाना।
संस्कृत व्याकरण	* शब्द रूपों को समझकर उनका सही प्रयोग करना।	शब्दरूप– अकारान्त पुल्लिंग–नर, वृक्ष, आकारान्त स्त्रीलिंग–गंगा, लता अकारांत नपुंसकलिंग–पुस्तक, वन।	* शिक्षक द्वारा पाठों में प्रयुक्त शब्दरूपों को श्यामपट पर लिखकर उनके सही प्रयोग की जानकारी देना तथा उनका अभ्यास करवाना।	* विद्यार्थियों को कुछ शब्दरूप देकर नोटबुक में लिखवाना। * कार्डों में लिखे रूपों की पहचान करवाना।
	* पाठ्य-पुस्तक में प्रयुक्त संज्ञा, सर्वनाम तथा क्रियापदों का प्रयोग करना।	सर्वनाम– किम्, सर्व शब्द के रूप तीनों लिंगों में। अस्मद्, युष्मद् का सभी विभक्तियों एवं वचनों में प्रयोग।	* श्यामपट पर सर्वनाम शब्दों को लिखकर उनके प्रयोग को बताना व संज्ञा के स्थान पर सर्वनाम का प्रयोग करते हुए वाक्य बनवाना।	* वाक्यों व अनुच्छेदों में से सर्वनाम शब्दों को छँटवाना व उनका प्रयोग करते हुए नवीन वाक्य करवाना।
	* छात्रों द्वारा विशेषण को समझकर संज्ञा के साथ उनका सही प्रयोग करना।	विशेषण– गुणवाची जैसे– सुंदर, प्रथमा विभक्ति के तीनों वचनों में प्रयोग	* पाठ में प्रयुक्त विशेषणों को छाँटकर श्यामपट पर लिखना तथा उनका अन्य वाक्यों में प्रयोग करना।	* पाठ से विशेषण छँटवाना। * विशेषणों का प्रयोग करते हुए वाक्य रचना करवाना।
	* संख्याओं को समझकर संस्कृत में उनका प्रयोग करना। * विद्यार्थियों द्वारा कारक/विभक्तियों के चिह्नों को समझ कर उनका सही प्रयोग करना।	संख्यावाची–१ से ७० तक एकशत, द्विशत कारक– * कारक के चिह्नों का ज्ञान और उनका प्रयोग।	* संख्याओं का चार्ट कक्षा में टाँगकर बच्चों से अभ्यास करवाना। * शिक्षक द्वारा पाठ में प्रयुक्त कारक शब्दों को श्यामपट पर लिखना तथा उनका अर्थ बतलाना।	* संख्याओं को संस्त्रत में पूछना। * शिक्षक द्वारा पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त कारकों को पूछना। * शिक्षक द्वारा नवीन परिस्थिति में कारक/विभक्ति का प्रयोग करवाना।

D- 11052
23-04-2001

			* शिक्षक द्वारा पाठ में आये हुए कारकों का भिन्न स्थितियों में प्रयोग बतलाना व उनका अभ्यास करवाना।	
	* विद्यार्थियों द्वारा लिंग, वचन एवं पुरुषों का सही प्रयोग करना।	* लिंग, वचन एवं पुरुषों का प्रयोग।	* शिक्षक द्वारा पाठ में प्रयुक्त शब्दों को श्यामपट पर लिखकर उनमें लिंग, वचन एवं पुरुष बतलाना। * अभ्यास हेतु विद्यार्थियों से पूछना तथा उन्हें नोटबुक में लिखने को कहना। * शिक्षक द्वारा खेलविधि अपनाते हुए बच्चों को क्रम से विभक्तियों के रूप (क्रम) में खड़ा करवाकर दी गयी विभक्ति के अनुसार रूप बुलवाना। * विभिन्न विभक्तियों को कार्ड में लिखकर छात्रों को समूह में विभाजित कर कार्ड बांटना तथा छात्रों से उनके कार्ड में अंकित विभक्ति बुलवाना।	* शिक्षक द्वारा पाठ में प्रयुक्त शब्दों के लिंग, वचन व पुरुष पूछना व विद्यार्थियों से उन्हें श्यामपट पर लिखवाना। * पाठ में प्रयुक्त विभक्तियों को पूछना। * विभक्ति कार्ड के प्रयोग द्वारा मूल्यांकन।
	* छात्रों द्वारा धातुरूपों को समझकर उनके विभिन्न लकारों का सही प्रयोग करना।	धातुरूप– लट्, लोट्, विधि लिंग, लृट् तथा लङ् लकार में निम्नलिखित धातुओं के रूप– भू, पठ, खेल, गम्, रूप– भू, पठ्, खेल गम्, अस, कृ, नम्, पा(पिब्)	* पाठों में प्रयुक्त क्रियापदों को श्यामपट पर लिखकर विद्यार्थियों से अभ्यास करवाना। * क्रियापदों के सही प्रयोग की जानकारी विद्यार्थियों को देना। * शिक्षक द्वारा भिन्न-भिन्न परिस्थितियाँ निर्देशित कर विद्यार्थियों की सहभागिता से इन क्रियारूपों का प्रयोग।	* छात्रों को किसी एक धातु का रूप देकर दूसरी धातु के रूप में प्रयोग करने को कहें। * किसी एक लकार में प्रयुक्त वाक्य को बताकर अन्य लकार में परिवर्तित करवाएँ।
	* छात्रों द्वारा अव्यय को समझकर उनका प्रयोग करना।	अव्यय – श्वः, ह्यः, ततः यतः, पश्चात्, अधः, उपरि, प्रायः यद्यपि, परन्तु, दूरम्।	* पाठ में प्रयुक्त अव्यय पदों को छाँटकर उन्हें श्यामपट पर अर्थसहित लिखना तथा उनका अन्य वाक्यों में प्रयोग।	* वाक्यों में प्रयुक्त अव्यय पदों को पूछना। * श्यामपट पर नये वाक्य लिखाकर अव्यय छँटवाना। * अव्यय का प्रयोग करते हुए वाक्य रचना कराना।
	* विद्यार्थियों द्वारा संधियों के लक्षणों को समझकर संधि एवं संधि-विच्छेद करना। * दीर्घ एवं गुण संधियुक्त पदों को पहचानना।	संधियों के लक्षण एवं उदाहरण– दीर्घ संधि (अकः सवर्णे दीर्घः) गुण संधि (आदगुणः)	* पाठ में प्रयुक्त संधियुक्त पदों को छाँटकर श्यामपट पर उनका विग्रह करना। * विग्रहयुक्त पदों की संधि का अभ्यास एवं उसके लक्षण को स्पष्ट करते हुए नाम बताना।	* पाठ में प्रयुक्त संधियुक्त पदों को श्यामपट पर लिखकर उनमें विच्छेद व संधि करना। * पटी चार्ट (स्ट्रिप चार्ट) की सहायता से दिये गए शब्दों में से दो शब्दों को छाँटकर उनमें संधि करना।

अध्यापक हेतु आवश्यक समर्थन–

संस्कृत शिक्षण को सुगम, सुग्राह्य एवं विधिपरक बनाने के लिए शिक्षक द्वारा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के अन्तर्गत प्रयोग हेतु श्रव्य, दृश्य सामग्री उपलब्ध करायी जाए। शिक्षकों को समय-समय पर पुर्नबोधात्मक प्रशिक्षण दिया जाए।

पाठों की संख्या एवं उनके प्रकार–

१. गद्य पाठ : १६ पाठ जिसमें चित्रपाठ, कथापाठ, निबंधपाठ, वर्णनपाठ, संवादपाठ शामिल होंगे।

२. पद्य पाठ : ०८ पाठ जिसमें सूक्ति, सुभाषित, नीतिविषयक श्लोक, बालगीत संकलित होंगे।

विषयवस्तु क्षेत्र–

१. परविश से संबंधित विषय जैसे– घर, विद्यालय, बगीचा, पड़ोस, मेरा गाँव, खेल, पालतू पशु-पक्षी, त्यौहार, मेला आदि लिये जायें।

२. पंचतंत्र, हितोपदेश एवं पौराणिक कहानियों को लिया जाय।

३. पाठों का विकास इस प्रकार किया जाये कि मानवीय मूल्य यथा सत्य, अहिंसा, त्याग, परोपकार, सहानुभूति, क्षमा, प्रशंसा, अपरिग्रह आदि विकसित किये जा सकें।

४. मद्यनिषेद्य, बालश्रम तथा विकलांगों के प्रति समभाव के साथ ही दस केन्द्रिक घटकों का स्तरानुसार समावेश पाठों में किया जाय।

५. रुचिपूर्ण एवं आनन्ददायी प्रसंगों को लिया जाय।

कक्षा –7 संस्कृत

क्रमांक	व्यवहारक उद्देश्य	प्रकरण / उपप्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया	मूल्यांकन प्रविधि
१. सुनना	* संस्कृत के श्लोकों को सुनकर उनके भाव को समझना। * श्लोकों को सुनकर आनन्दानुभूति करना। * संस्कृत अनुच्छेदों को भावग्रहण करते हुए सुनना। * श्रुत सामग्री के मुख्य भाव को समझना तथा विचारों व तथ्यों को समझना। * संस्कृत में दिये गये आदेशों, निर्देशों का पालन कर तदनुरूप व्यवहार करना।	* श्लोक-पाठ * वार्तालाप * कथा * आदेश, निर्देश	* शिक्षक द्वारा श्लोकों एवं सूक्तियों की आदर्श प्रस्तुति। * उचित हाव-भाव के साथ कहानी सुनाना। * कठिन शब्दों को श्यामपट पर लिखकर उनका अर्थबोध कराना। * आडियो कैसेट्स का अनुश्रवण। * अध्यापक द्वारा परिचित विषयों का संस्कृत में वर्णन। * गीत एवं पहेलियाँ सुनाना।	
२. बोलना	* संस्कृत श्लोकों, सुभाषितों को सुनकर भावग्रहण करते हुए अनुकरण वाचन। * परिचित एवं सुने हुए वर्णन को अपने विचारों में व्यक्त करना। * सुनी हुई कहानी को अपने शब्दों में सुनना। * विभिन्न स्थितियों में संस्कृत में वार्तालाप करना। * संस्कृत प्रश्नों का संस्कृत में उत्तर देना। * कण्ठस्थ श्लोकों, सुभाषितों को उचित गति, हाव-भाव के साथ सुनाना। * कण्ठस्थ शब्दरूप एवं धातुरूप को सुनाना। * चित्रों को देखकर मौखिक वाक्य संरचना करना।	* श्लोक-पाठ * गद्य * वार्तालाप * वाद-विवाद * कहानी	* कठिन शब्दों को श्यामपट पर लिखकर उनका उच्चारण अभ्यास। * छात्रों से सुनी गयी कहानी के सारांश को संस्कृत में सुनना। * कोई स्थिति देकर छात्रों के मध्य संस्कृत में वार्तालाप करवाना। * छात्रों से कण्ठस्थ श्लोक, सुभाषित को सुनना। * संस्कृत की पहेलियों को सुनना। * श्लोक, गीत सुनाने की प्रतियोगिता का आयोजन।	* कण्ठस्थ श्लोकों एवं कहानियों को सुनना। * छात्रों से संस्कृत में प्रश्न पूछकर संस्कृत में उत्तर पूछना। * कण्ठस्थ शब्द रूपों एवं धातु रूपों को सुनना। * सुनी हुई कहानी के सारांश को सुनना। * चित्र दिखाकर छात्रों से चित्र से संबंधित दस वाक्य बोलने को कहना।
३. पढ़ना	* संस्कृत के वाक्यों एवं अनुच्छेदों का शुद्ध उच्चारण, उचित गति, प्रवाह एवं स्वर के साथ वाचन करना। * श्लोकों का शुद्ध एवं भावानुकूल ढंग से सस्वर वाचन करना। * संस्कृत में अनुच्छेद का मौन वाचन कर उसमें निहित भावों को समझना।	* श्लोक * सुभाषित * गद्य पाठ	* शिक्षक द्वारा वाक्यों, अनुच्छेदों एवं श्लोकों का आदर्श वाचन। * छात्रों द्वारा सामूहिक अनुकरण वाचन। * छात्रों द्वारा व्यक्तिगत अनुकरण वाचन तथा शिक्षक द्वारा उनकी अशुद्धियों को दूर करना।	* पाठ्यपुस्तक के श्लोकों एवं अनुच्छेदों को पढ़वाना। * पाठ्यपुस्तक से इतर सामग्री को पढ़वाना। * पाठ में प्रयुक्त धातुरूपों का चार्ट बनवाकर छात्रों से पढ़वाना।

	* संस्कृत सूक्तियों एवं सुभाषितों का संकलन करना।		* श्यामपट पर श्लोक लिखकर छात्रों से क्रमानुसार पढ़वाना व अर्थ स्पष्ट करना। * पाठ में प्रयुक्त व्याकरण के अंश जैसे–संधि, लिंग, वचन, क्रिया एवं रूपों को श्यामपट पर लिखकर छात्रों से पढ़वाना। * छात्रों द्वारा संकलित सूक्तियों एवं सुभाषितों को उनसे पढ़वाना तथा उनके अर्थ बताना।	* छात्रों द्वारा संकलित श्लोकों एवं सुभाषितों को सुनना।
४. लिखना	* शुद्ध, स्पष्ट एवं सहज पठनीय रूप में श्लोकों, वाक्यों एवं अनुच्छेदों को लिखना। * अनुस्वार, विसर्ग, हलन्त, विराम चिह्न आदि का सही प्रयोग करते हुए शुद्ध एवं स्वच्छ ढंग से लिखना। * परिचित प्रसंग पर संस्कृत में छोटे-छोटे वाक्य लिखना। * पठित सामग्री में संस्कृत में पूछे गए प्रश्नों का संस्कृत में उत्तर लिखवाना।	* सुलेख हेतु पाठ्यपुस्तक के उपयुक्त अंश। * पाठ्यपुस्तक के अंशों से अनुलेख। * श्रुतलेख हेतु स्तरानुकूल अनुच्छेद एवं अंश। * हिंदी से संकृत में अनुवाद हेतु प्रासंगिक एवं उपयुक्त वाक्य।	* कक्षा में पट्टिकाओं पर लिखी सूक्तियों को पढ़वाना। अध्यापक द्वारा निर्दिष्ट अंशों का छात्रों द्वारा सुलेख एवं अनुलेख। * श्रुतलेख लिखवाना। * सरल तथा छोटे वाक्यों का छात्रों द्वारा अनुवाद। * पाठगत प्रश्नों को श्यामपट पर लिखकर छात्रों से उनके उत्तर संस्कृत में लिखवाना। * शिक्षक द्वारा किसी रोचक विषय का चयन कर छात्रों की सहायता से वाक्य रचनाकर श्यामपट पर लिखना और लिखवाना। * सूक्तियों एवं सुभाषितों को पट्टिकाओं पर लिखवाकर कक्षा में लगवाना। * पढ़ी / सुनी गयी कथा को चार-पाँच वाक्यों में संस्कृत में लिखवाना। * उपसर्ग एवं प्रत्यय देकर उन्हें धातुओं में लगाकर नवीन शब्द लिखवाना।	छात्रों द्वारा लिखे सुलेख, अनुलेख एवं श्रुतलेख की जाँच। * हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद। * किसी परिचित प्रसंग पर संकेतात्मक शब्द देकर वाक्य रचना करवाना। * प्रश्नों के उत्तर संस्स्रत में लिखवाना। * शब्दरूप एवं धातुरूप को श्यामपट पर या नोटबुक में लिखवाना। * संधियुक्त पदों को श्यामपट पर लिखकर छात्रों से नोटबुक में उनका विच्छेद लिखवाना। * उपसर्ग एवं प्रत्ययों को धातुओं में लगाकर उनसे बने शब्दों को लिखना।
व्याकरण	* विद्यार्थियों द्वारा शब्दरूपों को समझकर उनका वाक्यों में सही प्रयोग करना।	कक्षा ६ में पठित व्याकरण की पुनरावृत्ति।	* छात्रों का शब्दरूपों के सही प्रयोग से अवगत कराना तथा शब्दरूप का अभ्यास व शब्दरूप समझकर कण्ठस्थ कराना।	* शब्दरूपों को छात्रों से सुनना। * शब्दरूपों को अभ्यास पुस्तिका पर लिखवाना।

		शब्दरूप * अकारान्त पुल्लिंग – नर * इकारान्त पुल्लिंग – मुनि, कवि * आकारान्त पुल्लिंग – भानु, गुरु * ऋकारान्त पुल्लिुंग –पितृ * आकारान्त स्त्रीलिंग –गंगा * इकारान्त स्त्रीलिंग–मति * ईकारान्त स्त्रीलिंग–नदी * उकारांत स्त्रीलिंग–धेनु * इकारान्त नपुंसकलिंग–वारि * उकारान्त नपुंसकलिंग–मधु सर्वनाम शब्द यत्, तत्, एतद् के रूप सभी लिंगों में	* अनुच्छेदों से सर्वनाम शब्दों को छात्रों के सहयोग से छाँटकर श्यामपट पर लिखना तथा उनके प्रयोग की जानकारी देना।	* सर्वनाम का प्रयोग करते हुए वाक्य रचना।
	* संज्ञा एवं सर्वनाम के अनुरूप विशेषणों का सही प्रयोग करना।	विशेषण– गुणवाची – महत् संख्यावाची– १ से ५ तक की संख्याओं का तीनों लिंगों एवं सभी विभक्तियों तथा वचनों में प्रयोग।	* पाठों में प्रयुक्त गुणवाची एवं संख्या वाची विशेषणों को श्यामपट पर लिखना तथा उनके प्रयोग द्वारा अन्य वाक्यों का निर्माण।	* पाठों में प्रयुक्त गुणवाची एवं संख्यावाची विशेषणों की सूची बनाना।
	* अन्य भाषाओं की भाँति संस्कृत भाषा में संख्याओं से परिचित होकर उनका सही प्रयोग करना।	* एक से नब्बे तक की संख्याओं का ज्ञान। * त्रिशत्, चतुश्शत्, पंचशत् का ज्ञान।	* मौखिक रूप से संस्कृत में गिनती बतलाकर छात्रों से अभ्यास। * छात्रों के सहयोग से गिनती श्यामपट पर लिखाना।	* संस्कृत में संख्याओं को पूछना। * संख्याएँ लिखने को कहना।
	* विद्यार्थी द्वारा कारकों तथा विभक्तियों को समझकर उनका सही प्रयोग करना।	* कारक तथा विभक्तियों का पूर्वापेक्ष्या कुछ विस्तृत ज्ञान।	* पाठ में प्रयुक्त कारक शब्दों को छाँटकर उन्हें श्यामपट पर लिखना तथा उनका अर्थ स्पष्ट करना।	* शब्दों में प्रयुक्त कारक पूछना। * नवीन स्थितियों में कारकों का प्रयोग करना।
	* धातुरूप को समझकर उनका विभिन्न लकारों में सही प्रयोग करना। * शब्द निर्माण में उपसर्ग के महत्व	धातुरूप– निम्नलिखित धातुओं के लट्, लोट्, विधिलिंग, लृट्, तथा लङ लकारों में रूप– दा, वद्, कथ्, वस्।	* शिक्षक द्वारा पाठ में आये क्रियापदों को छाँटकर श्यामपट पर लिखकर उनके प्रयोग की जानकारी देना तथा उनका अभ्यास कराना।	* क्रियापदों को श्यामपट पर लिखकर उनमें प्रयुक्त लकारों को पूछना। * छात्रों को किसी एक धातु के एक लकार में रूप देकर किसी अन्य लकार में चलाने को कहना।

	को समझकर उसका सही प्रयोग करना।	उपसर्ग– * पूर्वपठित एवं उपर्युक्त धातुओं के साथ प्र, अनु, सम्, वि उपसर्गों का प्रयोग।	* पाठों में प्रयुक्त उपसर्गयुक्त शब्दों को श्यामपट पर लिखकर उनके अर्थ बताना। * उपसर्गों के प्रयोग द्वारा नये वाक्य बनवाना।	* श्यामपट अथवा नोटबुक में कुछ उपसर्गों को लिखकर उन्हें धातुओं में लगवाना।
	* शब्द निर्माण में प्रत्ययों के महत्त्व को समझकर उनका सही प्रयोग करना।	प्रत्यय– * क्त, तव्यत्, अनीयर्।	* पाठ में आये प्रत्यांत शब्दों को छाँटकर उनमें निहित प्रत्ययों को बताना। * श्यामपट्ट पर अन्य धातुओं में प्रत्यय प्रयोग का अभ्यास करवाना।	* शब्द देकर उनमें से उपसर्ग छँटवाना। * धातुओं में प्रत्यय लगवाना। * प्रत्ययांत शब्दों में प्रयुक्त प्रत्ययों को पूछना। * उपसर्ग एवं प्रत्यय का अंतर ढूँढ़ना।
	* शब्द रचना में संधि के महत्व को समझकर संधि विच्छेद व संधि करना।	संधि– * वृद्धिरेचि, इकोयणचि, एचोऽयवायाव:।	* संधियुक्त शब्दों को श्यामपट पर लिखकर उनमें विच्छेद एवं संधि कराना। * संधि सूत्रों को श्यामपट्ट पर लिखकर समझाना।	* संधियुक्त शब्दों को श्यामपट पर लिखकर छात्रों को क्रम से बुलाकर उनका विच्छेद करवाना। * संधि का नाम पूछना।

शिक्षक द्वारा अपेक्षित समर्थन–

* शिक्षक प्रशिक्षण (पुर्नबोधात्मक)
* श्रव्य दृश्य सामग्री

पाठों की संख्या एवं उनके प्रकार–

१. गद्यपाठ– १७, जिनमें कथापाठ, निबंधपाठ, वर्णनात्मक पाठ, संवाद पाठ शामिल होंगे।

२. पद्यपाठ– ०९, जिनमें सूक्ति, सुभाषित, नीतिश्लोक, बालगीत शामिल होंगे।

विषयवस्तु क्षेत्र–

१. परिवेश से संबंधित विषय जैसे– घर, विद्यालय, मेला, त्यौहार, कक्षा, पड़ोस, शिक्षक, पालतू पशु-पक्षी, खेल, प्राकृतिक वातावरण आदि लिये जायेंगे।

२. ऐसे पाठ लिखे जाएँ जिनमें जीवन मूल्य जैसे– सत्य, अहिंसा, क्षमा, त्याग, सहयोग, सादगी, सहअस्तित्व, परोपकार, ईमानदारी, अनुशासन, विनम्रता, धैर्य दूसरों का आदर, मित्रता आदि प्रतिपादित हों।

३. पौराणिक कथाएँ, हितोपदेश की कथाएँ, पंचतंत्र की कथाएँ ली जाएँ।

४. बालश्रम, मद्यनिषेध, विकलांगों के प्रति समभाव के साथ ही दस केन्द्रिक घटकों का स्तरानुसार समावेश किया जाए।

५. रुचिपूर्ण एवं आनुददायी प्रसंग लिए जाएँ।

कक्षा –8 संस्कृत

क्रमांक	व्यवहारक उद्देश्य	प्रकरण / उपप्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया	मूल्यांकन प्रविधि
१. सुनना	* संस्कृत श्लोकों, सुभाषितों एवं अनुच्छेदों को सुनकर समझना। * संस्कृत श्लोकों को सुनकर उनका भाव समझते हुए आनन्दानुभूति करना। * संस्कृत की सरल लघु कथाओं को सुनकर सारांश ग्रहण करना। * संस्कृत वार्तालाप को सुनना तथा विचारों को समझना। * संस्कृत सूक्तियों एवं कथाओं में निहित जीवन मूल्यों को आत्मसात कर तद्नुरूप व्यवहार करना।	* श्लोक * गद्य * वार्तालाप * कथा	* शिक्षक द्वारा श्लोकों की सस्वर प्रस्तुति * गद्य अनुच्छेदों का उचित गति, आरोह अवरोह, विराम चिह्न आदि का ध्यान रखते हुए आदर्श प्रस्तुति। * छात्रों द्वारा आडियो कैसेट्स का श्रवण। * उचित हाव-भाव के साथ संस्कृत कथाओं को सुनना। * छात्रों को पहेलियाँ सुनाना। * शिक्षक द्वारा राष्ट्रीय पर्वों पर संस्कृत में सम्भाषण।	
२. बोलना	* शब्दों, वाक्यों, अनुच्छेदों एवं श्लोकों का शुद्ध उच्चारण के साथ अनुकरण वाचन। * परस्पर संस्कृत में वार्तालाप करना। * संस्कृत में पूछे गये प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में देना। * सुनी हुई कथाओं को अपनी भाषा में सुनाना। * कण्ठस्थ श्लोक, सुभाषित एवं गीत सुनाना।	* श्लोक * गद्य * वार्तालाप * कहानी	* शिक्षक द्वारा श्लोकों, अनुच्छेदों का आदर्शवाचन तथा छात्रों द्वारा उसका अनुकरण वाचन। * किसी रोचक प्रसंग पर छात्रों के मध्य संस्कृत में वार्तालाप करवाना। * विद्यार्थियों को विभिन्न स्थितियों में निर्देश देकर परस्पर वार्तालाप करवाना। * सुनी हुई विषयवस्तु पर संस्कृत में प्रश्नोत्तर करना। * किसी देखे गए स्थान के वर्णन को सुनना। * कण्ठस्थ श्लोकों, पहेलियों को सुनना।	* छात्रों से श्लोक, सूक्ति एवं कथा को सुनना। * संस्कृत में प्रश्नोत्तर करना। * कण्ठस्थ शब्दरूपों एवं धातु रूपों को सुनना। * टेपरिकार्डर में विद्यार्थियों से श्लोक रिकार्ड करवाकर स्व-मूल्यांकन करवाना। * छात्रों को चित्र दिखाकर वाक्य रचना करवाना।
३. पढ़ना	* संस्कृत की सरल लघु कथाओं को पढ़कर उनका सारांश ग्रहण करना। * संस्कृत में कहे हुए आदेशों, निर्देशों को समझकर तद्वत व्यवहार करना। * संस्कृत श्लोकों को पढ़कर उनका भाव समझना तथा आनन्दानुभूति करना। * संस्कृत श्लोकों का भावानुकूल ढंग से सस्वर वाचन करना।	* पाठेतर सामग्री का पठन * श्लोक * गद्य * सुभाषित	* शिक्षक द्वारा श्लोकों, गद्यांशों का आदर्श वाचन। * छात्रों द्वारा अनुकरण वाचन। * छात्रों द्वारा सामूहिक वाचन। * छात्रों द्वारा व्यक्तिगत वाचन तथा अध्यापक द्वारा उनकी अशुद्धियों का शुद्धीकरण। * अध्यापक द्वारा पाठ में आये कठिन शब्दों को श्यामपट पर	* पाठ्यपुस्तक के श्लोकों एवं अनुच्छेदों को पढ़वाना। * पाठेतर सामग्री को पढ़वाना। * पाठ में आये हुए शब्दरूपों का चार्ट बनाकर छात्रों से पढ़वाना।

	* संस्कृत के वाक्यों तथा अनुच्छेदों का उचित गति एवं प्रवाह के साथ वाचन करना। * संस्कृत के अनुच्छेदों का मौन वाचनकर उसमें निहित भावों एवं विचारों को समझना। * संस्कृत प्रश्नों का संस्कृत में उत्तर देना। * पाठ्यपुस्तक सुभाषित श्लोकों को कंठस्थ करके सुनाना। * अपने सहपाठियों से छोटे एवं सरल प्रश्न बनाकर संस्कृत में पूछना। * पाठ्यपुस्तक के श्लोक एवं गद्यांश को पढ़कर मातृभाषा में सारांश ग्रहण करना। * पाठ्यपुस्तक को पढ़कर उनमें निहित जीवन मूल्यों को ग्रहण कर तदनुकूल व्यवहार करना। * संस्कृत साहित्य के अध्ययन की ओर उन्मुख होना।		लिखकर उनके अर्थ को बताना तथा उसमें प्रयुक्त संधि, समास का विग्रह करना एवं छात्रों से पढ़वाना। * उपसर्गयुक्त एवं प्रत्ययान्त शब्दों को श्यामपट पर लिखकर उनमें लगे उपसर्गों एवं प्रत्ययों को बताना तथा अन्य शब्दों के निर्माण द्वारा अभ्यास कराना। * कण्ठस्थ सुभाषित श्लोकों को सुनना। * पाठेतर सामग्री को शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़वाना।	
४. लिखना	* शुद्ध, स्पष्ट तथा पठनीय रूप में संस्कृत के वाक्य श्लोक आदि को लिखना। * अनुस्वार, विसर्ग, हलन्त आदि का सही प्रयोग करते हुए स्पष्ट ढंग से लिखना। * परिचित प्रसंग पर स्वतंत्र रूप से संस्कृत में छोटे-छोटे वाक्य लिखना। * प्रधानाचार्य के नाम आवकाश हेतु संस्कृत में आवेदन-पत्र लिखना। * संस्कृत में १ से १०० तक की संख्याओं को लिखना। * संस्कृत में पूछे गये सरल संस्कृत प्रश्नों का संस्कृत में उत्तर लिखना। * हिन्दी के सरल वाक्यों का संस्कृत में तथा संस्कृत के वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करना। * किसी चित्र अथवा वस्तु को देखकर उसके बारे में कुछ वाक्य संस्कृत में लिखना।	* सुलेख एवं श्रुतलेख हेतु पाठ्यपुस्तक के उपयुक्त अनुच्छेद। * संस्कृत अनुवाद हेतु हिन्दी के सरल छोटे वाक्य। * अनुवाद हेतु परिचित प्रसंग पर लघु अनुच्छेद। * आत्मावलोकन पर आधारित कुछ छोटे-छोटे वाक्यों का लेखन।	* पाठ्यपुस्तक के अंशों से सुलेख एवं श्रुतलेख का अभ्यास। * पाठ्यपुस्तक से तथा अपरिचित संस्कृत वाक्यों का विद्यार्थियों की सहायता से हिन्दी में अनुवाद करना तथा श्यामपट पर लिखना। * कुछ हिन्दी वाक्य श्यामपट पर लिखकर विद्यार्थियों के सहयोग से उनका संस्कृत अनुवाद श्यामपट पर लिखना। * अवकाश हेतु प्रार्थना-पत्र लिखने की विधा बतलाना तथा उसका अभ्यास नोटबुक में करवाना। * पत्र लेखन विधा से परिचित कराते हुये मित्र एवं संबंधी को पत्र लिखना। संस्कृत में संख्याओं को श्यामपट पर लिखना तथा विद्यार्थियों से उनका अभ्यास करवाकर उन्हें नोट अुक में लिखवाना। * रोचक विषय देकर संस्कृत में वाक्य रचना करवाना।	* श्रुतलेख की शिक्षक द्वारा परस्पर विद्यार्थियों द्वारा जाँच। * हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद लिखवाना। * प्राधानाचार्य को अवकाश हेतु प्रार्थना-पत्र लिखवाना। * संबंधी को पत्र लिखना बताना। * संस्कृत में संख्याओं को लिखवाना। * संस्कृत प्रश्नों का संस्कृत में उत्तर लिखवाना। * शब्दरूपों व धातुरूपों को नोट बुक में लिखवाना। * निर्दिष्ट विषयों पर वाक्य रचना करवाना।

			* शब्दरूपों व धातुरूपों को नोटबुक में लिखवाना। * श्यामपट पर कुछ संस्कृत शब्दों को लिखकर उनकी सहायता से वाक्य रचना कर लिखवाना। * वाक्य पूर्ति प्रतियोगिता का आयोजन करना। * चयनित सूक्तियों को पट्टिकाओं पर लिखवाकर कक्षा की दीवारों पर सुंदर ढंग से चिपकाना। * प्रतिदिन पीरियड के प्रारंभ में किसी एक छात्र से श्यामपट पर कोई प्रमुख समाचार संस्कृत में लिखवाना। * हस्तलिखित पत्रिका हेतु रोचक विषयों पर विद्यार्थियों से छोटी-छोटी रचनाँ लिखवाना। * निर्धारित विषयों पर लेखन प्रतियोगिता का आयोजन। * विद्यालय में आयोजित होने वाले विभिन्न समारोहों के निमंत्रण पत्र लिखने का अभ्यास करवाना।	
व्याकरण	* संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय आदि का प्रयोग करते हुए वाक्य रचना करना।	* कक्षा ६, ७ के व्याकरण की पुनरावृति वथा समाकलन।,		
	* शब्द रूपों को समझकर उनका वाक्य में सही प्रयोग करना।	शब्दरूप– * कक्षा ६ एवं ७ में पठित संज्ञा शब्दों के अतिरिक्त सभी विभक्तियों एवं तीनों वचनों में निम्नलिखित संज्ञा रूपों का ज्ञान पुल्लिंग– आत्मन्, राजन्, महत्, विद्धत्। स्त्रीलिंग– मातृ, वाच्, सरित्, दिक्। नपुंसकलिंग– जगत्, नामन्, पयस्, मनस्।	* छात्रों को शब्दरूपों के सही प्रयोग से अवगत कराना तथा शब्दरूपों को समझाते हुए कण्ठस्थ करवाना। * छात्रों से क्रमानुसार शब्दरूपों को बुलवाना।	* शब्दरूप सुनना तथा लिखवाना। * छात्रों को नोटबुक में शब्दरूप लिखने को कहकर परस्पर मूल्यांकन करवाना।
	* सर्वनाम शब्दों के प्रयोग की सही जानकारी होना तथा उनकी सहायता से वाक्य बनाना।	* सर्वनाम– अदस्, भवत् एतद् का ज्ञान तीनों लिंगों की सभी विभक्तियों एवं वचनों में।	* सर्वनाम शब्दों को अनुच्छेदों में से छाँटकर श्यामपट पर लिखना।	* सर्वनाम शब्द देकर वाक्य रचना। * संज्ञा के स्थान पर सर्वनाम का प्रयोग करते हुए वाक्य रचना।

		विशेषण– * गुणवाची विशेषण– विद्वत् शब्द् का रूप तीनों लिंगों, सभी विभक्तियों एवं वचनों में।	* छात्रों से सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य रचना करवाना। * पाठ में आये हुए गुणवाची तथा संख्या वाची विशेषणों को छाँटकर उनका प्रयोग करते हुए वाक्यों का निर्माण करना।	* गुणवाची तथा संख्यावाची विशेषणों को छँटवाना। * विशेषणों का प्रयोग करते हुए वाक्य निर्माण करवाना।
		संख्यावाची विशेषण– * १ से १० तक की संख्याओं का तीनों लिंगों एवं सभी विभक्तियों तथा वचनों में प्रयोग। * संस्कृत में १ से १०० तक की संख्याओं का ज्ञान। * सहस्र, लक्ष, कोटि संख्याओं का परिचय।	* १ से १० तक की संख्याओं का तीनों लिंगों, विभक्तियों व वचनों में ज्ञान कराना व अभ्यास। * श्यामपट पर संस्कृत में संख्याओं को लिखकर विद्यार्थियों से उनका मौखिक अभ्यास करवाना तथा श्यामपट पर उनसे लिखने को कहना।	* छात्रों से संस्कृत में संख्याएँ क्रमानुसार बोलने के लिए कहना। * संस्कृत में संख्याएँ नोटबुक में लिखवाना। * संख्याओं का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाने के लिए कहना तथा लिखवाना।
	* कारक तथा विभक्तियों को समझकर उनका सही प्रयोग करना।	कारक– * कारकों के निम्नांकित सूत्रों का उपयुक्त स्थितियों में अर्थज्ञान तथा उनका प्रयोग। सहयुक्तेऽप्रधाने, येनाङ्गविकार: रूच्यर्थानाम् प्रीयमाण:, भीन्नार्थानाम् भयहेतु:।	* कारक सूत्रों को उदाहरण सहित श्यामपट पर लिखकर उनका अर्थ स्पष्ट करना। * विभिन्न स्थितियों में पाठ में प्रयुक्त कारकों (विभक्तियों) का वाक्यों में प्रयोग।	* पाठों में प्रयुक्त कारकों को पूछना।
	* धातुरूपों को समझकर उनका विभिन्न लकारों में प्रयोग करना।	धातुरूप– * स्था केवल परस्मैपद में दृश्, लभ्, कथ्, याच्, नी, के लट्, लोट्, विधिलिंग, लृट् तथा लङ लकार में रूप ज्ञान।	* पाठ में प्रयुक्त क्रियापदों को छाँटकर उनके प्रयोग की जानकारी देना। * पाठ में प्रयुक्त क्रियापदों को श्यामपट पर लिखकर विद्यार्थियों से पूछते हुए उनके परिवर्तित लकार का रूप श्यामपट पर लिखना।	* धातु के किसी एक लकार का रूप देकर उसे अन्य लकार में बदलकर लिखवाना।
	* बहुप्रयुक्त धातुओं के साथ उपयुक्त उपसर्ग लगाकर प्रयोग करना।	उपसर्ग– निर्, उप, अभि, अति, परि का प्रयोग।	* पाठ में आए हुए उपसर्गयुक्त पदों को श्यामपट पर लिखकर उनमें उपसर्गों को चिह्नित करना तथा उनके सही प्रयोग की जानकारी कराना। * उपसर्गों का प्रयोग करते हुए	* कुछ शब्द देकर उनमें उपसर्ग छँटवाना। * उपसर्ग देकर नवीन शब्द बनवाना।

	* धातुओं के साथ प्रत्यय जोड़कर नए शब्दों की रचना करना।	प्रत्यय– शतृ, क्त्वा, तुमुन् का प्रयोग।	विद्यार्थियों के सहयोग से अन्य नवीन शब्दों का निर्माण। * प्रत्ययांत शब्दों को श्यामपट पर लिखकर उनमें प्रत्यय बताना व उनके प्रयोग की जानकारी देना।	* शब्द देकर प्रत्यय छँटवाना। * धातुओं को देकर उनमें प्रत्यय लगवाना।
	* अव्यय शब्दों को समझना तथा उनका सही प्रयोग करना।	अव्यय– सम्, सम्प्रति, साम्प्रतम्, प्रति, अहो, हा, खलु, दिवा, शीघ्रम्, नाना, ननु, सहसा, बहुधा।	* पाठ में प्रयुक्त अव्यय शब्दों को छाँटकर श्यामपट पर लिखकर उनके प्रयोग से परिचित कराना। * अव्यय शब्दों से वाक्य रचना का अभ्यास करवाना।	* अव्यय शब्दों को देकर वाक्य रचना करवाना। * अनुच्छेद से बव्यय शब्दों को छँटवाना।
	* पाठ में प्रयुक्त संधियुक्त पदों का विच्छेद एवं संधि करना।	संधि– पूर्वरूप– एङः पदान्तादति, स्तोश्चुनाश्चुः मोऽनुस्वारः झलांजशोऽन्ते।	* पाठ में प्रयुक्त संधियुक्त पदों को श्यामपट पर लिखकर उनमें विच्छेद एवं सन्धि करवाना। * संधि सूत्रों को स्पष्ट करना।	* संधिसूत्रों को पूछना। * संधियुक्त पद देकर विच्छेद करवाना तथा संधि का नाम पूछना।
	* समासयुक्त पदों का विग्रह तथा वाक्य में सही प्रयोग करना।	समास– परिचय तथा तत्पुरूष, कर्मधारय एवं द्वन्द्व समास का विग्रह, लक्षण एवं नाम।	* समासयुक्त पदों को श्यामपट पर लिखकर उनका विग्रह करना तथा उनके समास का नामोल्लेख कर उस समास का लक्षण एवं परिभाषा बताना।	* पाठ में प्रयुक्त समस्त पदों को छँटवाना। * समासयुक्त पदों का विग्रह करवाना। * प्रयुक्त समास का लक्षण पूछना।
	* वाच्य परिवर्तन करने में समर्थ होना।	वाच्य परिवर्तन– कर्तृवाच्य एवं कर्मवाच्य का परिचय।	* श्यामपट पर पाठ में प्रयुक्त कर्तृवाच्य को कर्मवाच्य तथा कर्मवाच्य को कर्तृवाच्य में परिवर्तित कर लिखना तथा विद्यार्थियों से अभ्यास करवाना।	* कर्तृवाच्य को कर्मवाच्य तथा कर्मवाच्य का कर्तृवाच्य में मौखिक एवं लिखित रूप में परिवर्तित करवाना।

अध्यापक हेतु आवश्यक समर्थन–

१. विषय सामग्री से संबंधित आडियो, वीडियो कैसेट्स।

२. शिक्षक को पुर्नबोधात्मक प्रशिक्षण दिया जाए।

पाठों की संख्या एवं उनके प्रकार–

१. गद्यपाठ : १८, जिनमें निबंध पाठ, कथा पाठ, संवाद पाठ तथा पत्र पाठ शामिल होंगे।

२. पद्यपाठ : १०, जिसमें सूक्ति, सुभाषित, नीतिविषयक श्लोक तथा बालगीत शामिल होंगे।

विषयवस्तु के क्षेत्र–

१. परिवेश से संबंधित विषय जैसे– खेल, पालतू पशु-पक्षी, त्यौहार आदि लिये जाएँ।

२. पंचतंत्र, हितोपदेश एवं पौराणिक कहानियों को लिया जाए।

३. पाठों का विकास इस प्रकार से किया जाए कि मानवीय मूल्य यथा सत्य, अहिंसा, परोपकार, सहानुभूति, क्षमा आदि छात्रों में संचरित हो सकें।

४. मद्यनिषेध, बालश्रम तथा विकलांगों के प्रति समभाव के साथ ही दस केन्द्रिक घटकों का यथास्थान स्तरानुसार समावेश पाठों में किया जाय।

५. रूचिपूर्ण एवं आनंददायी प्रसंगों को लिया जाय।

उर्दू कक्षा – ६

सामान्य उद्देश्य :

1. छात्र/छात्राओं में उर्दू भाषा को अर्थग्रहण के साथ सुनकर समझने और पढ़ने तथा लिखने की योग्यता का विकास करना।
2. मौखिक एवं लिखित रूप में भाव प्रकाशन तथा उसके शुद्ध एवं प्रभावपूर्ण प्रयोग की क्षमता विकसित करना।
3. उच्चारण की शुद्धता पर बल देना।
4. ज्ञानार्जन एवं मनोरंजन हेतु स्वतंत्र रूप से स्वाध्याय करने की क्षमता विकसित करना।
5. उर्दू शब्द भण्डार की वृद्धि करना।
6. उर्दू से हिन्दी तथा हिन्दी से उर्दू में अनुवाद करने का कौशल विकसित करना।
7. सौन्दर्यानुभूति, मौलिकता एवं सृजनात्मकता की क्षमता विकसित करना।
8. भारत की मिलीजुली संस्कृति में उर्दू भाषा के योगदान से परिचित कराना तथा भारतीय संस्कृति के प्रति गौरव का भाव उत्पन्न करना।
9. उर्दू भाषा के माध्यम से विद्यार्थियों में भारतीय संवैधानिक मूल्यों जैसे राष्ट्रीय एकता, लोकतंत्र एवं धर्म निरपेक्षता का भाव विकसित करना।
10. उर्दू भाषा-ज्ञान माध्यम से :-
    * सत्य, अहिंसा, परोपकार, त्याग, सहिष्णुता आदि नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का विकास करना।
    * वन्य समपदा पशु-पक्षी एवं पर्यावरण के संरक्षण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना।
    * बढ़ती आबादी से उत्पन्न समस्याओं छोटे परिवार के लाभ का बोध करना।
11. तर्क संगत वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना तथा वैज्ञानिक एवं तकनीकी से संबंधित सरल शब्दों का प्रयोग सिखाना।
12. व्यवहारिक तथा व्यवसायिक उर्दू भाषा की कुशलता उत्पन्न करना।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* अपने ख़यालात को साफ-साफ और पुर असर तरीक़े से वाजेह करने की काबलियत पैदा करना। * कौमी तालीम उसूल, १९८६ के नजरियों से वाक़िफ़ होना। * आपसी भाई चारा कौमी यकजहती और बुनियादी ब्रादराना तअल्लुक़ात को बढ़ावा देना। * सुनने और समझने की अहलियत को बढ़ावा देना।	**सुनना और ज़ुबानी इज़हारे ख्याल :-** निम्नांकित बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए बातचीत- * उर्दू के तलफ़्फ़ुज, लवो-लहजे और मुहावरात का सही इस्तेमाल। * माँ-बाप, बहन-भाई, बड़े बुज़ुर्ग, उस्ताद का समान आदर। * घर, पास-पड़ोस, पालतू जानवर, पेड़-पौधों से संबंधित बातें। * हिन्दुस्तानी मुश्तरका तहज़ीब की विरासत की हिफाजत। * इन्सानियत के उसूलों पर। * समाजी बुराइयों को दूर करना। * समाजी और कौमी ज़िम्मेदारियाँ तथा त्यौहार। * छोटा ख़ानदान ज़्यादा आराम * चीज़ों को देखने का साइन्टिफिक नज़रिया। * अशआर की ख़ुशख़्वानी। * स्कूल की ज़िन्दगी के बारे में। * कहानी कहना।	* तस्वीरों की मदद से ज़ुबानी बातचीत तस्वीरों, चार्टों की मदद से कहानी सुनना। * सुनी हुई कहानी दोहराना। * कहानी बनाकर सुनना। * विभिन्न अशिया (चीज़ों) पर कुछ सरल जुमलों को कहलवाना। * ज़ुबानी नज़्म का सुनाना।	* सवालों के जरिए। * किसी कहानी को दोहराकर। * अशआर की ख़ुशख़्वानी का मुक़ाबला करवाकर। * कोई उन्वान देकर दस पर बोलने की लियाक़त की जाँच।
* उर्दू के हुरुफ़, जुमलों मुहावरात का सही इस्तेमाल करना। * सही तलफ़्फ़ुज़ का इस्तेमाल करना। * क़ौमी तालीमी पालीसी, १९१६ के ख़ास-ख़ास नजरियों से मुत्तलिक़ जानकारी देना और उस पर अमल करना सिखाना।	**पढ़ना :-** **हुरुफे–तहज्जी** * हरकत, जज़्म, सुकूत, तशदीद से वाक़फ़ियत कराना हुरुफ की मिलावट से वाकफ़ियत। * छोटे जुमलों से बनी इबारत पढ़ना (क़ौमी तालीमी पालीसी १९८६ से मुत्तअलिक़ बुनियादी नज़रियों पर आधारित इबारतों का चुनाव किया जाय)	* उस्ताद इबारत की पहले माडल रीडिंग कराए। * बच्चों से बारी-बारी से पढ़वाएँ। * पढ़ी हुई इबारत में हरकत जज़्म सुकून तशदीद की मश्क कराएँ।	* इबारत पढ़वाकर काबिलियत की जाँच। * सही तलफ़्फ़ुज, लबो -लहजे के साथ पढ़वाकर पढ़ाई की जाँच करना।
* उर्दू के छोटे और सलीस जुमले लिखाने की क़ाबलियत पैदा करना। * साफ, सही, बराबर जगह छोड़कर ख़ुशख़त लिखना सिखाना।	**लिखना :-** * कशिश, दायरा और शोशों का ध्यान रखते हुए हुर्स्फ तहज्जी का लिखना सिखाना। * छोटे-छोटे दो हरफ़ी-सह हरफ़ी अल्फ़ाज और छोटे-छोटे जुमले लिखना जो कौमी तालीमी पालीसी के नज़रियों से मेल खाते हों।	* उर्दू इबारत लिखने की मुश्क़ करना। * खाली जगहों को सही लफ्ज़ों से भरना। * इमला और दी गई इबारतों को बच्चों में कापियाँ बदलकर सही कराना।	* इमला लिखवाकर। * ख़ुशख़ती लिखवाकर। * अपनी पसंद के उन्वान पर चंद जुमले लिखवाकर।

	* इमला, ख़ुशख़ती की मश्क करना। * कुछ आसान और दिलचस्प उन्वानात पर तसलसुल के साथ जुमले लिखवाना।		
सही बोलने और लिखने की क़ाबलियत पैदा करना। जुबान से मुत्तमल्लिक साइन्टिफ़िक नज़रिया पैदा करना।	**क़वायद :–** * इस्म की पहचान। * इस्म की किस्में – * इस्म–आम * इस्म–ख़ास	* पढ़ी हुई इबारत में इस्म, इस्मे आम, इस्मे ख़ास की पहचान। * इस्म7आम और इस्म–ख़ास की मुख़तलिफ तरीक़ों से मश्क़ कराना।	* दी गई इबारत में से इस्मों को छाँटकर जाँच करना। * इस्म–आम, इस्म–ख़ास को इस्तेमाल करते हुए जुमले बनवाना।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* अपने ख़्यालात को साफ पुरअसर तरीक़े से वाजेह कर सकने की क़ाबलियत पैदा करना। * क़ौमी तालीमी पालीसी ८६ के नजरियों से वाकिफ़ कराना। * कौमी यकजहती, तहज़ीबो तमद्दुन पेड़-पौधों की हिफाज़त, समाजी बुराईयों को दूर करना वग़ैरा की जानकारी देना और इस पर अमल करने का जज़्बा पैदा करना। * सुनने, समझने और बोलने की क़ाबलियत को बढ़ावा देना।	ज़ुबानी इज़्हारे ख़्याल :– नीचे दिए गए बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए बातचीत में नए अलफ़ाज और मुहावरात का इस्तेमाल और पिछली कक्षा के कामों को दोहराना– * आज़ादी की तहरीक की तारीख़। * समाजी तहज़ीब के अल्फ़ाज का इस्तेमालं। * हिन्दुस्तानी मुश्तरका तहजीब की विरासत की हिफाजत। * पेड़-पौधों को हिफाजत, पौधे लगाना, ज़रूरत पर रोशनीं। * समाजी बुराईयों को दूर करना। * छोटा ख़ानदान ज़्यादा आराम। * मसावात के उसूल। * तस्वीरों पर बातचीत। * तस्वरी की मदद से कहानी कहना। * आसान नज़्मों की ख़ुशख़्वानी।	* तस्वीरों की मदद से ज़बानी बातचीत। * तस्वीरों में दी गई कहानी सुनवाना। * कहानी बनाकर कहना/सुनाना। * क़ौमी यकजेहती से मुत्तअल्लिक़ मशहूर नज़्मों को सुनाना।	* सवालों के ज़रिए जाँचनां * कही गई कहानी को दोहरवा कर जाँच करना। * नज़्मों की ख़ुशख़्वानी का मुक़ाबला करवाकर। * किसी सैर, क़ौमी आज़ादी या हादसे को दोहराने के लिए कहकर योग्यता की जाँच करना।
* सही तलफ़्फ़ुज के साथ इबारत पढ़ना और समझना। * देश की सभी मौजूदा पालीसियों को समझना और उस पर अमल करने के लिए उन्हें प्रेरिते करना। * ज़्यादा से ज्यादा लफ़्ज़ों को ज़हन नशीन कराना।	पढ़ना :– * सही तलफ़्फ़ुज और खानी के साथ इबारत की बुलन्द-ख़्वानी। * पढ़ी हुई इबरात का मफ़हूम समझना, इससे मुत्तअल्लिक सवालात के जबाव देना। * तहरीके आज़ादी के मुख़्तसर तारीख, विभिन्न सम्प्रदायों की भागीदारी, जम्हूरियत, सेक्यूलियरिज़्म मसावत, समाजी खामियों को दूर करना-वग़ैरा को पढ़ना और समझना। * क़ौमी तालीमी पालीसी, ८६ से मुतअल्लिक बुनियादी उसूलों पर आधारित इबारत का चुनाव किया जाए। * मुनासिब लबो लहजा के साथ जन्म की बुलन्द ख़्वानी।	* मुनासिब उतार-चढ़ाव और सही तलफ़्फ़ुज के साथ पढ़वाना। * देश की पालिसियों पर आसान तक़रीरे तेयार करवाकर बुलवाना। * तालीमी ख़ाश के जिए अल्फ़ाज बनवाना।	* मौखिक प्रश्नों के उत्तरों की जाँच। * इबारत को पढ़वाकर ख़ुलासा पूछना। * नज़्मों के सुनाने का मुक़ाबला कराना।

* सही और ख़ूबसूरत लिखना सिखनां * अल्फ़ाज की हिज्जे ठीक करवाना। * सुनकर लिखने की काबलियत पैदा करना।	**लिखना :–** * नक़ल करवाना। * इमला लिखवाना। * हुरूफ की बनावट की पेचीदा शकलों की मश्क़। * ख़ुश ख़ती, कशिश, दायरा, शोशे, मरकज और नुक्तों का लिहाज़ रखते हुए जुमले लिखना।	* ख़ुशख़ती करवानां * मश्क़ की किताओ में लिखवाना। * इमला लिखवाना और एक दूसरे की मदद से सही करवाना।	* ख़ुशख़ती का मुक़ाबला करवाकर। * सवालों को हल करवाकर। * मुश्किल अल्फ़ाज़ का जुमलों में इस्तेमाल करवाकर।
* ज़ुबान का सही इस्तेमाल। * ज़मीर और सिफ़त की पहचान और सही इस्तेमाल।	**कवायद :–** * इस्म को दोहराना। * जमीर का इस्तेमालं * सिफ़त की तारीफ़ और पहचान।	* ख़ाली जगहों इस्म, सिफ़्त, ज़मीर भरवाना। * इस्म, सिफ़्त, ज़मीर की मिसालें इकट्ठा करवाना।	* चन्द दिए गए अल्फाज़ (जो इस्म, सिफ़्त, ज़मीर हों) का जुमलों में इस्तेमाल।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* रेडियो के प्रोग्राम, तक़रीरों और टी0 वी0 के प्रोग्राम की जुबान समझने की क़ाबलियत का विकास करना। * सही तलफ़्फ़ुज के साथ नज़्मों नस्र पढ़ने की क़ाबलियत विकसित करना। * मकालमे, ड्रामे आदि कार्यक्रमों में भाग लेने की सलाहियत का विकास।	**ज़ुबानी इन्हारे ख़्याल :** * बातचीत के लिए पहले से मुश्किल अल्फाज़ उन्वानात और मुहावरात का इस्तेमाल। * लफ्ती इशारों और ख़ाकों की मदद से कहानी। * अशआर की ख़ुशख़्वानी। * आसान उन्वानात पर तक़रीर।	* दिए गए मौज़ू पर कहानी बनाकर सुनना। * किसी सैर या हादसे को अपने लफ़्ज़ों में बयान करना। * याद की हुई नज़्म सुनाना। * दिए हुए उनवान पर तक़रीर करना। * बैतबाजी कराना।	* सुनाई गई कहानी के ज़रिए। * नज़्म सुनाने का मुक़ाबला करवाकर। * तक़रीरी मुक़ाबला करवाकर जाँच करना।
* सही तलफ़्फ़ुज और वज़न के साथ नज़्मों को पढ़ना। * कौमी यकजहती और अपनी तहज़ीब की हिफ़ाजत का जज़्बा पैदा करना।	**पढ़ना :–** * सही तलफ़्फ़ुज और रवानी के साथ किताब के अस्बाक को पढ़ना। * महफूज़ को समझने की गरज से ख़ामोश मुताला। * नज़्मों की बुलन्द ख़्वानी (जो क़ौमी यकजहती, मिली-जुली तकाफ़ती विरासत से मुतअल्लिक़ हों)	* क़ौमी ज़ज़्बों में डूबी नज़्मों का मुक़ाबला। * मॉडल और ख़ामोश मुतअला।	* पढ़वाकर। * सवाल पूछकर। * नज़्म सुनकर।
* अपने ख़्यालात का, लिखकर इज़्हार करने की क़ाबलियत पैदा करना। * पढ़े हुए अस्वाक में से लिखकर सवाल के जवाब दे सकना। * मुहावरात का सही मौक़े पर सही इस्तेमाल करना। * ख़ुतूत और दरख़्वास्त करना। * ख़ुतूत और दरख़्वात लिखना। * कहानी लिखना।	**लिखना :–** * पिछले दर्जे के काम को दोहराना। * आसान ख़ूतूत लिखना। * आसान उन्वानात पर लगभग पन्द्रह लाइनें लिखना । * खाली जगहों को भरना। * अल्फ़ाज़ व मुहावरात का जुमलों में इस्तेमाल करना।	* मश्क़ी किताबों में ख़ुशख़त लिखवाना। * मुहावरात के जुमले बनवाना। * ख़त और दरख़्वास्त लिखवाना। * मुशकिल अल्फ़ाज़ का इमला, कापियाँ बदल-बदल कर सही कराना।	* लिखी गई ख़ुशख़त की जाँच करके सवालों के हल को देखकर जाँच करना। * ख़त और दरख़्वास्त लिखवाकर।
* उर्दू ज़ुबान की सही इस्तेमाल सिखाना। * फ़ेल, माज़ी, हाल, मुस्तक़बिल हुरूफ तज़कीर और तानीस से अवगत करना। * रेडियो के प्रोग्राम तक़रीरें, टी0वी0 के प्रोग्राम वग़ैरा समझना।	**कवायद :–** * पिछले काम को दोहराना। * फ़ेल की पहचानना। * माज़ी, हाल, मुस्तक़बिल। * हुरुफ़ के इस्तेमाल को समझाना। * वाहिद-जमा को समझना। * तज़कीर और तानीस समझना।	* फ़ेल, माज़ी, हाल, मुस्तक़बिल, हुरुफ़ का इस्तेमाल, वाहिद-जमा तज़कीर-तानीस की इबारत को पहचानवाना। * तज़कीर और तानीस का इस्तेमाल। * वाहिद से जमा बनवाना। * हाल के जुमलों को माजी और मुसतक़बिल में बदलना।	* कवायद के सवालों को हल करवाकर। * ज़ुबानी मश्क़ करवाकर। * जुमलों में इस्तेमाल करवाकर।

पंजाबी

सामान्य उद्देश्य :

1. भारतीय संस्कृति के संरक्षण हेतु विभिन्न राज्यों की भाषाओं के अध्ययन के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करते हुए राष्ट्रीय एकता का विकास करना।
2. पंजाबी भाषा तथा साहित्य के ज्ञान हेतु पंजाबी के अध्ययन के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करना।
3. हिन्दी के वाक्यों का पंजाबी में तथा पंजाबी से हिन्दी में अनुवाद करने की क्षमता विकसित करना।
4. अपने भावों तथा विचारों को पंजाबी भाषा बोलने, सुनने, समझने, पढ़ने और लिखने की योग्यता विकसित करना।
5. विद्यार्थियों में पंजाबी भाषा बोलने, सुनने, समझने, पढ़ने और लिखने की योग्यता विकसित करना।
6. सरल तथा शासनानुकूल पंजाबी काव्य तथा गद्य पाठों का शुद्ध उच्चारण करके विषयवस्तु को समझना तथा अर्थग्रहण करना।
7. भारतीय संस्कृति तथा पंजाबी संस्कृति के तुलनात्मक अध्ययन द्वारा छात्रों में धर्म-निरपेक्षता की भावना उत्पन्न करना।
8. पंजाबी के कवियों, साहित्यकारों, लेखकों एवं उनकी कृतियों से छात्रों को अवगत कराना और उनके ज्ञान में अभिवृद्धि करना।
9. छात्रों में देश के अन्य राज्यों के प्रति स्नेह उत्पन्न करना।
10. छात्रों में सत्यं, अहिंसा, परोपकार, देश-प्रेम, धर्म-निरपेक्षता, नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों के प्रति आस्था जागृत करना।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* छात्र धैर्यपूर्वक सुनें और ध्वनियों का शुद्ध उच्चारण करके अपनी योग्यता का विकास करना। * वक्ता के शब्दों पर दिए गए बल के महत्व को समझना। * छात्र में एकाग्रचित्त होकर सुनने और उसको समझने की क्षमता का विकास करना। * कथन में निहित आदेश, विनय, आश्चर्य, सम्बोधन आदि भावों को समझ सकना।	**सुनना :–** * छात्र पंजाबी भाषा की सभी ध्वनियों को जानकर पारस्परिक अन्तर को समझ सकें। विशेषकर ल (न) क्त (ल) य (ध), य (प) ष (ख) स (थ)। * दिए गए संदेश, निर्देश संबंधी चर्चा। * सुनाए गए वर्णन की चर्चा। * प्रार्थना, गीत, कविताएँ, कहानियाँ, पंजाबी कथाएँ छात्रों की रूचि के स्तर के अनुकूल हों। * साखियाँ तथा गुरूवाणी को संक्षिप्त करके सुनाना।	* शिक्षक छात्रों के साथ आस-पास होने वाली घटनाओं पर बात-चीत। * शिक्षक द्वारा सुनाए विषयवस्तु का लिखकर अभ्यास। * छात्रों को चित्र दिखाकर उनके विषय में शिक्षक से वार्तालाप।	* मौखिक प्रश्न पूछकर। * वार्तालाप सुनकर। * संदर्भित विषयों को सुनाकर अथवा दिखाकर।
* बिना झिझक विचारों का प्रस्तुतीकरण। * भावों और विचारों का प्रवाहपूर्ण भाव में व्यक्त करना * छात्र संयुक्त ध्वनियों का शुद्ध उच्चारण करें। * ल (ल), (ज) य, ख (ष) आदिध्वनियों को अपनी वाणी द्वारा व्यक्त कर अपनी योग्यता का विकास करना।	**बोलना :–** * पंजाबी की सभी अक्खरी (वर्णमाला) * सभी प्रकार के संयुक्त स्वर और व्यंजन ध्वनियों का उच्चारण। * उचित स्वराघात का प्रयोग। * कविताएँ पंजावी गीतों का समूह ज्ञान। * कहानियाँ और पंजाबी कथाएँ। * जातिवाद, छुआछूत, पर्यावरण, प्रदूषण जनसंख्या वृद्धि और रोजगार असंतुलन परिचर्चा।	* छात्रों से चित्रों का वर्णन कराकर। * छात्रों से किसी घटना, दृश्य अथवा उत्सव का वर्णन कराकर बातचीत का अभ्यास। * कक्षा के अनुकूल विषयों पर भाषण। * छात्रों से संवादात्मक अभिनय।	* छात्रों से प्रश्न पूछकर। * वाद-विवाद, अन्त्याक्षरी तथा अभिनय की प्रतियोगिताएँ कराकर। * हिन्दी तथा पंजाबी का तुजनात्मक अध्ययन कर। * वार्तालाप तथा कथोपकथन की क्रमबद्धता की जाँच।
* सभी ध्वनियों के लिपि संकेतों के वर्णों को जोड़कर शब्दों की मात्राओं को पहचान कर पढ़ना। * लिखित सामग्री को पढ़कर समझना। * संयुक्ताक्षरों वाले शब्दों को पढ़कर समझने की योग्यता का विकास करना।	**पढ़ना :–** * सामाजिक जीवन। * पशु-पक्षियों की कहानियाँ * पाठशाला से संबंधित कार्य * त्यौहार, उत्सव, मनोरंजन। * प्राकृतिक वातावरण। * घर और पास-पड़ोस स्वच्छ जल, संतुलित आहार तथा स्वास्थ्य। * देशप्रेम की कविताएँ, कहानियाँ। * पंजाबी कथाएँ, पंजाबी गीतों का पाठ। * ईश-वन्दना। * जनसंख्या वृद्धि और संक्रामक रोग। * सहभागिता का आधार लोकतंत्र, लैंगिक समानता पर पाठ। * हिन्दू तथा पंजाबी संस्कृति।	* कठिन शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखकर व्यक्तिगत रूप और सामूहिक रूप में पढ़ने का अभ्यास। * वर्णों को जोड़कर शब्द पढ़ना और फिर शब्दों को जोड़कर वाक्य पढ़ने का अभ्यास। * आदर्शपाठ कर छात्रों से अनुकरण वाचन। * शिक्षक लिपि संकेतों के साथ ध्वनि का संबंध एवं वर्णों का अभ्यास। * चित्रों की सहायता से वर्णों का परिचय तथा मात्राओं का अभ्यास। * गद्यांशों तथा पद्यांशों पर आधारित बोध प्रश्न पूछना।	* श्यामपट्ट पर प्रश्न लिखकर * मौखिक प्रश्न पूछकर। * चित्रों की आकृति दिखाकर। * सस्वर वाचन कराकर। * पठित अंश के अर्थ तथा भाव ग्रहण की जाँच।

* छात्रों को शुद्ध अक्खरी का ज्ञान कराना। * कहानी व संवाद सुनाकर पुन: लिखित रूप में प्रस्तु कर योग्यता का विकास करना। * शब्दों का वाक्य प्रयोग कराकर योग्यता का विकास करना। * द्रुत गति से लिखने की क्षमता का विकास करना।	**लिखना :–** * शब्दों का वाक्यों में प्रयोग * रिक्त स्थानों की पूर्ति। * मौखिक कार्य तथा पाठ्य-पुस्तक में अनुबन्धित रचना। * पढ़े हुए अंशों का श्रुतलेख। * प्रारम्भ में वर्णमाला, शब्द तथा साधारण वाक्य लिखना। * पुस्तक से नकल कर अक्षरों की शुद्ध बनावट का ज्ञान।	* अनुलेख, श्रुतलेख तथा सुलेख का अभ्यास। * विचारों को लिखवाकर अभ्यास। * निबन्ध लिखवाकर। * रिक्त स्थनों की पूर्ति। * छोटी-छोटी कहानियाँ, कविताएँ लिखवाकर।	* छात्रों द्वारा लिखित कार्य का निरीक्षण और संशोधन। * शब्दों का वाक्य प्रयोग लिखित कराना। * अर्थ बोध की परीक्षा लिखित कार्य द्वारा। * लिखित प्रश्नोत्तर, शब्द, अर्थ
* पंजाबी भाषा लिखने की क्षमता का विकास करना। * क्रियाओं को प्रयोग कर वाक्य बनाने की क्षमता का विकास करना।	**व्याकरण :–** * मात्राओं का ज्ञान। * एकवचन, बहुवचन का ज्ञान है * है (हैं) * हैं – ग्ल (हन) * वाक्य का प्रयोग। * पंजाबी तथा हिन्दी भाषा का भेद। * शुद्ध-अशुद्ध का ज्ञान।	* अकर्मक तथा सकर्मक क्रियाओं का प्रयोग कर वाक्य बनाना। * हिन्दी तथा पंजाबी की क्रियाओं का भेदकर। * अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध कर।	* शब्द प्रयोग, रिक्त स्थान पूर्ति का व्याकरणिक ज्ञान। * वाक्यों द्वारा व्याकरण की जाँच। * बार-बार लिखना तथा पढ़ने से भाषा में अक्षरों तथा मात्राओं की जाँच।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
उद्देश्य * छात्रों में एकाग्रचित्त से सुनने की क्षमता का विकास। * सुनकर समझने की क्षमता का विकास। * सुनकर स्मरण रखने की क्षमता का विकास।	**सुनना :–** * कविताएँ, कहानी, पंजाबी गीत को सुनकर समझना। * कहानी सुनी हुई अथवा पाठ्य पुस्तक में पढ़ी हुई, सुनाना। * वार्ताएँ, आदेश, निर्देश। * हिन्दी तथा पंजाबी संस्कृति का समन्वयात्मक रूप। * घटना, तथ्यों, स्थानों और उत्सवों आदि के वर्णन। * चित्रों पर प्रश्नोत्तर। * गद्य खण्डों और कविताओं को कंठस्थ करके सुनाना।	* शिक्षक छात्रों को कविता, कहानी वर्णन आदि सुनाकर तथा सुनकर। * छात्रों को कार्य करने का आदेश और निर्देश। * किसी छात्र से कहानी सुनाने को कहा जाए।	* प्रेरक प्रश्नों द्वारा। * सुनी बात को सुनाकर। * वार्तालाप द्वारा विचारों का आदान-प्रदान कर।
* छात्र को शुद्ध उच्चारण के साथ शब्द और वाक्य बोलने का अभ्यासं * विचार प्रस्तुत करने की क्षमता का विकास करना। * वाक्य प्रयोग बनानने का विकास करना। * विचारों का प्रवाहपूर्ण शैली में व्यक्त करने का अभ्यास। * वक्ता के हाव-भाव समझकर बोलने की क्षमता का विकास।	**बोलना :–** * समस्त ध्वनियों का शुद्ध उच्चारण। * अदक (v) का चिह्न व अनुस्वार के उच्चारण को अन्तर से बोलना। * कविता व गीतों को प्रस्तुत करना। * कहानी, कथाओं का वर्णन सुनाना। * प्रवाहपूर्ण ढंग से बोलना– * सरल विषयों पर वार्तालाप, छोटे परिवार तथा संशोधन की उपलब्धि, पंजाब समस्या, पर्यावरण प्रदूषण, जीवनी आदि। * आदर प्रदर्शन में बहुवचन का प्रयोग।	* छात्रों के व्यावहारिक जीवन से संबंधित। * प्रेरणाप्रद प्रकरणों पर वार्तालाप कर। * कहानी, गीत, कविता सुनाने का अवसर देना। * उत्सव को आयोजित कर। * पंजाबी भाषा के नाटकों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहन।	* प्रतियोगिताएँ तथा अन्त्याक्षरी का आयोजन कर। * छात्रों से वार्तालाप करके बोलने की क्षमता का मूल्यांकन। * सुने हुए वाक्यों को दोहराने का निर्देश। * प्रेरक प्रश्न पूछकर। * बोले गए वाक्यों का अभ्यास कर।
* अर्थग्रहण करते हुए सप्रवाह गति से मौन पाठ करने की क्षमता उत्पन्न करना। * शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ने का अभ्यास करना। * लिखकर पढ़ने की योग्यता का विकास करना। * दूसरे के माध्यम से लिखना और समझकर पढ़ने का अभ्यास करना। * पढ़े हुए पाठों पर प्रश्नों के उत्तर देने की क्षमता का विकास करना।	**पढ़ना :–** * गद्य तथा पद्य पढ़ना– डाकघर, रेल का इंजन, कृषि, दीपावली, ईद, वैशाखी, वेशभूषा और रहन-सहन, पंयाचत घर, शिष्टाचार, सहकारिता, स्वास्थ्य रक्षा, मेला, सड़क पर चलने के नियम का पाठ। * कविता, कहानी, निबन्ध से संबंधित पाठ। * जनसंख्या शिक्षा तथा वृद्धि, देशप्रेम, सामाजिक, वानिकी, मनोरंजन विषयों पर कहानियाँ, सामाजिक कहानियाँ। * पठन सामग्री का अर्थग्रहण करना (अन्य पठन सामग्री) पाठ्य-पुस्तक के अतिरिक्त।	* लिपि संकेतों को जोड़कर पढ़ने का गहन अभ्यास। * कठिन शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखित रूप से पढ़ने का अभ्यास। * पंजाबी लिखाना और पढ़ना। * छात्रों द्वारा अनुकरणीय वाचन। * कविता, कहानी आदि को माध्यम बनाकर पढ़ने का अभ्यास।	* सस्वर कथन कराकर। * पढ़े हुए अंश से प्रश्न पूछकर। * पंजाबी भाषा लिखकर दोहराने का निर्देश। * कंठस्थ करके लिखने और पढ़ने की जाँच। * बार-बार पढ़कर दोहराने का निर्देश।

* गद्य तथा पद्य दोनों का विकास करना लिखित रूप में।
* रचना कार्य के माध्यम से अपनी बात का विकास करना।
* पत्र-पत्रिकाओं का लेखन द्वारा विकास करना।
	लेखन तथा रचना कार्य :–
	* शब्दों का वाक्यों में प्रयोग।
	* रिक्त स्थानों की पूर्ति।
	* छोटे-छोटे वाक्यों का श्रुतलेख।
	* एक ही विषय पर संक्षिप्त विचार लिखना।
	* कहानी, कविता को रचना का माध्यम बनाना।
	* अक्षरों की शुद्ध बनावट का ज्ञान।
	* वाक्य बनाना– लिखित रूप में
	  * त्योहार मनाना– कब, क्यों और कैसे।
	  * पशु-भोजन, कार्य, लाभ, उपयोगं
	  * समाज सेवक
		* गद्य तथा पद्य दोनों को माध्यम बनाकर लिखना।
		* छात्रों द्वारा गद्य तथा पद्य पर लिखने का अभ्यास तथा अनुकरण।
		* चित्रों के आधार पर।
		* सुनी हुई तथा कंठस्थ कहानी लिखना। कहानी की सहायता से संयुक्ताक्षरों को लिखवाना।
			* लिखित रचना कार्य करने का निर्देश।
			* रचना कार्य पर अभ्यास करना।
			* सुनी व पढ़ी हुई कहानी को दोहराने का निर्देश।
			* सुनी व पढ़ी हुई कहानी को दोहराने का निर्देश।
			* छोटे-छोटे प्रश्न पूछकर उत्तर लिखवाना।
			* श्रुत, अनुलेख लिखवाकर।

* हिन्दी की भाँति प्रजाबी व्याकरण का विकास करना।
* पंजाबी क्रियाओं का ज्ञान होना।
* क्रियाओं का प्रयोग करके वाक्य बनाकर उसका विकास करना।
* शुद्ध भाषा बोलने, लिखने, पढ़ने की क्षमता।
* भाषा के व्याकरणिक अवयवों का परिचय कराकर क्षमता का विकास करना।
* भिन्न-भिन्न अर्थो का ज्ञान करने की क्षमता विकसित करना।
	व्याकरण :–
	* वाक्य बनाने की प्रक्रिया का ज्ञान।
	* मैं (असी) (उट) (तू) (तुसी) (है) (हन) आदि शब्दों का प्रयोग करके अकर्मक क्रियाओं का ज्ञान।
	* जढ़ (जल), गुनह, कोप (क्रोध) आदि शब्दों की सहायता से संयुक्त अक्षरों का ज्ञान।
	* आदर सूचक शब्दों के व्यवहार पर विशेष ध्यान।
	* हिन्दी से पंजाबी तथा पंजाबी से हिन्दी में अनुवाद।
	* अवयवों का परिचय।
	* रिक्त स्थानों की पूर्ति
	* पत्र-लेखन, संस्मरण, जीवनी।
	* काल, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण (हिमेमट्ट) का ज्ञान।
	  * बहु-अर्थक शब्द।
	  * विराम-चिह्न।
		* हिन्दी तथा पंजाबी क्रियाओं का भेद समझना।
		* अकर्मक तथा सकर्मक क्रियाओं का प्रयोग कर वाक्य बनाने की क्षमता।
		* अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करना।
		* छात्र को काल के अनुसार वाक्य परिवर्तन का अभ्यास।
		* आदर्श विस्मय-बोधक शब्दों का प्रयोग कराना।
		* उदाहरणों द्वारा व्याकरण की जानकारी कराना।
			* पंजाबी व्याकरण की बार-बार हिन्दी व्याकरण से तुलना कर मूल्यांकन।
			* छोटे-छोटे वाक्यों द्वारा व्याकरण की जाँच।
			* हिन्दी से पंजाबी तथा पंजाबी से हिन्दी में अनुवाद।
			* शब्द प्रयोग, रिक्त स्थान पूर्ति तथा शुद्ध का अभ्यास।
			* काल की पहचान वाक्यों द्वारा।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* शुद्ध उच्चारण का अभ्यास करना। * मनोभावों की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति का अभ्यास, शुद्ध भाषा में सुनकर कथन के मूल्यांकन की क्षमता उत्पन्न करना। * आनन्दानुभूति के लिए सुनना। * सुनकर कथन के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करने की क्षमता विकसित करना।	**सुनना :–** * घर, पास-पड़ोस, प्राकृतिक वातावरण, पाठशाला तथा सामाजिक जीवन के आधार पर साधारण वाक्यों में बातचीत। * घटना, तथ्यों, स्थानों और उत्सवों आदि के वर्णन। * धार्मिक कविताएँ, तारक आदि को सुनकर समझने के साथ ही आनंद की अनुभूति। * रेडियों और टेलीविजन पर प्रसारित आनन्ददायक कार्यक्रम सुनना। * भाषण, कविता, कहानी सुनना। * प्रकृति जीव, जन्तु, वन्य प्राणी की रक्षा पर वार्तालाप।	* अत्यन्त सरल व मनोरंजक ढंग से विषयवस्तु का प्रस्तुतीकरण। * शिक्षक द्वारा कहानी, कविता, नाटक आदि का मुख से प्रस्तुतीकरण। * विद्यालय में आयोजन कर। * कथन को सुनकर उनके अर्थग्रहण की क्षमता उत्पन्न कर।	* सुने हुए प्रसंगों पर प्रश्न पूछकर। * सुनी हुई चीज की पुनः मौखिक अभिव्यक्ति करके। * छात्रों के उत्तर क्रमबद्ध व तर्क संगत हैं, यह देखकर।
* शुद्ध भाषा में बोलना। * अन्य भाषाओं से मुक्त रखने का प्रयत्न करना। * शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराना। * भावों, विचारों और धारणाओं को रोचक एवं व्यक्त करना। * बिना झिझक अपनी अनुभूति को व्यक्त करने की योगयता का विकास करना। * सभी वर्णनों को मनोरंजक बनाकर प्रस्तुत कर योग्यता का विकास करना।	**बोलना :–** * छात्रों को शुद्ध व्याकरण सम्मत पंजाबी बोलने की क्षमता। * भावों और विचारों की अभिव्यक्ति को तर्कपूर्ण और क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करना। * पंजाबी कहानी तथा कथाओं को बोलकर सुनाना। * भाषण एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता। * प्रकृति सौन्दर्य का वर्णन। * कविता पाठ। * दृश्यों, घटनाओं और स्थानों का वर्णन। * व्यवहारिक जीवन के अनुभवों का वर्णन। * पंजाबी की सभी मात्राओं के संयुक्त अक्षरों, संयुक्त स्वरों आदि का शुद्ध उच्चारण बोलना।	* परिचित विषयों पर वार्तालाप कर। * संवादात्मक अभिनयों का आयोजन कर। * कठिन शब्दों और लोकोक्तियों की व्याख्या। * अनुच्छेद पर शिक्षक द्वारा बोध प्रश्न पूछकर।	* अभिव्यक्ति तर्कपूर्ण तथा भावानुकुल है अथवा नहीं। * जो बोलता है, उसका उसे अर्थ सहित ज्ञान है या नहीं। * कविता, कहानी सुनकर बोलने की क्षमता की जाँच।
* छात्र को पढ़ाकर व समझाकर उसमें ज्ञानार्जन की प्रवत्ति उत्पन्न करना। * शब्द के विभिन्न अर्थो की जानकारी प्राप्त करना। * विराम चिह्नों को ध्यान में रखते हुए पढ़ने की क्षमता का विकास करना। * छात्रों द्वारा अनुच्छेद का सस्वर वाचन।	**पढ़ना :–** * प्रतिष्ठित कवियों की कथा स्तर के अनुकूल रचनाएँ रखी जाएँ। * स्थानीय जीवन संबंधी आचरण। * धार्मिक तथा सामाजिक उत्सव। * स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास तथा महापुरुषों की कहानी। * ऐतिहासिक घटनाएँ और स्थल। * प्राकृतिक सौन्दर्य। * साहसपूर्ण कार्य।	* लिपि संकेतों को जोड़कर पढ़ने का गहन अभ्यास। * आदर्श पाठ प्रस्तुत कर फिर सस्वर वाचन। * विषयवस्तु पढ़ाकर छात्रों से भी आदर्श वाचन। * उत्सव और अभिनय आदि आयोजन प्रोत्साहित कर। * पुनरावृत्ति। * छात्रों द्वारा अनुकरण वाचन।	* सस्वर वाचन कराकर। * पढ़े हुए अंश से प्रश्न पूछकर। * अभिनयों से छात्रों के कार्य के प्रेषण से उनके विषय-बोध का मूल्यांकन। * बार-बार पढ़कर दोहराने का निर्देश।

* शुद्ध भण्डार की वृद्धि करना तथा शब्द ज्ञान बढ़ाना। * कविता, संवाद, नाटकों के वाचन में पात्र के अनुकूल कथोपकथन को प्रस्तुत करना।	* लेखकों, साहित्यकारों, कवियों की जीवन संबंधित संस्मरण। * क्रीड़ां * शिष्टाचार। * जनसंख्या शिक्षा। * पुस्तक के अतिरिक्त कम से कम दो सहायक पुस्तकें पढ़ने का प्राविधान होना चाहिए। * भाषा के सौन्दर्य को समझने की क्षमता का विकास करना।	* श्यामपट पर लिखे गए शब्दों द्वारा पढ़ने का अभ्यास। * रेडियो तथा दूरदर्शन द्वारा प्रसारित प्रासंगिक विषयों को सुनने के लिए छात्र-छात्राओं को प्रेरित किया जाए।	
* मौलिक रचना लिखने की क्षमता को उत्पन्न करना। * द्रुत गति से लिखने की क्षमता का विकास करना। * भावों और विचारों को बिना झिझक शुद्ध पंजाबी भाषा में प्रस्तुत करने की क्षमता का विकास करना। * व्यवहारिक जीवन के कार्य संपादन के लिए पत्र, प्रार्थना पत्र आदि लिखने का अभ्यास करना। * निबन्ध लिखने का प्रयास करना, अनुच्छेद बनाना। * अनुच्छेद में मुख्य विचार वर्णित करने का अभ्यास। * सारांश, व्याख्या, निबन्ध लिखने का अभ्यास। * महान व्यक्तियों के छोटे-छोटे जीवन चरित्र लिखने का अभ्यास। * मौलिक रूप में विचार। * लिखकर प्रस्तुत करने का अभ्यास।	**लिखना :-** * विचारों, अनुभूतियों अपने निजी निष्कर्षों, भावों एवं विचारों की लिखित अभिव्यक्ति देना। * मौलिक रचनाएँ लिखकर प्रस्तुत करना। * सुनी और पढ़ी हुई कहानी, कविता, गीत और पंजाबी कथा को लिखित रूप में प्रस्तुत करना। * अधूरी कहानी को लिखकर प्रस्तुत करना। * पत्र, प्रार्थना-पत्र, निबन्ध लिखना। * चित्र को देखकर लिखित वर्णन प्रस्तुत करना। * विद्यालय के समाचार श्यामपट्ट पर लिखना। * पाठ्यपुस्तक के पाठों से संबंधित प्रश्नोत्तर लिखना। * परिचित विषय पर वार्तालाप लिखना। * देखे गये दृश्यों को लिखित रूप में प्रस्तुत करना। * महापुरुषों की जीवनी। * पाठों का सारांश। * निबन्धों की सुर्खियों के आधार पर लिखना। * हिन्दी गद्यांशों का पंजाबी में व पंजाबी गद्यांशों का हिन्दी में अनुवाद।	* छात्र से अनुलेख, श्रुतलेख लिखाकर अभ्यास। * शब्दों का वाक्यों में प्रयोग। * रिक्त स्थानों की पूर्ति * कहानी और संवाद सुनकर उनका पुन: लिखित रूप में प्रस्तुतीकरण। * पत्र, प्रार्थना-पत्र लेखन का अभ्यास। * परिचित विषय पर निबन्ध लिखने का अभ्यास। * कहानी को संवाद और संवाद को कहानी के रूप में प्रस्तुतीकरण। * संज्ञा, सर्वनाम आदि को लिखित सामग्री में से छाँटना तथा उनका वाक्य प्रयोग।	* प्रश्नोत्तर लिखित रूप में प्राप्त कर। * छात्रों की लेखन क्षमता देखकर। * लिखित कार्य का संशोधन। * शिक्षक द्वारा प्रगति का आंकलन। * वाक्य रचना संबंधी कार्य कराकर। * भाषा सौष्ठव संबंधी ज्ञान के जाँच के लिए भाषा रचना संबंधी अन्य प्रकार के प्रश्न। * कविता, कहानी लिखाकर छात्र की कल्पना शक्ति की जाँच का निर्देश।
* शुद्ध भाषा बोलने और लिखने की क्षमता का विकास करना। * भाषा के व्याकरणिकक अवयवों का परिचय आरम्भ करना।	**व्याकरण :-** * शब्द निर्माण। * वाक्य बनाना। * अकर्मक क्रियाओं का ज्ञान।	* अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करनां * पाठ्य-पुस्तक द्वारा छात्रों को व्याकरण से संबंधित सामग्री का प्रयोग। * छात्र को वाक्य परिवर्तन के अभ्यास।	* अति लघुस्तरीय और लघु-स्तरीय प्रश्नों द्वारा व्याकरण संबंधी ज्ञान। * एकवचन और बहुवचन वाक्य बनाने के अभ्यास।

* छात्र के व्याकरण सम्मत पंजाबी बोली लिखने की क्षमता का विकास करना। * वाक्य में प्रयुक्त शब्दों के पारस्परिक संबंध को समझने की क्षमता को विकसित करना। * आदर सूचक शब्दों का प्रयोग कराना तथा बहुवचन का प्रयोग करने की क्षमता विकसित करना।	* पत्र तथा प्रार्थना-पत्र में सम्मान सूचक शब्द तथा व्यवहारिक शब्दों को लिखकर प्रस्तुत करने का ज्ञान। * वर्तमान काल ता, ते, ती की जगह दा, दे दी लिखने का ज्ञान। * अदद का चिह्न, टिप्पी (बिंदी के रूप में) लिखने का ज्ञान। * ट का प्रयोग मात्रा (ई) टि के साथ लिखने का ज्ञान। * हिन्दी की तरह एकवचन और बहुवचन का ज्ञान * है – ੈ * हैं – ग्ल * वाक्य के प्रकार-सरल संयुक्त और मिश्रित वाक्यं * मुहावरें और लोकोक्तियों का ज्ञान। * शब्दों का भेद – वचन, कारक, विशेषण, क्रिया। * पिंगल अनुप्रास का ज्ञान।	* छात्र को भाषा के वास्तविक स्वभाव का ज्ञान। * आदरसूचक शब्दों का व्यवहार में प्रयोग। * कुछ ऐसे अभ्यास कराएँ जिससे अकर्मक, को एकवचन, बहुवचन, अकर्मक, सकर्मक क्रियाओं आदि की पहचान हो।	* प्रश्नों द्वारा रचना संबंध अभ्यास दिए जाएँ जिनका सीधा संबंध व्याकरण के नियम से हैं * शब्द प्रयोग, रिक्त स्थान की पूर्ति तथा शुद्ध चयन के अभ्यासों द्वारा छात्रों में व्याकरणिक ज्ञान। * अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध

बंगला

सामान्य निर्देश :

1. प्रतिदिन के बोलचाल मं बंगला भाषा में प्रयोग होने वाले शब्दों एवं वाक्यों को सुनने, समझने एवं बोलने का अभ्यास करना।
2. बंगला भाषा के वर्णों तथा मात्राओं का बोध कराना।
3. शुद्ध उच्चारण सहित बंग्ला भाषा के पठन की योग्यता का विकास करना।
4. वर्णों, शब्दों एवं वाक्यों का शुद्ध लेखन।
5. बंगला भाषा की रचनाओं को प्रवाह पूर्ण रीति से पढ़ने तथा उन्हें लिखने की क्षमता का विकास करना।
6. निबन्ध, अनुवाद तथा प्रश्नों के उत्तर लिखवाकर बंगला भाषा में दक्षता प्राप्त करना।
7. बंगला भाषा के व्याकरण का ज्ञान कराना।
8. बंगला साहित्य को पढ़ने में रुचि उत्पन्न करना।
9. बंगला भाषा के माध्यम से भारतीय संस्कृति, कला, अभिनय, बंगला संगीत के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करके राष्ट्रीयता की भावना को विकसित करना।
10. बंगला में लिखित रचनाओं के माध्यम से वर्गीकरण की रक्षा, स्त्री-पुरुष में समानता, छोटे परिवार का सुखमय जीवन, सामाजिक अवरोधों का निवारण, लोकतंत्र और धार्म निरपेक्षता आदि के विषय में जानकारी देना।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* बंगला वर्णमाला से परिचित कराना, सुनना तथा शुद्ध उच्चारण के साथ बोलने का अभ्यास। * वाक्यों को शुद्ध बोलना। * कहानी के मुख्य अंशों पर प्रश्न पूछना बंगला में बोलने का प्रयास। * सुनी हुई कविता को उचित आरोह-अवरोह के साथ सुनाने की योग्यता का विकास।	**सुनना तथा बोलना :–** * बंगला भाषा की समस्त ध्वनियाँ एवं उनकी पहचान। * बंगला के सरल शब्दों से बने वाक्यों में वार्तालाप। * पुस्तक में दी गई कहानी को सूनना। कहानी पर आधारित बातचीत। * पुस्तक में दी गई कविता को सुनना तथा ध्वनि एवं लय के साथ बोलना।	* वर्णमाला का चार्ट दिखाकर, श्यामपट्ट पर लिखकर वर्णमाला का अभ्यास बातचीत के द्वारा। * कहानी से संबंधित बातचीत कोई भी कहानी सुनाकर बातचीत। * कोई भी कविता सुनाकर बातचीत।	* चित्र दिखाकर वर्णमाला पूछना। * शब्दों तथा वाक्यों को लिख कर या चित्र दिखाकर पूछना। * प्रश्नोत्तर द्वारा।
* बंगला भाषा के वर्णो को ध्वनि व लय के साथ पढ़ना। * बंगला भाषा के सरल शब्दों एवं वाक्यों का शुद्ध उच्चारण के साथ पठन। * कहानी का अर्थ समझकर कविता का पठन उचित लय, ध्वनि तथा आरोह-अवरोह के साथ पठन।	**पढ़ना :–** * बंगला भाषा की वर्णमाला के लिपि संकेत। * बंगला भाषा के सरल शब्दों एवं वाक्यों का पठन। * पुस्तक में दी गई कहानी का पठन। * पुस्तक देखकर कविता पाठ।	* विभिन्न चित्र दिखाकर वर्णों का पठन। * श्यामपट्ट पर लिखे सरल शब्दों एवं वाक्यों का पठन। * कहानी के मुख्य अंशों को समझकर पढ़ें। * कोई भी छोटी तथा सरल भाषा में रचित बंगला कविता का पठन।	* वर्णों के पठन द्वारा। * श्यामपट्ट पर या चित्र द्वारा सरल शब्दों के पठन कराकर बच्चे स्वयं बंगला भाषा में कहानी पढ़कर सुनाएँ। * कविता पाठ द्वारा।
* वर्णों का शुद्ध लेखन। * श्रुतलेख, सुलेख, लिखने का अभ्यास। * गद्यांशों का शुद्धता से लेखन/मात्रा तथा युक्ताक्षरों का स्पष्ट लेखन। * शुद्धता से पंक्ति का ध्यान रखते हुए लेखन।	**लिखना :–** * बंगला भाषा की वर्णमाला के लिपि संकेत। * बंगला भाषा के सरल शब्दों एवं वाक्यों का लेखन। * कहानी के अंशों को लेखन। * कविता लेखन।	* वर्णों को बार-बार लिखवाना। * शब्दों को एवं विभिन्न वाक्यों को बार-बार लिखवाना। * कई गद्यांशों को लिखवाना युक्ताक्षरों को अलग से लिखवाना। * किसी भी कविता के अंशों को लिखवाना।	* लिखित कार्य द्वारा। * * लिखित कार्य द्वारा। * प्रश्नों को लिखवाकर। * लेखन द्वारा।
* बंगला भाषा में शुद्ध वाक्य लिखने की क्षमता का विकास करना।	**व्याकरण :–** * शब्द तथा वाक्य रचना संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, रिक्त स्थानों की पूर्ति।	* वाक्य प्रयोग कराया जाए। * रिक्त सीनों की पूर्ति करवाया जाए। * संज्ञा, सर्वनाम तथा क्रिया का वाक्य में प्रयोग।	* लिखित कार्य। * वाक्यों को लिखवाकर।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* साधारण बोलचाल की बंगला सुनकर समझ सके तथा शुद्ध उच्चारण के साथ बोलने की क्षमता का विकास। * कहानी सुनाने की क्षमता का विकास। * कविता, लय के साथ सुनाने की क्षमता का विकास।	**सुनना तथा बोलना :–** * प्रतिदिन बोलने में बंगला भाषा। * सरल शब्द तथा वाक्य। * कहानी * कविता	* बंगला शब्दों तथा वाक्यों को बोलना। * कहानी सुनना। * कविता सुनाना।	* शब्दों को पूछना। * वाक्यों को पूछना। * प्रश्नोत्तर।
* विभिन्न शब्दों तथा वाक्यों को शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ने का विकास। * कहानी पढ़ने की क्षमता का विकास।	**पढ़ना :–** * सरल शब्दों तथा वाक्यों को * विभिन्न कहानियों को * कविता	* बंगला शब्दों तथा वाक्यों को पढ़ना। * किसी भी कहानी के अंशों को पढ़ना।	* शब्दों तथा वाक्यों को पढ़वाकर।
* शब्दों तथा वाक्यों को शुद्धता पूर्ण ढंग से लिखने की क्षमता का विकास। * युक्ताक्षरों की शुद्धता से लेखन द्वारा क्षमता का विकास। * गद्य तथा पद्य के अंशों की लेखन द्वारा अपनी योग्यता का विकास करना।	**लिखना :–** * सरल शब्दों तथा वाक्यों को * युक्ताक्षर * कहानियाँ * कविता	* कोई भी कविता पढ़ना। * श्यामपट्ट पर शब्दों तथा वाक्यों को लिखवाना। * विभिन्न युक्ताक्षरों को लिखवाना। * कहानी के मुख्य अंशों को लिखवाना।	* प्रश्नोत्तर द्वारा। * श्यामपट्ट पर शब्दों तथा वाक्यों को लिखवाकर। * युक्ताक्षरों को लिखवाकर। * प्रश्नों को लिखवाकर।
* भाषा लिखने में शुद्धता लाने की योग्यता का विकास। * स्वतंत्र भाव प्रकाशन का विकास करना। * बंगला भाषा की दक्षता प्राप्त	**व्याकरण :–** * पत्र-परिचय, सन्धि, प्रतिशब्द, भिन्नार्थक शब्द, विपरीत शब्द, लिंग, क्रियाओं के काल, विराम-चिह्न, पर्यायवाची। * **रचना कार्य :–** निबन्ध, पत्र-लेखन, चित्र देखकर वर्णन। * **अनुवाद :–** हिन्दी भाषा के गद्यांशों को बंगला में तथा बंगला से हिन्दी में।	* श्यामपट्ट पर अभ्यास कार्य कराया जाए। * श्यामपट्ट कार्य।	* लिखित कार्य द्वारा। * लिखित कार्य द्वारा।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* बंगला भाषा बोलने की क्षमता उत्पन्न करना। * शुद्ध उच्चारण के साथ बंगला शब्दों तथा वाक्यों को बोलना। * बंगला साहित्य को पढ़ने में रूचि उत्पन्न करना। * वाद-विवाद द्वारा बंगला साहित्य के विभिन्न विषयों का ज्ञान करना।	**सुनना और बोलना :–** * बंगला भाषा का शुद्ध उच्चारण। * सरल शब्द तथा वाक्य * कहानी * कविता * भिन्न-भिन्न विषयों पर बातचीत * अन्त्याक्षरी	* बंगला में विभिन्न विषयों पर बातचीत। * कविता को सही ढंग से आवृत्ति करने का अभ्यास। * प्रश्न द्वारा। * विभिन्न विषयों पर वाद-विवाद। * अन्त्याक्षरी द्वारा।	* बंगला में बातचीत। * कविता आवृत्ति के द्वारा। * प्रश्न द्वारा। * वाद-विवाद द्वारा। * अन्त्याक्षरी द्वारा।
* बंगला साहित्य का ज्ञान। * बंगला भाषा को पढ़ने की योग्यता का विकास। * अच्छी-अच्छी किताबें पढ़कर बंगला भाषा के प्रति श्रद्धा तथा रूचि उत्पन्न करना।	**पढ़ना :–** * पाठ्य-पुस्तक के अतिरिक्त अन्य बंगला साहित्य। * पाठ्य-पुस्तक में संदर्भित कविता, कहानी, निबन्ध का शुद्ध उच्चारण। * मौन पाठ	* गतवर्षों के कार्य की पुनरावृत्ति। * बंगला साहित्य की अच्छी पुस्तकों का अध्ययन।	* कविता तथा गद्य के पठन द्वारा। * कविता आवृत्ति द्वारा। * प्रश्नोत्तर द्वारा।
* शुद्ध बंगला, सुलेख लिखने की क्षमता का विकास। * पुस्तक के अन्तर्गत कहानी, निबन्ध तथा कविताओं के माध्यम से विभिन्न ज्ञानार्जन।	**लिखना :–** * श्रुतलेख, हस्तलेख अनुलेख। * कठिन शब्दों का अर्थ तथा वाक्य प्रयोग। * पाठ्य-पुस्तक के अन्तर्गत कहानी, निबन्ध तथा कविता प्रश्नोत्तर के रूप में। * रिक्त स्थानों की पूर्ति एवं भावार्थ। * स्वरचित रचना।	* पाठांश से श्रुतलेख तथा सुलेख। * विभिन्न पाठों से प्रश्नोत्तर लिखना। * विभिन्न प्रसंगों पर स्वरचना।	* लिखित कार्य द्वारा। * अनुवाद कार्य द्वारा। * प्रश्नोत्तर द्वारा। * लिखित कार्य द्वारा।
* शुद्ध बंगला भाषा बोलने तथा लिखने की क्षमता का विकास * स्वतंत्र भाव प्रकाशन का विकास। * बंगला भाषा में दक्षता प्राप्त करना।	**व्याकरण :–** * पत्र-परिचय, सन्धि, प्रतिशब्द, भिन्नार्थक शब्द, विपरीत शब्द, लिंग क्रियाओं के काल, विराम-चिह्न, पर्यायवाची। * **रचना कार्य :–** निबन्ध, पत्र-लेखन, चित्र देखकर वर्णन। * **अनुवाद :–** हिन्दी भाषा के गद्यांशों को बंगला में तथा बंगला से हिन्दी में।	* श्यामपट्ट पर अभ्यास करना। * चित्र दिखाकर उसके विषय में बंगला में लिखना। * निबन्ध तथा पत्र लिखना। * अनुवाद कराना।	* श्यामपट्ट लेखन द्वारा। * लिखित कार्य द्वारा।

गुजराती

सामान्य उद्देश्य :

1. भारतवर्ष में संस्कृति के संरक्षण हेतु विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं के अध्ययन के प्रति राष्ट्रीय भावना का विकास करना।
2. गुजराती वर्णमाला भावनाओं तथा अंकों का चित्रों के माध्यम से ज्ञान कराना।
3. कतिपय गुजराती वर्णों के उच्चारण एवं उनके लेखन की विषमताओं का ज्ञान कराना तथा उनका शुद्ध उच्चारण सिखाना।
4. हिन्दी के सरल वाक्यों का गुजराती में अनुवाद कराने की दक्षता का विकास करना।
5. गुजराती भाषा के शिष्टाचार के शब्दों का ज्ञान कराना।
6. छात्रों में सरल, बोलचाल की गुजराती भाषा के प्रयोग की क्षमता का विकास करना।
7. गुजराती के गद्य एवं पद्य के पाठों को पढ़कर उनमें निहित भावों को समझाने की योग्यता का विकास करना।
8. गुजराती व्याकरण का क्रमानुसार ज्ञान कराना।
9. अन्य आवश्यक ज्ञान –

   * भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास
   * संवैधानिक जिम्मेदारियाँ
   * राष्ट्रीय भावना उत्पन्न करने वाली विषयवस्तु
   * भारतीय संस्कृति की समान विरासत
   * समानतावाद, लोकतंत्र और धर्मनिरपेक्षता
   * स्त्री व पुरुष में समानता का भाव
   * पर्यावरण की रक्षा
   * सामाजिक अवरोधों को दूर करना।
   * तर्कपूर्ण व वैज्ञानिक दृष्टिकोण
   * छोटा व सुखी परिवार

   उपरोक्त घटकों के आधार पर कुछ गद्य एवं पद्य लिखे जायेंगे।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* गुजराती के वर्णमाला से परिचित कराना। मात्राओं, अंकों तथा सरल शब्दों एवं वाक्यों के शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराना।	**सुनना (समझना) तथा बोलना :–** * (वर्ण परिचय) मातृ-भाषा के माध्यम से गुजराती वर्णमाला तथा मात्राओं का ज्ञान। * गुजराती के सरल शब्दों से बने वाक्यों में वार्तालाप। * गुजराती के अंकों एवं मातृ-भाषा के अंकों के उच्चारण में भेद।	* रेखा-चित्र, चित्रों एवं श्रव्य-दृश्य द्वारा प्रस्तुत सामग्री पर प्रश्नोत्तर।	* दृश्य या चित्रों द्वारा वार्तालाप। * अपना घर, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे पर वार्तालाप।
* गुजराती भाषा की सरल रचनाएँ, उचित विराम के साथ पढ़ने की योग्यता का विकास करना।	**पढ़ना :–** * गुजराती भाषा के सरल शब्दों एवं वाक्यों का पठन। सरल गद्य एवं पद्य पाठों का अर्थ बोध सहित पाठन।	* गुजराती की कुछ पंक्तियों को पढ़वाना एवं मातृ-भाषा में अर्थ बताना।	* संयुक्त अक्षरों को पढ़वाना एवं लिखित रचना को पढ़वाना।
* गुजराती में लिखने का अभ्यास।	**लिखना :–** * गुजराती और मातृ-भाषा की लिपि में भेद। संयुक्त अक्षरों का ज्ञान।	* गुजराती शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करना (सुलेख) अनुलेख।	* रिक्त स्थानों की पूत्रि, शब्दों को सही स्थानों पर रखकर वाक्य बनाना।
* प्रारम्भिक व्याकरण को व्यवहार में लाना तथा प्रयोग करना।	**व्यवहारिक व्याकरण :–** * संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम, वचन, लिंग, पद तथा क्रियापद का व्यावहारिक प्रयोग।	* दिए गए अनुच्छेद में से संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम, वचन आदि की पहचान करना।	* संज्ञा, विशेषण आदि को पहचान कर अपने वाक्यों में प्रयोग करना।
* मातृ-भाषा से गुजराती भाषा में अनुवाद करने का अभ्यास।	**अनुवाद :–** * हिन्दी एवं गुजराती भाषा में अनुवाद।	* मातृ-भाषा से गुजराती में अनुवाद करना तथा गुजराती से मातृ-भाषा में अनुवाद कराना।	* मातृ-भाषा एवं गुजराती वाक्यों एवं अनुच्छेद का अनुवाद कराकर मूल्यांकन करना।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* विचारों को क्रमबद्ध रूप से व्यक्त करने की क्षमता उत्पन्न करना। * व्यवहारिक रूप से शिष्टाचार का पालन करने के योग्य बनाना। * उचित स्वर एवं लय से बोलना और कविताएँ कंठस्थ करने की योग्यता।	**सुनना (समझना) तथा बोलना :–** * सभी प्रकार के संयुक्ताक्षरों, संयुक्त व्यंजनों, व्यंजन गुच्छों तथा अनुनासिक ध्वनियों को सुनकर समझना तथा उनका स्पष्ट उच्चारण। * सामान्य गुजराती शिष्टाचार के शब्दों का प्रयोग। * गुजराती कहानियों को सुनना (समझना) तथा कविताओं को समझना।	* कुछ परिचित परिवेश के विषय में वार्तालाप करना तथा दृश्यों का वर्णन करना। (गुजराती में) * गुजराती बोलते समय शिष्टाचार सम्मत भाषा का प्रयोग करना। * गुजराती में सुनी कहानियों को सुनना।	* किसी चित्र को दिखाकर उसका गुजराती में वर्णन करना। * सरल विषयों पर वार्तालाप करना। * कंठस्थ कविता को सुनना।
* पाठ्य-पुस्तक के अलावा भी गुजराती में रचनाओं को पढ़ने की योग्यता उत्पन्न करना तथा पढ़ने की गति बढ़ाना।	**पढ़ना :–** * पुस्तक में दिए गए गद्य एवं पद्य का पठन अर्थ-बोध के साथ।	* गुजराती के छोटे-छोटे अनुच्छेद पढ़वाना एवं मातृ-भाषा में अर्थ बताना।	* आरोह-अवरोह तथा लयबद्ध अनुच्छेद को पढ़ना, शुद्ध उच्चारण के साथ।
* लिखने का क्रमबद्ध अभ्यास करना, शुद्ध एवं सुडौल अक्षरों का अभ्यास।	**लिखना :–** * चित्रों एवं दृश्यों का वर्णन। * सुनी हुई कहानियों का सारांश। * छोटे वर्णात्मक वस्तुओं पर गुजराती में निबन्ध।	* सरल हिन्दी वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कराना। * सुलेख लिखना एवं छोटे-छोटे वाक्यों को बनाने का अभ्यास कराना।	* हिन्दी से गुजराती में अनुवाद करना। * श्रुति लेख लिखना। * १० पंक्तियों में किसी चित्र का वर्णन तथा किसी विषय में संक्षिप्त निबन्ध।
* पाठ्य-पुस्तक के गद्यांशों से क्रिया, क्रिया विशेषण आदि को समझना और व्यवहार में लाना।	**व्यवहारिक व्याकरण :–** * क्रिया, काल एवं क्रिया विशेषण का बोध।	* व्याकरण संबंधी दिए गए वाक्यों को पहचान करना एवं प्रयोग।	* वाक्यों को दिए गए काल में बदलना।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* धैर्यपूर्वक, शिष्टाचार सहित एकाग्र होकर सुनना, समझना एवं बोलने की क्षमता का विकास करना। * मुहावरें एवं कहावतों का प्रयोग करना।	**सुनना (समझना) तथा बोलना :–** * कहानियों, कविताओं, लोक कथाओं, कथोपकथन को सुनाना, स्मरण कराना एवं सरल गुजराती में वार्तालाप। कविता को कंठस्थ तथा गुजराती भाषा के कुछ मुहावरें एवं कहावतें।	* चित्रों की सहायता से छोटे-छोटे वाक्य बोलना, कहावतें एवं एवं मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग करना।	* कविता पाठ करना। गुजराती में कोइ कहानी। * मुहावरों एवं कहावतों का अर्थ बताना और वाक्य में प्रयोग।
* शुद्ध उच्चारण के साथ पठन योग्यता का विकास करना। उचित गति, विराम तथा आरोह, अवरोह का ध्यान रखते हुए पढ़ना।	**पढ़ना :–** * पाठ्य-पुस्तकों से संबंधित पाठों तथा कविताओं का सस्वर पाठन।	* गद्य तथा पद्य के पाठों का सस्वर वाचन कराना।	* गुजराती में शुद्ध उच्चारण के साथ अनुच्छेद को पढ़ना। कविताओं का लयबद्ध पाठ करना।
* शुद्ध वर्तनी का अभ्यास श्रुति लेख द्वारा करना।	**लिखना :–** * अक्षरों को शुद्ध तथा सुडौल बनावट का ज्ञान-पत्र लेखन, निबन्ध।	* श्रुतलेख, सुलेख तथा अनुलेख लिखना, पत्र, लिखना, निबन्ध।	* श्रुतलेख, शब्दों का वाक्यों में प्रयोग, मुहावरों का प्रयोग। * १५ से २० पंक्तियों का निबन्ध दिए गए विषय पर जैसे– हमारा देश, हमारा नगर, घर, परिवार इत्यादि पर पत्र-लिखना।
* गुजराती एवं हिन्दी भाषा का शुद्ध प्रयोग का अभ्यास देना।?	**अनुवाद :–** * छोटे अनुच्छेद का मातृ-भाषा से गुजराती तथा गुजराती से मातृ-भाषा में अनुवाद।	* हिन्दी एवं गुजराती में अनुवाद कराना।	* अनुवाद हिन्दी एवं गुजराती से।
* गुजराती में छोटे-छोटे विविध प्रकार के प्रश्नों का अभ्यास कराना।	**व्यवहारिक व्याकरण :–** * प्रश्न-सूचक, निषेध, आज्ञात्मक वाक्यों का निर्माण। विराम चिह्नों का ज्ञान।	* विविध प्रकार के वाक्यों तथा प्रश्नों को बनाना तथा वाक्यों का रूपान्तर करना।	* गुजराती में निषेधात्मक वाक्यों को आज्ञात्मक बनाना। * सरल वाक्यों पर प्रश्न बनाना।

गुजरात के प्रमुख व्यक्ति एवं सीन	
राष्ट्रीय	मोहन दास करमचन्द गाँधी
	सरदार वल्लभ भाई पटेल
	दादा भाई नवरोजी
वैज्ञानिक	विक्रम साराभाई
	होमी भाभा
साहित्यकार	कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी
सन्त	नरसिंह मेहता
कला	कनुभाई देसाई
सांस्कृतिक कार्य	गरबी गुजरात के गरबां तथा डांडिया रास
कृषि उत्पादन	मूंगफली, तम्बाकू
पशु	गिरनार जंगल का बब्बर शेर
ऐतिहासिक स्थान	सोमनाथ का मंदिर, द्वारिका

टिप्पणी	पाठ्य-पुस्तकों की सामान्य रूपरेखा
१. कक्षा–६	वर्णमाला, मात्राएँ, अंक ज्ञान चित्रों द्वारा।
	क्रमशः छोटे-छोटे शब्दों का चित्रों द्वारा ज्ञान कराना। १५ गद्य पाठ तथा ५ कविताएँ।
२. कक्षा–७	१५ गद्य पाठ तथा ८ कविताएँ।
३. कक्षा–८	२० गद्य पाठ तथा १५ कविताएँ।

मराठी

सामान्य उद्देश्य :

1. भारतवर्ष में संस्कृति के संरक्षण हेतु विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं के अध्ययन के प्रति राष्ट्रीय भावना का विकास करना।
2. मराठी वर्णमाला, मात्राओं तथा अंकों का चित्रों के माध्यम से ज्ञान कराना।
3. कतिपय मराठी अक्षरों के लेखन व उच्चारण की विषमताओं का ज्ञान कराना तथा उनका शुद्ध उच्चारण सिखाना।
4. हिन्दी के सरल वाक्यों का मराठी में अनुवाद करना।
5. मराठी भाषा के शिष्टाचार के शब्दों का ज्ञान।
6. छात्रों में सरल बोलचाल की मराठी भाषा का विकास करना।
7. मराठी अक्षरों एवं मात्राओं को ज्ञात कर वाक्य बनाना और पढ़ना।
8. मराठी के प्रारम्भिक गद्य एवं पद्य का ज्ञान।
9. मराठी व्याकरण का क्रमानुसार ज्ञान कराना।
10. सरल व रोचक पाठों के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना तथा प्रमुख राष्ट्रीय समस्याओं का ज्ञान कराना।
11. सरल, संगीतमय कविताओं के माध्यम से राष्ट्रीयता का विकास करना।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* ध्यानपूर्वक सुनकर समझने की योग्यता में विकास करना। * भाव ग्रहण एवं भाव प्रकाशन का विकास करना। * मराठी एवं हिन्दी के कुछ वर्ण के सही उच्चारण सीखना जैसे– ल, ण। * मराठी में सरल वाक्यों को बोलना।	**सुनना (समझना) तथा** बोलना :– * मराठी भाषा की सभी ध्वनियाँ, उन्हें पहचानना तथा अन्तर समझना। * वर्ण परिचय, अंक ज्ञान। * हिन्दी तथा मराठी में समान एवं चित्र वर्णों का ज्ञान। * प्रत्येक वर्ण का सही उच्चारण का ज्ञान। * मौखिक भाव प्रकाशन में विकास (शब्द तथा सरल वाक्यों द्वारा)	* सरल एवं बिना मात्रा के वर्णों को पढ़वाना। * दो या तीन वर्णों में सरल शब्दों में पढ़कर बोलना। जैसे– कमल, नल, घर ईयादि। * चित्रों को देखकर मराठी में बोलना। * सरल वार्तालाप करना।	* मौखिक एवं सरल मूल्यांकन (पढ़वाकर अथवा लिखवाकर)
* सरल शब्द, वाक्य गीत अथवा गद्य को पढ़ने का विकास कराना। * मराठी भाषा से संबंधित मुद्रित सामग्री जैसे–चित्र पुस्तक, पाठ्य पुस्तक, मधुकथा एवं बालगीतों को शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ने में विकास के साथ पढ़ने में विकास करना। * पढ़ने में आवश्यक भाव, अनुज्ञान, आरोह, अवरोह का विकास करना।	**पढ़ना :–** * प्रत्येक वर्ण को देखकर सही उच्चारण सहित पढ़ना। * मात्राओं के ज्ञान के साथ आमात्रिक तथा मात्रिक शब्दों के सही उच्चारण के साथ पढ़ना। * संयुक्ताक्षरों को शुद्ध उच्चारण करना। * सरल एवं छोटे वाक्यों, गीतों को अथवा गद्य को पढ़ना। * पढ़ने में उचित बल, अनुमान एवं प्रवाह का ध्यान रखना। * किसी छोटी कविता या गीत को भावपूर्ण, उचित आरोह-अवरोह के साथ प्रस्तुत करना।	* सरल पाठ्य-पुस्तक को पढ़वाना, उच्चारण पर ध्यान देना।	* मौखिक एवं लिखित कार्य द्वारा।
* शब्दों एवं वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखना। * लिखने में शुद्धता एवं उचित गति का विकास कराना।	**लिखना :–** * प्रत्येक वर्ण को सहज एवं सुडौल रूप में लिखना। * मात्राओं तथा संयुक्ताक्षरों के प्रयोग से बने हुए शब्दों को स्पष्ट रूप में लिखना। * सरल वाक्यों को लिखना। * श्यामपट्ट एवं पुस्तक में दिए गए शब्दों तथा वाक्यों को अनुलेख।	* चित्र, वस्तुएँ आदि पर सरल एवं शुद्ध वाक्य लिखवाना। * सामान्यत: प्रयुक्त मराठी शब्दों का हिन्दी में भाषा कर। * हिन्दी भाषा के सरल वाक्यों को मराठी में लिखना। * मराठी में शब्दों के रूप में अंक लिखना।	* मौखिक-लिखित।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* सरल एवं संयुक्त शब्दों को सुनकर अर्थ समझने की क्षमता। * सामान्य शिष्टाचार में प्रयुक्त होने वाले शब्दों का प्रयोग बोलने में करना। * मराठी में बोले गए वाक्यों को सुनकर हिन्दी में भाषानार करना तथा हिन्दी के सरल वाक्यों को मराठी में बोलना।	**सुनना (समझना) तथा बोलना :–** * मराठी के सभी ध्वनियों को सुनकर पारस्परिक अन्तर को समझना तथा उसका शुद्ध उच्चारण करना विशेषकर– श, ष, स, ङ, ल। * सभी प्रकार के संयुक्त स्वरों, संयुक्त व्यंजनों अनुनासिक ध्वनियों को सुनकर समझना एवं उनका स्पष्ट एवं शुद्ध उच्चारण करना। * दिए गए निर्देश/संदेश एवं भावों के विचारों को सुनना एवं समझना अपने भावों को सरल मराठी भाषा में प्रस्तुत करना। * सामान्य शिष्टाचार के प्रयुक्त शब्दों को सुनना, स्पष्ट उच्चारण करना। * अनुस्वार, पूर्ण विराम, कामा इत्यादि का बोलते समय ध्यान रखना।	* मराठी में वार्तालाप करना, किसी चित्र, वस्तु या शीर्षक पर सात-आठ वाक्य मराठी में बोलने का प्रयास करना।	* मौखिक
* मराठी में सरल एवं संयुक्ताक्षर पढ़ने में विकास। * मराठी में पाठ्यवस्तु को पढ़ने की क्षमता का विकास करना।	**पढ़ना :–** * मराठी के सरल शब्द संयुक्ताक्षर को सही मात्राओं का शुद्ध एवं स्वच्छ रूप में पढ़ना। * सरल वाक्यों को शुद्ध रूप में पढ़ना। * मराठी गद्य एवं पद्य को शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ना। * अनुस्वार, पूर्ण विराम प्रश्नवाचक चिह्नों को पहचानकर पठन सामग्री का अर्थ ग्रहण करते हुए पढ़ना। * पढ़ने में गति रखने का अभ्यास। * सरल साहित्य को पढ़ने की दक्षता उत्पन्न करना।	* मराठी गद्य एवं पद्य के सरल वाक्य पढ़वाना।	* मौखिक
* सरल एवं कठिन शब्दों का लिखने में विकास करना। * शुद्ध लेख लिखने में क्षमता का विकास करना।	**लिखना :–** * मराठी पुस्तक के लेख को देखकर लिखना। * किसी वस्तु या चित्र को देखकर मराठी भाषा में कुछ सरल वाक्य लिखना। * किसी के द्वारा मराठी श्रुतलेख शुद्ध रूप में लिखाना। * लघु निबन्ध लिखना।	* श्यामपट्ट पर लिखे गए वाक्यों का अनुलेख लिखना। * किसी वस्तु पर मराठी में कुछ वाक्य लिखना।	* मौखिक एवं लिखित।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* सुनाई गई कहानियाँ, लोक कथाओं, व्याख्यान को एकाग्र चित्त होकर सुनने एवं समझने की क्षमता में विकास करना।	**सुनना (समझना) तथा बोलना :–** * कहानियाँ, लोक कथाओं, चुटकुले, मनोरंजक साहित्य को एकाग्रचित्त होकर सुना। * लघु कविताएँ, गीत, लोकगीत, राष्ट्रीय गीत इत्यादि को सुनना तथा कहना। * दिए गए उपदेशों को समझना। * दिए गए निर्देश / संदेश एवं वक्ता के भावों को समझना तथा अपनी भाषा में व्यक्त करना।	* मराठी में वार्तालाप कराना। * हिन्दी वाक्यों को मराठी में भाषान्तर करना। * मराठी शब्दों का सही प्रयोग करना तथा वाक्य को सही उच्चारण के साथ बोलना।	* मौखिक वार्तालाप द्वारा।
* मराठी साहित्य पढ़ने में रूचि उत्पन्न करनां * दूसरे के विचारों को पढ़कर समझने की योग्यता का विकास करना। * गति के साथ मराठी वाचन में विकास करना।	**पढ़ना :–** * मराठी गद्य एवं पद्य को शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ना। * कहानियाँ, कविताएँ इत्यादि राष्ट्रीय भावना, ऐतिहासिक महापुरुषों के जीवन, इनके जीवनी के प्रेरक प्रसंग से संबंधित हों। * छोटे-छोटे मुहावरें उनका वाक्यों में प्रयोग पढ़ना, समझाना एवं स्मरण करना।	* पढ़े हुए गद्यांश, पद्यांश का सारांश व्यक्त कराना। * स्मृति के आधार पर कविता कहना (स्मरण कर)	
* मराठी भाषा को शुद्ध रूप में गति के साथ लिखने एवं समझने का अभ्यास कराना।	**लिखना :–** * लिपि के सभी ध्वनि संकेतों का ज्ञान। * सरल एवं क्लिष्ट संयुक्ताक्षरों को शुद्ध वर्तनी के साथ लिखनां * परिचित विषय घटना या किसी वस्तु पर लधुलेख लिखना। * मराठी शब्दों का सही वाक्य प्रयोग। * मराठी के मुहावरों का वाक्यों में उपयोग। * साधारण पत्र लेखन, आवेदन-पत्र इत्यादि। * गद्य को पढ़कर भावार्थ लिखना।	* श्रुतलेख, अनुलेख तथा लधु लेख इत्यादि का अभ्यास।	* लिखित कार्य * गद्य एवं पद्य पर लिखित प्रश्नोत्तर द्वारा। * पत्र लेखन, प्रार्थना पत्र, कहानी, लघु निबन्धों को लिखित परीक्षा का अंग बनाया जा सकता है।

पाठ्य पुस्तकों की सामान्य रूपरेखा –

1. कक्षा–६ वर्णमाला, मात्राएँ, अंक ज्ञान, चित्रों द्वारा क्रमशः छोटे-छोटे शब्दों का चित्रों द्वारा ज्ञान कराना, १० गद्य पाठ तथा ५ कविताएँ।

2. कक्षा–७ –१५ गद्य पाठ तथा १० कविताए।

3. कक्षा–८ – २० गद्य तथा १५ कविताएँ।

विशेष पाठों का समावेश –

1. राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास (अत्यंत सूक्ष्म)

1. राष्ट्रीय एकता के पोषक तत्व।
2. भारत की साझी सांस्कृतिक विरासत।
3. पुरुष तथा स्त्रियों में समानता।
4. पर्यावरण का अनुरक्षण।

1. संविधान में निर्दिष्ट दायित्व।
2. समता, जनतंत्र और धर्म निरपेक्षता।
3. सामाजिक बाधाओं का निवारण।
4. छोटे परिवार की मान्यता का निर्वाह।
5. वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास।

कन्नड़

सामान्य उद्देश्य :

1. भारतीय संस्कृति के संरक्षण हेतु विभिन्न राज्यों की भाषाओं के माध्यम के प्रति अभिरूचि उत्पन्न करते हुए राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास करना।
2. कन्नड़ भाषा तथा साहित्य के ज्ञान हेतु कन्नड़ के अध्ययन के प्रति अभिरूचि उत्पन्न करना।
3. हिन्दी के वाक्यों का ''कन्नड़'' में तथा ''कन्नड़'' से हिन्दी में अनुवाद करने की क्षमता का विकास करना।
4. अपने भावों तथा विचारों को ''कन्नड़'' भाषा के माध्यम से व्यक्त करने की योग्यता विकसित करना।
5. विद्यार्थियों में ''कन्नड़'' भाषा बोलने, सुनने, समझने, पढ़ने और लिखने की क्षमता लाना।
6. सरल तथा सुबोध और शासन द्वारा निर्धारित कन्नड़ पद्य तथा पद्य पाठों का शुद्ध उच्चारण करके विषयवस्तु को समझना तथा अर्थ ग्रहण करना।
7. भारतीय संस्कृति तथा कन्नड़ संस्कृति के तुलनात्मक अध्ययन द्वारा छात्रों में धैर्य, निरपेक्षता की भावना उत्पन्न करना।
8. कन्नड़ कवियों, साहित्यकारों, लेखकों एवं उनकी कृतियों से छात्रों को अवगत करना, आपस में भाईचारे की भावना लाना।
9. छात्रों में देश, राज्यों के कृति स्नेह, प्रेम का विकास करना, आपस में भाई चारे की भावना लाना।
10. छात्रों में सत्य, अहिंसा, परोपकार, देश प्रेम, धर्म निरपेक्षता, नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों के प्रति आस्था जागृति करना।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* ध्यानपूर्वक दोहराने व कन्नड़ शब्द अथवा पढ़ने की योग्यता का विकास करना। * भावग्रहण व सहजभाव प्रकाशन का विकास करना। * किसी वस्तु, दृश्य आदि को देखकर उसे कन्नड़ भाषा में व्यक्त करना।	**सुनना (समझना) तथा बोलना :–** * कर्नाटक प्रदेश की क्षेत्रीय भाषा कन्नड़ की सभी ध्वनियों को पहचानना तथा अन्तर समझना जैसे– एं, ए, ऐ, ऑं, ओ, औ, ड़, ल, आदि। * किसी विषय से संबंधित कहे गए निर्देश, संदेश कथन, वर्णन आदि। * सुनायी गयी सूचनाएं तथ्य आदि। * प्रार्थना, कविता, गीत आदि। * मौखिक भाव प्रकाशन – * घर पड़ोस से संबंधित प्रश्न। * प्राकृतिक वातावरण - पशु, पक्षी, खेती, बागवानी * पाठशाला - बस्ते की सामग्री, विद्यालय का नाम, उत्सव, खेलकूद, शिल्प। * सामाजिक जीवन - कृषि, किसान, बढ़ई, धोबी, कुम्हार।	* अपना घर, परिवार, पशु, पक्षी, खिलौने आदि के कन्नड़ शब्द जानना तथा बोलना। * चित्रों पर आधारित सरल वाक्य समझना तथा बोलना। * सरल कविताओं को कंठस्थ करके सुनाना। * बालसभा तथा उत्सवों में सक्रिय रूप से भाग लेना।	* संबोध और अभ्यास के विषयों पर वार्तालाप तथा प्रश्नोत्तर। * कंठस्थ कविताओं को सुनना।
* कन्नड़ भाषा संबंध मुद्रित सामग्री जैसे– चित्र पुस्तक, पाठ्यपुस्तक को शुद्ध उच्चारण सहित सस्वर पठन की क्षमता का विकास करना। * विशेषत: कन्नड़ की प्रकृति के अनुसार अंतिम ह्रस्व, वर्ण का स्पष्ट पूर्ण उच्चारण करना। * उचित गति, यति आरोह-अवरोह के साथ कविता पढ़ने की क्षमता तथा योग्यता का विकास करना।	**पढ़ना :–** * कन्नड़ भाषा की सभी ध्वनियों के लिए संकेतों, वर्णो के मेल से बने शब्दों अमात्रिक तथा मात्रिक वर्ण वाले शब्द क्ष, ल, ज्ञ, स्त जैसे संयुक्ताक्षर तथा हिन्दी से भिन्न कन्नड़ की कुछ ध्वनियों के संकेतों को (ए, ऑं, ल) आदि को पहचानकर शुद्ध उच्चारण सहित पढ़ना। * शब्दों, वाक्यों को शुद्ध स्पष्ट उच्चारण के साथ पढ़ना। * छोटी, कविता या गीत को उचित आरोह-अवरोह के साथ स्पष्ट स्वर में पढ़कर प्रस्तुत करना। * आस-पास की परिचित वस्तुओं के कन्नड़ नाम तथा वाक्यों में उनके लघु वर्णन।	* चित्रों या वस्तुओं के माध्यम से अक्षरों का ज्ञान कराना। * अक्षर कार्डो को छाँटकर आधारित शब्दों की रचना कराना। * पाठ्य पुस्तक के पाठों को शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ना।	* अमात्रिक वर्णों को पहचान कर पढ़ना, उससे शब्द बनाना। * मात्रिक वर्णों को पहचानकर पढ़ना। * सरल वाक्य तथा छोटी-छोटी कविताओं को पढ़वाना।
* कन्नड वर्णमाला का सम्यक बोध/लिख सकने की क्षमता का विकास करना।	**लिखना :–** * कन्नड़ लिपि के सभी स्वर-व्यंजन संकेत (वर्णमाला) लिखने का अभ्यास।	* समान आकार वाले अक्षर समूहों को वर्गीकृत करके लिखना तथा पढ़वाना। * विभिन्न व्यंजनों पर मात्राएँ लगाना।	* अक्षरों को देखकर लिखना।

* मात्राओं के लगाने का ज्ञान। * कुछ संयुक्ताक्षरों का बोध। * (क्ष, ल, ज्ञ) दृश्य वस्तुओं के कन्नड़ नाम जानने की जिज्ञासा।	* कन्नड़ शब्दों एवं धातुओं को लिखने की क्षमता। * कन्नड़ लिपि में छोटे वाक्यों को लिखने की क्षमता। * कन्नड़ अक्षरों के सूक्ष्म अंतर की पहचान। * सुनकर अक्षर, शब्द लिखने का अभ्यास कराना (श्रुतलेख)	* सुलेख का अभ्यास कराना। * अधूरी आकृति को पूरा करके अक्षरों का रूप देना। * रिक्त स्थान की पूर्ति शब्द/वाक्यों हिन्दी शब्दों को कन्नड़ में लिखना।	* शब्दों तथा मात्राओं सहित अक्षरों को लिखना। * अनुलेख, श्रुतलेख तथा सुलेख द्वारा शुद्धता, स्पष्टता तथा सुन्दरता का मूल्यांकन।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* एकाग्रतापूर्वक सुनकर समझने की क्षमता उत्पन्न करना। * शब्दों में उच्चारण भेद से अन्तर समझना। (आट, ऊंट-ओट, ओंट) * स्वयं शब्दों तथा सरल छोटे वाक्यों को बोल सकना। * संख्या १–१०० बोलना, समझना। * पाठ पर आधारित तथा परिवेश संबंधी पूछे गए सरल प्रश्नोत्तर।	**सुनना (समझना) तथा बोलना :–** * कन्नड़ शब्द एवं वाक्यों को सुनकर समझना। * वक्ता के भाव, आदेश, वक्रोक्ति विनोद आदि को समझ सकना। * शब्द एवं वाक्यों तथा कविताओं को उचित अनुमान, आरोह-अवरोह तथा शुद्ध उच्चारण में सप्रवाह सुना सकना। * आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से प्रसारित कार्यक्रमों का आशय अथवा संकेत ग्रहण कर सकना। * कन्नड़ के तीन वचनों तथा तीन लिंगों का बोध।	* अध्यापक द्वारा पाठ के वाचन को ध्यानपूर्वक सुनकर तदैव उच्चरित करना। * कण्ठस्थ कविता का सुनाना। उचित अनुमान तथा आरोह-अवरोह का ध्यान रखना। * पाठ, परिवार, परिवेश विद्यालय पर प्रश्नोत्तर। * सामूहिक गान का अभ्यास कराना।	* वस्तु/चित्र देखकर कन्नड़ में बोलना। * कन्नड़ में निर्देश देकर कार्य करने को कहना। * प्रतियोगिता अथवा उत्सवों में कविता पाठ कराना। * सामूहिक गान में प्रतिभाग और प्रस्तुति की कोटि पर मूल्यांकन।
* शुद्ध उच्चारण, बलाघात–स्वराघात के साथ उचित गति से पढ़ने की क्षमता का विकास करना। * विराम चिह्नों को ध्यान में रखकर पढ़ने की योग्यता लाना। * अर्थ ग्रहण करते हुए उचित गति से मौन एवं सस्वर पठन की क्षमता का विकास करना।	**पढ़ना :–** * उचित गति, बल तथा आरोह-अवरोह के साथ वाक्य तथा अनुच्छेदों के साथ वाक्य तथा अनुच्छेदों का प्रवाह के साथ प्रभावपूर्ण ढंग से सस्वर वाचन करना। * निर्दिष्ट गद्यांश का मौन-पठन कर उसके अर्थ को समझना तथा बता सकना। * सस्वर और मौन पठन की गति में उचित सीमा तक वृद्धि करना। * घटना, कहानी आदि के संवादों से प्रवाह उत्पन्न करने की क्षमता। * कविता अथवा देशगान आदि का प्रवाहपूर्ण ढंग से सस्वर पाठ करना।	* पाठ्य-पुस्तकों से पढ़ने का अभ्यास कराया जाए। * कन्नड़ भाषा की पत्रिका आदि से शीर्षक, चित्र-परिचय आदि पढ़ना।	* पाठ्य-पुस्तक के अंशों को पढ़वाकर उनकी पठन क्षमता का मूल्यांकन करना। * पाठ्य सामग्री पर प्रश्नोत्तर पूछना तथा अर्थग्रहण की क्षमता का मूल्यांकन करना।

* कन्नड़ लिपि की सुघरता अक्षरों में सूक्ष्म अन्तर एवं वाक्य विन्यास से परिचित कराना।
* सुलेख का अभ्यास कराना।
* सुनकर यथावत लिखने का अभ्यास कराना।
* अपने अनुभवों को लिखित रूप में प्रस्तुत करने की क्षमता का विकास।
	लिखना और रचना कार्य :–
	* अनुलेख :–
	  * कन्नड़ अक्षरों के गोलाकर रूप का अभ्यास।
	  * एक जैसे स्वरूप वाले अक्षरों का अन्तर स्पष्ट रखना।
	  * शब्द के अक्षरों को निकट रखना।
	  * दो शब्दों के बीच उचित दूरी रखना।
	* श्रुतलेख :–
	  * शब्द तथा वाक्य सुनकर शुद्ध वर्तनी में लिखना।
	  * विराम चिह्नों का उचित प्रयोग करना।
	* रचना :–
	  * वस्तु अथवा चित्र को देखकर कन्नड़ में लिखना।
	  * लोगों के नाम, विद्यालय, प्रदेश, स्वदेश के नाम लिखना।
		* पाठ्य-पुस्तक के अंशों से सुलेख एवं अनुलेख लिखना।
		* शब्द, वाक्य सुनकर लिखना।
		* पाठ के अन्त में दिए गए तथा अन्य प्रश्नों के उत्तर लिखना।
		* रिक्त स्थान की पूर्ति करना।
		* गाय, कुत्ता, विद्यालय, पर्व आदि पर सरल वाक्य लिखना।
		* हिन्दी के शब्दों को कन्नड़ लिपि में लिखने की क्षमता का विकास।
			* अनुलेख एवं श्रुतलेख।
			* कन्नड़ से हिन्दी में भाषान्तर करना।
			* कन्नड़ उच्चारण को देवनागरी लिपि में लिखना।
			* हिन्दी शब्दों तथा सरल वाक्यों का कन्नड़ अनुवाद प्रस्तुत करना।
			* कन्नड़ के प्रश्नों का कन्नड़ में उत्तर देना।
			* वाक्य रचना संबंधी क्षमता का मूल्यांकन।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* अध्यापक द्वारा किए गए वाचन को छात्र ध्यानपूर्वक सुनें तथा समझकर कन्नड़ की प्रकृति के अनुसार उसकी सस्वर वाचन कर सकें। * हिन्दी से कन्नड़ में अनुवाद कर सकना। * कन्नड़ से हिन्दी में अनुवाद कर सकना। * संप्रेषित अथवा स्वयं के विचार एवं भावों को कन्नड़ में कह सकने की क्षमता लाना। * कन्नड़ कविता अथवा गीतों को शुद्ध उच्चारण में रसानुकूल लय में प्रवाहपूर्वक सुनाने की योग्यता का विकास। * कन्नड़ में संख्याओं का बोलना लिखना सीखना। * कन्नड़ भाषा में लिंग, वचन एवं धातुरूप का बोध प्राप्त करना।	सुनना (समझना) तथा बोलना :– * कन्नड़ प्रदेश भाषा कन्नड़ के शब्दों एवं वाक्यों को सुनकर उन्हें समझ लेना। * प्रथम भाषा हिन्दी के शब्द तथा सरल वाक्यों को अनुवाद करके कन्नड़ में बोल सकना। * निर्देश, आदेश, विनय अथवा सामान्य वर्णन आदि को समझ सकना तथा स्व्यं कह पाने की क्षमता का विकास। * कन्नड़ के लिंग एवं वचन के तीन-तीन भेदों के रूप उनसे संयोज्य क्रिया रूपों का परचिय एवं अभ्यास। * कन्नड़ कविता अथवा राष्ट्रीय गीतों को सुनना और सुना सकना। * किसी विषय पर कुछ वाक्य बोल सकना। * कन्नड़ शब्दों के उच्चारण में उचित बलाघात, स्वराघात तथा प्रवाह लाने का अभ्यास। * रेडियो अथवा दूरदर्शन के कन्नड़ कार्यक्रमों को समझने का प्रयास। * स्वयं किसी से प्रश्न कर सकना तथा पूछे गए प्रश्न का उत्तर दे सकना। * १ से १००० तक की संख्या को कन्नड़ में बोल सकना।	* पाठों का सस्वर समुचित बलाघात एवं स्वराघात में वाचन। * कन्नड़ में प्रश्न एवं उत्तर बोलने का अभ्यास। * कविता अथवा गीतों का सस्वर पाठ एवं गायन। * वाक्य रचना कर वार्तालाप की क्षमता का विकास। * भाषा-रचना से संबंधित विविध अभ्यास।	* पाठ से गद्यांश एवं पद्यांश का सस्वर वाचन कराया जाए। * कण्ठस्थ कविता अथवा वर्णन सुने जाएँ। * प्रश्नों के उत्तर पूछे जाएँ। * पठित अंश पर प्रश्न बनाने के लिए कहा जाए। * किसी वर्णन का सारांश हिन्दी तथा कन्नड़ में पूछा जाए। * पर्यायवाची, विलोम शब्दों पर प्रश्न पूछकर। * किसी देखे गए दृश्य का कन्नड़ भाषा में वर्णन।
* परिचित अथवा अपरिचित गद्यांश एवं पद्यांश का मौन वाचन तथा मुखर वाचन कर सकना। * हस्त लिखित कन्नड़ में पत्र आदि को पढ़ना।	**पढ़ना :–** * पाठ्य-पुस्तक में कन्नड़ के शब्दों एवं वाक्यों का मौन एवं मुखर वाचन कर सकना। * कन्नड़ संख्याओं को पढ़ना। * पत्र-पत्रिका, शीर्षक, विज्ञापन, साइन बोर्ड आदि को कन्नड़ भाषा को पढ़ सकना। * कन्नड़ में लिखे गए पत्र को पढ़ सकना।	* छात्रों को एक आदर्श पाठ प्रस्तुत कर उनसे मौन वाचन तथा मुखर वाचन कराना। * अशुद्ध उच्चारण आदि को शुद्ध करना। * पढ़े हुए अंश पर प्रश्नोत्तर अथवा वार्तालाप कराना।	* कन्नड़ के किन्हीं गद्यांश अथवा पद्यांश को छात्रों से पढ़वाकर सुना जाए अथवा कन्नड़ के उच्चारण को देवनागरी में लिखाया जाए। * पठित अंश पर प्रश्नोत्तर किए जाएँ।
* लिखित कन्नड़ भाषा के स्वरूप एवं प्रकृति को बोध * कन्नड़ भाषा में पाठ्य विषय अथवा अनुभवों को लिखित भाषा में व्यक्त करना। * वर्तनी, लिंग, वचन के रूपों में शुद्धता का अभ्यास।	**लिखना :–** * पठित गद्यांश एवं पद्यांश को अनुलेखन तथा श्रुतलेखन कर सकना। * अपठित अंशों का अनुलेखन तथा श्रुतलेखन कर सकना। * पठित एवं अपठित अंशों पर प्रश्नोत्तर द्वारा उसमें निहित विचार, तथ्य तथा भावों को स्पष्ट कर–	* सुलेख अथवा अनुलेख का अभ्यास। * श्रुतलेख का अभ्यास। * प्रश्नों के रूप। * कन्नड़ पढ़कर उसका उच्चारण, देवनागरी लिपि में लिखना। * हिन्दी शब्द और वाक्यों का कन्नड़ में अनुवाद करना।	* क्रियाकलाप के अन्तर्गत प्रश्नों के रूप के आधार पर।

	* मातृभाषा में लिखना। * कन्नड़ लिखना।	* रिक्त स्थान की पूर्ति। * पत्र-लेखन। * गद्यांश, पद्यांश कन्नड़ में प्रश्नोत्तर * शब्दों के वचन लिंग के अनुसार रूप * धातु के रूप एवं संज्ञा, सर्वनाम के साथ उनका प्रयोग। * संबंधियों, पशु, पक्षी, फल, फूल, भोज्य-पदार्थ, घरेलू वस्तुएं, रंग आदि के कन्नड़ शब्द बताए जाएँ। * व्यक्ति वाचक संज्ञाओं को कन्नड़ में लिखना।	

असमिया

सामान्य उद्देश्य :

1. प्रतिदिन के बोलचाल में असमिया भाषा में प्रयोग होने वाले शब्दों एवं वाक्यों को सुनने, समझने एवं बोलने का अभ्यास कराना।
2. असमिया भाषा के वर्णों तथा मात्राओं का बोध कराना।
3. शुद्ध उच्चारण सहित असमिया भाषा के पठन की योग्यता का विकास करना।
4. वर्णों, शब्दों एवं वाक्यों का शुद्ध लेखन।
5. असमिया भाषा की रचनाओं को प्रवाह पूर्ण रीति से पढ़ने तथा उन्हें लिखने की क्षमता का विकास करना।
6. निबन्ध, अनुवाद तथा प्रश्नों के उत्तर लिखवाकर असमिया भाषा में दक्षता प्राप्त करना।
7. असमिया भाषा के व्याकरण का ज्ञान कराना।
8. असमिया साहित्य को पढ़ने में रुचि उत्पन्न करना।
9. असमिया भाषा के साहित्यकारों की श्रेष्ठ रचनाओं का अध्ययन करना।
10. असमिया भाषा के माध्यम से भारतीय संस्कृति, कला, अभिनय, असमिया संगीत के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करके राष्ट्रीयता की भावना को विकसित करना।
11. असमिया में लिखित रचनाओं के माध्यम से पर्यावरण की रक्षा, स्त्री-पुरुष, में समानता, छोटे परिवार का सुखमय जीवन, सामाजिक अवरोधों का निवारण, लोकतंत्र और धर्म निरपेक्षता आदि के विषय में जानकारी देना।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* असमिया वर्णमाला से परिचित कराना, सुनना तथा शुद्ध उच्चारण के साथ बोलने का अभ्यास। * वाक्यों को शुद्ध बोलना। * कहानी के मुख्य अंशों पर प्रश्न पूछना असमिया में बोलने का प्रयास। * सुनी हुई कविता को उचित आरोह-अवरोह के साथ सुनाने की योग्यता का विकास	**सुनना तथा बोलना :–** * असमिया भाषा की समस्त ध्वनियाँ एवं उनकी पहचान। * असमिया के सरल शब्दों से बने वाक्यों में वार्तालाप। * पुस्तक में दी गई कहानी को सुनना। कहानी पर आधारित बातचीत। * पुस्तक में दी गई कविता को सुनना तथा ध्वनि एवं लय के साथ बोलना।	* वर्णमाला का चार्ट दिखाकर, श्यामपट्ट पर लिखकर वर्णमाला का अभ्यास बातचीत के द्वारा। * कहानी से संबंधित बातचीत कोइ भी कहानी सुनाकर बातचीत। * कोई भी कवता सुनाकर बातचीत।	* चित्र दिखाकर वर्णमाला पूछना। * शब्दों तथा वाक्यों को लिख कर या चित्र दिखाकर पूछना। * प्रश्नोत्तर द्वारा।
* असमिया भाषा वर्णों को ध्वनि व लय के साथ पढ़ना। * असमिया भाषा के सरल शब्दों एवं वाक्यों का शुद्ध उच्चारण के साथ पठन। * कहानी का अर्थ समझकर कविता का पठन उचित लय, ध्वनि तथा आरोह-अवरोह के साथ पठन।	**पढ़ना :–** * असमिया भाषा की वर्णमाला के लिपि संकेत। * असमिया भाषा के सरल शब्दों एवं वाक्यों का पठन। * पुस्तक में दी गई। कहानी का पठन। * पुस्तक देखकर कविता पाठ।	* विभिन्न चित्र दिखाकर वर्णों का पठन। * श्यामपट्ट पर लिखे सरल शब्दों एवं वाक्यों का पठन। * कहानी के मुख्य अंशों को समझकर पढ़ें। * कोई भी छोटी तथा सरल भाषा में रचित असमिया कविता का पठन।	* वर्णों के पठन द्वारा। * श्यामपट्ट पर या चित्र द्वारा सरल शब्दों के पठन कराकर बच्चे स्वयं असमिया भाषा में कहानी पढ़कर सुनाएँ। * कविता पाठ द्वारा।
* वर्णों का शुद्ध लेखन। * श्रुतलेख, सुलेख, लिखने का अभ्यास। * गद्यांशों का शुद्धता से लेखन/मात्रा तथा युक्ताक्षरों का स्पष्ट लेखन। * शुद्धता से पंक्ति का ध्यान रखते हुए लेखन।	**लिखना :–** * असमिया भाषा की वर्णमाला के लिपि संकेत। * असमिया भाषा के सरल शब्दों एवं वाक्यों का लेखन। * कहानी के अंशों को लेखन। * कविता लेखन।	* वर्णों को बार-बार लिखवाना। * शब्दों को एवं विभिन्न वाक्यों को बार-बार लिखवाना। * कई गद्यांशों को लिखवाना युक्ताक्षरों को अलग से लिखवाना। * किसी भी कविता के अंशों को लिखवाना।	* लिखित कार्य द्वारा। * लिखित कार्य द्वारा। * प्रश्नों को लिखवाकर। * लेखन द्वारा।
* असमिया भाषा में शुद्ध वाक्य लिखने की क्षमता का विकास करना।	**व्याकरण :–** * शब्द तथा वाक्य रचना संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, रिक्त स्थानों की पूर्ति।	* वाक्य प्रयोग कराया जाए। * रिक्त स्थानों की पूर्ति करवाया जाए। * संज्ञा, सर्वनाम तथा क्रिया का वाक्य में प्रयोग।	* लिखित कार्य। * वाक्यों को लिखवाकर।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* साधारण बोलचाल की असमिया सुनकर समझ सके तथा शुद्ध उच्चारण के साथ बोलने की क्षमता का विकास। * कहानी सुनाने की क्षमता का विकास। * कविता, लय के साथ सुनाने की क्षमता का विकास।	**सुनना तथा बोलना :–** * प्रतिदिन बोलने में असमिया भाषा। * सरल शब्द तथा वाक्य। * कहानी * कविता	* असमिया शब्दों तथा वाक्यों को बोलना। * कहानी सुनना। * कविता सुनाना।	* शब्दों को पूछना। * वाक्यों को पूछना। * प्रश्नोत्तर।
* विभिन्न शब्दों तथा वाक्यों को शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ने की क्षमता का विकास। * कहानी पढ़ने की क्षमता का विकास।	**पढ़ना :–** * सरल शब्दों तथा वाक्यों को * विभिन्न कहानियों को। * कविता	* असमिया शब्दों तथा वाक्यों को पढ़ना। * किसी भी कहानी के अंशों को पढ़ना।	* शब्दों तथा वाक्यों को पढ़वाकर।
* शब्दों तथा वाक्यों को शुद्धता पूर्ण ढंग से लिखने की क्षमता का विकास। * युक्ताक्षरों की शुद्धता से लेखन द्वारा क्षमता का विकास। * गद्य तथा पद्य के अंशों की लेखन द्वारा अपनी योग्यता का विकास करना।	**लिखना :–** * सरल शब्दों तथा वाक्यों को * युक्ताक्षर। * कहानियाँ * कविता	* कोई भी कविता पढ़ना। * श्यामपट्ट पर शब्दों तथा वाक्यों को लिखवाना। * विभिन्न युक्ताक्षरों को लिखवाना। * कहानी के मुख्य अंशों को लिखवाना।	* प्रश्नोत्तर द्वारा। * शमपट्ट पर शब्दों तथा वाक्यों को लिखवाकर। * युक्ताक्षरों को लिखवाकर। * प्रश्नों को लिखवाकर।
* भाषा लिखने में शुद्धता लाने की योग्यता का विकास। * स्वतंत्र भाव प्रकाशन का विकास करना। * असमिया भाषा की दक्षता प्राप्त करना।	**व्याकरण :–** * पत्र-परिचय, सन्धि, प्रतिशब्द, भिन्नार्थक शब्द, विपरीत शब्द, लिंग, क्रियाओं के काल, विराम-चिह्न, पर्यायवाची। * **रचना कार्य :–** निबन्ध, पत्र-लेखन, चित्र देखकर वर्णन। **अनुवाद :–** हिन्दी भाषा के गद्यांशों को असमिया में तथा असमिया से हिन्दी में।	* श्यामपट्ट पर अभ्यास कार्य कराया जाए। * श्यामपट्ट कार्य	* लिखित कार्य द्वारा। * लिखित कार्य द्वारा।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* असमिया भाषा बोलने की क्षमता उत्पन्न करना। * शुद्ध उच्चारण के साथ असमिया शब्दों तथा वाक्यों को बोलना। * असमिया साहित्य को पढ़ने में रूचि उत्पन्न करना। * वाद-विवाद द्वारा असमिया साहित्य के विभिन्न विषयों का ज्ञान कराना।	**सुनना और बोलना :–** * असमिया भाषा का शुद्ध उच्चारण। * सरल शब्द तथा वाक्य। * कहानी। * कविता * भिन्न-भिन्न विषयों पर बातचीत। * अन्त्याक्षरी।	* असमिया में विभिन्न विषयों पर बातचीत। * कविता को सही ढंग से आवृत्ति करने का अभ्यास। * प्रश्न द्वारा। * विभिन्न विषयों पर वाद-विवाद। * अन्त्याक्षरी द्वारा।	* असमिया में बातचीत। * कविता आवृत्ति के द्वारा। * प्रश्न द्वारा। * वाद-विवाद द्वारा। * अन्त्याक्षरी द्वारा।
* असमिया साहित्य का ज्ञान। * असमिया भाषा को पढ़ने की योग्यता का विकास। * अच्छी-अच्छी किताबें पढ़कर असमिया भाषा के प्रति श्रद्धा तथा रूचि उत्पन्न करना।	**पढ़ना :–** * पाठ्य-पुस्तक के अतिरिक्त अन्य असमिया साहित्य। * पाठ्य-पुस्तक में संदर्भित कविता, कहानी, निबन्ध का शुद्ध उच्चारण। * मौन पाठ।	* गतवर्षों के कार्य की पुनरावृत्ति * असमिया साहित्य की अच्छी पुस्तकों का अध्ययन।	* कविता तथा गद्य के पठन द्वारा। * कविता आवृति द्वारा। * प्रश्नोत्तर द्वारा।
* शुद्ध असमिया, सुलेख लिखने की क्षमता का विकास। * पुस्तक के अन्तर्गत कहानी, निबन्ध तथा कविताओं के माध्यम से विभिन्न ज्ञानार्जन।	**लिखना :–** * श्रुतलेख, हस्तलेख अनुलेख। * कठिन शब्दों का अर्थ तथा वाक्य प्रयोग। * पाठ्य-पुस्तक के अन्तर्गत कहानी, निबन्ध तथा कविता प्रश्नोत्तर के रूप में। * रिक्त स्थानों की पूर्ति एवं भावार्थ। * स्वरचित रचना।	* पाठांश से श्रुतलेख तथा सुलेख। * विभिन्न पाठों से प्रश्नोत्तर लिखना। * विभिन्न प्रसंगों पर स्वरचना।	* लिखित कार्य द्वारा। * अनुवाद कार्य द्वारा। * प्रश्नोत्तर द्वारा। * लिखित कार्य द्वारा।
* शुद्ध असमिया भाषा बोलने तथा लिखने की क्षमता का विकास। * स्वतंत्र भाव प्रकाशन का विकास। * असमिया भाषा में दक्षता प्राप्त करना।	**व्याकरण :–** * पत्र-परिचय, सन्धि, प्रतिशब्द, भिन्नार्थक शब्द, विपरीत शब्द, लिंग, क्रियाओं के काल, विराम-चिह्न, पर्यायवाची। * **रचना कार्य :–** निबन्ध, पत्र-लेखन, चित्र देखकर वर्णन। * **अनुवाद :–** हिन्दी भाषा के गद्यांशों को असमिया में तथा असमिया से हिन्दी में।	* श्यामपट्ट पर अभ्यास कराना। * चित्र दिखाकर उसके विषय में असमिया में लिखना। * निबन्ध तथा पत्र लिखना। * अनुवाद कराना।	* श्यामपट्ट लेखन द्वारा। * लिखित कार्य द्वारा।

उड़िया

सामान्य उद्देश्य :

1. उड़िया भाषा को सुनकर समझने, बोलने, पढ़ने तथा लिखने की योग्यता का विकास करना।
2. उड़िया से हिन्दी तथा हिन्दी से उड़िया में अनुवाद करने की क्षमता विकसित करना।
3. उड़िया भाषा के माध्यम से छात्र/छात्राओं को उड़िया साहित्य तथा संस्कृति से परिचित कराना।
4. उड़ीसा के जनजीवन तथा सामाजिक स्थिति का ज्ञान कराना।
5. मानवीय मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में भावात्मक एकता को सुदृढ़ करना।
6. उड़ीसा के कला, संगीत तथा नृत्य की विभन्न शैलियों से परिचित कराना।
7. उड़िया भाषा के मुहावरों, लोकोक्तियों, सूक्तियों आदि से परिचित कराकर उनके प्रयोग की योग्यता विकसित करना।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* ध्यानपूर्वक सुनकर समझने की योग्यता का विकास करना। * किसी वस्तु को देखकर या किसी विषय को सुनकर स्पष्ट शब्दों में तथा शुद्ध उच्चारण सहित अभिव्यक्त करना।	**सुनना (समझना) तथा बोलना :–** * मातृभाषा उड़िया की सभी ध्वनियों को पहचानना। * उनका शुद्ध उच्चारण। * कहानियाँ, चुटकुले सुनाना। * प्रार्थना, कविता, गीत, राष्ट्रगीत आदि सुनाना। * वार्तालाप – घर और पास-पड़ोस अपना घर पालतू पशु-पक्षी, खेल-खिलौने इत्यादि।	* अपना घर, परिवार, पालतू पशु– पक्षी, खिलौने आदि पर वार्तालाप। * चित्रों पर आधारित प्रश्नोत्तर वर्णन तथा कहानी रचना। * सरल कविताओं को शुद्ध उच्चारण के साथ कंठस्थ करना।	* परिचित वस्तुओं पर वार्तालाप एवं प्रश्नोत्तर। * कंठस्थ कविताओं को सुनना।
* शुद्ध उच्चारण सहित सप्रवाह पढ़ने की क्षमता का विकास करना।	**पढ़ना :–** * उड़िया लिपि के सभी वर्णों को पहचानकर शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ना। * वर्णों के योग से बनने वाले शब्दों को तथा शब्दों के योग से बनने वाले वाक्यों को पढ़ना।	* उड़िया वर्णों का पढ़ने का अभ्यास।	
* वर्णमाला परिचय। * उड़िया लिपि का पूर्ण ज्ञान।	**लिखना :–** * उड़िया वर्णमाला तथा देवनागरी वर्णमाला को साथ-साथ स्वर व्यंजन क्रम में लिखना। * देवनागरी से उड़िया लिपि की जिस स्थान पर भिन्नता हे उसका उल्लेख करना। जैसे– उड़िया में ब और ब एक जैसे होते हैं। दोनों के लिखने में तथा उच्चारण में कोई अन्तर नहीं होता। * ल के अतिरिक्त ल जैसा एक दूसरा वर्ण भी होता है। * य का उच्चारण ज जैसे होता है और य के लिए एक दूसरा वर्ण होता है।	* क्रम से देवनागरी वर्णों से नीचे उड़िया वर्णों को लिखना। * सस्वर उन वर्णों का उच्चारण सिखाना। * देवनागरी से अतिरिक्त उड़िया वर्णों को लिखवाना तथा उच्चारण करवाना। * उन वर्णों के साथ कुछ सरल शब्द भी बनाना।	* अभ्यास के माध्यम से उड़िया वर्णमाला का यथासंभव आवृति कराना। * अभ्यास के माध्यम से उन अतिरिक्त वर्णों का परिचय कराना।
* परिवेश, परिचित वस्तुओं का सामान्य ज्ञान।	**पढ़ना तथा समझना :–** * प्रचलित व प्रसिद्ध संज्ञा, सर्वनाम संख्यावाची शब्द तथा सरल क्रियाओं का परिचय अर्थ के साथ-साथ कराना।	* प्रसिद्ध जीव जन्तुओं के नाम से परिचय कराना। * मानव शरीर के विभिन्न अंग प्रत्यंगों का उड़िया भाषा में पहचान। * एक से सौ तक संख्याओं का लेखन, पठन उड़िया लिपि में कराना। * वह, तुम, मैं, हम जैसे सर्वनामों को उड़िया भाषा में बताना।	* अभ्यास के माध्यम से पाठ का पूर्ण अवबोध कराना।

		* जाना, आना, खाना, पीना, जैसी सरल क्रियाओं को उड़िया भाषा में एवं उड़िया लिपि में लिखना तथा उच्चारण कराना।	
* उड़िया शब्दों का ज्ञान।	**लेखन, पठन :–** * उड़िया भाषा के कुछ प्रचलित सरल शब्दों का लेखन तथा शुद्ध उच्चारण के साथ पठन। * उन शब्दों को लेकर छोटे-छोटे वाक्य बनाना तथा हिन्दी में उनका अर्थ समझाना।	* पूर्व पाठ में प्रयुक्त सर्वनाम, संज्ञा तथा क्रियाओं को लेकर वाक्य बनाना। * हिन्दी में उनका अर्थ बताना। * पूर्व पाठ के अतिरिक्त कुछ नये शब्द भी सिखलाना।	
* वाक्य रचना अभ्यास।	**वाक्य रचना :–** * बिना क्रिया के केवल शब्दों को लेकर छोटे-छोटे वाक्य बनाना। * भूत, भविष्य, वर्तमान काल में प्रसिद्ध क्रियाओं के साथ भी वाक्य बनाना तथा हिन्दी में उनका अर्थ समझना।	* पहले कुछ शब्दों को मिलाकर वाक्य बनाना। * उन वाक्यों का शुद्ध उच्चारण कराना। * हिन्दी में अर्थ समझाना। * खाना, पीना, जाना, आना जैसी क्रियाओं के तीन काल का सामान्य रूप बताना और उनको वाक्य में प्रयोग करना।	

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* पूर्व पाठ का स्मरण।	**पूर्व पाठ की पुनरावृत्ति :–** * पूर्व पाठ में बताए गये शब्दों को फिर से एक बार अभ्यास कराना। इनके अतिरिक्त कुछ नये शब्दों की शिक्षा देना।	* छठी कक्षा में पठित शब्दों को छात्र से पूछकर यह निश्चित करना कि उनको पूर्वपाठ का स्मरण है।	* प्रश्नोत्तर माध्यम से छात्रों का परीक्षण।
* उड़िया व्याकरण का सामान्य ज्ञान।	**लिखना, पढ़ना, समझना :–** * उड़िया भाषा का विशेष्य-विशेषण, लिंग, विभक्ति, वचन, अव्यय, आज्ञावाचक क्रिया, निषेधात्मक क्रियाओं का अध्ययन उड़िया लिपि में कराना।	* उदाहरण के साथ विशेष्य-विशेषण को समझना। * लिंग निर्धारण का साधारण नियम। * अव्यय किसे कहते हैं और उनका उदाहरण। * विभक्ति परिचय के साथ कारक का सामान्य ज्ञान। * वचन के भेद तथा प्रयोग उदाहरण के साथ * सोदाहरण आज्ञावाचक, निषेधात्मक क्रियाओं को समझाना तथा उनका वाक्य में प्रयोग करना।	* पाठ में पढ़े हुए व्याकरण का पूरा ज्ञान अभ्यास के माध्यम से कराना।
* क्रियाओं के बारे में जानकारी।	**पढ़ना, याद कराना :–** * प्रचलित व प्रसिद्ध क्रियाओं का भूत, भविष्य, वर्तमान काल में धातु रूप। * प्रयोग के साथ अंशपूर्ण क्रियाओं का निर्देश। (अंशपूर्ण क्रिया जैसे-करके, करने के लिए, करते-करते)	* खाना, पीना, पढ़ना, लिखना जैसी क्रियाओं का वर्तमान, भूत, भविष्य काल का रूप बतलाना तथा उनका वाक्य में प्रयोग करना। * छात्रों को उदाहरण के साथ अंशपूर्ण को समझाना (उदाहरण के रूप में कुछ छोटी कहानियाँ भी इसी पाठ में दिया जा सकता है।)	
* छात्रों को उड़िया लिखने, बोलने में समर्थ बनाना।	**अनुवाद :–** * सरल उड़िया वाक्यों का अनुवाद हिन्दी में करना तथा हिन्दी वाक्यों का उड़िया में अनुवाद करना।	* नित्य व्यवहृत कुछ शाश्वत वाक्यों का अनुवाद उड़िया से हिन्दी में तथा हिन्दी से उड़िया में करना। * सरल व शाश्वत वाक्य जैसे– * बालिका दूध पीती है। * छात्र विद्यालय जाता है।	
* उड़िया भाषा के सम्यक् ज्ञान के साथ उड़ीसा के इतिहास का सामान्य ज्ञान।	**(पाठ्य-पुस्तक) पढ़ना, समझना :–** * ४० पृष्ठों का गद्यांश * उड़िया के साहित्यकार जयदेव गोदावशीश, नीलकंठ दास, उपेन्द्र भञ्ज, वक्रदेव रथ, गंगाधर मेहेर इत्यादि। * समाज संस्कारक जैसे-मधुसूदन, उत्कालमणि, गोपबंधु, आचार्य हरिहर इत्यादि। * राजाओं जैसे–अनंग, भीम, देव, कांगुका नरसिंह देव, पुरूषोत्तम देव इत्यादि का जीवन चरित्र। * २० पृष्ठों का पद्यांश, छोटी-छोटी बाल कविता, जिसमें उड़िया जनजीवन की सभ्यता तथा संस्कृति चित्रित होती है।	* उड़ीसा के राजा, समाज संस्कारक तथा साहित्यकारों के जीवन पर संक्षिप्त निबंधात्मक रचना। * उड़ीसा के त्योहारों पर विवरणात्मक रचना। * छन्दोबद्ध शिशु कविताओं का अध्ययन।	

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* उड़िया भाषा बोलने में सामर्थ्य।	**प्रश्नोत्तर :–** * किसी निर्दिष्ट विषय पर उड़िया भाषा में प्रश्न करके छात्रों को उड़िया में उत्तर देने में प्रवीणता। * छात्रों से उड़िया भाषा में कहानी सुनना।	* शिक्षक छात्रों से किसी भी विषय पर कुछ मौखिक प्रश्न करेंगे और छात्र इनका उत्तर उड़िया में ही देंगे। (यहाँ पर शुद्ध उच्चारण पर ध्यान) शिक्षक छात्रों को उड़िया में कहानी सुनाने को कहेंगे।	
* उड़िया में पत्र-व्यवहार ज्ञान तथा भाषा का पूर्णज्ञान।	**पत्र तथा निबन्ध लेखन :–** * उड़िया में पिता, माता, मित्र, शिक्षकों को पत्र लिखना। * विद्यालय, त्योहार, उद्यान, घोड़े, गाय, हाथी बाघ इत्यादि पर निबन्ध लिखना।	* शिक्षक पत्र तथा निबन्ध लिखने को छात्र से कहेंगे और छात्र निबन्ध तथा पत्र लिखकर शिक्षक को दिखाएँगे। * शिक्षक लेख में हर तरह की तृटि पर ध्यान देंगे।	
* उड़िया व्याकरण का सम्यक् ज्ञान।	**लिखना :–** * संयुक्त वाक्य रचना– उड़िया भाषा में मिश्रित वाक्य रचना। * क्रिया विशेषण, भाववाचक संज्ञा, सार्थक क्रियाएँ, प्रेरणार्थक क्रियाएँ, सकर्मक अकर्मक क्रियाएँ। * वाच्य-कर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य। * सन्धि के सरल नियम, सरल समास, मुहावरे, कहावतें।	* उक्त व्याकरण नियमों को सोदाहरण समझाना। * सन्धि, समाज का सामान्य नियम बताकर उदाहरण से स्पष्ट करना। * मुहावरों, कहावतों का अर्थ समझाकर उनके अनुरूप हिन्दी कहावतें बताना।	
* भाषा के ज्ञान के साथ उड़िया के प्राचीन साहित्य, सामाजिक भौगोलिक, राजनैतिक स्थिति का ज्ञान।	**पढ़ना, समझना :–** * ५० पृष्ठों का गद्यांश। * उड़िया की प्रसिद्ध लोककथाएँ जैसे– बुढ़ी, असुरुणी कथा, सहाड़ा सुन्दरी कथा, खुलड़ा सुन्दरी कथा। * सामाजिक स्थिति– जागाघर, भागवत, टुंगि, जानियात्रा भौगोलिक– नदियाँ, पर्वत, झील (चिलिका) इत्यादि। राजनैतिक स्थिति पर निबन्धात्मक लेख। ३० पृष्ठों का पद्यांश उड़िया के शिशु साहित्यकारों की कविता।		

कश्मीरी (कशिर ज़बान)

सामान्य उद्देश्य :

1. कश्मीरी भाषा के शब्द-भण्डार से परिचित करानां
2. कश्मीरी साहित्य के विषय-वस्तु का ज्ञान कराना।
3. विभिन्न स्तरों पर रचना-कार्य की क्षमता विकसित करना।
4. देवनागरी भाषा के लिखित और मौखिक स्वरूप का कश्मीरी उच्चारण के साथ बोध कराना ताकि वे व्यक्त विचारों को एकाग्रता से सुन सकें, स्वयं व्यक्त कर सकें और लिख सकें।
5. भाषा ज्ञान इस लक्ष्य से देना कि छात्र अपने दैनिक जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में भाषा का प्रभावी ढंग से उपयोग कर सकें।
6. साहित्य के प्रति रुचि जागृत करना तथा सत् प्रवृत्तियों का विकास करना।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन

* ध्यानपूर्वक सुनकर समझने की योग्यता का विकास करना।
* भाव ग्रहण तथा सरल भाव प्रकाशन करने की क्षमता का विकास करना।
* किसी वस्तु अथवा दृश्य आदि को देखकर या किसी विषय को सुनकर उसे स्पष्ट शब्दों में तथा शुद्ध उच्चारण सहित अभिव्यक्त करने की क्षमता का विकास करना।
	सुनना (बोजुन) समझना (समझुन) तथा बोलना (बनुन) :–
	* कश्मीरी भाषा की सभी ध्वनियों को सुनकर पहचानना तथा उनमें अन्तर समझना।
	* किसी विषय से संबंधित निर्देश, संदेश, बोले गये कथन तथा सुनाये गये वर्णन आदि को समझना।
	* सुनाई गयी कहानियाँ, मुहावरे, चुटकुले तथा विवरणों में निहित सूचनाएँ एवं तथ्य आदि को समझना तथा उन्हें अपने भाव मे व्यक्त करना।
	* गीत, कविता तथा राष्ट्रगीत आदि।
	* मौखिक भाव प्रकाशन के अन्तर्गत निम्नांकित पर वार्तालाप–
	  * घर और पास-पड़ोस, छोटा परिवार, सुखी जीवन, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे तथा शिष्टाचार का ज्ञान।
	  * प्राकृतिक वातावरण, स्थानीय नदी, पहाड़, झरना सूर्य का निकलना तथा डूबना, इन्द्र धनुष आदि।
	  * विद्यालय के उत्सव १५ अगस्त, गाँधी जयन्ती, शिल्प संबंधी कार्य तथा बाल सभा।
	  * त्योहार, मेले तथा शिष्टाचार संबंधी सामान्य बातें।
		* आस-पास के दृश्य, अपना घर, परिवार, पशु, पक्षी, पेड़-पौधे तथा अन्य वस्तुओं आदि पर वार्तालाप। कश्मीरी में उनके नाम जैसे– कुत्ता (हून्), बिल्ली (ब्रोर) आदि।
		* चित्रों पर आधारित प्रश्नोत्तर, वर्णन तथा कहानी रचना।
		* सरल कविताओं को कंठस्थ कराना तथा शुद्ध उच्चारण एवं प्रभावपूर्ण ढंग से सुनाना।
		* शब्दों का उच्चारण तथा शुद्ध वार्तालाप करते समय ध्वनियों पर विशेष ध्यान रखा जाए जैसे– चू, बु, अजू (इनमें इनितम अक्षरों में हलन्त (्) का प्रयोग करना चाहिए।
		* आदरसूचक शब्दों पर विशेष ध्यान देते हुए बातचीत करना– श्रीमान् (माहरा) बहन जी (ब्यन्य) बहुत अच्छा (स्यजान) आप (तोरुप) स्वस्थ, चिरंजीवी हो (ओरजूव हसिनय)
			* परिचित विषयों से संबंधित प्रकरणों, दृश्यों आदि पर वार्तालाप एवं प्रश्नोत्तर।
			* कंठस्थ कविताओं को सुनना तथा सुनाना।

* कश्मीरी भाषा संबंधित-मुद्रित सामग्री जैसे-चित्र, पुस्तक, पाठ्य-पुस्तक तथा लघु कहानियों एवं गीतों को शुद्ध तथा स्पष्ट उच्चारण में सस्वर पढ़ने की क्षमता का विकास करना।	**पढ़ना तथा पठन (परनु) :** * कश्मीरी भाषा की सभी ध्वनियों के लिपि संकेतों, वर्णों के मेलों से बने शब्दों, अमात्रिक तथा मात्रिक वर्णों सहित शब्द समूहों, संयुक्ताक्षरों आदि को पहचानकर शुद्ध उच्चारण सहित पढ़ना। * शब्दों, वाक्यों तथा छोटे अनुच्छेदों को शुद्ध तथा स्पष्ट उच्चारण के साथ पढ़ना। * किसी छोटे संगीत या कविता आदि को सही ढंग से स्पष्ट शब्दों में पढ़कर प्रस्तुत करना। * आस-पास के परिवेश की परिचित वस्तुओं के सम्बन्ध में थोड़ा सा वर्णन देना।	* चित्र तथा वस्तुओं के माध्यम से अक्षरों का ज्ञान कराना। * अक्षर कार्डों को छाँटकर बिना मात्रा वाले तथा मात्रा वाले शब्दों का ज्ञान कराना। * पाठ्य-पुस्तक से संबंधित विषयों को शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ना।	* दो तीन वर्णों को मिलाकर अमात्रिक तथा मात्रिक शब्दों का निर्माण करवाना तथा छात्रों से पढ़वाना। * संयुक्ताक्षरों को पढ़वाना। * सरल वाक्यों तथा छोटी-छोटी कविताओं को पढ़वाना।
* कश्मीरी भाषा के परिचित वर्णों शब्दों तथा वाक्यों के शुद्ध तथा सुडौल अक्षरों में लिखने की क्षमता। * उचित गति के साथ अनुलेख लिखने की योग्यता का विकास करना।	**लिखना :–** * देवनागरी लिपि संकेतों को सुडौल तथा सहज रूप में लिखना। * काल का ज्ञान कराना जैसे– आज (अज्) कल आदि। * मात्राओं तथा संयुक्ताक्षरों के प्रयोग से बने शब्दों को शुद्ध वर्तनी में लिखना।	* पुस्तक अथवा श्यामपट्ट पर दिए गए अक्षरों का लिखित तथा मौखिक अभ्यास करना। * पाठ्य-पुस्तक या श्यामपट्ट पर लिखे गए शब्दों को देखकर सुलेख का अभ्यास कराना।	* सुलेख, अनुलेख तथा श्रुतलेख।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* सभी स्वरों, संयुक्त व्यंजनों की पहचान कर उमें स्पष्ट उच्चारण करने की क्षमता विकसित करना। * बोलने, पढ़ने तथा स्मरण करने की क्षमता को विकसित करना। * संयुक्त अक्षरों के सही उच्चारण करने की क्षमता विकसित करना।	**सुनना (बोजुन) समझना (समझुन) तथा बोलना (बनुन्) :–** * कश्मीरी भाषा की सभी ध्वनियों को सुनकर उनमें पारस्परिक अन्तर को समझना तथा उनका शुद्ध उच्चारण करना जैसे– उठो (गुन्थु), मुंह (बुध्), रखो (थव) आदि। * सभी प्रकार के संयुक्त अक्षरों को समझना तथा बोलना। * कहानियों, लोक कथाओं, चुटकुलों, रोचक संस्मरणों को सुनना तथा स्मरण करना। * संयुक्त अक्षरों को समझना तथा उनका सही उच्चारण। जैसे– मुझे (म्य), कुछ (कंह), ऊपर (प्यठ) आदि। * घटनाओं, रोचक दृश्यों, कहानियों तथा राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन की घटनाओं का श्रवण। * लघु कविताएँ, गीत, लोकगीत।	* सभी ध्वनियों, वर्णों के मेल से बने शब्दों का प्रयोग करना स, श्, च, च़, छ, छ, ज, ज़ आदि। * कहानियों, लोक कथाओं, चुटकुलों तथा रोचक संस्मरणों का वर्णन। * रोचक दृश्यों तथा राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन की घटनाओं की चर्चा करना। * कश्मीरी की कुछ लघु कथाओं तथा लोक गीतों का वर्णन करना।	* विभिन्न विषयों पर आधारित वार्तालाप। * संदर्भित विषयों को सुनाकर अथवा दिखाकर उनसे संबंधित प्रश्न पूछना।
* सहज तथा स्पष्ट मौखिक अभिव्यक्ति की क्षमता को विकसित करना। * शुद्ध उच्चारण करने की क्षमता विकसित करना। * कंठस्थ करने की क्षमता विकसित करना।	**बोलना (बनुन्) :–** * शिष्टाचार का, वार्तालाप का श्रवण तथा समस्त ध्वनियों का शुद्ध उच्चारण जैसे– आइए (बलिव माहरा), बैठिए (बिहिव माहरा) आदि। * संयुक्त ध्वनियों का उच्चारण। * अनलुस्वार एवं हलन्त के उच्चारण का अन्तर। * ब-व, श-स, च-च, आदि समान ध्वनियों के उच्चारण का अन्तर। * स्वास्थ्य, सफाई, संतुलित आहार आदि से संबंधित कहानियों, लोक कथाओं, चुटकुलों, स्वतंत्रता आन्दोलन संबंधी संस्मरणों को रोचक तथा भावपूर्वक ढंग से सुनाना। * किसी परिचित विषय-वस्तु अथवा व्यक्ति के संबंध में क्रमबद्ध वाक्य बोलना। * किसी वीक्षित दृश्य (प्राकृतिक अथवा सामाजिक) का वर्णन। * अपनी पाठ्य-पुस्तक की कविता, गीत आदि को लय तथा शुद्ध उच्चारण के साथ प्रस्तुत करना।	* शिष्टाचार के साथ वार्तालाप करना। * विभिन्न विषयों पर छात्रों द्वारा वार्तालाप तथा कथोपकथन। * कुछ कठिन शब्दों के उच्चारण का अभ्यास करना।	* वार्तालाप तथा कथोपकथन। * क्रमबद्धता एवं शुद्धता की जाँच।

	* चित्रों के माध्यम से कहानी एवं कथाओं की रचना।		
* उचित गति, विराम, प्रसंगानुसार आरोह-अवरोह का ध्यान रखते हुए शुद्ध उच्चारण के साथ पठन योग्यता का विकास करना। * दूसरों के विचारों को पढ़कर लिखने की क्षमता को विकसित करना।	**पढ़ना :-** * कश्मीरी भाषा संबंधी प्रकरणों के अतरिक्त कुछ परिचित एवं जीवनोपयोगी प्रकरण जैसे– त्योहार, समाज सेवक (डाकिया, डाक्टर, स्वास्थ्य सेविकाएँ आदि), इन्द्रधनुष, बागवानी, मनुष्य की वेशभूषा और रहन-सहन। * शिष्टाचार, प्राकृतिक सौन्दर्य, ऐतिहासिक पौराणिक देश-प्रेम तथा राष्ट्रीय भावनाओं से पूर्ण कहानियाँ।	* गद्य तथा पद्य पाठों का सस्वर वाचन। * गद्यांशों तथा पद्यांशों पर आधारित बोध प्रश्न पूछना।	* छात्रों द्वारा वाचन करते समय शुद्ध उच्चारण, गति आरोह-अवरोह आदि का वीक्षण।
* सुन्दर तथा सुडौल अक्षरों में श्रुतलेख, अनुलेख, सुलेख लिखने की क्षमता उत्पन्न करना।	**लिखना :-** * अपने अनुभवों, देखी हुई घटनाओं आदि को अपने शब्दों में शुद्ध वर्तनी में क्रमबद्ध ढंग से लिखना। * परस्पर सम्बद्ध वाक्यों, अनुच्छदों पाठ्य-पुस्तक की कविताओं, कहानियों आदि के अंश सुनकर सहज रूप में लिखना। * विराम चिह्नों का लिखते समय ध्यान रखना। * परविार के सदस्य तथा संबंधी, प्रधानाध्यापक, मित्र आदि को पत्र लिखना। * परिचित विषय या प्रसंग पर अपने भावों, विचारों को व्यक्त करते हुए मौलिक रचना करना। जैसे– संवैधानिक जिम्मेदारियाँ, लैंगिक समानता, पर्यावरण की रक्षा, स्वास्थ्य एवं पोषण। * व्याकरण– संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया– विशेषण की पहचान तथा उनका प्रयोग जैसे– वह (सु), मै (व), तुम (च) आदि।	* सुलेख, अनुलेख एवं श्रुतलेख का अभ्यास। * कंठस्थ कविता, कहानी, यात्रा का वर्णन तथा उत्सव, मेले आदि का अपनी भाषा में लिखने का अभ्यास। * संज्ञा, सर्वनाम आदि का लिखित अभ्यास कराना।	* सतत् निरीक्षण तथा संशोधन करना। * प्रतियोगिता द्वारा। * प्रश्नोत्तर द्वारा। * पठित पाठों में से संज्ञा, सर्वनाम शब्दों का चुनाव।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* गद्य तथा पद्य के अंशों को ध्यानपूर्वक एवं शिष्टाचार के साथ सुनने की क्षमता विकसित करना। * सामाजिक तथा पर्यावरणीय विषयों पर अपने विचार प्रकट करने की क्षमता विकसित करना। * सुने हुए संवाद, नाटक, कहानी, समाचार आदि में प्रयुक्त स्वराघात के अनुसार, विस्मय, व्यंग, हर्ष आदि भावों को समझने की क्षमता विकसित करना।	**सुनना (बोजुन) समझना (समझुन) तथा बोलना (बनुन्) :–** * गद्य तथा पद्य के अंशों को ध्यानपूर्वक तथा शिष्टाचार के साथ सुनना। * घर, कक्षा, सभा, सामाजिक तथा राष्ट्रीय समारोह में पर्यावरण, जनसंख्या, पोषण आदि से संबंधित अपने विचारों, भावों आदि को बोलकर व्यक्त करना। * संवाद, नाटक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय आन्दोलन विषयक कहानी, पर्यावरण, परिवार एवं समाज के कल्याण का आधार, छोटा परिवार, समाचार आदि को सुनना और उनमें प्रयुक्त स्वराघात के अनुसार विस्मय, व्यंग, हर्ष, विषाद आदि के भावों को समझना।	* गद्य तथा पद्य के उचित अंशों को आरोह तथा अवरोह, विराम, गति आदि के साथ प्रस्तुत करना। * अन्त्याक्षरी।	* सुनी हुई कहानी, कविता, घटना, नाटक, संवाद आदि पर आधारित प्रश्नोत्तर। * अन्तयाक्षरी प्रतियोगिता।
* कविता पाठ, लोकगीत तथा विविध प्रसंगों पर स्पष्ट भाषा में प्रभावपूर्ण ढंग से बोलने की क्षमता उत्पन्न करना। * घर, कक्षा, सभा तथा अन्य समारोहों पर मौलिक रूप से अपने विचारों, भावों को प्रभावपूर्ण ढंग से बोलने की योग्यता विकसित करना। * प्रश्नों का तार्कसंगत उत्तर कश्मीरी भाषा में शुद्ध उच्चारण के साथ बोलने की योग्यता विकसित करना।	**बोलना (बनुन्) :–** * कहानी, कविता, नाटक, संवाद आदि को सुनकर आनन्द प्राप्त करना। * घर, कक्षा, सभा, सामाजिक तथा राष्ट्रीय समारोह, पर्यावरण, जनसंख्या, पोषण आदि से संबंधित स्थितियों में अवसरानुकूल अपने विचारों, भावों आदि को शिष्टाचार सहित भावपूर्ण ढंग से बोलकर व्यक्त करना। * पाठ्-पुस्तक के प्रश्नों का शिष्ट ढंग से तर्क संगत उत्तर अपने भाव में, शुद्ध उच्चारण तथा क्रमबद्धता के साथ देना।	* पाठ्-पुस्तक से कविताओं को कंठस्थ कराकर सुनना। * अन्त्याक्षरी। * अपूर्ण कहानियों की पूर्ति, शब्दों एवं मुहावरों का प्रयोग।	* वार्तालाप एवं कथोपकथन निरीक्षण। * गद्य एवं पद्य का आदर्श वाचन। * अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता। * कहानी का सारांश एवं प्रश्नोत्तर।
* किसी कहानी, संवाद, नाटक आदि के अंश के वर्णन का उचित गति तथा प्रवाह के साथ पढ़ने की योग्यता विकसित कराना। * विराम चिह्नों को ध्यान रखते हुये स्पष्ट रूप से गद्य, पद्य को पढ़ने की क्षमता विकसित कराना। * पठित सामग्री को उचित गति के साथ मौन पढ़ने की क्षमता विकसित कराना।	**पढ़ना :–** * किसी कहानी, संवाद, नाटक आदि के अंशों को उचित गति तथा प्रवाह के साथ पढ़ना। * पढ़ी जानेवाली सामग्री में आये विराम, हलन्त, अर्ध विराम, प्रश्नवाचक, विस्मयादि बोधक आदि चिह्नों का ध्यान रखते हुए गद्य तथा पद्य को पढ़ना। * किसी कहानी, वर्णन संवाद, नाटक आदि को उचित गति से अर्थ ग्रहण करते हुए मौन पढ़ना।	* पाठ्-पुस्तक का सस्वर वाचन। * व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करना।	* प्रश्न एवं उत्तर।

* अपने अनुभवों, विचारों, भावों आदि को शुद्ध कश्मीरी भाषा में लिखने की क्षमता विकसित करना। * शुद्ध वर्तनी तथा विराम चिह्नों का उचित स्थान पर प्रयोग करने की क्षमता विकसित करना। * मौलिक लेखन की क्षमता विकसित करना। * साधारण पत्र तथा निबन्ध लेखन की क्षमता विकसित करना। * भाषा को व्याकरण की दृष्टि से परिमार्जित करने की योग्यता का विकास करना।	**लिखना :–** * अपने अनुभवों, विचारों, भावों आदि को शुद्ध भाषा में क्रमबद्धता रूप से लिखना। * पढ़ी तथा सुनी हुई सामग्री को शुद्ध वर्तनी तथा विराम चिह्नों को ध्यान में रखते हुए लिखना। * अपनी रूचि के प्रसंग या परिचित विषय पर मौलिक रचना। * अपने मित्रों, परिचित व्यक्तियों तथा अधिकारियों को पत्र लिखना। * पढ़ी या सुनी कहानियाँ, वर्णन, घटना, उत्सव, मेला, राष्ट्रीय पर्व आदि विषयों पर अपने शब्दों में लिखना। * व्याकरण संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रियाविशेषण, प्रश्न वाचक, काल आदि की पहचान और प्रयोग। * काल – कल (राय) आज और कल (पगाहू)।	* अनुलेख, सुलेख, श्रुतलेख लिखने का अभ्यास करना। * निबन्ध लेखन, हिन्दी से कश्मीरी अनुवाद का अभ्यास।	* प्रतियोगिता, सुलेख, अनुलेख, निबन्ध तथा पाठ्य लेखन।

मलयालम

सामान्य उद्देश्य :

1. प्रतिदिन के बोलचाल में मलयालम भाषा में प्रयोग होने वाले शब्दों एवं वाक्यों को सुनने, समझने एवं बोलने का अभ्यास कराना।
2. मलयालम भाषा के वर्णों तथा मात्राओं का बोध कराना।
3. शुद्ध उच्चारण सहित मलयालम भाषा के पठन की योग्यता का विकास करना।
4. वर्णों, शब्दों एवं वाक्यों का शुद्ध लेखन।
5. मलयालम भाषा की रचनाओं को प्रवाह पूर्ण रीति से पढ़ने तथा उन्हें लिखने की क्षमता का विकास करना।
6. निबन्ध, अनुवाद तथा प्रश्नों के उत्तर लिखवाकर मलयालम भाषा में दक्षता प्राप्त करना।
7. मलयालम भाषा के व्याकरण का ज्ञान कराना।
8. मलयालम साहित्य को पढ़ने में रुचि उत्पन्न करना।
9. मलयालम भाषा के साहित्यकारों की श्रेष्ठ रचनाओं का अध्ययन करना।
10. मलयालम भाषा के माध्यम से भारतीय संस्कृति, कला, अभिनय, मलयालम संगीत के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करके राष्ट्रीयता की भावना को विकसित करना।
11. मलयालम में लिखित रचनाओं के माध्यम से पर्यावरण की रक्षा, स्त्री-पुरुष में समानता, छोटे परिवार का सुखमय जीवन, सामाजिक अवरोधों का निवारण, लोकतंत्र और धर्म निरपेक्षता आदि के विषय में जानकारी देना।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* मलयालम वर्णमाला से परिचित कराना, सुनना तथा शुद्ध उच्चारण के साथ बोलने का अभ्यास। * वाक्यों को शुद्ध बोलना। * कहानी के मुख्य अंशों पर प्रश्न पूछना मलयालम में बोलने का प्रयास। * सुनी हुई कविता को उचित आरोह-अवरोह के साथ सुनाने की योग्यता का विकास।	**सुनना तथा बोलना :–** * मलयालम भाषा की समस्त ध्वनियाँ एवं उनकी पहचान। * मलयालम के सरल शब्दों से बने वाक्यों में वार्तालाप। * पुस्तक में दी गई कहानी को सुनना। कहानी पर आधारित बातचीत। * पुस्तक में दी गई कविता को सुनना तथा ध्वनि एवं लय के साथ बोलना।	* वर्णमाला का चार्ट दिखाकर, श्यामपट्ट पर लिखकर वर्णमाला का अभ्यास बातचीत के द्वारा। * कहानी से संबंधित बातचीत कोई भी कहानी सुनाकर बातचीत। * कोई भी कविता सुनाकर बातचीत।	* चित्र दिखाकर वर्णमाला पूछना। * शब्दों तथा वाक्यों को लिख कर या चित्र दिखाकर पूछना। * प्रश्नोत्तर द्वारा।
* मलयालम भाषा के वर्णों को ध्वनि व लय के साथ पढ़ना। * मलयालम भाषा के सरल शब्दों एवं वाक्यों का शुद्ध उच्चारण के साथ पठन। * कहानी का अर्थ समझकर कविता का पठन उचित लय, ध्वनि तथा आरोह-अवरोह के साथ पठन।	**पढ़ना :–** * मलयालम भाषा की वर्णमाला के लिपि संकेत। * मलयालम भाषा के सरल शब्दों एवं वाक्यों का पठन। * पुस्तक में दी गई कहानी का पठन। * पुस्तक देखकर कविता पाठ।	* विभिन्न चित्र दिखाकर वर्णों का पठन। * श्यामपट्ट पर लिखे सरल शब्दों एवं वाक्यों का पठन। * कहानी के मुख्य अंशों को समझकर पढ़ें। * कोई भी छोटी तथा सरल भाषा में रचित मलयालम कविता का पठन।	* वर्णों के पठन द्वारा। * श्यामपट्ट पर या चित्र द्वारा सरल शब्दों के पठन कराकर बच्चे स्वयं मलयालम भाषा में कहानी पढ़कर सुनाएँ। * कविता पाठ द्वारा।
* वर्णों का शुद्ध लेखन। * श्रुतलेख, सुलेख, लिखने का अभ्यास। * गद्यांशों का शुद्धता से लेखन/मात्रा तथा युक्ताक्षरों का स्पष्ट लेखन। * शुद्धता से पंक्ति का ध्यान रखते हुए लेखन।	**लिखना :–** * मलयालम भाषा की वर्णमाला के लिपि संकेत। * मलयालम भाषा के सरल शब्दों एवं वाक्यों का लेखन। * कहानी के अंशों का लेखन। * कविता लेखन।	* वर्णों को बार-बार लिखवाना। * शब्दों को एवं विभिन्न वाक्यों को बार-बार लिखवाना। * कई गद्यांशों को लिखवाना युक्ताक्षरों को अलग से लिखवाना। * किसी भी कविता के अंशों को लिखवाना।	* लिखित कार्य द्वारा। * लिखित कार्य द्वारा। * प्रश्नो को लिखवाकर। * लेखन द्वारा।
* मलयालम भाषा में शुद्ध वाक्य लिखने की क्षमता का विकास करना।	**व्याकरण :–** * शब्दों तथा वाक्य रचना संज्ञा,, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, रिक्त स्थानों की पूर्ति।	* वाक्य प्रयोग कराया जाए। * रिक्त स्थानों की पूर्ति करवाया जाए। * संज्ञा, सर्वनाम तथा क्रिया का वाक्य में प्रयोग।	* लिखित कार्य। * वाक्यों को लिखवाकर।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* साधारण बोलचाल की मलयालम सुनकर समझ सके तथा शुद्ध उच्चारण के साथ बोलने की क्षमता का विकास। * कहानी सुनाने की क्षमता का विकास। * कविता, लय के साथ सुनाने की क्षमता का विकास।	**सुनना तथा बोलना :–** * प्रतिदिन बोलने में मलयालम भाषा। * सरल शब्द तथा वाक्य। * कहानी। * कविता	* मलयालम शब्दों तथा वाक्यों को बोलना। * कहानी सुनना। * कविता सुनाना।	* शब्दों को पूछना। * वाक्यों को पूछना। * प्रश्नोत्तर।
• विभिन्न शब्दों तथा वाक्यों को शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ने की क्षमता का विकास। * कहानी पढ़ने की क्षमता का विकास।	**पढ़ना :–** * सरल शब्दों तथा वाक्यों को। * विभिन्न कहानियों को * कविता	* मलयालम शब्दों तथा वाक्यों को पढ़ना। * किसी भी कहानी के अंशों को पढ़ना।	* शब्दों तथा वाक्यों को पढ़वाकर।
* शब्दों तथा वाक्यों को शुद्धता पूर्ण ढंग से लिखने की क्षमता का विकास। * युक्ताक्षरों की शुद्धता से लेखन द्वारा क्षमता का विकास * गद्य तथा पद्य के अंशों की लेखन द्वारा अपनी योग्यता का विकास करना।	**लिखना :–** * सरल शब्दों तथा वाक्यों को * युक्ताक्षर * कहानियाँ * कविता	* कोई भी कविता पढ़ना। * श्यामपट्ट पर शब्दों तथा वाक्यों को लिखवाना। * विभिन्न युक्ताक्षरों को लिखवाना। * कहानी के मुख्य अंशों को लिखवाना।	* प्रश्नोत्तर द्वारा * श्यामपट्ट पर शब्दों तथा वाक्यों को लिखवाकर। * युक्ताक्षरों को लिखवाकर। * प्रश्नों को लिखवाकर।
* भाषा लिखने में शुद्धता लाने की योग्यता का विकास। * स्वतंत्र भाव प्रकाशन का विकास करना। * मलयालम भाषा की दक्षता प्राप्त करना।	**व्याकरण :–** * पत्र-परिचय, सन्धि, प्रतिशब्द, भिन्नार्थक शब्द, विपरीत शब्द, लिंग, क्रियाओं के काल, विराम-चिह्न, पर्यायवाची। * **रचना कार्य :–** निबन्ध, पत्र-लेखन, चित्र देखकर वर्णन * **अनुवाद :–** हिन्दी भाषा के गद्यांशों को मलयालम में तथा मलयालम से हिन्दी में।	* श्यामपट्ट पर अभ्यास कार्य कराया जाए। * श्यामपट्ट कार्य।	* लिखित कार्य द्वारा * लिखित कार्य द्वारा।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* मलयालम भाषा बोलने की क्षमता उत्पन्न करना। * शुद्ध उच्चारण के साथ मलयालम शब्दों तथा वाक्यों को बोलना। * मलयालम साहित्य को पढ़ने में रूचि उत्पन्न करना। * वाद-विवाद द्वारा मलयालम साहित्य के विभिन्न विषयों का ज्ञान कराना।	**सुनना और बोलना :–** * मलयालम भाषा का शुद्ध उच्चारण। * सरल शब्द तथा वाक्य। * कहानी। * कविता। * भिन्न-भिन्न विषयों पर बातचीत। * अन्त्याक्षरी।	* मलयालम में विभिन्न विषयों पर बातचीत। * कविता को सही ढंग से आवृत्ति करने का अभ्यास। * प्रश्न द्वारा। * विभिन्न विषयों पर वाद-विवाद। * अन्त्याक्षरी द्वारा।	* मलयालम में बातचीत। * कविता आवृत्ति के द्वारा। * प्रश्न द्वारा। * वाद-विवाद द्वारा। * अन्त्याक्षरी द्वारा।
* मलयालम साहित्य का ज्ञान। * मलयालम भाषा को पढ़ने की योग्यता का विकास। * अच्छी-अच्छी किताबें पढ़कर मलयालम के प्रति श्रद्धा तथा रूचि उत्पन्न करना।	**पढ़ना :–** * पाठ्य-पुस्तक के अतिरिक्त अन्य मलयालम साहित्य। * पाठ्य-पुस्तक में संदर्भित कविता, कहानी, निबन्ध का शुद्ध उच्चारण। * मौन पाठ।	* गतवर्षों के कार्य की पुनरावृत्ति * मलयालम साहित्य की अच्छी पुस्तकों का अध्ययन।	* कविता तथा गद्य के पठन द्वारा। * कविता आवृत्ति द्वारा। * प्रश्नोत्तर द्वारा।
* शुद्ध मलयालम, सुलेख लिखने की क्षमता का विकास। * पुस्तक के अन्तर्गत कहानी, निबन्ध तथा कविताओं के माध्यम से विभिन्न ज्ञानार्जन।	**लिखना :–** * श्रुतलेख, हस्तलेख अनुलेख। * कठिन शब्दों का अर्थ तथा वाक्य प्रयोग। * पाठ्य-पुस्तक के अन्तर्गत कहानी, निबन्ध तथा कविता प्रश्नोत्तर के रूप में। * रिक्त स्थानों की पूर्ति एवं भावार्थ। * स्वरचित रचना।	* पाठांश से श्रुतलेख तथा सुलेख। * विभिन्न पाठों से प्रश्नोत्तर लिखना। * विभिन्न प्रसंगों पर स्वरचना।	* लिखित कार्य द्वारा। * अनुवाद कार्य द्वारा। * प्रश्नोत्तर द्वारा। * लिखित कार्य द्वारा।
* शुद्ध मलयालम भाषा बोलने तथा लिखने की क्षमता का विकास। * स्वतंत्र भाव प्रकाशन का विकास। * मलयालम भाषा में दक्षता प्राप्त करना।	**व्याकरण :–** * पत्र-परिचय, सन्धि, प्रतिशब्द, भिन्नार्थक शब्द, विपरीत शब्द, लिंग, क्रियाओं के काल, विराम-चिह्न, पर्यायवाची। * **रचना कार्य :–** निबन्ध, पत्र-लेखन, चित्र देखकर वर्णन। * **अनुवाद :–** हिन्दी भाषा के गद्यांशों को मलयालम में तथा मलयालम से हिन्दी में।	* श्यामपट्ट पर अभ्यास कराना। * चित्र दिखाकर उसके विषय में मलयालम में लिखना। * निबन्ध तथा पत्र लिखना। * अनुवाद कराना।	* श्यामपट्ट लेखन द्वारा। * लिखित कार्य द्वारा।

तमिल

सामान्य उद्देश्य :

1. भारतीय संस्कृति के संरक्षण हेतु विभिन्न राज्यों की भाषाओं के अध्ययन के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करते हुए राष्ट्रीयता का विकास करना।
2. हिन्दी के सरल वाक्यों का तमिल में तथा तमिल के वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करते की क्षमता उत्पन्न करना।
3. तमिल भाषा की कुछ विशेष रूप से कठिन ध्वनियों एवं शब्दों का उच्चारण करने की क्षमता उत्पन्न करना।
4. परिचित वस्तुओं तथा कर्यों के संबंध में सरल शब्दों तथा वाक्यों में वार्तालाप का कौशल विकसित करना।
5. अक्षरों एवं मात्राओं का ज्ञान देकर, सरल वाक्यों को पढ़ने की योग्यता का विकास करना।
6. शिष्टाचार के शब्दों का ज्ञान देकर वार्तालाप को रोचक बनाना एवं अपने भावों एवं विचारों को सहज एवं सरल रूप में व्यक्त करने का कौशल विकसित करना।
7. नये शब्दों की अभिवृद्धि कर पठन एवं लेखन की क्षमता का विकास करना।
8. छात्रों में राष्ट्रीय एकता, लोकतन्त्रात्मक जीवन पद्धति, धर्म निरपेक्षता आदि के प्रति समादर का भाव विकसित करना।
9. विभिन्न भाषाओं का ज्ञान देकर देश की एकता बढ़ाना तथा भाषायी सद्‌भावना का विकास करना। तमिल भाषा का ज्ञान देकर उत्तर दक्षिण की भावना को दूर करना।
10. विद्यार्थियों में सुनना (सुनकर समझना), बोलना, पढ़ना और लिखना इन चारों कौशलों का विकास करना।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* छात्रों में एकाग्रचित्त होकर सुनने एवं समझने की क्षमता उत्पन्न करना। * कक्षा, रेडियों, टी. वी. आदि पर तमिल भाषा के भाषण, कविता, कहानी आदि सुनकर इनको समझने की क्षमता उत्पन्न करना। * शब्दों पर दिये गये बल, वाक्यों के आरो-अवरोह आदि को समझने की क्षमता का विकास करना।	**सुनना (समझना) :–** * सन्दर्भ में प्रयुक्त शब्द, वाक्य आदि। * परिचित वस्तुओं तथा कार्यों के संबंध में सरल शब्दों तथा वाक्यों में वार्तालाप। * सर्वनाम, धातु आदि का सामान्य वर्तमान। * कथन, प्रश्न, आदेश,, निर्देश आदि द्वारा। * सरल वाक्यों में अन्तर।	* शब्दों और सरल वाक्यों को सुनकर और समझकर प्रयोग करने का अभ्यास कराना। * सरल कहानी, कविता, भाषण आदि को सुनने तथा समझने की आदत डालना। * भावों, विचारों एवं धारणाओं को शुद्ध शैली में सुनकर समझने की क्षमता प्रदान करना।	* साधारण मौखिक प्रश्नों को सुनकर व समझकर सरल वाक्यों में मौखिक उत्तर देना। * मौखिक रूप से छोटे-छोटे प्रश्नोत्तर।
* बालकों में शुद्ध रूप से तमिल अक्षरों एवं शब्दों का उच्चारण करने की क्षमता का विकास करना। * तमिल भाषा में साधारण वार्तालाप करने का अभ्यास कराना।	**बोलना :–** * सीखी हुई भाषा इकाइयों में संबंधित कुछ उदाहरणों को कंठस्थ करना। * आवश्यकतानुसार अभिव्यक्ति में सुने हुए शब्द एवं वाक्यों का प्रयोग। * पाठ्यक्रमानुसार संस्थानिक इकाइयों तथा विषय बोधक शब्दों आदि द्वारा।	* तमिल भाषा के कठिन शब्दों व अक्षरों का सही उच्चारण करने का अभ्यास कराना। * छात्रों की उच्चारण संबंधी अशुद्धियों को दूर कराना। * भावों, विचारों एवं धारणाओं को शुद्ध शैली में व्यक्त करने की क्षमता प्रदान करना।	
* सरल वाक्यों को प्रवाहपूर्ण ढंग से वाचन की क्षमता का विकास करना। * छात्रों के पढ़ने की गति में वृद्धि करना। * विषय-वस्तु को मन ही मन पढ़कर ग्रहण करने की क्षमता का विकास करना।	**पढ़ना :–** * अक्षर एवं मात्राओं का ज्ञान परिचित शब्दों से बने हुए सरल वाक्य द्वारा। * तमिल वाक्यों को मन ही मन पढ़ना। * शुद्ध उच्चारण के साथ सस्वर तमिल वाक्यों द्वारा।	* छात्रों द्वारा सरल वाक्यों का वाचन कराना। * व्याकरण की कठिनाइयों को सरल करना।	* अक्षरों, शब्दों एवं वाक्यों का सही उच्चारण के साथ पढ़ने की प्रतियोगिता। * लघुस्तरीय प्रश्नों का मौखिक उत्तर देना।
* छात्रों की वर्तनी संबंधी अशुद्धियों को दूर करना। * वाक्य एवं पैराग्राफ का लघु लेख लिखने का अभ्यास कराना। * सही प्रकार से मात्राओं को लगाने का अभ्यास कराना। * साफ, सुडौल अक्षर व शब्द लिखने का अभ्यास करना।	**लिखना :–** * अक्षरों तथा मात्राओं के आकारों का परिचय। * मात्राओं के लगाने की शैली। * आ तथा ई के दीर्घ एवं ह्रस्व मात्रा का ज्ञान। * श्यामपट्ट या पुस्तक में लिखे हुए शब्दों एवं वाक्यों का अनुलेख।	* साफ-सुडौल अक्षरों, शब्दों एवं सरल वाक्यों को लिखने का अभ्यास। * सही ढंग से मात्राओं का प्रयोग करना सिखाना। * विराम चिह्न का सही प्रयोग कराना।	* लिखे हुये सरल, अक्षरों, शब्दों एवं वाक्यों का मूल्यांकन। * लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर लिखना।
* शुद्ध भाषा को बोलने एवं लिखने में प्रयोग करने का अभ्यास करना। * व्याकरण शब्दावली को पहचानने की क्षमता उत्पन्न करना।	**व्याकरण शब्द में क्रम का महत्व :–** * संज्ञा, सर्वनाम, एकवचन, बहुवचन। * लिंग– पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग। * क्रिया– सामान्य, वर्तमान। * एक से सौ तक संख्या। * शब्द (५०) पचास। * प्रश्नों, नकारात्मक एवं आदेशात्मक वाक्यों की रचना।	* विभिन्न प्रकार के वाक्यों, प्रश्नों, नकारात्मक, आदेश, निर्देश आदि का अभ्यास कराना। * वचन, लिंग, क्रिया, संज्ञा, सर्वनाम आदि का वाक्यों में प्रयोग करने का अभ्यास कराना।	* मौखिक एवं लिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की प्रधानता।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* परिचित वस्तुओं एवं कार्यों से संबंधित वाक्यों को बनाने का अभ्यास कराना। * साधारण वाक्यों को बनाने का अभ्यास कराना।	**सुनना (समझना) :–** * परिचित वस्तुओं एवं कार्यों से संबंधित सरल शब्दों वाले वाक्यों को। * साधारण कथन, प्रश्न, आदेश आदि।	* परिचित वस्तुओं एवं कार्यों के शब्दों वाले वाक्यों को सुनकर समझना। * शिष्टाचार के शब्दों को सुनना, जानना व समझना।	* मौखिक प्रश्नोत्तर।
* परिचित वस्तुओं एवं कार्यों का प्रयोग करके, वाक्य बनाकर बोलने का अभ्यास कराना। * शिष्टाचार वाले शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कर बोलने की क्षमता उत्पन्न करना।	**बोलना :–** * परिचित वस्तुओं और कार्यों के शब्दों को जानकर प्रयोग। * शिष्टाचार के शब्दों वाले वाक्य।	* परिचित वस्तुओं एवं कार्यों वाले चित्र को देखकर वाक्यों में बताना। * शिष्टाचार वाले छोटे-छोटे वाक्य बनाना।	* चित्रों को दिखाकर वस्तुओं के कार्यों के बारे में प्रश्नोत्तर। * शिष्टाचार वाले शब्दों का प्रयोग करके प्रश्नोत्तर।
* भाव ग्रहण करने के कौशल का विकास करना। * पढ़ने की अच्छी आदतों, मौन और सस्वर पठन को विकसित करना।	**पढ़ना :–** * तीन-चार वाक्यों के छोटे-छोटे अनुच्छेद। * मौन पठन। * सस्वर वाचन। * लम्बे वाक्यों का विभाजन।	* भाव के साथ पढ़ने की आदत डालना। * मौन एवं सस्वर पठन की आदत डालना। * लम्बे वाक्यां को भी समझकर पढ़ने की आदत डालना।	* छोटे-छोटे तीन-चार वाक्यों वाले अनुच्छेदों को पढ़कर समझे। * मौखिक प्रश्नोत्तर।
* लम्बे वाक्यों को सार्थक छोटे अंशों में विभाजित करते हुए शुद्ध उच्चारण एवं शब्दों में उपयुक्त बल देकर पढ़ने का अभ्यास कराना। * स्वच्छन्द पठनीय, उचित गति के साथ लेख लिखाने का अभ्यास। * छात्र अपने विचारों को व्यवस्थित क्रम में देकर लिखे एवं सही वर्तनी का प्रयोग करना सिखाना। * प्रश्नों के उत्तर लिखने की योग्यता प्रदान करना।	**लिखना :–** * मात्राओं का लगाना। * अपवाद रूप मात्राओं के उदाहरण। * अनुलेख, श्रुतलेख, पढ़े हुए सरल वाक्यों का लेखन।	* नियन्त्रित लघु लेख लिखना। * पाठ्य-पुस्तकों पर आधारित अभ्यास कार्य कराना।	* सुलेख का मूल्यांकन। * इमला लिखना।
* व्याकरण द्वारा भाषा का सही प्रयोग करने का अभ्यास कराना।	**व्याकरण :–** * विभक्तियों का प्रयोग, हिन्दी तथा तमिल में विद्यमान अन्तर, निश्चय वाचक, अनिश्चय वाचक (तालिका के अनुसार), भविष्यकाल क्रियारूप, पूर्वकालिक क्रियारूप, विभक्तियों का रूप।	* विभिन्न व्याकरण बिन्दुओं का अभ्यास करना।	* अधूरे वाक्यों को पूरा करना। * लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर लिखवाना।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* सामान्य कथन, प्रश्न करना, निर्देश देना, वर्णन, दूसरों की बात को अपने शब्दों में कहने की क्षमता उत्पन्न करने का अभ्यास कराना। * दिये हुए किसी वस्तु के विषय में वर्णन करने का अभ्यास कराना। * राष्ट्रीय भावना, संस्कृति के प्रति रूचि, सामाजिक अवरोधों को दूर करना आदि के बारे में सरल वाक्यों में बोलने का अभ्यास।	**सुनना (समझना), बोलना :–** * वार्तालाप एवं कथोपकथन– घर, पाठशाला, स्वास्थ्य पोषण, स्वच्छता, परिवार, भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास, संवैधानिक जिम्मेदारियाँ, राष्ट्रीय भावना उत्पन्न करने वाली विषयवस्तु, भारतीय संस्कृति की समान विरासत, स्त्री व पुरुष में समानता का भाव, छोटे परिवार की अच्छाइयाँ, सामाजिक अवरोधों को दूर करना आदि विषयों के संबंध में।	* वार्तालाप, अभिनय, वाद-विवाद, कविता पाठ आदि के द्वारा भाषा के बोलने और समझने का अभ्यास। * प्रसिद्ध कवियों की कविताएँ, गाने आदि को कंठस्थ कराना।	* प्रश्नोत्तर (मौखिक) * क्रियाकलापों का मूल्यांकन * सीखी हुई कविताएँ और गानों की प्रतियोगिता।
* प्रसिद्ध कवियों की कविताएँ, गाने आदि को पढ़कर उनमें दिये गये ऊँचे भावों को समझने की क्षमता उत्पन्न कराना। * पढ़ने के कौशल का विकास कराकर, पढ़ने की अच्छी आदत को विकसित करना। * कठिन विशेष ध्वनि के शब्दों का सही उच्चारण करना, सिखाना।	**पढ़ना :–** * कुछ प्रसिद्ध कवि जैसे सूबमण्य भारती, औवैयार न्यागराज आदि के कुछ गाने, कविताएँ आदि। * कुछ कठिन विशेष ध्वनि के शब्दों का सही उच्चारण करना, सिखाना। जैसे– कड़वर (भगवान), शिट्ट्रव (नाष्टा वाले), पलग (केला) आदि।	* कठिन विशेष ध्वनि के शब्दों का सही उच्चारण कराकर भाषा को ठीक ढंग से पढ़ने का अभ्यास कराना। * क्रम संख्या एक में दिये हुए विषयों की पुस्तकों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना।	* कक्षा के विभिन्न छात्रों से दिये हुए विषयों के पाठों को पढ़कर आवश्यकतानुसार सुधार करना और अच्छे पढ़ने वालों की प्रशंसा करना।
* सही ढंग से लिखने, सिखाने का अभ्यास कराना। * छोटे-छोटे वाक्यों द्वारा अपने विचारों को तमिल भाषा में लिखने की आदत का विकास कराना। * दो भाषाओं में वाक्यों के संबंध को जानने के लिए अनुवाद कराने के कौशल को विकसित करना।	**लिखना :–** * विराम चिह्नों से परिचय। क्रम संख्या एक में दिये हुए विषयों के संबंध के छोटे-छोटे वाक्यों को लिखना। * इसी संबंधी– लेख, निबन्ध, पत्र-लेखन आदि। * हिन्दी तथा अंग्रेजी वाक्यों का अनुवाद।	* विराम चिह्न का अपने लेखन कार्य में सही स्थानों पर प्रयोग करने का अभ्यास कराना। * दिये हुए विषयों पर छोटे-छोटे वाक्यों द्वारा लेख, निबन्ध, पत्र आदि लिखना। * हिन्दी से तमिल और तमिल से हिन्दी या कोई अन्य भाषा का अनुवाद करने का अभ्यास कराना।	* दिये गये विषयों पर लेख, निबन्ध, पत्र आदि लिखना। * अनुवाद करना।
* बोलने एवं लिखने में शुद्ध एवं अर्थपूर्ण भाषा का प्रयोग करने की आदत डालना।	**व्याकरण :–** * धातुओं के तीन काल, वचन, पुरुषों में रूप।	* विभिन्न व्याकरण बिन्दुओं की जानकारी एवं अभ्यास।	* वस्तुनिष्ठ प्रश्न।

तेलगू

समान्य उद्देश्य :

1. भारतीय साहित्य तथा संस्कृत में तेलगू भाषा के योगदान से छात्र / छात्राओं को परिचित कराना।
2. तेलगू साहित्य और संगीत का आनन्द उठा सकने की क्षमता विकसित करना।
3. तेलगू भाषा के शब्द भण्डार, मुहावरों, सूक्तियों आदि का ज्ञान कराना।
4. तेलगू से हिन्दी और हिन्दी से तेलगू में अनुवाद करने की क्षमता विकसित करना।
5. शुद्ध उच्चारण के साथ गद्य तथा पद्य को प्रभावपूर्ण ढंग से उचित विराम तथा गति के साथ पढ़ने की योग्यता विकसित करना।
6. तेलगू भाषा के सुनने, बोलने, पढ़ने तथा लिखने की दक्षताएँ लाना।
7. तेलगू भाषा के माध्यम से भाषायी एकता को बढ़ावा देना, राष्ट्रीय एकता का भाव विकसित करना तथा संवैधानिक मूल्यों के संरक्षण हेतु प्रेरित करना।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* दोनों वर्णमालाओं में अन्तर का बोध समझने की योग्यता विकसित करना। * दोनों वर्णमाला का स्पष्ट ज्ञान।	**परिचय सुनना (समझना) और बोलना :–** * देवनागरी-तेलगू वर्णमाला बराबर हैं, तेलगू वर्णमाला में अतिरिक्त वर्णों के बारे में यथा– ए², ऐ ओ ओ² औ, च, ज, इ, ल, क।	* अतिरिक्त वर्णमालाओं को लेकर पदों में (शब्द) समझाना।	* लिखाकर पूछना, प्रश्नोत्तर।
* दोनों लिपियों का स्पष्ट ज्ञान कराना। * लिखने का विधान समझाना।	**लिप्यन्तर (एक लिपि से दूसरी लिपि में लिखना) :–** * देवनागरी में छोटे-छोटे वाक्य देकर तेलगू लिपि में लिखने का अभ्यास कराना तथा तेलगू लिपि में छोटे-छोटे शब्द देकर देवनागरी में लिखवाना।	* सरल शब्द देकर एक लिपि से दूसरी लिपि में लिखवाना। * उसके बाद संयुक्त वर्णयुक्त शब्द देकर एक लिपि से दूसरी लिपि में लिखवाना।	* लिखित कार्य द्वारा।
* वर्णमाला का पूर्ण ज्ञान कराना।	**वर्णमाला-उच्चारण तथा लिखना :–** * तीन चरणों में वर्णमाला सिखाना।	* पहले स्वरों का बोध कराना। * स्पर्श वर्णों का बोध कराना ("क" से लेकर "म" तक) * "य" से लेकर "ज्ञ" तक वर्णों का बोध कराना।	* मौखिक और लिखित प्रश्न पूछना। * हिन्दी और तेलगू के संयुक्त वर्ण लिखने का अन्तर अवगत कराना।
* सामान्य ज्ञान के साथ-साथ तेलगू राज्य का भौगोलिक ज्ञान कराना। * मानचित्र दिखाकर तेलगू भाषा में उसे पहचनवाना, तेलगू प्रान्त के शहर, नदियाँ, पर्वत, आदि को मानचित्र पर समझाना।	**बुनियादी शब्दों का ज्ञान :–** * सर्वनाम, संख्यावाची शब्द, सरल क्रियाएँ, संबंधवाची शब्द, संज्ञाएँ, पशुओं के नाम, शरीर के अंग, वर्ण, दैनिक व्यवहार की वस्तु, तेलगू राज्य के शहर, नदियाँ, पर्वत आदि।	* पशुओं के चित्र दिखाकर तेलगू भाषा में उसे पहचनवाना। * दैनिक व्यवहार की वस्तु।	* प्रयोगात्मक तौर पर उन-उन चीजों को दिखाकर छात्र से प्रश्नोत्तर करना, पुनरावृत्ति देना।
* शब्द विन्यास वाक्य विन्यास का बोध।	**सरल शब्द वाक्यों का पठन लेखन :–** * असंयुक्त वर्ण वाले शब्द। * संयुक्त वर्ण वाले शब्द। * दो शब्द वाले वाक्य। * तीन शब्द वाले वाक्य। * चार शब्द वाले वाक्य।	* सरल शब्द-प्रचलित नेताओं के नाम, अभिनेताओं के नाम सहित।	* किसी तेलगू कहानी की किताब देकर उसमें कुछ पृष्ठों में आए संयुक्त वर्ण वाक्यों को लिखवाना।
* वाक्य में कर्ता, कर्म, क्रिया का ज्ञान।	**सरल वाक्यों की रचना :–** * दो शब्दों में वाक्य रचना। * तीन शब्दों में वाक्य रचना।	* कर्ता, कर्म तथा काल को समझाते हुए वाक्य विन्यास का ज्ञान।	* पाठ्य-पुस्तक के अतिरिक्त किसी उस स्तर के पुस्तक में से वाक्यों को जानना।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* अग्रिम पाठ्य के लिए विश्वासपूर्वक पढ़ाई। * तेलगू व्याकरण का क्रमशः ज्ञान।	**पुनरावृत्ति (व्याकरण विषयक ज्ञान कराना) :–** * श्यामपट्ट पर लिखकर उसका आकलन, संज्ञावाचक शब्द, विशेषण शब्द, क्रिया विशेषण शब्द, सर्वनाम शब्द, अव्यय, वचन, लिंग।	* मौखिक प्रश्न इन शब्दों को वाक्य के पहले, मध्य में और अन्त में प्रयोग करके छात्र को समझाना।	* अध्यापक द्वारा अपने से कुछ वाक्य देकर उनमें से विशेषण, विशेष्य, क्रिया आदि की छात्रों से पहचान करवाना।
* विभक्तियों का ज्ञान।	**विभक्तियाँ :–** * सात विभक्तियाँ क्रमशः एक के बाद एक।	* एक-एक विभक्ति में दस-दस वाक्यों का पाठ बनाकर छात्र को विभक्ति के बारे में समझाना। * विभक्ति को वाक्य के अलग-अलग स्थान पर रखकर वाक्य बनावें और छात्र को समझावें।	* किसी अन्य पुस्तक के कहानी के वाक्यों में विभक्तियों की पहचान, यह कार्य पाठ्य-पुस्तक से भी किया जा सकता हैं।
* तेलगू भाषा की संस्कृति का ज्ञान।	सरल तथा छोटी कहानियों का कथन :– * तेलगू प्रान्त के स्वतंत्रता सेनानी (टी प्रकाशम्, सीतारामय्या आदि), तेलगू प्रान्त के त्योहार, संत लोगों पर आधारित छोटी कहानियाँ, ऐतिहासिक स्थानों पर आधारित कहानियाँ।	* रोचक ढंग से इन कहानियों को छोटे-छोटे वाक्यों में हिन्दी में बताकर छात्र द्वारा तेलगू में कहलवाना।	* छात्रों के द्वारा अपने तरफ से कोई भी कहानी तेलगू में कहने का अभ्यास करवाना।
* तेलगू भाषा में अभिव्यक्ति का ज्ञान।	**गद्यांश (२४ पृष्ठ) चार-चार पृष्ठ के ६ पाठ :–** * स्वतंत्रता सेनानी पर पाठ। * संवैधानिक जिम्मेदारी पर पाठ। * राष्ट्रीय भावना जगाने वाला पाठ। * तेलुगू संस्कृति पर पाठ। * भक्त रामदास पर पाठ। * तेलगू प्रान्त के समाज सेवकों पर पाठ।	* सरल वाक्यों में पाठ रचना।	* किसी भी विषय पर तेलगू में अभिव्यक्ति करने का अवसर देकर आकलन करना।
	पद्यांश (१० पृष्ठ) दो-दो पृष्ठ के गीत :– * गुरजाड आप्पाराव * जेपापरय शास्त्री * झाणुवा द्वारा लिखित पद्य	* लय के साथ इन पद्यों को सिखाना।	

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* स्वयं वाक्य विन्यास में अभ्यस्त होना।	**प्रश्न उत्तर अभ्यास :–** * प्रश्न-उत्तर के माध्यम से छात्र को आधुनिक ज्ञान का बोध कराना।	* किसी वैज्ञानिक, स्वतंत्रता सेनानी, धार्मिक संत के जीवन के आधार पर छात्र से तेलगू में प्रश्न पूछना उससे तेलगू में ही उत्तर कहलवाना।	* किसी वर्तमान विषय पर छात्र से प्रश्न-उत्तर करना।
* पत्रों द्वारा अपनी भावाभिव्यक्ति	**पत्र-लेखन :–** * पिता के प्रति पुत्र का पत्र। विषय-तेलगू प्रान्त के त्योहार। * मित्र के प्रति पत्र- विषय- तेलगू प्रान्त में दर्शनीय स्थल। * शिक्षक के प्रति पत्र-छुट्टी माँगते हुए।	* सरल वाक्यों में भावाभिव्यक्ति।	* तेलगू पत्रिका देकर मुख पृष्ठ के कुछ अंश छात्र से पढ़वाना।
* छात्र की क्षमता का आकलन।	**अनुवाद :–** * अपठित पुस्तक के दस वाक्य।	* अपठित शब्दों का अर्थ अवगत करानां	* अध्यापक अपने तरफ से बोलें। छात्र उसको द्विभाषी की तरह अनुवाद करें।
* वाक्य में क्रिया की स्थिति का ज्ञान।	**क्रियाओं का विशेष ज्ञान :–** * सहायक क्रियाएँ, प्रेरणार्थक क्रियाएँ, सकर्मक क्रियाएँ, अकर्मक क्रियाएँ।	* पर्यावरण की रक्षा से संबंधित, छोटा व सुखी परिवार से संबंधित सामाजिक अवरोधों को दूर करने से संबंधित वाक्य इन क्रियाओं से बनाकर छात्र को समझाएँ।	* प्रश्नोत्तर।
* छात्र स्वयं भावाभिव्यक्ति करने की चेष्टा करें।	**क्रिया विशेष्य, भाववाचक संज्ञा, कतृवाच्य, कर्मवाच्य संधि के सरल नियम :–** * इन पर वाक्य रचना।	* छात्र के द्वारा अभिव्यक्ति करते समय वाक्य को सुधारते हुए समझाना।	* प्रश्नोत्तर।
* तेलगू लोकजीवन के बारे में जानकारी।	**समासों पर सामान्य ज्ञान, मुहावरें, लोकोक्तियाँ :–** * प्रसिद्ध समास पदों की रचना। * मुहावरों, लोकोक्तियों को याद कराना।	* मुहावरें तथा लोकोक्तियों पर आधारित कहानी सुनाकर छात्र को अवगत कराना।	* प्रश्नोत्तर।
* तेलगू पद्यों का सामान्य ज्ञान।	**पद्यांश (२० पृष्ठ) दो-दो पृष्ठ का पद्य १० पाठ :–** * आन्ध्र भागवत से। * सुमती शतकम् से। * वेमनपद्यावली से। * आन्ध्र रामायण से। * रामदास भक्ति गीत से। * दशरथि शतकम् से। * भाष्कर शतकम् से। * श्रीनाथ के पद्यों से। * गुरजाड पद्यों से। * झाणुवा के पद्यों से किसी एक छन्द के पांच पद्य।	* उन पद्यों को सही ढंग से गा-गाकर समझाना।	* इन पद्यों में से जो छात्र ज्यादा पद्य कंठस्थ कर रहा है उसे पुरस्कार से प्रोत्साहित करना।
* नीतिविषयक ज्ञान।	**गद्यांश (१५ पृष्ठ) तीन-तीन पृष्ठ के पाँच पाठ :–** * चिन्नयसूरि के पंचतंत्र से पाँच पाठ।	* भावाभिव्यक्ति को समझाना।	* प्रश्नोत्तर।

अरबी

सामान्य उद्‌देश्य :

1. भारत की मिलीजुली संस्कृति के संरक्षण तथा हिन्दुस्तानी भाषाओं हिन्दी / उर्दू और साहित्य के सम्यक् ज्ञान हेतु अरबी के अध्ययन के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करते हुए राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीय एकता का विकास करना।
2. सरल तथा कठिन अरबी पद्य एवं गद्यांशों का शुद्ध उच्चारण के साथ पाठ करना तथा उनका अर्थावबोधन।
3. उर्दू के सरल वाक्यों का अरबी में तथा अरबी से उर्दू में अनुवाद करने का कौशल विकसित करना।
4. अपने भावों एवं विचारों को सरल अरबी वाक्यों के माध्यम से व्यक्त करने का कौशल विकसित करनां
5. शब्द भण्डार की अभिवृद्धि कर स्वाध्याय तथा लेखन क्षमता को विकसित करना।
6. अरबी के कतिपय साहित्यकारों, अरबी आलिमों एवं वैज्ञानिकों, उनकी कृतियों से छात्रों को अवगत कराना एवं उनके ज्ञान की अभिवृद्धि करना।
7. छात्रों में भारतीय संवैधानिक मूल्यों जैसे– एकता, लोकतंत्र एवं धर्म निरपेक्षता का भाव विकसित करना।
8. उनमें अरबी अध्ययन के प्रति आधुनिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न करनां
9. विद्यार्थियों में सत्य, अहिंसा, परोपकार, त्याग, सहिष्णुता आदि नैतिक और मानवीय मूल्यों का विकास करनां
10. वन सम्पदा, पशु-पक्षी एवं मानव जीवन की पारस्परिक निर्भरता का बोध कराते हुए उनके संरक्षण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना।
11. बढ़ी आबादी से उत्पन्न समस्याओं और कठिनाइयों का बोध कराना और छोटे परिवार मानक का सम्बोध देना।
12. विद्यार्थियों में सुनकर समझना, बोलकर समझना, पढ़ना, लिखना इन चारों भाषा कौशलों का अपेक्षित विकास करना।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* ध्यान से सुनकर समझने की क्षमता का विकास। * कथन को सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने की क्षमता का विकास करना। * प्रश्न करने और प्रश्नों के उत्तर देने की योग्यता विकसित करना। * दैनिक जीवन से सम्बन्धित वस्तुओं, व्यक्तियों एवं क्रियाओं तथा प्राकृतिक दृश्यों का अरबी भाषा में वर्णन करने की क्षमता का विकास करना। * ज्ञान प्राप्त करने, प्रेरणा लेने और आनन्दित होने के लिए दूसरे के कथन को सुनने की प्रकृति का विकास करना। * अरबी एवं उर्दू भाषा के उच्चारण की अशुद्धियाँ दूर करना।	**सुनना, समझना तथा बोलना :–** * शब्दों, वाक्यों, मात्राओं तथा उपवाक्यों को समझना। * अरबी उच्चारण में कानों का प्रशिक्षण। * साधारण कथन, प्रश्न आदेश आदि को समझना, मौखिक निर्देशों को समझना। * एकाग्रता के साथ सुनना और अर्थग्रहण करना। * अधूरे वाक्यों तथा कथनों को संदर्भपरक बनाकर समझना। * पाठ्‌य-पुस्तक में दिए अजजाए कलाम तथा विषय बोधक शब्दों को समझना और प्रयोग में लाना। * मौखिक अभिव्यक्ति का विकास। * सीखी हुई भाषा इकाइयों से (अजजाए कलाम) संबोधित कुछ उदाहरण कंठस्थ करना तथा अवसर आने पर मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति करना। * अरबी भाषा के सभी अक्षरों, ध्वनियों तथा मात्राओं, शब्दों आदि का शुद्ध उच्चारण, ज्ञान एवं प्रयोग।	* प्रश्नोत्तर, दृश्य आदि पर आधारित प्रश्नोत्तर, वार्तालाप। * अजजाए कलाम एवं विषय बोधक शब्दों पर आधारित मौखिक अभ्यास। * बच्चों के पर्यावरण-प्राकृतिक दृश्य वस्तु, व्यक्ति, पशु-पक्षी, नदी, पहाड़, देश के फल-फूल का वर्णन, मानव शरीर के अंगों का वर्णन, दिनों तथा महीनों के नाम, गिनतियों का बोध कराना। * प्रश्नोत्तर द्वारा विद्यार्थियों से भावों का आदान-प्रदान, भाषायी खेल।	* प्रश्नोत्तर द्वारा मूल्यांकन सुनी हुई या देखी हुई वस्तु एवं चित्र पर प्रश्न किए जाएँ और विद्यार्थियों के श्रवण बोध और अर्थग्रहण करने की क्षमता का मूल्यांकन करें। शब्दों, वाक्यों, हुरुफ के उच्चारण का मौखिक रूप से मूल्यांकन। * कंठस्थ वाक्यों को विद्यार्थियों से बुलवाकर ध्वनियों एवं बोलने की क्षमता के विकास का मूल्यांकन किया जाए।
* शुद्ध उच्चारण के साथ विषय वस्तु के पढ़ने की क्षमता का विकास करना। * शब्दों पर उचित बल देते हुए वाक्यों को पढ़ने का कौशल विकसित करना। * मौन पठन से विषयवस्तु का अर्थ ग्रहण करने की क्षमता का विकास। * पाठ्‌यक्रम में दिये अजजाए कलाम एवं विषय बोधक शब्दों को पढ़कर समझने और प्रयोग करने की क्षमता विकसित करना।	**पढ़ना और समझना :–** * अरबी वाक्यों, शब्दों, शब्दों, अक्षरों को शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ने के कौशल का विकास करना। * मौन पठन द्वारा भावों और विचारों को ग्रहण करने की क्षमता का विकास करना। * विषयवस्तु को पढ़कर शब्द भण्डार की वृद्धि करना। * विषयवस्तु को पढ़कर पूर्णतया समझने की क्षमता का विकास करना।	* अध्यापक द्वारा आदर्श एवं सस्वर वाचन। * छात्रों द्वारा सस्वर वाचन। * छात्रों का मौन पाठ। * अध्यापक छात्रों की सहायता से कठिन शब्दों का उर्दू तथा अरबी और हिन्दी पर्यायवाची ढूँढेंगे। * अनुच्छेदों पर मौन पाठ के पश्चात् अध्यापक द्वारा बोध प्रश्न। * भाषा के खेल।	* सस्वर वाचन एवं प्रेरक बोध प्रश्नों द्वारा मूल्यांकन। * शब्दों का वाक्यों में प्रयोग, वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति, उर्दू/हिन्दी से पर्यायवाची देने के अभ्यास द्वारा मूल्यांकन। * विभिन्न प्रकार के बोध एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्नों द्वारा मूल्यांकन।

* छात्रों को अरबी भाषा शुद्ध वर्तनी तथा सुन्दर और स्पष्ट अक्षरों के साथ लिखना सिखाना। * अरबी के साथ-साथ उर्दू की वर्तनी तथा लेखन की अशुद्धियों का सुधार करना। * (एराब) मात्राओं का उचित प्रयोग करने के कौशल का विकास करना। * अरबी से उर्दू/हिन्दी तथा उर्दू / हिन्दी से अरबी अनुवाद करने की क्षमता का विकास करना।	**लिखना तथा रचना कार्य :-** * अरबी अक्षरों (वर्णमाला) को सुन्दर ढंग से लिखना। * अक्षरों को मिलाकर लिखना। * श्यामपट्ट पर लिखो या पाठ्य-पुस्तक में छपे शब्दों एवं वाक्यों को देखकर सुलेख लिखना। * वाक्यांशों को छोड़कर वाक्य बनाना। * अधूरे वाक्यों को पूरा करके लिखना। * सही अरबी वर्तनी के प्रयोग की क्षमता का विकास करना।	* छात्रों को अक्षर लिखना सिखाएँ। * अक्षरों को मिलाकर शब्द के रूप में लिखना सिखाएँ। * शिक्षक, चित्र, चार्ट, वस्तु सथान, प्रकृति आदि पर प्रश्नोत्तर करके लिखित कार्य की तैयारी कराएँ। पहले श्यामपट्ट पर शब्द या वाक्य लिखवाएँ फिर मिलाकर दो एक छात्रों से इन शब्दों, वाक्यों को पढ़ने को कहें, अन्त में लिखने को कहें। लिखते समय अध्यापक घूम-घूमकर निरीक्षण करें। * सुलेख लिखवाएँ।	* छात्रों से सीखी हुई इकाई को लिखवाकर उनकी वर्तनी तथा विराम चिह्नों (एराब) के ज्ञान का मूल्यांकन करें। * किसी वसतु कथित स्थान, पशु-पक्षी आदि पर कम से कम ५-१० वाकय लिखवाएँ। * श्रुत लेख द्वारा वर्तनी ज्ञान का मूल्यांकन।
* अरबी बोलने एवं लिखने में शुद्ध एवं अर्थपूर्ण भाषा का प्रयोग सिखाना। * विद्यार्थियों को भाषा के वास्तविक स्वभाव का ज्ञान हो जाए।	**व्याकरण-कवायद :-** * कार्य परक व्याकरण का ज्ञान। * भाषा वर्णन के साथ भाषा प्रयोग। * व्याकरण में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली काक ज्ञान तथा प्रयोग। * निम्न कवायद का प्रयोग सहित ज्ञान। * एराब और उनके प्रकार। * मोअन्नस, मुज़फकर। * वाहिद, तरनिया, अमा।	* विभिन्न व्याकरण बिन्दुओं की जानकारी व अभ्यासं * भाषायीय खेल मौखिक एवं लिखित अभ्यास। * वाक्यों में से विभिन्न अज़्ज़ाए कलाम ढूँढ़कर लिखना।	* वस्तुनिष्ठ प्रश्न रिक्त स्थानों की पूर्ति तथा भाषायी खेलों द्वारा मूल्यांकन।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* ध्यान से सुनकर एवं एकाग्रचित होकर समझने की क्षमता का विकास। * कथन को सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने की क्षमता तथा प्रश्न करने और सही उत्तर देने की योगयता का विकास करना। * ज्ञान प्राप्त करना, प्रेरणा लेने एवं आनन्दित होने के लिए दूसरों के कथन को सुनने की प्रवृत्ति का विकास करना। * अरबी एवं उर्दू उच्चारण की अशुद्धियों को दूर करना।	**सुनना, समझना तथा बोलना :–** * शब्दों, वाक्यों, उपवाक्यों को संदर्भ में समझना। * अरबी उच्चारण में कानों का प्रशिक्षण। * साधारण कथन, प्रश्न आदि को समझना, मौखिक निर्देशों को समझना। * एकाग्रता के साथ सुनना और अर्थग्रहण करना। * अधूरे वाक्यों तथा कथनों को संदर्भपरक बनाकर समझना। * पाठ्य-पुस्तक में दिए बजजाए कलाम तथा विषय बोधक शब्दों को समझना और प्रयोग में लाना। * मौखिक अभिव्यक्ति का विकास। * सीखी हुई भाषा इकाइयसों से संबंधित कुछ उदाहरण कंठस्थ करना तथा अवसर आने पर मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति करना। * अरबी भाषा के सभी अक्षरों, ध्वनियों तथा मात्राओं, शब्दों आदि का शुद्ध उच्चारण, ज्ञान एवं प्रयोग।	* परम्परागत अभिवादन प्रश्नोत्तर, दृश्य, वस्तु, चित्र आदि पर आधारित प्रश्नोत्तर, वार्तालाप एवं संवाद। * पाठ्यक्रम में दिए हुए अजजाए कलाम एवं विषध बोधक शब्दों पर आधारित मौखिक अभ्यास। * भाषा खेल। * व्यक्ति, पशु, पक्षी, फल, फूल, नदी, पहाड़, बाग, मानव के दैनिक जीवन से संबंधित वस्तुओं एवं क्रियाओं का वर्णन। * इकाइयों एवं विषय बोधक शब्दों का प्रयोग मौखिक तथा लिखित अभ्यास द्वारा छोटी-छोटी कथा वाचन रोचक ढंग से करें तथा कक्षा में अधिक कुशल छात्रों से भी कथाओं का वाचन करवाएँ। प्रश्न उत्तर द्वारा छात्रों को दुकानदारों से विभिन्न प्रकार की बातचीत करना सिखाना तथा विभिन्न शब्दों का ज्ञान कराना।	* प्रश्नोत्तर प्रणाली से मूल्यांकन-छात्रों से चर्चित विषय या दिखाई गई वस्तु एवं चित्र पर प्रश्न किए जाएँगे। उनके श्रवण बोध एवं अर्थग्रहण की क्षमता का मूल्यांकन होगा। * कहानी सुनाने के बाद उनसे कहानी कहने अथवा वर्णन करने को कहा जाए। * इससे उनकी ग्रहणशक्ति और स्मरण शक्ति का मूल्यांकन किया जा सकता है। * यह भी देखा जाए कि छात्रों के उत्तर क्रमबद्ध और तर्क संगत हैं। वाक्यों एवं शब्दों का सस्वर वाचन।
* एकाग्रचित होकर मौन पठन से विषयवस्तु के अर्थ को समझना तथा उसमें निहित भावों, विचारों, मूल्यों को आत्मसात करने की क्षमता का विकास करना। * सस्वर वाचन द्वारा छात्रों के पढ़ने की गति को बढ़ाना। * छात्रों में अरबी शब्दों तथा अमसल वहकम के प्रयोग से भाषा को प्रभावशाली बनाने की क्षमता का विकास करना। * छात्रों में अरबी पढ़कर अर्थ ग्रहण करने की क्षमता का विकास करना। * छात्रों में पढ़ने की गति को उचित सीमा तक बढ़ना।	**पढ़ना और समझना :–** * उचित गति तथा बल के साथ विषयवस्तु, अनुच्छेद को प्रवाहपूर्ण ढंग से पढ़ने की क्षमता का विकास करना। * मौन पठन द्वारा भावों और विचारों को ग्रहण करने की दक्षता का विकास करना। * शुद्ध उच्चारण के साथ सस्वर अरबी के कौशल का विकास। * अनुच्छेद को पढ़कर अर्थग्रहण की क्षमता का विकास। * छात्रों के पढ़ने की गति में उचित सीमा तक वृद्धि।	* शिक्षक द्वारा आदर्श एवं सस्वर वाचन। * छात्रों द्वारा सस्वर वाचन, भाषा खेल। * छात्रों द्वारा मौन पाठ। * छात्रों की सहायता से शिखक द्वारा कठिन शब्दों एवं लोकोक्तियों की व्याख्या, छात्रों द्वारा उनका वाक्यों में प्रयोग। * छात्रों के सहयोग से नए शब्दों का प्रयोग जैसे – कुछ रोजमर्रा प्रयोग में आने वाले शब्द, कुछ विज्ञान संबंधी शब्द, लोकोक्तियों की व्याख्या हिन्दी एवं उर्दू में उसी अर्थ की लोकोक्तियों को ढूँढ़कर लिखन तथा सुनाना। * अनुच्छेदों पर शिक्षक द्वारा छात्रों से बोधा प्रश्न।	* प्रेरक बोध प्रश्नों द्वारा मूल्यांकन * शब्दों का वाक्यों में प्रयोग। * वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति। * उर्दू/हिन्दी पर्यायवाची, अरबी विपरीतार्थ शब्दों वाले अभ्यासों द्वारा मूल्यांकन। * विभिन्न प्रकार के बोध और वस्तुनिष्ठ प्रश्न। * विभिन्न प्रकार के बोध और वस्तुनिष्ठ प्रश्न

* विषयवस्तु तथा भाषा के सौन्दर्य को समझने तथा छात्रों के भाषा को प्रभावशाली बनाने के कौशल का विकास करना।	* विषयवस्तु को पढ़कर शब्द भण्डार की वृद्धि करना। * विषयवस्तु को पढ़कर पूर्णतया समझने की क्षमता का विकास करना। * विषयवस्तु तथा भाषा के सौन्दर्य को समझने का विकास करना।	* भाषा के खेल विभिन्न प्रकार के बोध प्रश्न-प्रश्नोत्तर। * संवाद और अभिनय पाठों पर आधारित अभ्यास।	तथा सस्वर पाठ करवाकर गति का मूल्यांकन करना। * भाषा के खेल विभिन्न प्रकार के बोध प्रश्न एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्नों द्वारा मूल्यांकन (मौखिक एवं लिखित दोनों)
* छात्रों को स्पष्ट और सुन्दर लिखावट के साथ अरबी लिखना सिखानां * सभी परिचित अरबी शब्दों का शुद्ध लिखना तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों को दूर करना। * छात्रों को एराब के प्रयोग में अभ्यास करना। * व्यावहारिक जीवन में तथा व्यावसायिक जीवकन में काम आने वाले छोटे-छोटे प्रश्न उत्तर आसदि का कौशल प्रदान करना।	**लिखना तथा रचना कार्य:-** * किसी चित्र एवं वस्तु देखकर उसका नाम अरबी में लिखना। * देखी हुई या सुनी हुई वस्तु, व्यक्ति, दृश्य आदि का वर्णल प्रस्तुत करना। * श्यामपट्ट पर लिखे या पाठ्य-पुस्तक में छपे शब्दों एवं वाक्यों को लिखना। * वाक्यांशों को जोड़कर वाक्य बनाना और लिखना। * पाठ्य-पुस्तक के पाठों से संबंधित लिखित अभ्यास।	* शिक्षक मौखिक रुप से तैयारी कराने के बाद लिखित कार्य कराएँगे। * श्रुतलेख, सुलेख, भाषाई खेल, पाठ्य-पुस्तक पर आधारित अभ्यास। * उर्दू/हिन्दी से अरबी तथा अरबी से उर्दू/हिन्दी में अनुवाद कार्य करना।	* विद्यार्थियों में शब्द, वाक्य तथा अनुच्छेद लिखवाकर उनके वर्तनी ज्ञान एराब के प्रयोग का मूल्यांकन हो सकेगा। * अनुवाद द्वारा उर्दू/हिन्दी से अरबी तथा अरबी से उर्दू/हिन्दी द्वारा व्यवहारिक ज्ञान का मूल्यांकन।
* छात्रों को अरबी बोलने एवं लिखने में शुद्ध एवं अर्थपूर्ण भाषा का प्रयोग सिखाना। * अरबी भाषा के वास्तविक स्वभाव का ज्ञान छात्रों को कराना। * छात्रों को प्रभावी अरबी बोलने और लिखने का अभ्यास करवाना।	**व्याकरण:-** * कार्यपरक व्याकरण का ज्ञान। * भाषा वर्णन के साथ भाषा प्रयोग। * कक्षा 6 में सीखी हुई। * व्याकरण की पुनरावृत्ति एवं अभ्यास। * क्रिया और उनके पंकार के केवल नाम और केवल माजी के गरदान। * सर्वनाम, विशेषण। * हर्फ तहिज्जी और उनके प्रकार। * हर्फ अल्फ * हर्फे नार * माजी की किस्में गरदान के साथ। * फेल मारुफ फेल मजहूल	* विभिन्न व्याकरण बिन्दुओं की जानकारी एवं अभ्यास। * मौखिक एवं लिखित दोनों प्रकार से भाषा का खेल।	* वस्तुनिष्ठ प्रश्न-रिक्त स्थानों की पूर्ति। * अधूरे वाक्यों को पूरा करना।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* ध्यान से सुनना एवं एकाग्रचित होकर समझने की क्षमता का विकास। * कक्षा में रेडियों पर तथा अरबी लोगों के सम्पाग में आने पर अरबी भाषा सुनकर समझने की क्षमता का विकास करना। * कथन को सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने की क्षमता तथा प्रश्न करने की और प्रश्नों के सही उत्तर देने की क्षमता का विकास करना। * प्रश्न करने तथा सही उत्तर देने की योग्यता का विकास। * कविता का स्वर, पाठ करने तथा आनन्दित होने की क्षमता का विकास करना। * ज्ञान प्राप्त करने, प्रेरणा लेने का विकास करना। * अरबी के साथ-साथ उर्दू उदाहरण की अशुद्धियों को दूर करना। * भावों, विचारों एवं धारणाओं को संक्षेप में व्यक्त करने की क्षमता का विकास करना। * छात्रों को ऐसी क्षमता प्रदान करना कि वे अपनी सुदबुद को आजादी से प्रस्तुत कर सकें। * छात्रों में ऐसी क्षमता का विकास करना कि वे अपने भाषण को आकर्षक एवं रोचक बना सकें।	**सुनना, समझना तथा बोलना:-** * शब्दों, वाक्यों, उपवाक्यों को संदर्भ में समझाना। * अरबी उच्चरण में कानों को प्रशिक्षित करना। * एकाग्रता के साथ सुनना तथा अर्थग्रहण करना। * साधारण वाक्यों, आदेशों, निर्देशों को समझना तथा बोलना। * अधूरे वाक्यों तथा कथनों को संदर्भपरक बनाकार समझना। * पाठ्यक्रम में दी हुई अजजाए कलाम तथा विषय बोधक शब्दों को समझना एवं प्रयोग में लाना। * मौखिक अभिव्यक्ति का विकास। * सीखी हुई भाषा इकाइयों संबंधित कुछ उदाहरण कंठस्थ कराना, करना तथा अवसर आने पर मौखिक तथा लिखित अभिव्यक्ति करना। * अरबी भाषा की सभी ध्वनियों, रोराबों, संयुक्त तरकीबों, शब्दों आदि का शुद्ध उच्चारण करते हुए बोलना। * भावों और विचारों की अभिव्यक्ति को तर्कपूर्ण ढंग से तथा क्रमबद्ध रुप से प्रस्तुत करना।	* प्रश्नोत्तर, दृश्य, वस्तु, चित्र, व्यक्ति पर आधारित प्रश्नोत्तर वार्तालाप एवं संवाद। * पाठ्यक्रम में दी हुई अजजाये कलाम एवं विषय बोधक शब्दों पर आधारित मौखिक तथा लिखित अभ्यास कराना। * भाषा के खेल, शब्द कोष बढ़ाने वर्तनी आदि सुधारने हेतु। * पशु, पक्षी, प्रवृत्ति, मौसम, दृश्य, व्यक्ति तथा मानव के दैनिक जीवन से संबंधित क्रियाकलापों का वर्णल। * अजजाये कलाम एवं विषय बोधक शब्दों का प्रयोग। मौखिक तथा लिखित अभ्यास द्वारा। * कहानी कहना तथा सुनना, अध्यापक द्वारा रोचक और ड्रामाई ढंग से होना चाहिए। * बच्चों से भी कहानी सुनवाएँ। * अजजाये कलाम और विषय बोधक शब्दों से संबंधित प्रसिद्ध पशुओं, फलों का ज्ञान, गद्यांश, पद्यांश को कंठस्थ करके बोलना। * लिखित कोर्ष से पहले मौखिक तैयारी, विभिन्न प्रकार के लेखन कार्य नियमित लेख दिये हुए वाक्यों को क्रमबद्ध करके लिखना आदि।	* प्रश्नोत्तर प्रणाली से मूल्यांकन। * छात्रों द्वारा देखे या सुने गये विषयों पर। * वस्तुओं, चित्रों दृश्य, त्यौहार आदि पर। * प्रश्न करके उनके श्रवण बोध और अर्थग्रहण की क्षमता का मूल्यांकन करें। * किसी वस्तु, कहानी, घटना या व्यक्ति का वर्णन या कविता का वर्णन सुनाकर छात्रों द्वारा वर्णन करवाये तथा कविता पाठ करने को कहें। इससे छात्रों की ग्रहण शक्ति का मूल्यांकन होगा। अध्यापक यह भी देखें कि छात्रों का उत्तर क्रमबद्ध और तर्कसंगत है। वाक्यों एवं शब्दों का सस्वर वाचन। * गद्य के लघु अंशों को कंठस्थ कर सुनाना। * कविता सुनाना जिससे उच्चारण की शुद्धता तथा लय और ताल के बोध का मूल्यांकन हो सके।
* उचित गति तथा बल के साथ विषयवस्तु प्रवाहपूर्ण ढंग से पढ़ने की क्षमता का विकास। * एकाग्रचित होकर मौन पठन से विषय वस्तु के अर्थ को समझना तथा उससे उसमें निहित भावों, विचरों एवं मूल्यों को आत्मसात (जज़्ब) करने की क्षमता का विकास कराना। पढ़ने की गति को बढ़ाना।	**पढ़ना और समझाना:-** * उचित गति एवं बल के साथ अनुच्छेद को प्रवाहपूर्ण ढंग से पढ़ने की क्षमता का विकास करना। * मौन पठन द्वारा भावों और विचारों को ग्रहण करने की क्षमता का विकास करना। * शुद्ध उच्चारण के साथ सस्वर अरबी वाचन के कौशल का विकास करना।	* अध्यापक द्वारा आदेश एवं सस्वर वाचन। * छात्रों द्वारा सस्वर वाचन। * छात्रों द्वारा मौन पाठ। * छात्रों की सहायता से अध्यापक द्वारा कठिन शब्दों, मुहावरों एवं लोकोक्तियों की व्याख्या। * अनुच्छेव पर अध्यापक द्वारा बोध प्रश्न। * कविता का उचित गति, लय सहित वाचन। * कथन, लोकोक्तियों तथा कविता की पंक्तियों को कंठस्थ करके बोलना। * संवाद एवं अभिनय।	* प्रेरक बोध प्रश्नों द्वारा मूल्यांकन। * शब्दों का वाक्य में प्रयोग, वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति। * उर्दू/हिन्दी पर्यायवाची, अरबी विपरीतार्थी शब्दों (जिद) वाले अभ्यास द्वारा मूल्यांकन।

* पाठ्यक्रम में दी हुई अजजाय कलाम एवं विषय बोधक शब्दों को समझला और प्रयोग में लाना। * भाषा के सौन्दर्य को समझने की क्षमता का विकास।	* छात्र के पढ़ने की गति में उचित सीमा तक वृद्धि करना। * विषयवस्तु को पढ़कर शब्द भंडार की वृद्धि करना। * विषयवस्तु को पढ़कर पूर्णत: समझने की क्षमता का विकास करना। * विषयवस्तु तथा भाषा के सौन्दर्य को समझने का विकास करना।	* भाषायी खेल। * पुनरावृत्ति	* विभिन्न प्रकार के बोध एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न का ज्ञान। * कविता पाठ करवाकर छात्रों के लय एवं गीत व ताल के बीच का मूल्यांकन किया जा सकता है। * भाषा के खेलों द्वारा बच्चों के शब्द ज्ञान तथा स्मरण शक्ति का मूल्याकंन हो सकता है।
* लड़कों को तीव्र गति से स्पष्ट लिखना सिखाना। * सभी परिचित शब्दों को शुद्ध लिखना तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों को दूर करना। * शब्दों का वाक्य प्रयोग सिखाना। * छात्रों को अनुच्छेद बनाने का अभ्यास कराना। * विराम चिह्नों का उचित प्रयोग करने की क्षमतर का विकास। * व्यवहारिक जीवन में तथा व्यवसायिक उद्देश्यों हेतु कार्य सम्पादन के लिए उद्देश्यों हेतु कार्य सम्पादन के लिए पत्र, प्रार्थना पत्र आदि लिखने का कौशल प्रदान करना। * निबन्ध, कहानी, संवाद आदि लिखने का अभ्यास कराना। * सारांश का संक्षेप आदि लिखने का अभ्यास कराना।	**लिखना तथा रचना कार्य:-** * किसी बीज एवं वस्तु को देखार उसका लिखित वर्णन प्रस्तुत करना। * श्यामपट्ट पर लिखित तथा अभ्यास पुस्तिका का पाठ्यपुस्तक में छपे शब्दों एवं वाक्यों को देख्कर लिखना। * पहले से सुनी अथवा पढ़ी हुई कहानी जो सीखी हुई भाषा (उर्दू) सामग्री पर आधारित हो लिखना। * वाक्यांशों से जोड़कर वाक्य बनाना। * अधूरी कहानी को पूरा करना। * दृश्य, त्योहार, सामाजिक उत्सव, राष्ट्रीय पर्व, खेल इत्यादि का वर्णन प्रस्तुत करना। * पत्र, प्रार्थनापत्र, निबन्धा लिखना। * पाठ्यपुस्तक में पाठों से संबंधित अभ्यास कराना। * महापुरुषों की जीवनी लिखना।	* अध्यापक चित्र, घटना, स्थिति आदि पर आधारित प्रश्न-उत्तर करके लिखित कार्य की तेयरी कराएँगे। नियमित लघु लेख, भाषायी खेल, पाठ्य-पुस्तक पर आधारित अभ्यास कार्य, अनुवाद कार्य-उर्दू से अरबी और अरबी से उर्दू में तरजुमा कराना। * अनेक प्रकार के पत्र प्रार्थनापत्र आदि लिखवाना। * मौखिक तैयारी के बाद निबन्धा, कहानी, संवाद लिखवाना। * अनुच्छेद देकर उसका सारांश लिखवाना। * महापुरुषों की जीवन की घटनाओं पर बोलना। * अभिनय करवाना।	* छात्रों से वाक्य, शब्द तथा अनुच्छेद लिखवाकर, उसमें वर्तनी ज्ञान तथा मूल्यांकन। * परिचित विषयों पर लेख लिखवाकर लड़कों के विचारों को क्रमबद्धता तर्कपूर्ण शैली के मूल्यांकन कराना। * कविता, कहानी लिखकर कल्पना-शक्ति का मूल्यांकन। * पत्र, प्रार्थनापत्र आदि लिखवाकर व्यवहारिक ज्ञान तथा उससे संबंधित शब्द कोष के ज्ञान एवं प्रयोग का मूल्यांकन किया जा सकेगा। * महापुरुषों की जीवनी पर आधारित प्रश्नोत्तर द्वारा तथा संक्षिप्त जीवनी लिखवाकर (छात्रों की ग्रहण शक्ति एवं भाषा प्रयोग का मूल्यांकन कराना।)
* विद्यार्थी कविता का भाव ग्रहण करके आनन्द की अनुभूति कर सके। * सौन्दर्यबोध का विकास। * लय एवं गम के साथ कविता पाठ करने की योगयता का विकास।	**काव्यों सौन्दर्य:-** * कविता के लय एवं राग वजन की अनुभूति। * सस्वर पाठन एवं कविता का रसास्वादन।	* आदेश वाचन, सस्वर पाठ, कविता को कंठस्थ करना।	* मौखिक एवं लिखित बोध एवं प्रश्न। * सस्वर कविता पाठ करवाना।

* कविता में दिये भावों एवं विचारों का प्रयोग।	* भावग्रहणएवं आनन्दानुभूति।		
* भाषा के सही प्रयोग के कौशल का विकास कराना। * भाषा की अशुद्धियों को सुधारने में सहायता करना तथा भाषा की भूलों से बचने की क्षमता का विकास करना। * संयुक्त शब्दों एवं वाक्यों को समझला तथा प्रयोग करने का कौशल प्रदर्शन करना। * वाक्यों को जोड़कर लिखने के कौशल को बताना तथा संयोजक शब्दों (हर्फे अल्फ) के प्रयोग की क्षमता का विकास करना।	**व्याकरण:-** * कार्यपरक व्याकरण का ज्ञान कक्षा 6 एवं 7 में सीखी गयी कवायद की पुनरावृत्ति एवं अभ्यास विभिन्न प्रकार के शब्दों के रुप देना- हाल मुजाराउमग्र नहीं, मजदर और इस्म मसतल जमा और उनका नाम। * मुकतसिर-सालिम मुजककर, मुअन्नस और उनकी तारीफ जमर की गदान, जुमला और उनकी किस्में। * मसदर आदि की जानकारी। * हर्फे जार एवं मजरुर। * हर्फ इस्तफहाम। * मुब्तेदा खबर।	* विभिन्न प्रकार के मौखिक तथा लिखित अभ्यास-जो शब्दों के रुप, वाक्य, विश्लेषण आदि पर आधारित हो। इन अभ्यासों को यथासंभव रोचक और आकर्षक यथासंभव रोचक और आकर्षक बनाएँ, भाषायीय खेल आदि।	* मौखिक तथा लिखित कार्य द्वारा भाषा ज्ञान तथा प्रयोग का मूल्यांकन करें।

फारसी

सामान्य उद्देश्य :

1. भारत को मिलीजुली संस्कृति के संरक्षण तथा हिन्दुस्तानी भाषाओं और साहित्य के सम्यक् ज्ञान हेतु फारसी के अध्ययन के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करते हुए राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीय एकता का विकास करना।
2. सरल तथा कठिन फारसी पद्य एवं गद्यांशों का शुद्ध उच्चारण का पाठ करना तथा उसका अर्थावबोधन।
3. उर्दू हिन्दी के सरल वाक्यों का फारसी में तथा फारसी से उर्दू / हिन्दी में अनुवाद करने की क्षमता विकसित करना।
4. अपने भाव एंव विचारों को सरल फारसी वाक्यों के माध्यम से व्यक्त करने का कौशल विकसित करना।
5. फारसी भाषा के शब्द भण्डार की अभिवृद्धि करके स्वाध्याय तथा लेखन क्षमता का विकास करना।
6. फारसी के कतिपय साहित्यकारों, महापुरुषों एवं वैज्ञानिकों तथा उनकी रचनाओं एवं कृतियों से छात्रों को अवगत कराना एवं उनके ज्ञान की अभिवृद्धि करना।
7. फारसी भाषा के माध्यम से छात्रों में भारतीय संवैधानिक मूल्यों जैसे - राष्ट्रीय एकता, लोकतंत्र एवं धर्म निरपेक्षता का भाव विकसित करना।
8. विद्यार्थियों में सत्य, अहिंसा, परोपकार , त्याग, सहिष्णुता आदि नैतिक एंव मानवीय मूल्यों का विकास करना ।
9. वन्य सम्पदा, पशुपक्षी एवं प्राचीन संस्कृति के संरक्षण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना ।
10. बढ़ती आबादी से उत्पन्न समस्याओं को बोध कराना तथा छोटे परिवार से लाभ का बोध कराना ।
11. विद्यार्थियों में फारसी सुनकर समझना, बोलना , पढ़ना तथा लिखना इन चारों कौशलों का अपेक्षित विकास करना ।
12. फारसी भाषा में विज्ञान संबंधी शब्दों के भण्डार का समावेश करना ।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* ध्यान से सुनकर समझने की क्षमता का विकास करना । * कथन को सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने की क्षमता का विकास करना । * प्रश्न करने और उत्तर देने की योग्यता विकसित करना । * दैनिक जीवन से संबंधित वस्तुओं, व्यक्तियों एवं क्रियाओं तथा प्राकृतिक दृश्यों का फारसी भाषाओं में वर्णन करने की क्षमता का विकास करना। * ज्ञान प्राप्त करने, प्रेरणा लेने और आनन्दित होने के लिए दूसरे के कथन को सुनने की प्रवृत्ति का विकास करना । * फारसी एवं उर्दू भाषा के उच्चारण की अशुद्धियों को दूर करना ।	सुनना, समझना तथा बोलना :- * शब्दों, वाक्यों, उपवाक्यों को सन्दर्भ में समझना । * फारसी उच्चारण में कानों का प्रशिक्षण। * साधारण कथन, प्रश्न आदेश आदि को समझना । * मौखिक निर्देशों को एकाग्रता के साथ सुनना और अर्थग्रहण करना। * अधूरे वाक्यों तथा कथनों के संदर्भ को समझना। * पाठ्यपुस्तक में दी हुई सांस्थानिक इकाईयों तथा विषय बोधक शब्दों को समझना तथा प्रयोग में लाना । * मौखिक अभिव्यक्ति का विकास। * फारसी भाषा के सभी अक्षरों, ध्वनियों तथा मात्राओं, शब्दों आदि का शुद्व उच्चारण ज्ञान एवं प्रयोग।	* परम्परागत अभिवादन, दृश्य वस्तु, चित्र, चार्ट आदि पर आधारित प्रश्नोत्तर । * पाठ से संबंधित विषयवस्तु पर फारसी में वार्तालाप। * सांस्थानिक इकाइयों एवं विषय बोधक शब्दों पर आधारित मौखिक अभ्यास । * पर्यावरण, प्राकृतिक दृश्य, वस्तु, व्यक्ति, पशु, पक्षी, नदी, पहाड़, फल-फूल, देश, मानव शरीर के अंग, दस तक फारसी नाम का वर्णन, रंगों के नाम । * रोचक शैक्षिक कहानी, प्रेरक प्रसंगों को सुनाना । * उच्चारण अभ्यास ।	* प्रश्नोत्तर द्वारा मूल्यांकन। * सुनी हुई या देखी हुई वस्तु एवं चित्र पर प्रश्न किये जाएँ और विद्यार्थियों के श्रवण बोध और अर्थग्रहण करने की क्षमता का मूल्यांकन करें। * शब्दों, वाक्यों का सस्वर वाचन। * बोध प्रश्न द्वारा मूल्यांकन।
* शुद्व उच्चारण के साथ विषय वस्तु पढ़ने की क्षमता का विकास करना। * शब्दों पर उचित बल देते हुए वाक्यों को पढ़ने का कौशल विकसित करना। * मौन पठन से विषयवस्तु का अर्थ ग्रहण करने की क्षमता का विकास। * पाठ्यक्रम में दी हुई सांस्थानिक इकाइयों एवं विषयबोधक शब्दों का पढ़कर समझने और प्रयोग करने की क्षमता का विकास ।	**पढ़ना और समझना:-** * फारसी वाक्यों, शब्दों, अक्षरों को शुद्व उच्चारण के साथ सस्वर वाचन। * मौन पठन द्वारा भावों और विचारों को ग्रहण करना/ क्षमता का विकास करना। * विषयवस्तु को पढ़कर शब्द भण्डार की वृद्वि करना । * विषयवस्तु को पढ़कर पूर्णतया समझने की क्षमता का विकास करना।	* अध्यापन द्वारा आदर्श एवं सस्वर वाचन। * कठिन शब्दों को अध्यापक उच्चारित कराएँ। * छात्रों द्वारा सस्वर वाचन । * कठिन शब्दों व उपवाक्यों को बच्चों की सहायता से उर्दू पर्यायवाची। * छात्रों द्वारा मौन पाठ। * अनुच्छेदों पर मौन पाठ के पश्चात् अध्यापक द्वारा बोध प्रश्न।	* प्रेरक बोध प्रश्नों द्वारा मूल्यांकन। * रिक्त स्थानों की पूर्ति। * शब्दों को वाक्यों में प्रयोग। * सस्वर पाठ कराकर बच्चों के उच्चारण का मूल्यांकन।
* छात्रों को फारसी भाषा शुद्व वर्तनी तथा सुन्दर और स्पष्ट अक्षरों के साथ लिखना सिखाना । * फारसी के साथ उर्दू की वर्तनी तथा लेखन की अशुद्धियों का सुधार। * विराम चिह्नों का उचित प्रयोग करने के कौशल का विकास करना।	**लिखना तथा रचना कार्य :-** * फारसी अक्षर को सुन्दर ढंग से लिखना। * अक्षरों को मिलाकर लिखना । * श्यामपटट् पर लिखे या पुस्तक में छपे शब्दों एवं वाक्यों को देखकर ठीक-ठीक लिखना ।	* छात्रों को अक्षर लिखना। * अक्षरों को मिलाकर शब्द लिखना सिखना। * शिक्षक चित्र, चार्ट, वस्तुस्थान, प्रकृति आदि पर प्रश्नोत्तर द्वारा लिखित कार्य की तैयारी करायेंगे। पहले वे स्वयं श्यामपट्ट पर लिखेंगे फिर छात्रों से पढ़वाने के बाद उसे छात्रों को श्यामपट से उतरने को कहा जाये ।	* छात्रों से सीखी हुई इकाई को लिखवाकर उनकी वर्तनी तथा विराम चिह्नों के ज्ञान का मूल्यांकन करें । * सुलेख कर उनको लिखने की शक्ति व शुद्व लेख का

* फारसी से उर्दू / हिन्दी तथा उर्दू /हिन्दी से फारसी के सरल वाक्यों को अनुवाद करने की क्षमता का विकास करना ।	* वाक्यांशों को जोड़कर वाक्य बनाना। * अधूरे वाक्यों को पूरा करना । * सही वर्तनी का प्रयोग करना ।	* सुलेख लिखवाना।	मूल्यांकन। * किसी वस्तु, व्यक्ति, स्थान, पशु, पक्षी आदि पर कम से कम 5-10 वाक्य लिखवाना। * श्रुतलेख से वर्तनी के मूल्यांकन कराना तथा लिखावट का मूल्यांकन करना।
* फारसी बोलने एवं लिखने में शुद्ध व अर्थपूर्ण भाषा का प्रयोग सिखाना।	**व्याकरण व क़वायद :-** * छात्रों को व्याकरण का ज्ञान कराना। * व्याकरण में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली का ज्ञान तथा प्रयोग तथा उर्दू, हिन्दी व संस्कृत में उनके पर्यायवाची शब्दों का ज्ञान करना। * जिद अलफज (विलोम शब्द) निम्नलिखित क़वायद को विस्तार से प्रयोग सहित ज्ञान- कलेमा और जामिद, वाहिद जमा, मुजक्कर व मुअन्नस मुजाफ इलैह फारसी के शब्दों के विभिन्न भाषाओं में हम माने अल्फाजु (पर्यायवाची शब्द) अजाजए कलाम इस्म, सिफत जमीर, फेल, मनकी, सिफत मौसूफ।	* विभिन्न व्याकरण बिन्दुओं की जानकारी व अभ्यास। * मौखिक एवं लिखित अभ्यास से वाक्यों में अजजाए-कलाम ढूँढ़कर निकालना।	* वस्तुनिष्ठ प्रश्न, रिक्त स्थानों की पूर्ति तथा भाषायी खेलों द्वारा मूल्यांकन। * भाषा खेलों से मूल्यांकन।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* ध्यान से सुनकर एवं एकाग्रचित्त होकर समझने की क्षमता का विकास। * कथन को सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने की क्षमता तथा प्रश्न करने और सही उत्तर देने की योग्यता का विकास करना। * ज्ञान प्राप्त करने प्रेरणा लेने एवं आनन्दित होने के लिये दूसरों के कथन को सुनने की प्रवृत्ति का विकास करना। * फारसी एवं उर्दू उच्चारण की अशुद्धियों को दूर करना।	**सुनना, समझना तथा बोलना :–** * शब्दों, वाक्यों, उपवाक्यों को संदर्भ में समझाना। * फारसी उच्चारण में कानों का प्रशिक्षण। * साधारण कथन, प्रश्न, आदेश आदि को समझना, मौखिक निर्देशों को समझना। * एकाग्रता के साथ सुनना एवं अर्थ ग्रहण करना। * अधूरे वाक्यों तथा कथनों को पूर्ण करना। * पाठ्यक्रम में दी हुई सांस्थानिक इकाइयों को तथा विषयबोधक शब्दों को समझना एवं प्रयोग में लाना। * मौखिक अभिव्यक्ति का विकास। * फारसी भाषा में प्रयोग होने वाले शब्दों का शुद्ध उच्चारण करके बोलना।	* परम्परागत अभिवादन प्रश्नोत्तर, दृश्य, वस्तु, पर्यावरण, चित्र आदि पर आधारित प्रश्नोत्तर वार्तालाप एवं संवाद। * पाठ्यक्रम में दी सांस्थानिक इकाइयों एवं विषयबोधक शब्दों पर आधारित मौखिक अभ्यास। * भाषा खेल। * घटना एवं पशु-पक्षी, फल-फूल, नदी, पहाड़, बाग, मानव के दैनिक जीवन सेसंबंधित वस्तुओं एवं क्रियाओं का ज्ञान। * सांस्थानिक इकाइयों एवं विषय बोधक शब्दों का प्रयोग मौखिक तथा लिखित अभ्यास द्वारा कराना। * फारसी की कहानी, कथा को अध्यापक रोचक ढंग से कहे कि विद्यार्थी के मस्तिष्क में फारसी की कहानी का खाका खिंच जाए और उनको अर्थ रटने की आवश्यकता न हो।	* प्रश्नोत्तर प्रणाली से मूल्यांकन। * छात्रों से चर्चित विषयों पर दिखाई गई वस्तु एवं चित्र पर प्रश्न किए जायेंगे जिससे उनके श्रवण बोध और अर्थ ग्रहण की क्षमता का मूल्यांकन होगा। * किसी वस्तु, कहानी या घटना या व्यक्ति वर्ण सुनाया जाय और फिर उनसे कहानी कहने अथवा वर्णन करने को कहा जाय। इससे उनकी ग्रहण शक्ति और स्मरण शक्ति का मूल्यांकन किया जा सकता है। * यह भी देखा जाए कि छात्रों का उत्तर क्रमबद्ध और तर्कसंगत हो।
* उचित गति तथा बल के साथ विषयवस्तु अनुच्छेद की प्रवाह पूर्ण ढंग से पढ़ने की क्षमता का विकास करना। * एकाग्रचित्त होकर मौन पाठ से वषियवस्तु के अर्थ को समझना तथा उसमें निहित भावों और विचारों, मूल्यों को समझने की क्षमता का विकास करना। * सस्वर वाचन द्वारा छात्र को पढ़ने की गति को बढ़ाना। * छात्रों में फारसी पढ़कर अर्थ ग्रहण करने की क्षमता का विकास करना। * छात्रों की पढ़ने की गति को उचित सीमा तक बढ़ाना। * फारसी के शब्द भण्डार को बढ़ाना। * विषयवस्तु को पढ़कर विचारों, भावों को ग्रहण करने की क्षमता का विकास करना।	**पढ़ना और समझना :–** * उचित गति एवं बल के साथ विषयवस्तु भावपूर्ण ढंग से पढ़ने की क्षमता का विकास करना। * मौन पाठ द्वारा भावों और विचारों को ग्रहण करने की क्षमता का विकास करना। * शुद्ध उच्चारण के साथ सस्वर फारसी वाचन के कौशल का विकास। * शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों का प्रयोग। * अनुच्छेद पढ़कर अर्थग्रहण करने की क्षमता का विकास। * छात्रों की पढ़ने की गति में उचित सीमा तक वृद्धि करना। * विषयवस्तु तथा भाषा के सौन्दर्य को समझने का विकास करना।	* शिक्षक द्वारा आदर्श एवं स्वर वाचन। * छात्रों द्वारा सस्वर वाचन। * छात्रों द्वारा मौन पाठ। * छात्रों की सहायता से शिक्षक द्वारा कठिन शब्दों का अर्थ निकलवाना। * अनुच्छेदों पर शिक्षक द्वारा छात्रों से बोध प्रश्न। * विभिन्न प्रकार के प्रश्नोत्तर। * पाठों पर आधारित अभ्यास।	* प्रेरक बोध प्रश्नों द्वारा मूल्यांकन। * शब्दों का वाक्यों में प्रयोग। * वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति। * फारसी का उर्दू/हिन्दी पर्यायवाची। * फारसी के विपरीतार्थक शब्दों का अभ्यास द्वारा मूल्यांकन। * विभिन्न प्रकार के बोध और वस्तुनिष्ठ प्रश्न। * विभिन्न प्रकार के बोध और वस्तुन्ष्ठि प्रश्न सस्वर पाठ करवाकर गति का मूल्यांकन करना।

* विषयवस्तु तथा भाषा के सौन्दर्य को समझने तथा छात्रों की भाषा को प्रभावशाली बनाने के कौशल का विकास करना।			* भाषा के खेलों, विभिन्न प्रकार के बोध प्रश्नों द्वारा मूल्यांकन। (मौखिक एवं लिखित)
* छात्रों को स्पष्ट और सुन्दर लिखावट के साथ फारसी लिखना सिखाना। * सभी परिचित फारसी शब्दों का शुद्ध लिखना तथा वर्तनीय संबंधी अशुद्धियों को दूर करना।	**लिखना एवं रचना कार्य :–** * किसी चित्र एवं वस्तु को देखकर उसका नाम फारसी में लिखना। * श्यामपट्ट पर लिखे या पाठ्यपुस्तक में छपे शब्दों एवं वाक्यों को लिखना। * वाक्यांशों को जोड़कर वाक्य बनाना और लिखना। * खाली स्थानों की पूर्ति करना। * परिवार के सदस्यों का नाम एवं उनसे सम्बन्ध फारसी में लिखनां	* शिक्षक मौखिक रूप से तैयारी करने के बाद लिखित कार्य कराएँ नियमित लघु लेख, श्रुतलेख, सुलेख, भाषायी खेल, पाठ्यपुस्तक पर आधारित अभ्यास कार्य– उर्दू / हिन्दी से फारसी तथा फारसी का उर्दू / हिन्दी में अनुवाद कार्य।	* विद्यार्थियों से शब्द वाक्य तथा अनुच्छेद लिखवाकर उनके वर्तनी ज्ञान के प्रयोग का मूल्यांकन हो सकता है। अनुवाद द्वारा उनका मूल्यांकन किया जाएगा।
* छात्रों को फारसी बोलने एवं लिखने में शुद्ध एवं अर्थपूर्ण भाषा का प्रयोग सिखाना। * फारसी भाषा के वास्तविक स्वभाव का ज्ञान छात्रों को कराना।	**व्याकरण :–** * कार्यपरक व्याकरण का ज्ञान। * भाषा वर्णन के साथ भाषा प्रयोगं * कक्षा ६ में सीखे गये व्याकरण की पुनरावृत्ति एवं अभ्यास। * हुरुफ इजाफा जार, जुमला-साधारण एवं प्रश्न सूचक जुमले मुजक्कर, मुअन्नस, असबाती जुमलों को जुमलाये मनफी और जुमलाये इस्तफहोनिया बनाना। जिद, अलफ़ाज कमरी महीनों इस्तेफ, हामिया हुरुफे, इसम वजिफ़त ज़माना, माजी, हालनुस्तबि व माजी की किस्में।	* विभिन्न व्याकरण बिन्दुओं की जानकारी एवं अभ्यास। * मौखिक एवं लिखित दोनों प्रकार के भाषा के खेल।	* वस्तुनिष्ठ प्रश्न, रिक्त स्थानों की पूर्ति। * अधूरे वाक्यों को पूरा करना।

उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
* ध्यान से सुनना एवं एकाग्रचित होकर समझने की क्षमता का विकास। * कक्षा में रेडियों तथा ईरानी लोगों के समपर्क में आने पर फारसी भाषा सुनकर समझने की क्षमता का विकास करना। * कथन को सुनकर अपनी प्रक्रिया व्यक्त करने की क्षमता तथा प्रश्न करने की व प्रश्नों के सही उत्तर देने की क्षमता का विकास करना। * फारसी एवं उर्दू उच्चारण की अशुद्धियों को ठीक करना। * कविता का सस्वर पाठ करने तथा भावों को समझने की क्षमता का विकास करना। * ज्ञान प्राप्त करने, प्रेरणा लेने तथा आनन्दानुभूति के लिए दूसरों के कथन को सुनने की प्रवृत्ति का विकास करना। * भावों, विचारों एवं धारणाओं को संक्षेप में रोचक तथा प्रभावपूर्ण शैली में व्यक्त करने की क्षमता का विकास करना। * छात्रों में नवीन फारसी शब्दों को सीखने व बोलने की क्षमता का विकास करना।	**सुनना, समझना तथा बोलना :–** * शब्दों, वाक्यों, उपवाक्यों को संदर्भ में समझना। * फारसी उच्चारण में कानों को प्रशिक्षित करना। * एकाग्रता के साथ सुनना तथा अर्थग्रहण करना। * साधारण वाक्यों, आदेशों तथा निर्देशों को समझना तथा बोलना। * अधूरे वाक्यों, कथनों को संदर्भ परक बनाकर समझना। * पाठ्यक्रम में दी हुई संस्थानिक इकाइयों तथा विषयबोधक शब्दों को समझना एवं प्रयोग में लाना। * अपने भावों को मौखिक रूप से अभिव्यक्त करने का विकास। * सीखी हुई भाषा इकाइयों से कुछ उदाहरण कंठस्थ करना तथा मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति करना। * फारसी भाषा की सभी ध्वनियों, मात्राओं, संयुक्त तरकीबों, शब्दों आदि का शुद्ध उच्चारण करते हुए बोलना। * भावों और विचारों की अभिव्यक्ति को तर्कपूर्ण ढंग से तथा क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करना।	* परम्परागत अभिवादन, प्रश्न उत्तर, दृश्य, वस्तुचित्र, व्यक्ति पर आधारित, प्रश्नोत्तर वार्तालाप एवं संवाद। * पाठ्यक्रम में दी हुई सांस्थानिक इकाइयों एवं विषयबोधक शब्दों पर आधारित मौखिक तथा लिखित अभ्यास। * भाषा के खेल शब्दकोष बढ़ाने तथा वर्तनी आदि सुधारने हेतु। * पशु-पक्षी, प्रकृति, मौसम, दृश्य मानव के दैनिक जीवन से संबंधित क्रियाकलापों का वर्णन किया जाएं * सांस्थानिक इकाइयों एवं विषय बोधक शब्दों। * फारसी की हेकायतों को उर्दू में रोचक ढंग से सुनाना ताकि उनको सुनकर बच्चों में विषय के प्रति रुचि उत्पन्न हो व उनका नैतिक विकास हो सके। * फारसी की नज़मों व अश्आर को सही उच्चारण में बोलना व कंठस्थ कराना।	* प्रश्नोत्तर प्रणाली से मूल्यांकनं * छात्रों द्वारा देखे या सुने गए विषयों, वस्तुओं, चित्रों, दृश्य या पर्यावरण पर प्रश्न करके उनके श्रवण की क्षमता का मूलयांकन। * किसी वस्तु, कहानी या कविता का वर्णन सुनाकर बच्चों से उसे दुबारा सुना जाय ताकि उनकी स्मरण शक्ति व ग्रहण करने की शक्ति का मूल्यांकन हो सके। * वाक्यों एवं शब्दों का सस्वर वाचन कराया जाए ताकि बच्चों के उच्चारण व बोलने बच्चों के उच्चारण व बोलने की क्षमता का मूल्यांकन किया जा सके। * पद्य के लघु अंशों तथा अश्आर को बच्चों से सुना जाए जिससे शुद्ध उच्चारण तथा उचित लय व ताल का मूल्यांकन किया जा सके।
* उचित गति तथा बल के साथ प्रवाहपूर्ण ढंग से पढ़ने की क्षमता का विकास। * एकाग्रचित होकर मौन पठन से विषयवस्तु के अर्थ को समझना तथा उसमें निहित विचारों और मूल्यों को आत्मसात करने की क्षमता का विकास करना। * छात्र के पढ़ने की गति को बढ़ाना। * पाठ्यक्रम में दी हुई संस्थानिक इकाइयों एवं विषय बोधक शब्दों इकाइयों एवं विषय बोधक शब्दों	**पढ़ना और समझना :–** * उचित गति एवं बल के साथ अनुच्देद को प्रवाहपूर्ण ढंग से पढ़ने की क्षमता का विकास करना। * मौन पठन द्वारा भावों और विचारों को ग्रहण करने की क्षमता का विकास करना। * शुद्ध उच्चारण के साथ सस्वर फारसी वाचन के कौशल का विकास करना। * छात्र के पढ़ने की गति में उचित सीमा तक वृद्धि करना।	* अध्यापक द्वारा आदर्श एवं सस्वर वाचन। * छात्रों द्वारा सस्वर वाचन। * छात्रों द्वारा मौन पाठ। * छात्रों की सहायता से अध्यापक द्वारा कठिन शब्दों, मुहावरों की व्याख्या। * अनुच्देद पर अध्यापक द्वारा बोध प्रश्न। * कविता का उचित गति, लय सहित वाचन। * कथन तथा लोकोक्तियों को कंठस्थ करके बोलना। * भाशाई खेल।	* बोध प्रश्नों द्वारा मूल्यांकन। * शब्दों का वाक्य में प्रयोग, वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति, उदू / हिन्दी पर्यायवाची फारसी में विलोम शब्दों वाले अभ्यासों द्वारा मूल्यांकन। * विभिन्न प्रकार के बोध प्रश्न। * कविता पाठ करवाकर

को समझना और प्रयोग में लाना। * शब्द भण्डार का विकास। * भाषा में सौन्दर्य की क्षमता, समझने की क्षमता का विकास करना। * नवीन फारसी के शब्दों परिचित कराना।	* विषयवस्तु को समझकर पढ़ना तथा शब्द भण्डार की वृद्धि करना। * विषयवस्तु को पढ़कर पूर्णता समझने की क्षमता का विकास करना। * विषयवस्तु तथा भाषा के सौन्दर्य को समझने की शक्ति प्रदान करना। * नवीन फारसी के शब्दों से उन्हें परिचित करना।		पढ़ने में सही उच्चारण का मूल्यांकन करना। * भाषा के खेलों द्वारा बच्चों के शब्द ज्ञान तथा स्मरण शक्ति का मूल्यांकन हो सकता है।
* छात्रों में तीव्र गति से स्पष्ट लिखना सिखाना। * सभी परिचित शब्दों को शुद्ध लिखना तथा वर्तनी संबंधी अशुद्धियों को दूर करना। * छात्रों को अनुच्देद बनाने का अभ्यास कराना। * फारसी का हिन्दी अथवा उर्दू, उर्दू अथवा हिन्दी का फारसी में अनुवाद करना। * मुहावरा भाषा लिखने की योग्यता का विकास करना।	**लिखना तथा रचना कार्य :-** * किसी चीज एवं वस्तु को देखकर उसका लिखित वर्णन प्रस्तुत करना। * श्यामपट पर लिखित तथा अभ्यास पुस्तिका में छपे शब्दों तथा वाक्यों को देखकर लिखना। * वाक्यांशों को जोड़कर वाक्य बनाना। * वस्त्र, वस्तु, फल, फूल आदि को देखकर लिखना तथा वाक्य बनाना।	* अध्यापक चित्र आदि को दिखाकर लेख लिखायेगा। * नियमित लघु लेख, भाषसयी खेल, पाठ्यपुस्तक पर आधारित अभ्यास कार्य अनुवाद कार्य कराएगा। * अनुच्छेद देखकर उसका सारांश लिखवाना।	* शब्द देकर उसका वाकय बनवाकर उनके व्यवहारिक ज्ञान का मूल्यांकन करेगा। * महापुरुषों के जीवन पर आधारित प्रश्नोत्तरी, संक्षिप्त जीवनी लिखवाकर छात्रों की ग्रहण शक्ति एवं भाषा प्रयोग का मूल्यांकन।
* विद्यार्थी कविता का भाव ग्रहण करके आनन्द की अनुभूति कर सके। * सौन्दर्य बोध का विकास। * लय एवं गति के साथ कविता पाठ करने की योग्यता का विकास।	**काव्य सौन्दर्य :-** * काव्य के लय एवं राग व वाचन की अनुमति। * सस्वर पाठन एवं कविता का रसास्वादन। * भावग्रहण एवं आनन्दानुसूति।	* आदर्श वचन, सस्वर पाठ, कविता को कंठस्थ करना।	* मौखिक एवं लिखित बोध एवं प्रश्न करके।
* बोलने एवं लिखने में भाषा के सही प्रयोग के कौशल का विकास करना। * भाषा की अशुद्धियों को सुधारने में सहायता करना। * संयुक्त शब्दों एवं वाक्यों को समझना तथा प्रयोग करने का कौशल प्रदान करना। * वाक्यों को जोड़कर लिखने तथा संयोजक शब्दों (हर्फे अतफ़्) के प्रयोग की क्षमता का विकास करना।	**व्याकरण :-** * कार्यपरक व्याकरण का ज्ञान। * कक्षा ६ एवं ७ में सीखी गयी क़वायद की पुनरावृत्ति एवं अभ्यास। * विभिन्न प्रकार के शब्दों के रूप देना- हल, मस्तकबिल, अमर, नहीं। * काव्य विश्लेषण मसादि आदि की जानकारी। * हर्फे अतफ़।	* विभिन्न प्रकार के मौखिक तथा लिखित अभ्यास। * बच्चों को शब्दों को मसदर में बदलवाना। * गरदन की मौखिक तथा लिखित अभ्यास। * लिखित अभ्यास शब्दों के रूप वाक्य विश्लेषण आदि पर आधारित हों। * भाषायी खेल।	* मौखिक तथा लिखित कार्य द्वारा भाषा का ज्ञान।

गणित शिक्षण के सामान्य उद्देश्य

१. दैनिक जीवन की समस्याओं में गणितीय ज्ञान का प्रयोग करना।

२. वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास।

३. आंकड़ों को सुव्यवस्थित करके निष्कर्ष निकालने की क्षमता का विकास।

४. गणितीय परिभाषाओं, सिद्धान्तों का ज्ञान।

५. गणितीय सिद्धान्तों में पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित करना।

६. गणितीय तथ्यों में पारस्परिक भेद का संबोध।

७. गणित का अन्य विषयों से सहसम्बन्ध स्थापित करना।

८. गणितीय संक्रियाओं में अपेक्षित कौशल।

९. गणितीय संक्रियाओं में प्रयोगात्मक क्षमता का विकास।

१०. तथ्यों के अवलोकन एवं परीक्षण की क्षमता में विकास।

११. नवीन गणितीय अवधारणाओं की जानकारी अर्जित करते हुए भावी जीवन के लिए तैयारी।

१२. गणित के अध्ययन में रुचि तथा सकारात्मक दृष्टिकोण में अभिवृद्धि।

विशेष

पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई (यूनिट) के प्रारम्भ में पुनरावृत्ति के अन्तर्गत उस इकाई से सम्बन्धित पूर्व अवधारणा से अवगत कराया जाए। पाठ्य पुस्तक लेखन के समय प्रत्येक इकाई से सम्बन्धित शिक्षार्थी के पूर्व ज्ञान का उल्लेख किया जाए। पुनरावृत्ति में उदाहरणों द्वारा पूर्व सम्बोध की संक्षिप्त पुनरावृत्ति के साथ अभ्यासार्थ कुछ प्रश्न दिये जाएँ।

"अध्यापक हेतु आवश्यक समर्थन"

१. पाठ्यक्रम का अवबोध।

२. शिक्षण विधियों का ज्ञान।

३. सहायक सामग्रियों के उपयोग में प्रशिक्षण, विशेषकर गणित किट के प्रयोग के संबंध में पूर्ण जानकारी।

अपेक्षित व्यवहारपरक उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया (विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण)	मूल्यांकन प्रविधि
	(क) अंकगणित		
* प्राकृतिक संख्याओं एवं पूर्ण संख्याओं में भेद करना।	**१. प्राकृतिक एवं पूर्ण संख्याएँ** * पुनरावृत्ति १.१ प्राकृतिक संख्याएँ १.२ पूर्ण संख्याएँ : आवश्यकता, क्रम	* वस्तुओं की गिनती कराना। * संख्या रेखा का ज्ञान कराना। * संख्या रेखा की सहायता से 'बड़ा है' 'छोटा है' का अवबोध कराना।	* प्रश्नों द्वारा * संख्या रेखा पर प्रदर्शन कराकर।
* पूर्ण संख्याओं की संक्रियाओं में दक्षता। * पूर्णांकों के विभिन्न गुणधर्मों के प्रयोग में कुशलता।	**२. पूर्ण संख्याओं पर संक्रियाएँ** * पुनरावृत्ति २.१ जोड़, घटाने, गुणा एवं भाग के गुणधर्म २.२ गुणा-भाग २.३ चारों मूल संक्रियाओं के गुणधर्म २.४ पूर्णांकों का निरपेक्ष मान २.५ पूर्णांकों के घात २.६ कोष्ठकों का प्रयोग तथा कोष्ठक हटाकर व्यंजक सरलीकरण।	* जोड़-घटाने, गुणा-भाग की क्रिया को संख्या रेखा पर प्रदर्शित कराकर। * उदाहरणों द्वारा आधार, घातांक तथा घात को स्पष्ट किया जाय। * उदाहरणों द्वारा कोष्ठकों का बोध कराना। * कोष्ठकों को हटाने के लिए "BODMAS" नियम निकालना तथा उसका प्रयोग करना।	* क्रियाओं का निरीक्षण एवं जाँच करके
* संख्याओं को अविभाज्य गुणनखण्डों में विभक्त करने में कुशलता। * म0 स0 एवं ल0 स0 की गणना करने में कुशलता और उनमें सम्बन्ध का संबोध।	**३. गुणनखण्ड और अपवर्त्य** * पुनरावृत्ति ३.१ गुणनखण्ड एवं अपवर्त्य ३.२ भाज्य एवं अभाज्य संख्याएँ ३.३ भाज्यता के सामान्य गुण ३.४ अभाज्य गुणनखण्ड ३.५ अपवर्तक, समापवर्तक तथा महत्तम समापवर्तक ३.६ लघुतम समापवर्त्य ३.७ महत्तम समापवर्तक एवं लघुतम समापवर्त्य में सम्बन्ध ३.८ म0 स0 तथा ल0 स0 पर आधारित व्यावहारिक प्रश्नों को हल करना।	* गुण्य, गणक तथा गुणनफल की सहायता से। * अभाज्य संख्याएँ कौन सी हैं। * भाज्य संख्याओं का ज्ञान कराकर। * सम संख्या, विषम संख्या, भाज्य एवं अभाज्य संख्याओं में अन्तर स्पष्ट कराकर। * उदाहरणों द्वारा अपवर्त्य, समापवर्त्य तथा लघुतम समापवर्त्य का ज्ञान, ल0 स0 ज्ञात करने के नियम का सामान्यीकरण। २ न्यूनतम अभाज्य सम संख्या है, स्पष्ट करें। * दो संख्याओं का ल0 स0 X म0 स0 = दोनों संख्याओं का गुणनफल। उदाहरणों द्वारा सामान्यीकरण करना।	* मौखिक एवं लिखित प्रश्नों द्वारा * प्रक्रिया की जाँच करके * गणना की जाँच करके

* अनुपात एवं समानुपात से जुड़ी दैनिक समस्याओं को सरलतापूर्वक हल करना। * लाभ, हानि और ब्याज से सम्बन्धित दैनिक जीवन की समस्याओं का निराकरण करना।	**४. वाणिज्य गणित** * पुनरावृत्ति ४.१ अनुपात ४.२ समानुपात ४.३ ऐकिक नियम ४.४ प्रतिशतता ४.५ लाभ प्रतिशत, हानि प्रतिशत ४.६ साधारण ब्याज ४.७ व्यवहार-गणित	* दैनिक जीवन के सन्दर्भ में अनुपात, समानुपात, लाभ-हानि, प्रतिशत, ब्याज की अवधारणा। * उदाहरणों द्वारा सम्बोध स्पष्ट करना। * उदाहरणों की सहायता से साधारण ब्याज के सूत्र की स्थापना कराना।	* दैनिक जीवन से सम्बन्धित प्रश्नों द्वारा
* चित्रग्राफ, स्तम्भ ग्राफ तथा पाई ग्राफ बनाने एवं उनसे निष्कर्ष निकालने में दक्षता। * दैनिक जीवन में इसका व्यावहारिक उपयोग करना।	**५. सांख्यिकी** * पुनरावृत्ति ५.१ अव्यवस्थित आकड़ों को चित्रग्राफ (पिक्टोग्राफ) द्वारा दर्शाना ५.२ बार ग्राफ-निरुपण ५.३ पाई ग्राफ निरुपण	* दैनिक जीवन से सम्बन्धित आकड़ों से ग्राफ खींचना। * शिक्षार्थियों से स्व्यं बार ग्राफ बनवाकर निष्कर्ष निकलवाना। * पाई ग्राफ बनवाकर निष्कर्ष निकलवाएँ।	* पिक्टोग्राफ, बार ग्राफ एवं पाई ग्राफ बनवाकर * दिये गये आंकड़ों को ग्राफ द्वारा प्रदर्शित करके निष्कर्ष निकलवाना।

अपेक्षित व्यवहारपरक उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया (विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण)	मूल्यांकन प्रविधि
	(ख) बीजगणित		
* चर और अचर संख्याओं की पहचान करना।	१. बीजगणित की अवधारणा १.१ संख्याओं को दर्शाने के लिए अक्षरों का प्रयोग १.२ संख्याओं और अक्षर संख्याओं की मूल क्रियाएँ १.३ अक्षर संख्याओं की घात १.४ चर और अचर संख्याएँ	* अंकों को अक्षरों द्वारा प्रदर्शित करने की आवश्यकता * उदाहरणों से संबोधों को स्पष्ट करना।	मूल्यांकन * प्रश्नों की सहायता से * समूह चर्चा द्वारा
* बीजीय व्यंजकों पर मूल संक्रियाओं में कुशलता प्राप्त करना।	**२. बीजगणितीय व्यंजक** २.१ पदों के गुणांक २.२ सजातीय और विजातीय पद २.३ एक, दो एवं त्रिपदीय व्यंजक २.४ बीजगणितीय व्यंजकों के मान (जबकि चरों की घात प्राकृत संख्या हो) २.५ बीजगणितीय व्यंजकों का जोड़-घटाना। २.६ कोष्ठकों का प्रयोग।	* उदाहरणों की सहायता से विभिन्न पदों (terms) का संबोध कराना।	* प्रश्नों की सहायता से * समूह चर्चा के माध्यम से * प्रक्रियाओं की जांच करके
* सरल समीकरण हल करने में दक्षता प्राप्त करना।	**३. समीकरण** ३.१ रेखीय समीकरण एक चर में (त्रुटि एवं प्रयत्न विधि से) ३.२ दैनिक जीवन पर आधारित रेखीय समीकरण के वार्तिक प्रश्न ३.३ दैनिक जीवन संबन्धी प्रश्नों में एक अज्ञात राशि को रेखीय समीकरण की सहायता से ज्ञात करना	* एक अज्ञात राशि से संबन्धित रेखीय समीरकण बनवाना, उन्हें हल करना। * हल करने के नियमों का बोध कराना। * व्यावहारिक जीवन से उदाहरण लेकर रेखीय समीकरण हल करके अज्ञात राशि को ज्ञात करना।	* प्रश्नों द्वारा।
	(ग) रेखागणित		
* तलों की पहचान करना।	**१. ज्यामितीय अवधारणाएँ** * पुनरावृत्ति १.१ पृष्ठ एवं समतल १.२ समतल के गुण	* ठोस वस्तुओं की सहायता से पृष्ठ एवं समतल की पहचान कराना। * गणित किट का प्रयोग करना। * आकृतियाँ बनवाना।	* विभिन्न प्रकार की आकृतियाँ बनवाकर तथा तलों की पहचान करवाकर

	१.३ रेखा की अवधारणा, किरण १.४ एक रेखीय बिन्दु (समरेख बिन्दु) १.५ एक बिन्दुगामी रेखाएँ		
* विभिन्न प्रकार के रेखाखण्ड खींचने में दक्षता।	**२. रेखाखण्ड** * पुनरावृत्ति २.१ किसी रेखा से दी हुई लम्बाई का रेखाखण्ड काटना २.२ दो रेखाखण्डों के योग एवं अन्तर के बराबर एक रेखाखण्ड खींचना।	* विभिन्न नाप के रेखाखण्ड खींचना। * रचना के माध्यम से।	* विभिन्न प्रकार के रेखाखण्ड बनवाकर
* विभिन्न कोणों की पहचान करना। * विभिन्न नाप के कोणों को खींचने में दक्षता। * विभिन्न प्रकार के कोणों की पहचान करना। * विभिन्न कोण युग्मों में विभेद करने में दक्षता।	**३. कोण** * पुनरावृत्ति ३.१ किरण ३.२ कोण ३.३ अन्तः और बहिष्कोण ३.४ कोणों का माप (अंश में) ३.५ कोणों की तुलना ३.६ कोणों के प्रकार ३.७ कोण-युग्म (संलग्न, आसन्न, शीर्षाभिमुख, कोटिपूरक एवं सम्पूरक कोण) ३.८ विभिन्न नापों के कोणों की रचना (पटरी-परकार की सहायता से)	* किट में उपलब्ध सामग्री दिखाकर। * कोण बनवाकर एवं नपवाकर। * दैनिक जीवन में प्रयोग होने वाली वस्तुओं को दिखाकर। * रचना द्वारा।	* कोण खिंचवाकर एवं नपवाकर * कमरे के विभिन्न प्रकार के कोण पूछकर * किट की सामग्री का प्रयोग कर।
* समान्तर एवं तिर्यक रेखाओं की पहचान करना। * समान्तर रेखाओं और तिर्यक रेखाओं से बने विभिन्न कोणों में सम्बन्ध स्थापित कर सकना। * समान्तर रेखाओं को खींचने में दक्षता प्राप्त करना।	**४. समान्तर रेखाएँ** * पुनरावृत्ति ४.१ समान्तर रेखाएँ ४.२ तिर्यक रेखाएँ ४.३ दो सरल रेखाओं द्वारा एक तिर्यक रेखा के मध्य बने कोण, संगत कोण, एकान्तर कोण, अन्तःकोण (प्रायोगिक सत्यापन) ४.४ पटरी एवं गुनिया की सहायता से समान्तर रेखाएँ खींचना– (क) दिये हुए बिन्दु से (ख) दी हुई दूरी पर ४.५ समान्तर रेखाओं की विशेषताओं की सहायता से अज्ञात कोणों की नाप बताना तथा रेखाएँ खींचकर उनका सत्यापन करना।	* उदाहरण द्वारा स्पष्ट करें। * रेखाएँ खिंचवाकर। * दो समान्तर रेखाओं को तिर्यक रेखा के काटने से बने कोणों को नपवाकर उनमें सम्बन्धों का सामान्यीकरण कराना। * समान्तर रेखाओं के प्रगुणों पर आधारित प्रश्न।	* प्रश्नों द्वारा * समान्तर रेखाओं के बीच की दूरी नपवाकर * रचना-प्रक्रिया की जाँचकर * प्रश्न पूछकर

* विभिन्न प्रकार के त्रिभुजों की सर्वांगसमता का प्रायोगिक सत्यापन करने में दक्षता।	**५. त्रिभुज** * पुनरावृत्ति ५.१ सर्वांगसमता–△की रचना जबकि– * तीनों भुजाएँ ज्ञात हों * दो भुजाएँ व मध्यस्थ भुजा ज्ञात हो * दो कोण एवं मध्यस्थ भुजा ज्ञात हो। * समकोण त्रिभुज की रचना जबकि इसका कर्ण एक भुजा ज्ञात हो * त्रिभुज के अन्त:कोणों का योगफल	* शिक्षार्थियों से विभिन्न प्रकार के त्रिभुजों का निर्माण कराकर समान त्रिभुजों के अंगों में समानताओं की जाँच करवाना। * विभिन्न त्रिभुजों के कट आउट्स के द्वारा सर्वांगसम त्रिभुजों की रचना कराना। * विभिन्न त्रिभुजों को खिंचवाकर उनके अन्त:कोणों की रचना करना।	* विभिन्न प्रकार के त्रिभुजों की सर्वांगसमता * विभिन्न त्रिभुजों के कट आउट्स के द्वारा सर्वांगसम त्रिभुजों की जाँच
* वृत्त के विभिन्न अवयवों का ज्ञान।	**६. वृत्त** * पुनरावृत्ति 6.1 वृत्त की जीवा 6.2 वृत्त का चाप 6.3 वृत्ताकार एवं अर्द्धवृत्ताकार	* गणित किट की सहायता से वृत्त के प्रत्ययों का कराना। * आकृतियाँ बनवाकर जीवा, चाप, अर्द्धवृत्त आदि को नामांकित कराना।	* प्रश्न पूछकर * आकृतियाँ बनवाकर
* घन और घनाभ की फलकें, कोर और शीर्ष की पहचान करना।	7. मेन्सुरेशन * पुनरावृत्ति ७.१ घन, घनाभ की फलकें, कोर एवं शीर्ष ७.२ घन एवं घनाभ का आयतन (सूत्र की सहायता से) ७.३ आयतन का सूत्र तथा उसका प्रयोग।	* घनाकार एवं घनाभाकार वस्तुओं का प्रदर्शन करना। * घन एवं घनाभ के आयतनों के लिए सूत्र का निर्माण कराना।	* घन तथा घनाभ के फलक, कोर एवं शीर्ष की पहचान कराकर * प्रश्न पूछकर * दैनिक जीवन से जुड़े उदाहरण पूछकर

अपेक्षित व्यवहारपरक उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया (विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण)	मूल्यांकन प्रविधि
• परिमेय संख्या, दैनिक जीवन में इसकी उपयोगिता की जानकारी।	**१. परिमेय संख्याएँ** • पुनरावृत्ति 1.1 परिमेय संख्या की परिभाषा एवं आवश्यता 1.2 धनात्मक, ऋणात्मक परिमेय संख्याएँ 1.3 दो क्रमागत पूर्णांकों के मध्य परिमेय संख्या ज्ञात करना तथा इसका विलोम 1.4 समान परिमेय संख्याएँ 1.5 परिमेय संख्याओं का क्रमायोजन	• दैनिक जीवन से सम्बन्धित उदाहरण लेकर आवश्यकता स्पष्ट की जाय। • संख्या रेखा पर परिमेय संख्याओं का प्रदर्शन • उदाहरण द्वारा।	• प्रश्नों द्वारा • संख्या रेखा पर दो पूर्ण संख्याओं के बीच परिमेय संख्या प्रदर्शित कराकर
• परिमेय संख्याओं पर चारों मूल संक्रियाओं में दक्षता। • परिमेय संख्या को दशमलव संख्या में परिवर्तित कर सकना। • अनन्त आवर्तक दशमलव संख्या को परिमेय संख्या में परिवर्तित करने में कुशलता।	**२. परिमेय संख्याओं पर संक्रियाएँ** • पुनरावृत्ति 2.1 परिमेय संख्याओं पर योग, अन्तर एवं गुणा की संक्रियाएँ तथा गुणधर्म 2.2 एक तथा शून्य परिमेय संख्या के रूप में और इसके प्रगुण • परिमेय संख्या का प्रतिलोम 2.3 किसी परिमेय संख्या में किसी परिमेय संख्या से भाग (भाजक के प्रतिलोम के गुणात्मक रूप में) 2.4 परिमेय संख्या का निरपेक्ष मान 2.5 दो परिमेय संख्याओं के मध्य परिमेय संख्याओं का समावेशन 2.6 परिमेय संख्या का दशमलव संख्या के रूप में व्यक्त करना; (अ) अन्त होने वाली (टरमिनेटिंग), (ब) अनन्त आवर्तक 2.7 दशमलव संख्या को परिमेय संख्या के रूप में व्यक्त करना	• संख्या रेखा पर प्रदर्शन करके • उदाहरणों द्वारा। • P/Q, जहाँ P, Q पूर्णांक हैं और Q#0 है, स्पष्ट किया जाय। उदाहरणों द्वारा।	• प्रश्नों द्वारा • क्रियाओं की जाँच करके
• घातांक नियमों की जानकारी तथा उनका अनुप्रयोग कर सकना।	**३. घातांक** • पुनरावृत्ति ३.1 घातकों के नियम (धनात्मक आधार पर) 3.2 परिमेय संख्याओं को घात के रूप में व्यक्त करना 3.3 धनात्मक एवं, ऋणात्मक घातांक 3.4 बड़ी तथा छोटी संख्याओं को घातांकों में प्रकट करना	• उदाहरणों के माध्यम से।	• मौखिक तथा लिखित प्रश्नों द्वारा क्रिया की जाँच

• दैनिक जीवन में अनुलोम तथा प्रतिलोम समानुपात से जुड़ी समस्याओं को हल करने में दक्षता। • दैनिक जीवन में चक्रवृद्धि ब्याज से सम्बन्धित समस्याओं को आसानी से हल करना।	**४. वाणिज्य गणित** • पुनावृत्ति 4.1 अनुलोम एवं प्रतिलोम समानुपात 4.2 प्रतिशतता का अनुप्रयोग 4.3 चक्रवृद्धि ब्याज 4.4 ऐकिक नियम द्वारा चक्रवृद्धि मिश्रधन एवं चक्रवृद्धि ब्याज ज्ञात करना 4.5 चक्रवृद्धि मिश्रधन का सूत्र तथा उसका अनुप्रयोग	• दैनिक जीवन में अनुलोम, प्रतिलोम, समानुपात संबंधी समस्याओं की चर्चा करके। • उदाहरणों की सहायता से चक्रवृद्धि मिश्रधन के सूत्र की रचना करना। • सूत्र का उपयोग करके चक्रवृद्धि ब्याज की गणना करना।	• प्रश्नों द्वारा • दैनिक जीवन से सम्बन्धित प्रश्न पूछकर • प्रश्नों द्वारा
• अवर्गीकृत आकड़ों की सहायता से बारम्बारता– बंटन सारणी तैयार करना। • आयत चित्र बनाना तथा उसकी व्याख्या करना।	**५. सांख्यिकी** • पुनरावृत्ति 5.1 अवर्गीकृत आंकड़ों का बारम्बारता बंटन 5.2 प्रदत्त आंकड़े को आयत चित्र द्वारा प्रदर्शित करना तथा उससे निष्कर्ष निकालना।	• आकड़ों को आरोही/अवरोही क्रम में व्यवस्थित करके बारम्बारता बंटन कराना। • आयत चित्र बनवाकर निष्कर्ष निकलवाना।	• प्रक्रिया की जाँच द्वारा • आयत चित्र बनवाकर • बने आयत चित्र से निष्कर्ष निकलवाकर
	(ख) बीजगणित		
• व्यंजकों पर गुणनफल ज्ञात करने में दक्षता। • सर्व समिकाओं का ज्ञान एवं उसका उपयोग करना।	**१. व्यंजकों का गुणनफल** 2.1 सर्वसमिकाएँ - $(a+b)^2 = a^2+2ab+b^2$ $(a-b)^2=a^2-2ab+b^2$ $(a+b)(a-b) = a^2-b^2$ 2.2 सर्वसमिकाओं का अनुप्रयोग	• उदाहरण के माध्यम से। • एक ही दो पदीय व्यंजकों का परस्पर गुणा करके सर्वसमिकाएँ प्राप्त की जाएँ। पुन: इनका आंकिक मान रखकर सत्यापन कराया जाए। • उदाहरणों द्वारा सर्व समिकाओं की स्थापना तथा उनका अनुप्रयोग कराना।	• प्रश्न पूछकर • क्रिया की जाँचकर • स्वजाँच द्वारा
• व्यंजकों को अभाज्य व्यंजकों में विभक्त करने में कुशलता प्राप्त करना।	**३. गुणनखण्ड** 3.1 $(ax+ay)$ और $(a^2+ay^2+bx^2+by^2)$ और के प्रकार के व्यंजकों का गुणनखण्ड 3.2 दो वर्गों के अन्तर के रुप के व्यंजकों के गुणखण्ड	• गुणनफल और गुणनखण्ड में सम्बन्ध स्पष्ट करना। • उदाहरण द्वारा।	• प्रश्न पूछकर • क्रिया की जाँचकर
• वार्तिक प्रश्नों को हल करने में रेखीय समीकरणों का उपयोग करने में दक्षता	**४. रेखीय समीकरण** 4.1 वार्तिक प्रश्नों को रेखीय समीकरण की सहायता से हल करना	• उदाहरण द्वारा।	• प्रश्न पूछकर • क्रिया की जाँचकर
	(ग) रेखागणित		
• पाइथागोरस प्रमेय का ज्ञान तथा उसका अनुप्रयोग कर सकना। • त्रिभुज के विभिन्न संबोधों की क्रियाओं में दक्षता प्राप्त करना।	1. त्रिभुज - • पुनरावृत्ति 1.1 पाइथागोरस प्रमेय का सत्यापन	• त्रिभुज बनवाकर पाइथागोरस प्रमेय का सत्यापन। • दैनिक जीवन से सम्बन्धित समकोण त्रिभुज पर प्रश्न पूछकर।	• पाइथागोरस प्रमेय से सम्बन्धित दैनिक जीवन पर आधारित प्रश्न पूछकर

	1.2 निम्नलिखित का प्रायोगिक सत्यापन - • त्रिभुज के शीर्षों से सम्मुख भुजाओं पर डाले गये लम्ब संगामी होते हैं। • त्रिभुज में माध्यिकाएँ संगामी होती हैं। • त्रिभुज में भुजाओं के तीनों लम्बार्द्धक संगामी होते हैं। • Δ के तीनों अन्त: कोणों की अर्द्धक रेखाएँ संगामी होती है। • Δ के परिकेन्द्र, लम्बकेन्द्र, गुरुत्व केन्द्र और अन्त: केन्द्र	• रचना कराकर प्रायोगिक सत्यापन।	• निर्माण कराकर प्रायोगिक सत्यापन करना। • क्रियाविधि की जाँचकर
• चतुर्भुज के संबोधों का पुन: स्मरण। • चतुर्भुज के प्रगुणों का बोध।	**२. चतुर्भुज** • पुनरावृत्ति 2.1 चतुर्भुज के शीर्ष, भुजाएँ, विकर्ण, संलग्न भुजाएँ, सम्मुख भुजाएँ तथा इसका अन्त: एवं वाह्य कोण 2.2 चजुर्भुज के विशिष्ट प्रकार - वर्ग, आयत, सम चतुर्भुज, समान्तर चतुर्भुज और समलम्ब 2.3 निम्नांकित प्रगुणों का प्रायोगिक सत्यापन - • चतुर्भुज के सभी अन्त: कोणों का योगफल 360° होता है। • समान्तर चतुर्भुज की सम्मुख भुजाएँ समान होती है। • समान्तर चतुर्भुज के सम्मुख कोण बराबर होते हैं। • समान्तर चतुर्भुज के विकर्ण एक दूसरे का समद्विभाग करते हैं। • आयत के विकर्ण समान होते हैं। • समचतुर्भुज के विकर्ण परस्पर समकोण पर समद्विभाजित करते है। • वर्ग के विकर्ण समान होते हैं तथा परस्पर समकोण पर समद्विभाजित करते हैं।	• बच्चों से चतुर्भुजों का निर्माण करवाकर उससे सम्बन्धित कोणों का योग, आपस में भुजाओं एवं विकर्ण की लम्बाई आदि का प्रायोगिक सत्यापन कराकर। • सम्बन्धित आकृतियाँ बनवाकर प्रगुणों का सत्यापन कराएँ।	• आकृतियों की रचना कराकर • विधि की जाँच करके • दैनिक जीवन से सम्बन्धित प्रश्न पूछकर • दैनिक जीवन से सम्बन्धित प्रश्न पूछकर
• वृत्त का सम्बोध। • वृत्त के प्रगुणों का सम्बोध।	3. वृत्त • पुनरावृत्ति 3.1 वृत्तखण्ड एवं त्रिज्य खण्ड 3.2 अर्द्धवृत्त का कोण 3.3 चाप के सम्मुख केन्द्र पर बना कोण 3.4 एक ही वृत्त खण्ड के कोण बराबर होते हैं। (प्रायोगिक सत्यापन)	• वृत्त खण्ड एवं त्रिज्य खण्ड को चित्र एवं दफ्ती के कट आऊट्स द्वारा स्पष्ट करना। • वृत्त के केन्द्र पर बना कोण तथा वृत्त खण्ड का कोण बनवाकर उन्हें नपवाकर प्रायोगिक सत्यापन करवाना। • किट का प्रयोग कराकर।	• आकृतियाँ बनवाकर • क्रियाविधि की जाँच करके • प्रायोगिक सत्यापन कराकर

• पटरी-परकार के उपयोग में कुशलता।	४. **रचनायें** (पटरी एवं परकार की सहायता से) • दिए रेखाखण्ड को समद्धिभाजित करना • दिए कोण के बराबर कोण की रचना करना • दिए हुए कोण को समद्धिभाजित करना • दी हुई सरल रेखा के समान्तर रेखा खींचना • दिए गये रेखाखण्ड पर दिये गये बिन्दु से लम्ब खींचला जबकि - (अ) बिन्दु सरल रेखाखण्ड पर स्थित हो (ब) बिन्दु सरल रेखाखण्ड के बाहर हो	• रचनाएँ श्यामपट्ट/कापी पर रचना तथा नापकर सत्यापन कराना। • किट का प्रयोग कराकर।	• रचनाये कराकर
• विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों के क्षेत्रफल की गणना करने में दक्षता। • विभिल्ल ज्यामितीय आकृतियों का क्षेत्रफल अपने दैनिक जीवन में प्रयोग करने की कुशलता प्राप्त करना।	५. **मैन्सुरेशन** • पुनरावृत्ति 5.1 आयताकार मार्ग का क्षेत्रफल 5.2 त्रिभुज का क्षेत्रफल 5.3 समान्तर चतुर्भुज का क्षेत्रफल 5.4 घन एवं घनाभ का सम्पूर्णपृष्ठ एवं आयतन	• दो आयतों के क्षेत्रफलों के अन्तर के रूप में निकलवाकर। • आकृतियाँ खिंचवाकर सूत्रों की स्थापना करना। • सूत्रों की स्थापना करना। • फलकों के क्षेत्रफलों के योगफल से सम्पूर्ण पृष्ठ का क्षेत्रफल के सूत्र की रचना कराना। • सूत्र की सहायता से सम्पूर्ण पृष्ठ एवं आयतन ज्ञात करना।	• क्षेत्रफल, आयतन, सम्पूर्ण पृष्ठ के गणना की जाँच करके।
• त्रिभुजों की समरूपता का बोध, विभिन्न त्रिभुजों की समरुपता का बोध, विभिन्न त्रिभुजों की समरुपता की जाँच कर सकना। • दैनिक जीवन में ऊँचाई-दूरी सम्बन्धी ज्ञान का अनुप्रयोग करने में दक्षता।	6. त्रिभुजों की समरुपता 6.1 समरूप त्रिभुजों के गुणधर्म 6.2 त्रिभुजों की समरूपता का, ऊँचाई और दूरी सम्बन्धी प्रश्नों में अनुप्रयोग	• सिक्कों, वर्गों, वृत्त की समरूपता के बारे में प्रश्न पूछकर एवं वस्तुएँ दिखाकर। • त्रिभुजों में समरूप त्रिभुज अलग करवाना और उनके कोणों को नपवाना। • भुजाओं में सम्बन्ध निकलवाना। • दैनिक जीवन में मीनार, बिल्डिंग की ऊँचाई निकलवाना।	• समरूपता की जाँच कराकर। • Δ के अतिरिक्त अन्य आकृतियों की समरूपता के बारे में प्रश्न पूछकर। • दैनिक जीवन से सम्बन्धित प्रश्न पूछकर

(क) अंकगणित कक्षा – ८

अपेक्षित व्यवहारपरक उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया (विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण)	मूल्यांकन प्रविधि
• वर्ग और वर्गमूल का सम्बोध। • वर्ग एवं वर्गमूल की गणना करने में कुशलता।	**१. वर्ग और वर्गमूल** • पुनरावृत्ति 1.1 संख्याओं का वर्ग एवं वर्गमूल 1.2 पूर्ण वर्ग संख्या का वर्गमूल (क) गुणनखण्ड विधि से, (ख) भाग विधि से। 1.3 वर्ग संख्या और उसके वर्गमूल में अंकों की संख्याओं में सम्बन्ध। 1.4 दशमलव संख्या का वर्गमूल - भाग विधि द्वारा	• वर्ग के क्षेत्रफल एवं उसकी भुजा में सम्बन्ध स्थापित कराकर वर्ग और वर्गमूल की संकल्पना स्पष्ट करना। • पूर्ण संख्याओं के वर्ग और वर्गमूल की सारणी तैयार कराना। • पूर्णवर्ग संख्याओं और उनके वर्गमूल में गुणनखण्डों में सम्बन्ध दर्शाना। • उदाहरणों की सहायता से पूर्ण वर्ग धनात्मक पूर्ण संख्या तथा पूर्ण वर्ग धनात्मक दशमलव संख्याओं का वर्गमूल भाग विधि से ज्ञात करना सिखाना। • गणित किट का प्रयोग। • पूर्ण वर्ग संख्याओं और उनके वर्गमूल में अंकों की संख्या की तुलना कराना और निष्कर्ष निकलवाना। • अपूर्ण वर्ग संख्याओं का वर्गमूल दशमलव के दो अंकों तक निकटतम निकालना सिखाना।	• प्रश्न पूछकर (मौखिक) • वर्गमूल से सम्बन्धित दैनिक जीवन पर आधारित प्रश्नों द्वारा। • गणना की जाँच कर। • समूह जाँच करवाकर।
• घनमूल का संबोध। • पूर्ण घन संख्याओं का घनमूल ज्ञात करने में दक्षता।	**२. घातांक और करणियाँ** 2.1 घन एवं घनमूल की संकल्पना 2.2 पूर्ण घन संख्याओं का घनमूल गुणनखण्ड विधि द्वारा। 2.3 दशमलव संख्या, जो पूर्णघन संख्या हो, का घनमूल (गुणनखण्ड विधि द्वारा) 2.4 परिमेय संख्या का घन मूल जिसका अंश और हर पूर्णघन हो। 2.5 घनमूल का व्यावहारिक प्रश्नों में अनुप्रयोग	• घन के आयतन और उसकी भुजा में सम्बन्ध स्थापित कराते हुए घन एवं घनमूल की संकल्पना स्पष्ट करें। • गणित किट की सहायता से घन एवं घनमूल को स्पष्ट करें। • उदाहरणों की सहायता से पूर्णघन संख्याओं के घनमूल निकलवाना, गुणनखण्ड विधि से।	• प्रश्नों द्वारा • गणना की जाँचकर • गणित किट का प्रयोग कराकर
• दैनिक जीवन में मूल्यवृद्धि एवं घाटे से सम्बन्धित समस्याओं को सुगमतापूर्वक हल कर सकना। • चक्रवृद्धि ब्याज की शुद्धता पूर्वक गणना करना।	**३. वाणिज्य गणित** • पुनरावृत्ति 3.1 वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि एवं घाटे की दर 3.2 चक्रवृद्धि ब्याज की गणना (अ) अर्द्धवार्षिक (ब) तिमाही (जबकि पूरा समय 3 इकाई से अधिक न हो।)	• उदाहरणों की सहायता से, जो शिक्षार्थियों के व्यावहारिक जीवन से सम्बन्धित हों। • उदाहरणों की सहायता से मिश्रधन के लिए सूत्रों को स्थापित करना। • सूत्रों की सहायता से चक्रवृद्धि ब्याज की गणना करने का अभ्यास कराना।	• प्रश्नों की सहायता से

• विभिन्न प्रकार के बैंक खातों तथा बैंक की ब्याज दरों की जानकारी। • शेयर और लाभांश की गणना में दक्षता।	४. **बैंकिग** 4.1 बैंक खाते 4.2 शेयर और लाभांश	• खातों से सम्बन्धित चार्ट या पोस्टरों को दिखाकर बैंक खातों का ज्ञान कराना। • बैंक की विभिन्न ब्याज दरों से भी अवगत कराएँ। • समाचार पत्रों की सहायता से शेयर और लाभांश दरों का ज्ञान कराना।	• प्रश्नों द्वारा • प्रतियोगिता द्वारा
• आंकड़ों को व्यवस्थित रुप में लिखकर माध्य, माध्यिका और बहुलक की गणना में दक्षता। • बारम्बारता बहुभुज तथा तोरण बनाने में उनसे निष्कर्ष निकालने में दक्षता।	५. **सांख्यिकी** • पुनरावृत्ति 5.1 अवर्गीकृत आकड़ों से माध्य, माध्यिका और बहुलक की गणना 5.2 बारम्बारता बहुभुज बनाना और तोरण खींचना। 5.2 बारम्बारता बहुभुज और तोरण से निष्कर्ष निकालना।	• कक्षा के सभी बच्चों के किसी विषय के प्राप्तांकों या उनकी ऊँचाइयों आदि की सहायता से आकड़े एकत्रित करवाकर माध्य, माध्यिका एवं बहुलक सूत्र से निकलवाएँ। • बारम्बारता बहुभुज एवं तोरण का निरुपण करवाकर निष्कर्ष निकलवाएँ।	• सारणी बनवाकर, माध्य, माध्यिका एवं बहुलक की गणना की जाँच करके। • प्रश्न द्वारा
• समुच्चय का सम्बोध। • समुच्चय के विभिन्न प्रकारों तथा उन पर संक्रियाओं की जानकारी।	६. **समुच्चय सिद्धान्त** 6.1 समुच्चय की संकल्पना 6.2 समुच्चय को प्रदर्शित करने की विधियाँ 6.3 समुच्चय के प्रकार 6.4 समुच्चयों के डायग्राम द्वारा समुच्चय निरुपण 6.5 समुच्चयों पर संक्रियाएँ	• शिक्षार्थियों के दैनिक जीवन में आने वाले शब्दों, टी-सेट, सोफा-सेट, फर्नीचर सेट आदि की सहायता से समुच्चय की संकल्पना स्पष्ट करना। • उदाहरणों की सहायता से उन्य उपप्रकरणों को स्पष्ट करना। • चार्ट बनवाना।	• प्रश्न द्वारा • प्रतियोगिता करवाकर।
• लघुगणक के संबोध की जानकारी प्राप्त करना। • घातांक और लघुगणक में सम्बन्ध में स्थापित करना।	७. **लघुगुणक** • पुनरावृत्ति 7.1 लघुगणक की संकल्पना 7.2 घातांक एवं लघुगणक का सम्बन्ध	• उदाहरणों की सहायता से घातांक और लघुगणक के पारस्परिक सम्बन्ध को स्पष्ट करें।	• प्रश्न द्वारा • गणना की जाँच करकें।
	(ख) बीजगणित		
• सर्वसमिकाओं का संबोध तथा उनका अनुप्रयोग करना।	1. सर्वसमिकाएँ $(a+b)^3 = a^3+b^3+3ab\ (a+b)$ $(a-b)^3=a^3-b^3-3ab+(a-b)$ $(a+b+c)^2$ $= a^2+b^2+c^2+2ab+2bc+2ca$	• उदाहरणों की सहायता से • एक ही प्रकार के दो पदीय तीन व्यंजकों का परस्पर गुणा कराकर सर्वसमिकाएँ प्रदर्शित की जाये तथा मान प्रतिस्थापित कराकर सत्यापन कराना।	• प्रश्न पूछकर • सर्वसमिकाओं पर आधारित प्रश्नों की प्रक्रिया की जांचकर
• व्यंजकों के भाग में कुशलता। • उत्तर की जाँच करने की क्षमता। • त्रिपद व्यंजकों के गुणनखण्ड ज्ञात कर सकना।	2. गुणनखण्ड 2.1 सर्वसमिकाओं का गुणनखण्ड में अनुप्रयोग 2.2 बीजगणितीय व्यंजकों में एक	• उदाहरणों की सहायता से गुणनखण्डों में सर्वसमिकाओं का उपयोग करना। • व्यंजकों के भाग की विधि का ज्ञान कराना तथा भाज्य, भाजक, भजनफल	• प्रश्न पूछकर • गणना की जांचकर • स्व जाँच द्वारा

	पद, द्विपद व्यंजकों से भाग (बीजीय पद 5 घाताकों तक सीमित हों) 2.3 बहुपदीय व्यंजकों के गुणनखण्ड की संकल्पना (तीन पद से अधिक नहीं) 2.4 भाज्य = भाजक x भागफल + शेषफल का सत्यापन	और शेष में संबंध स्थापित कराकर उत्तर की जाँच की विधि निकलवाना।	
• रेखीय समीकरणों द्वारा वार्तिक प्रश्न हल करने में कुशलता	**३. रेखीय समीकरण (सरल समीकरण)** 3.1 $\frac{ax+b}{cx+d}=K$ के प्रकार के समीकरणों का हल 3.2 सरल समीकरणों पर वार्तिक प्रश्न	• उदाहरण के माध्यम से।	• प्रश्न पूछकर • गणना. की जाँचकर • स्व जाँच द्वारा
• युगपत् समीकरण हल करने में कुशलता। • वार्तिक प्रश्नों को हल करने में युगपत समीकरणें का अनुप्रयोग करना।	**४. रेखीय समीकरण (दो अज्ञात राशि वाले) : युगपत समीकरण** 4.1 दो अज्ञात राशियों वाले युगपत समीकरण एवं उनका अनुप्रयोग 4.2 दो अज्ञात राशियों वाले वार्तिक प्रश्नों का युगपत समीकरणें द्वारा हल	• उदाहरण के माध्यम से। • दैनिक जीवन पर आधारित प्रश्न पूछ कर।	• प्रक्रिया की जाँच • स्व जाँच • समूह जाँच (बच्चों की सहभागिता से) • दैनिक जीवन से जुड़े प्रश्नों द्वारा
• वर्ग समीकरण का सम्बोध • वर्ग समीकरण हल करने में दक्षता। • सामान्य वर्ग समीकरण को गुणनखण्ड विधि से हल करने में कुशलता।	**५. वर्ग समीकरण** 5.1 समीकरण के $x^2 = k$ रुप वाले समीकरणों का हल 5.2 समीकरण $x^2 = k$ पर आधारित साधारण वार्तिक प्रश्न 5.3 समीकरण $a x^2 + bx + c = 0$ का हल (गुणनखण्ड विधि से)	• उदाहरण देकर।	• प्रक्रिया की जाँचकर • समूह जाँच द्वारा
	(ग) रेखागणित		
• समान्तर रेखाओं की विशेषताओं का ज्ञान। • दिये गये रेखाखण्ड को दिये गये अनुपात एवं बराबर खण्डों में विभाजित करने में कुशलता।	**१. समान्तर सरल रेखाएँ** • पुनरावृत्ति 1.1 समान्तर सरल रेखाओं के निम्नांकित प्रगुणों का प्रयोगात्मक सत्यापन - • एक ही सरल रेखा के समान्तर दो सरल रेखाएँ परस्पर समान्तर होती है, • एक ही सरल रेखा पर लम्ब दो सरल रेखाएँ परस्पर समान्तर होती है।	• विभिन्न दूरियों पर समान्तर रेखाएँ बनवाकर तिर्यक रेखा के माध्यम से प्रायोगिक सत्यापन करवाना। • पटरी-परकार की सहायता से दिये गये रेखाखण्ड को दिये गये भागों विभक्त कराना। • रचना द्वारा। • पटरी और परकार की सहायतस से ही किसी रेखाखण्ड में दिये गये अनुपातों में विभक्त करना सिखाना। नापकर जाँच कराना।	• सत्यापन कराकर • रचना द्वारा • रेखाखण्ड विभक्त करवाकर एवं नपवाकर • रेखाखण्ड के विभाजन की प्रक्रिया की जाँच करके • रचना कराकर

	1.2 रचनाएँ : • दिये गये रेखाखण्ड को बराबर खण्डों में विभक्त करना • दी गयी रेखाखण्ड को दिये गये अनुपात में विभक्त करना।		
• दी गयी शर्तों के अनुसार विभिन्न चतुर्भुजों की रचना करने में दक्षता।	2. चतुर्भुज की रचनाएँ • पुनरावृत्ति 2.1 चतुर्भुज की रचना करना जबकि ज्ञात हो - • चार भुजाएँ और एक विकर्ण, • तीन भुजाएँ तथा दोनों विकर्ण, • दो संलग्न भुजाएँ और उनके बीच का कोण तथा अन्य दो कोण, • तीन भुजाएँ और दो मध्यस्थ कोण।	• विभिन्न चतुर्भुजों की रचना कराकर।	• चतुर्भुज बनवाकर • प्रक्रिया की जाँच कराकर • रचना कराकर
• चक्रीय चतुर्भुज की विशेषताओं का ज्ञान। • वृत्त से सम्बन्धित विभिन्न तथ्यों का ज्ञान। • गणितीय अध्ययन में वृत्त के संबोधों का उपयोग करने में दक्षता।	3. वृत्त और चक्रीय चतुर्भुज • पुनरावृत्ति 3.1 चक्रीय चतुर्भुज, चक्रीय बिन्दु, चक्रीय चतुर्भुज के सम्मुख कोण तथा निम्नलिखित प्रगुणों का प्रायोगिक सत्यापन - • केन्द्र से जीवा पर लम्ब उसे समद्विभाजित करता है तथा इसका विलोम। • वृत्त की समान जीवाएँ केन्द्र पर समान कोण अन्तरित करती हैं तथा इसका विलोम। • अर्द्धवृत्त का कोण समकोण होता है। • चक्रीय चतुर्भुज के सम्मुख कोणों का योगफल 180° होता है।	• रचना कराकर। • पटरी-परकार की सहायता से बनवाकर सत्यापन कराएँ। • रचना कराकर तथ्यों की खोज करना। • उक्त तथ्यों पर आधारित प्रश्नों को हल करना।	• रचना द्वारा • प्रश्नों द्वारा
• वृत्त एवं स्पर्श रेखा की रचना करने में कुशलता।	4. वृत्त की स्पर्श रेखाएँ • पुनरावृत्ति 4.1 छेदिका, स्पर्श रेखा और स्पर्श बिन्दु। 4.2 किसी वृत्त पर दिये हुये बिन्दु से स्पर्श की रचना, जबकि बिन्दु वृत्त पर स्थित हो।	• वृत्त एवं छेदन रेखा को श्यामपट्ट पर बनवाना। • रचना कराना। • रचना द्वारा तथ्यों की खोज कराना।	• रचना करवाकर • प्रायोगिक सत्यापन करवाकर।

	4.3 निम्नालिखित प्रगुण का प्रयोगात्मक सत्यापन। • स्पर्श रेखा पर स्पर्श बिन्दु से खीची गयी त्रिज्या परस्पर लम्ब होती हैं।		
• त्रिकोणमितीय अनुपातों का ज्ञान।	५. **त्रिकोणमिति -** • समकोण त्रिभुज में किसी दिये हुए कोण के त्रिकोणमितीय अनुपात • 0° से 90° तक के विशिष्ट कोणों - 0°, 30°, 45°, 60°, 90° के कोणों के त्रिकोणमितीय अनुपात	• कोई कोण खींचकर एक भुजा के किसी बिन्दु से दूसरी भुजा पर लम्ब खींचने पर निर्मित समकोण त्रिभुज में लम्ब और कर्ण, आधार और कर्ण तथा लम्ब और आधार में अनुपात की गणना करना, ज्या, कोज्या, स्पर्शज्या नाम देना, फलनों का गंबोध कराना। • विभिन्न नापों के कोण खिंचवाकर त्रिकोणमितीय अनुपातों की गणना करना।	• प्रश्न पूछकर • जाँचकर
• त्रिभुज और चतुर्भुज का क्षेत्रफल निकालते में दक्षता। • वृत्त की परिधि व्यास एवं क्षेत्रफल का ज्ञान। • लम्बवृत्तीय आकृतियों का आयतन और सम्पूर्ण पृष्ठ ज्ञात करने में दक्षता। • वृत्त के क्षेत्रफल, बेलन के आयतन एवं सम्पूर्ण पृष्ठ पर आधारित व्यावहारिक प्रश्नों को हल करने में दक्षता।	६. **मैन्सुरेशन** • पुनरावृत्ति 6.1 त्रिभुज की तीनों भुजाएँ ज्ञात होने पर का क्षेत्रफल सूत्र द्वारा $\sqrt{s(s-a)(s-b)(s-c)}$ 6.2 चतुर्भुज का क्षेत्रफल जबकि उसकी भुजाएँ और विकर्ण अथवा विकर्ण पर सम्मुख शीर्ष से डाले गये लम्ब दिये हो। 6.3 वृत्त की परिधि एवं व्यास में सम्बन्ध तथा वृत्त का क्षेत्रफल 6.4 क्षेत्रफल सम्बन्धी सरल प्रश्न 6.5 लम्बवृत्तीय बेलन एवं लम्बवृत्तीय शंकु का आयतन एवं सम्पूर्ण पृष्ठ।	• त्रिभुज का क्षेत्रफल सूत्र) $\sqrt{s(s-a)(s-b)(s-c)}$ की सहायता से निकलवाना जहाँ s परिमिति का आधा है तथा त्रिभुज की भुजाएँ a, b तथा c ज्ञात हों। • चतुर्भुज का क्षेत्रफल दो त्रिभुजों में बांटकर ज्ञात करना। • वृत्त के व्यास और परिधि में सम्बन्ध, रचना करके, नाप द्वारा। • वृत्त को पट्टियों में विभक्त कर आयत के रुप में प्रदर्शित कर क्षेत्रफल ज्ञात कराना, सूत्र की स्थापना कराना। • सहायक सामग्री का प्रयोग कर। • लम्ब वृत्तीय बेलन, शंकु का आयतन तथा सम्पूर्ण पृष्ठ के लिए सूत्र निकलवाना। • सूत्र द्वारा गणना।	• प्रश्न पूछकर • क्रियाविधि की जाँचकर • सामूहिक मूल्यांकन हेतु प्रतियोगिता कराकर

उच्च प्राथमिक स्तरीय विज्ञान पाठ्यक्रम

पूर्व ज्ञान की स्थिति

प्राथमिक स्तर पर निम्नलिखित प्रकरणों से सम्बन्धित सम्बोधों/उपसम्बोधों की सम्प्राप्ति को आधार मानकर उच्च प्राथमिक स्तर पर नवीन विज्ञान पाठ्यक्रम का विकास किया गया है।

कक्षा ३	कक्षा ४	कक्षा ५
1. हमारे पास की वस्तुएँ	1. पौधे के भाग तथा उनके कार्य	1. जन्तुओं और पौधों के लक्षण
2. सजीव वस्तुओं के प्रमुख गुण	2. बीजों का प्रकीर्णन	2. जन्तुओं और पौधों में अनुकूलन
3. हमारे चारों ओर के पेड़-पौधे	3. पौधों एवं जन्तुओं की उपयोगिता	3. बीज और उसका अंकुरण
4. जन्तु शरीर के भाग	4. पौधों तथा जन्तुओं की सुरक्षा एवं संरक्षण	4. मानव कंकाल और गतियाँ
5. हमारा शरीर	5. हमारा शरीर पोषण तथा स्वास्थ्य	5. मनुष्य और उसका भोजन
6. हमारा भोजन	6. भोजन के पोषक तत्व	6. कुपोषण और उसके प्रभाव
7. हमारे दाँत	7. पर्यावरणीय स्वच्छजा एवं बीमारियाँ	7. भोजन करने की आदतें और खाद्य पदार्थों का संरक्षण
8. पास-पड़ोस की सफाई	8. पदार्थ के गुणों की पहचान	8. संक्रामक रोग
9. ठोस, द्रव और गैस	9. मौसम पर वायु और जल का प्रभाव	9. परिवेशीय स्वच्छता
10. पानी-एक अनोखा द्रव	10. मिट्टी की बनाबट	10. मृदा संरक्षण
11. मौसम	11. बल और कार्य में सम्बन्ध	11. वायु
12. ऋतुएँ	12. सौर परिवार	12. वायु-प्रदूषण
13. आकाश		13. बल, कार्य और ऊर्जा
14.		14. सरल मशीनें
15.		15. छाया और ग्रहण

उच्च प्राथमिक स्तरीय पाठ्यक्रम विज्ञान

सामान्य उद्देश्य

1. वैज्ञानिक अभिरुचि का विकाय तथा अन्धविश्वास रुढ़िवादिता से मुक्त कराना।
2. वैज्ञानिक दृष्टिकोण को आत्मसात् करना।
3. दैनिक जीवन की परिस्थितियों से सम्बद्ध समस्याओं को वैज्ञानिक विधियों से हल करने एवं निर्णय लेने की क्षमता का विकास करना।
4. विज्ञान के अनुप्रयोग द्वारा भौतिक घटनाओं की व्याख्या करना।
5. प्रेक्षित तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष निकालना।
6. करके सीखने का कौशल प्रदान करना।
7. धारणा और तथ्य के अन्तर का बोध कराना।
8. समानताओं एवं अन्तर के आधार पर वर्गीकृत करना
9. पर्यावरणीय चेतना का विकास करना।
10. वैज्ञानिक उपकरणों के प्रति रुचि और रखरखाव एवं चित्रांकन कौशल का विकास करना।
11. ईमादारी, लगन, आत्मनिर्भरता, आत्मविकास, स्वतंत्र अभिव्यक्ति आदि अभिवृत्तियों का विकास करना।
12. मानवीय मूल्यों को आत्मसात करने के लिए अभिप्रेरित करना।
13. 21वीं शताब्दी की वैज्ञानिक चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होना।

विशिष्ट उद्देश्य

कक्षा ६ - विज्ञान

1. दैनिक जीवन में विज्ञान की उपयोगिता, इसके दुरुपयोग से उत्पन्न समस्याओं, वैज्ञानिकों के योगदान का ज्ञान प्राप्त करना।
2. सजीव एवं निर्जीव वस्तुओं का लक्षणों के आधार पर वर्गीकरण करना।
3. पदार्थ, मिश्रण तथा मिश्रण के अवयवों एवं इनके पृथक्करण की विधियों का बोध कराना।
4. दैनिक जीवन में मापन की आवश्यकता, उसकी युक्तियों एवं मात्रकों का ज्ञान प्राप्त करना।
5. हमारे चारों ओर होने वाले परिवर्तनों के प्रकार तथा उनमें परस्पर होने वाली प्रतिक्रियाओं का अधयनन करना।
6. गति, चाल, बल एवं बल के प्रकार तथा सरल मशीनों, इनका व्यवहारिक जीवन में महत्व का बोध कराना।
7. पर्यावरण में पाये जाने वाले विभिन्न सजीवों के लक्षण एवं वर्गीकरण का ज्ञान प्राप्त करना।
8. जीवों का संगठन, अंगों के कार्य एवं उनके रुपान्तरण का बोध कराना।
9. वायु की आवश्यकता, उपयोगिता एवं संगठन का ज्ञान विकसित करना।
10. जल की आवश्यकता, स्रोत, गुण, जलचक्र, प्रकार एवं प्राकृतिक सम्पदा के रुप में संरक्षण किये जाने का बोध कराना।
11. ऊर्जा, ऊर्जा के विभिन्न रुप, स्रोतों की जानकारी करना।
12. पर्यावरणीय घटकों का ज्ञान, पारस्परिक निर्भरता तथा प्राकृतिक संतुलन को स्पष्ट करना।
13. ग्रह-नक्षत्र, आकाशीय पिण्ड, उल्का पिण्ड का परिचय सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करना।

विशिष्ट उद्देश्य

विज्ञान कक्षा ७

1. दैनिक जीवन में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के विकास के साथ-साथ जीवन में होने वाने परिवर्तनों तथा प्रौद्योगिकी विकास द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में हुई क्रान्तिकारी प्रगति का सामान्य ज्ञान प्राप्त करना।
2. पदार्थ की संरचना, अवस्थाएँ, तत्व मिश्रण, यौगिक एवं यौगिकों के अवयवों और उनके रासायनिक सूत्रों को बोध कराना।
3. धातुओं और अधातुओं का आक्सीजन के साथ क्रिया से आक्साइड बनना तथा अम्ल, क्षार और लवणों के गुणों एवं उनके उपयोगों का ज्ञान प्राप्त करना।
4. ताप, तापमापन, द्रवणांक, हिमांक, क्वथनांक, उष्मा के सुचालक/कुचालक, उष्मा का आदान-प्रदान तथा उष्मा के संचरण की विधियों की जानकारी करना।
5. प्रकाश के स्रोत, समतल एवं गोलीय परावर्तक तलों द्वारा परावर्तन, के नियमों का ज्ञान।
6. ध्वनि, ध्वनि के प्रकार, ध्वनि की चाल, ध्वनि संचरण परावर्तन एवं ध्वनि के प्रभावों की जानकारी करना।
7. विद्युत आवेश की उत्पत्ति, प्रकृति, आकर्षण/प्रतिकर्षण की स्थिति में विद्युत सुचालक/कुचालक तथा विद्युत आवेश के स्थानान्तरण से परिचित होना।
8. ऊर्जा, ऊर्जा के स्रोत एवं प्रकार उर्जा के पारस्परिक रुपान्तरण तथा ऊर्जा के न्यायसंगत उपयोगों का ज्ञान प्राप्त करना।
9. जीवों की संगठनात्मक इकाई, कोशिका, ऊतक, अंग, अंगतन्त्रों का बोध कराना।
10. जल के अवयवी तत्व, गुण, कठोरता, शुद्धिकरण एवं जल प्रदूषण के कारण एवं निवारण की जानकारी करना।
11. वायु का संगठन, आक्सीजन बनाना, आक्सीजन की उपयोगिता, वायु प्रदूषण इसके जन जीवन पर प्रभावों का ज्ञान प्राप्त करना।
12. लाभदायक पौधो एवं जन्तुओं की जानकारी तथा उनके आर्थिक महत्व का बोध कराना।

विशिष्ट उद्देश्य

विज्ञान कक्षा ८

1. कार्बन और उसके यौगिक, प्रमुख अवयव, कार्बन के अपररुप ईंधन पेट्रोलियम, दहन से प्राप्त ऊर्जा एवं अग्निशमन का ज्ञान प्राप्त करना।
2. ऊर्जा की आवश्यकता, प्रकार स्रोत एवं उपयोगिता प्राप्त करना।
3. खनिजों की उपस्थिति, प्रकार स्रोत एवं उपयोगिता का बोध होना।
4. प्राकृतिक एवं मानव निर्मित वस्तुओं की पहचान और उनके प्रकार, गुण एवं उपयोगिता आदि का बोध होना।
5. दाब की अवधारणा, दाब परिवर्तन, क्षेत्रफल का दाब से सम्बन्ध, द्रव दाब की दिशा एवं मापन, उत्प्लावन बल, आर्किमिडीज का सिद्धान्त, प्लवन, प्लवन के सिद्धान्त के उपयोग का ज्ञान प्राप्त करना।
6. अपवर्तन, लैंसों द्वारा प्रतिबिम्बों का बनना, प्रकाश यंत्र, प्रिज्म तथा सम्बन्धित किरण आरेख बनाने के कौशल का विकास करना।
7. चुम्बक के गुण, उपयोग, चुम्बकत्व, विद्युत धारा से सम्बन्ध तथा चुम्बकीय परिनालिका का ज्ञान प्राप्त करना।
8. विभिन्न प्रकार के लाभदायक तथा हानिकारक सूक्ष्म जीवों की जानकारी तथा हानिकारक सूक्ष्म जीवों से अपनी सुरक्षा का सम्यक ज्ञान प्राप्त करना।
9. विद्युज धारा प्राप्त करने के स्रोत, विद्युत धारा का मात्रक, विभवान्तर, इसकी संकल्पना एवं मात्रक, विद्युत प्रतिरोध इसका मात्रक, विद्युत ऊर्जा के रुपान्तरण विद्युत सुचालक/कुचालक, सरल विद्युत परिपथ तथा विद्युत धारा को सावधानी पूर्वक प्रयोग करने के कौशल का विकास करना।
10. पर्यावरण में जीवधारियों द्वारा उपयुक्त जीवन व्यतीत करने तथा जीवों की रचनाओं और क्रियाओं में जटिलता के बढ़ते क्रम का बोध होना।
11. विविध प्राकृतिक सम्पदा का ज्ञान तथा मानव जीवत में उनके संरक्षण के महत्व का व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त करना।
12. जीवधारियों की मूलभूत जैविक क्रियाएँ जैये श्वसन, पोषण, वृद्धि, उत्सर्जन, प्रजनन, परिसंचरण, गति का सम्यक ज्ञान तथा शारीरिक विकलांगता इसके प्रकार, कारणों तथा उनके पुनर्वास का बोध कराना।
13. कृषि उत्पादन में गुणात्मक एवं अभिवृद्धि हेतु उन्नतिशील कृषि पद्धतियाँ एवं उनके प्रयोग से कृषि उपकरण यन्त्रों तथा पशुपालन की उपयोगिता से अवगत होना।
14. रक्त की उपयोगिता, संरचना, रक्त वर्ग, ब्लड बैंक रक्त के आधान का ज्ञान तथा रक्त आधान द्वारा संक्रमित होने वाला रोग (AIDS) की सामान्य जानकारी प्राप्त करना।

उच्च प्राथमिक कक्षाओं का इकाई वार नवीन पाठ्यक्रम

क्रमांक इकाई	कक्षा 6	कक्षा 7	कक्षा 8
1.	दैनिक जीवन में विज्ञान	* मानव विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी	* कार्बन और उसके यौगिक
2.	पास पड़ोस की वस्तुएँ	* पदार्थ की संरचना एवं प्रकृति	* ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोत
3.	पदार्थों का पृथक्करण	* अम्ल, क्षार एवं लवण	* खनिज एवं धातु
4.	मापन	* उष्मा	* मानव निर्मित वस्तुएँ
5.	पास पड़ोस में होने वाले परिवर्तन	* प्रकाश	* बल तथा दाब
6.	गति, बल और यंत्र	* ध्वनि	* प्रकाश और प्रकाश-यंत्र
7.	जीव जगत	* स्थिर विद्युत	* चुम्बकत्व
8.	जीवों की रचना तथा क्रियाएँ	* ऊर्जा ।।	* सूक्ष्म जीवों की दुनिया
9.	वायु	* सजीवों का संगठन	* विद्युत धारा
10.	जल	* जल	* अनुकूलन एवं जैव विकास
11.	ऊर्जा	* लाभदायक पौधे एवं जन्तु	* जीवन की प्रक्रियाएँ
12.	प्राकृतिक संतुलन	* वायु	* प्राकृतिक सम्पदा का संरक्षण
13.	ब्रह्माण्ड	* मृदा	* रक्त की संरचना, रक्त वर्ग एवं रक्त का आधान

विषय-विज्ञान

ईकाई का नाम-१. दैनिक जीवन में विज्ञान

कक्षा – ६

क्रमांक	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-साधन सामग्री	मूल्यांकन
१.	**दैनिक जीवन में विज्ञान की भूमिका** 1.1 विज्ञान द्वारा भोजन, आवास, वस्त्र, यातायात समस्याओं का समाधान। 1.2 विज्ञान की निरन्तर प्रगति के बाद भी और समस्याएँ। 1.3 विज्ञान के दुरुपयोग से उत्पन्न समस्याएँ। 1.4 भारतीय एवं अन्य वैज्ञानिकों का योगदान।	दैनिक जीवन में उपयोगी आधुनिक साधनों के चित्रों एवं परिचर्चा द्वारा वैज्ञानिक खोजों जैसे - शस्त्रों, नाभिकीय ऊर्जा, प्रक्षेपास्त्रों के रचनात्मक उपयोग को स्पष्ट करना।	परिचर्चा एवं पृच्छा द्वारा मूल्यांकन।
२.	**वैज्ञानिक विधियों का महत्व** 2.1 समस्याओं के समाधान मेंसहायक 2.2 वैज्ञानिक विधि के चरण-परिकल्पना, प्रेक्षण आंकड़ों का संकलन, निष्कर्ष 2.3 समस्याओं का समाधान विज्ञान के विकास में सहायक।	वैज्ञानिक अध्ययन के चरणों का प्रदर्शन-परिकल्पना, प्रेक्षण, आंकड़ों का संकलन, निष्कर्ष, निर्णय लेना।	अवलोकन कराते हुए परिचर्चा द्वारा। इकाई का नाम - 2. पास पड़ोस की वस्तुएँ

ईकाई का नाम-२. पास पड़ोस की वस्तुएं

कक्षा – ६

१. २.	**लक्षणों के आधार पर वस्तुओं का वर्गीकरण** 1.1 समानता, असमानता एवं अवस्था के आधार पर। 1.2 चल में घुलनशीलता, चुम्बक के प्रति व्यवहार, जल की अपेक्षा हल्की/भारी। 1.3 सजीव एवं निर्जीव में विभेदन। **वस्तुएँ मौलिक इकाई से बनी हैं।** 2.1 तत्व मौलिक हैं, जो परमाणुओं के रुप में विभाज्य। 2.2 तत्व के अणुओं का निर्माण परमाणुओं से। 2.3 तत्वों सेमिश्रण एवं यौगिक बनते हैं। 2.4 यौगिक के अणु अपने अवयवी तत्वों के परमाणुओं के संयोग से बनते हैं। 2.5 एक यौगिक के अणु समान, दूसरे यौगिक केअणु से भिन्न होते हैं। 2.6 एकअणु अथवा परमाणु दिखायी नहीं देता है, इनका समूह दिखायी देता हैं।	1. अपने आसपास की वस्तुओं की सूची बनवाना। 2. सजीव और निर्जीव वस्तुओं की पृथक-पृथक सूची बनवाना। 3. वस्तुओं का वर्गीकरण ठोस, द्रव, गैस। 4. अन्य पदार्थों के साथ प्रतिक्रिया का प्रेक्षण जैसे घुलनशीलता का परीक्षण के साथ व्यवहार, पानी के सापेक्ष व्यवहार। 5. चित्रों की सहायता से पदार्थों की संरचना, परमाणुओं के संयोग से अणु का निर्माण, यौगिक का निर्माण - मिश्रण जैसे बारुद, विलयन आदि की परिचर्चा द्वारा स्पष्टीकरण। 6. जन्तुओं तथा पौधों में विशिष्ट लक्षण जैसे - पोषक, प्रजनन, गति, श्वसन केआधार पर अवलोकन, प्रेक्षण द्वारा वर्गीकरण करने का अभ्यास	परिचर्चा के द्वारा प्रश्नोत्तर प्रविधि व्यक्तिगत/सामूहिक प्रायोजना लघु समूह कार्य अवलोकन कराते हुए पृच्छा -

ईकाई का नाम-३. पदार्थो का पृथककरण

कक्षा – ६

क्रमांक	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया- साधन सामग्री	मूल्यांकन
१.	**हमारे आस-पास के पदार्थ प्रायः मिश्रण के रुप में पाये जाते हैं -** 1.1 मिश्रण से पदार्थो का पृथक करने के कारण 1.2 शुद्ध पदार्थ प्राप्त करने हेतु। 1.3 मिश्रण में उपस्थित हानिकारक एवं अवांछनीय अंश को दूर करने के लिये। 1.4 मिश्रण के अवयवी पदार्थो का अनुपात ज्ञात करने हेतु।	परिवेश में प्राप्त प्राकृतिक संसाधनों के अवलोकन एवं प्रदर्शन तथा परिचर्चा द्वारा स्पष्टीकरण	परिचर्चा एवं प्रश्नोत्तर द्वारा
२.	**शिक्षण के अवयवों की पृथक करने की विधियाँ-** 2.1 मिश्रण के अवयवों की प्रकृति उलको अलग करने की विधि को निर्धारित करती है। 2.2 निथारना, लोडिंग, छानना, चलनीकरण, फटकना (विनोइगं), ऊध्र्वपातन, वाष्पीकरण, क्रिस्टनल, चुम्बकीय-पृथक्करण-सेन्ट्रीपपूगेडान का उदाहरण 2.3 आसवन विधि का सचित्र वर्णन (आंशिक आसवन का थोड़ा ज्ञान)	प्रयोग प्रदर्शन एवं परिचर्चा द्वारा - बर्तन, कपड़ा चलनी, लैम्प आदि।	

ईकाई का नाम-४. मापन

कक्षा – ६

1.	मापन की आवश्यकता 1.1 दैनिक जीवन में लम्बाई, द्रव्यमान, क्षेत्रफल, आयतन, समय, ताप का मापन। 1.2 मापन के लिए पैमानों की आवश्यकता। 1.3 पैमानों के लिए मानक मात्रक। 1.4 मापन में वस्तु राशि के अनुसार पैमानों में परिवर्तन। 1.5 मात्रकों के अपवर्त्य एवं अप-अपवर्त्य। 1.6 लम्बाई की माप दो बिन्दुओं के बीच की दूरी। 1.7 लम्बाई को मीटर, इसके अपवर्त्य या उप-अपवर्त्य में व्यक्त करना। 1.8 क्षेत्रफल की सतह की माप। 1.9 क्षेत्रफल का मात्रक (मीटर) अथवा इसके अपवर्त्य अथवा उप उपवर्त्य 1.10 आयतन - किसी वस्तु द्वारा घेरा गया स्थान। 1.11 आयतन का मात्रक (मीटर) अथवा लीटर इसके अपवर्त्य या उप अपवर्त्य। 1.12 द्रव्यमान किसी पदार्थ का परिमाण 1.13 द्रव्यमान का मात्रक (किलोग्राम) इसके अपवर्त्य अथवा उप अपवर्त्य 1.14 ताप का मात्रक डिग्री सेल्सियस। 1.15 समय का मात्रक - सेकेण्ड अथवा इसके अपवर्त्य	1. दैनिक जीवन के अनुभवों के आधार पर परिचर्चा - चार्ट, मानक पैमाने, भौतिक तुला, थर्मामीटर, घड़ी 2. सम्बन्धित चार्ट का प्रदर्शन, एवं अवलोकन। 3. परिवेशीय वस्तुओं की माप करने का अभ्यास।	मूल्यांकन 1. परिचर्चा एवं पृच्छा द्वारा। 2. मापन के अभ्यास द्वारा। 3. तालिका बनवाकर।

2.	मापन में विभिन्न युक्तियों का प्रयोग 2.1 मीटर पैमाने तथा टेप द्वारा लम्बाई की माप। 2.2 मीटर पैमाने तथा ग्राफ पेपर की सहायता से क्षेत्रफल की माप। 2.3 मीटर पैमाने तथा मापक बर्तन की सहायता से आयतन की माप। 2.4 दंड तुला की सहायता से द्रव्यमान की माप। 2.5 तापमापी की सहायता से ताप की माप। 2.6 हाथ की घड़ी तथा दीवार घड़ी की सहायता से समय की माप। 2.7 माप की यथार्थता का परिचय। 2.8 अनुपानित मापन की अभिधारणा। 2.9 अनुमानित मापन के विकास हेतु अभ्यास आवश्यक।	1. प्रयोग एवं प्रदर्शन - ग्राफ पेपर, घड़ी तापमापी, मापक बर्तन। 2. प्रदर्शन एवं मापन। 3. परिचर्चा एवं चित्रांकन	1. मापन कराकर। 2. तालिका बनवाकर। 3. प्रश्न पूछकर।

ईकाई का नाम-५. पास पड़ोस में होने वाले परिवर्तन   कक्षा - ६

1.	हमारे चारों ओर होने वाले परिवर्तनों के प्रकार 1.1 कुछ परिवर्तन धीरे-धीरे और कुछ परिवर्तन तीव्र गति से होते हैं। 1.2 कुछ परिवर्तन अनुकूल व कुछ प्रतिकूल होते हैं। 1.3 कुछ परिवर्तन नियमित/कुछ अनियमित होते हैं। 1.4 कुछ प्रत्यावर्तित तथा कुछ अप्रत्यावर्तित होते हैं। 1.5 कुछ भौतिक व कुछ रासायनिक परिवर्तन होते हैं। 1.6 कुछ प्राकृतिक व कुछ कृत्रिम परिवर्तन होते हैं। 1.7 कुछ नियंत्रित कुछ अनियंत्रित होते है। 1.8 कुछ परिवर्तन बहुत जटिल होते है।	1. **परिचर्चा** - परिवेश में मन्द एवं तीव्र गति से होने वाले परिवर्तनों पर 2. **प्रयोग प्रदर्शन** - भौतिक / रासायनिक परिवर्तनों पर 3. **लघुसमूहों में समूहकार्य** - विविध परिवर्तनों पर 4. **बच्चों द्वारा प्रयोगों का अभ्यास** - पनीर, दही, बर्फ जमाना आदि। 5. **चित्रों का प्रदर्शल एवं बड़े समूह में चर्चा** - आधुनिक यंत्रों के द्वारा।	मूल्यांकन 1. प्रश्नोत्तर प्रविधि 2. समूह कार्य के समय अवलोकन द्वारा 3. समूह परिचर्या के दौरान अवलोकन 4. व्यक्तिगत/सामूहिक परियोजनाओं को आबंटित करके
2.	परिवर्तन में होने वाली आपसी प्रतिक्रियाएँ 2.1 परिवर्तन की प्रकृति उसकी सीमा और प्रकार से ज्ञात होती है। 2.2 दो या दो से अधिक पदार्थों का एक दूसरे से सम्पर्क कराके परिवर्तन करते है। 2.3 कुछ में दो या दो से अधिक पदार्थ दूर से प्रतिक्रियाएँ करते है। 2.4 प्रतिक्रिया द्वारा क्रिया कारकों के आकार, रंग एवं स्थिति में मुख्य परिवर्तन 2.5 प्रतिक्रिया द्वारा प्रतिकारकों के रासायनिक गुण/संगठन में परिवर्तन 2.6 प्रतिक्रिया द्वारा भौतिक गुणों में परिवर्तन 2.7 परिवर्तन में या तो ऊर्जा ली जाती है या मुक्त की जाती है।	**साधन सामग्री** - 1. मोमबत्ती, बर्फ का टुकड़ा, दूध नींबू सिरका 2. चाबी युक्त खिलौना, 3. स्टोव, केतली, और पानी। चित्र / चार्ट - कार, मोटर पम्पिंग सेट, जनरेटर, विद्युत पंखें, बल्ब, आधुनिक यंत्र	
3.	**परिवर्तन के लिये ऊर्जा के किसी भी रुप की आवश्यकता पड़ती है।** 3.1 कुछ में ऊष्मीय ऊर्जा का प्रयोग होता है। 3.2 कुछ में विद्युत ऊर्जा का उपयोग होता है। 3.3 कुछ में यांत्रिक ऊर्जा का उपयोग होता है। 3.4 कुछ में प्रकाश ऊर्जा का उपयोग होता है। 3.5 कुछ में ध्वनि आवश्यक है। 3.6 कुछ में चुम्बकीय ऊर्जा का उपयोग होता है। 3.7 कुछ परिवर्तन आघात पहुँचने पर होते हैं।		

१.	**समय के साथ वस्तुओं की स्थिति में परिवर्तन** 1.1 भूमि, जल, वायु और आकाश में गति करते हुए वस्तुएँ। 1.2 गति अव्यवस्था में सम्पूर्ण वस्तु अथवा इसके किसी भाग की स्थिति का समय के साथ परिवर्तन। 1.3 रेखीय आवर्त, अनियमित, दोलन तथा संयुक्त गतियाँ।	1. दैनिक जीवन के अनुभव द्वारा 2. चित्रांकन द्वारा 3. प्रयोग प्रदर्शन एवं परिचर्चा **साधन सामग्री - चित्र एवं चार्ट, गेंद, गोली, पेन्सिल, कागच, सरल लोलक**	1. प्रश्न पूछकर एवं सूची बनवाकर 2. गतिमान तथा स्थिर वस्तुओं का वर्गीकरण करवाकर।
२.	**चाल की परिभाषा** 2.1 दो वस्तुओं की स्थिति परिवर्तन की दर का भिन्न होना। वस्तु की चाल उसके द्वारा एकांक समय में तय की दूरी। 2.2 चाल = दूरी/समय	1. उदाहरण एवं दैनिक जीवन पर आधारित प्रश्नों के माध्यम से चाल की गणना।	प्रश्नों द्वारा चाल की गणना करवाकर।
३.	**बल लगाने से वस्तु की चाल में परिवर्तन** 3.1 गति की दिशा में बल लगाने से वस्तु की चाल में वृद्धि 3.2 गति की विपरीत दिशा में बल	1. प्रयोग प्रदर्शन एवं अवलोकन। 2. बल के प्रभाव पर क्रिया-कलाप एवं अवलोकन साधन सामग्री - गेंद अथवा काँच की गोलियाँ	1. प्रश्न पूछकर 2. क्रियाकलाप करवा कर।
४.	**वस्तुओं पर बल का प्रयोग, प्रभाव** 4.1 किसी वस्तु को गतिशील अथवा स्थिर अवस्था में लाने के लिए बल का प्रयोग 4.2 बल लगाकर किसी वस्तु की आकृति गति तथा गति की दिशा में परिवर्तन	1. प्रयोग प्रदर्शन एवं अवलोकन 2. क्रिया-कलाप द्वारा सम्बोध का अभ्यास साधन सामग्री - रबर की गेंद, लकड़ी की छड़ी	1. प्रश्न पूछ कर, तालिका बनवाकर।
५.	**बल में परिमाण और दिशा का होना** 5.1 वस्तु के भार की अभिधारणा	प्रयोग प्रदर्शन एवं अवलोकन साधन सामग्री - मेज, कांच की गोली, ईट	1. प्रश्न पूछ कर 2. बल की दिशा प्रदर्शित करवाकर।
६.	**विभिन्न प्रकार के बल** 6.1 पेशीय, गुरुत्वीय, चुम्बकीय, विद्युतीय तथा घर्षण बल।	1. दैनिक जीवन के अनुभवों के आधार पर परिचर्चा। 2. प्रयोग प्रदर्शन एवं अवलोकन। साधन सामग्री - ईट, कांच की गोली, चुम्बक, लोहे का बुरादा, प्लास्टिक का कंघा, कागज के टुकड़े	1. प्रश्न पूछकर 2. तालिका बनवाकर।
७.	**घर्षण बल का जीवन में महत्व** 7.1 घर्षण बल का सम्पर्क की चिकनाहट और प्रकृति पर निर्भरता। 7.2 गति अवरोधक के रुप में घर्षण बल। 7.3 घर्षण से लाभ। 7.4 घर्षण बल को कम या अधिक करना। 7.5 सर्पी तथा लोटनिक घर्षण।	1. घर्षण बल की अवधारणा पर परिचर्चा 2. प्रयोग प्रदर्शन एवं चित्रों केआधार पर विभिन्न घर्षण बल एवं प्रभावी कारकों का स्पष्टीकरण साधान सामग्री - मेज, लकड़ी का गुटका, तेल, कमानीदार तुला, पहियेदार ठेला, बेलन, लकड़ी का गुटका	1. प्रश्न पूछकर 2. तालिका बनवाकर।
८.	**मशीनेंकार्य को सरलता और तेजी से करने में सहायक।** 8.1 मशीनों का उपयोग - किसी बल को सुविधाजनक बिन्दु पर लगाने में। 8.2 बल की दिशा बदलने में। 8.3 कार्य को कम समय में पूरा करने में 8.4 मशीनों द्वारा कार्य करने में सदैव अभ्यास की आवश्यकता। 8.5 सरल मशीनों के व्यावहारिक उपयोग।	1. दैनिक जीवन में प्रयोग होने वानी सरल मशीनों का प्रदर्शन एवं परिचर्चा 2. दैनिक जीवन के उदाहरणों पर परिचर्चा साधन सामग्री - कैंची, कागच, चाकू, आलू, उत्तर पुस्तिका, पेन्सिल, सरौता, फावड़ा आदि।	1. सूची बनवाकर। 2. चित्र बनवाकर 3. प्रश्न पूछकर।

९.	**मशीनों के प्रकार** 9.1 उत्तोलक, घिरनी, झुका तल और पहिया - विभिन्न प्रकार की सरल मशीनें 9.2 उत्तोलक का उपयोग - किसी सुविधाजनक बिन्दु पर लगा कर बोझ उठाने अथवा उसे गतिशील करने में। 9.3 आलम्ब, आयास और बोझ की आपेक्षिक स्थितियों के अनुसार तीन प्रकार के उत्तोलक। 9.4 घिरनियाँ आरोपित बल की दिशा बदलने में सहायक। 9.5 झुका तल कम बल लगाकर अधिक भार उठाने में सहायक। 9.6 पहिया कब बल के प्रयोग से अधिक भार ले जाने में सहायक। 9.7 अधिकांश मशीनों का कई सरल मशीनों से मिलकार बना होना।	1. विभिन्न प्रकार की मशीलों/उत्तोलक के चित्रों द्वारा स्पष्टीकरण। 2. सम्बन्धित परिवेशीय स्थलों का भ्रमण। 3. माडल प्रदर्शन साधन सामग्री - लाठी, पत्थर का भारी टुकड़ा, पैमाना, पेन्सिल, उत्तर पुस्तिका, मशीनों के चित्र व माडल, नत समतल।	1. प्रश्न पूछकर 2. तालिका बनवाकर। 3. चित्रों में आलम्ब, आयास तथा बोझ को दर्शाकर। 4. सरल मशीनों के चित्र बनवाकर।
१०.	**मशीनों की देख-रेख एवं रख-रखाव में उचित सावधानी की आवश्यकता।** 10.1 मशीनें स्वत: कार्य करने में असमर्थ 10.2 मशीन की कार्य कुशलता व कार्यकाल की उचित देखरेख पर निर्भरता।	परिचर्चा एवं मशीनों की क्रिया का प्रदर्शन। साधन सामग्री - लाठी, पत्थर का भारी टुकड़ा, पैमाना, पेन्सिल, उत्तर पुस्तिका, मशीनों के चित्र व माडल, नत समतल।	1. प्रश्न पूछ कर 2. सूची बनवाकर।

1.	हमारे चारों ओर विभिन्न प्रकार के जीव जन्तु हैं 1.1 जीवों में आकार, आकृति, भोजन की आदतों में भिन्नता 1.2 वास स्थान में भिन्नता 1.3 संरचला में, जीवन-यापन में भिन्नता 1.4 वे जीव जो रचना, प्राकृतिक वास, जीवन यापन में समान है उन्हे एक जाति के जीव कहते हैं। 1.5 प्रत्येक जातिकेजीव का निश्चित नाम होता है।	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया - साधन सामग्री 1. बच्चों को स्वयं अवलोकन करके सीखने के अवसर, देकर निरीक्षण/प्रेक्षण द्वारा जानकारी 2. चित्रों को दिखाकार परस्पर परिचर्चा 3. पौधों एवं जन्तुओं को भ्रमण के दौरान प्रत्यक्ष दिखाकर स्पष्टीकरण। 4. अवलोकन कर तुलना करवाना। 5. व्यक्तिगत/सामूहिक प्रायोजना।	मूल्यांकन 1. प्रश्नोत्तर द्वारा 2. तुलना द्वारा 3. परिचर्चा के समय पृच्छा द्वारा। 4. अवलोकन के साथ-साथ प्रश्नोत्तर एवं चर्चा 5. परिचर्या के समय अवलोकन द्वारा।
2.	जीवों के उभयनिष्ठ लक्षण 2.1 पोषण 2.2 श्वसन 2.3 उत्सर्जन 2.4 संवेदनशीलता 2.5 वृद्धि 2.6 प्रजनन 2.7 कोशकीय संरचना 2.8 निश्चित जीवनकाल के पश्चात मृत्यु		
3.	लक्षणों के आधार पर जन्तुओं का वर्गीकरण- 3.1 बहुकोशकीय / एककोशकीय जन्तु 3.2 कशेरुकीय / अकशेरुकीय जन्तु 3.3 अण्डे देने वाले / बच्चे देने वाले जन्तु 3.4 जलीय जन्तु / वायवीय जन्तु / स्थनीय जन्तु		
4.	लक्षणों के आधार पर पौधों का वर्गीकरण 4.1 पुष्पीय / अपुष्पीय पौधे 4.2 कुछ पौधे में जड़, तना, पत्ती में विभेद नहीं होता है। 4.3 कुछ पौधों में जड़, तना, पत्ती में स्पष्टता होती है। 4.4 कुछ पौधे वृक्ष, झाड़ी तथा कुछ शाकीय होते है। 4.5 एक वर्षीय/द्विवर्षीय/बहुवर्षीय पौधे		

१.	**जीवों का एक निश्चित संगठन** 1.1 पौधे एवं जन्तुओं में निश्यित अंग होते है तो आकार / आकृति में भिन्न होते है। 1.2 अलग-अलग अंग अलग-अलग कार्य करते है। 1.3 शरीर के अंगों के नष्ट हो जाने पर जीवन कार्य प्रभावित होते है।	1. मानव शारीरिक अंगोंपर परिचर्चा एवं पृच्छा। 2. जड़ सहित पौधों के विभिन्न पादप अंगों पर परिचर्चा एवं पृच्छा 3. पौधों में रुपान्तरण जैसे - मूली, आलू, बण्डा, मटर, अदरक आदि का अवलोकन एवं स्पष्टीकरण। 4. आर्तरिक अंगों को चित्र द्वारा प्रदर्शित करके/विच्छेदित जन्तु का प्रदर्शन।	1. समूह चर्चा 2. प्रश्नोत्तर 3. समूह चर्चा के दौरान अवलोकन 4. अंगों तथा उनके कार्यो की सूची निर्माण (व्यक्तिगत/सामूहिक प्रायोजना।)
२. ३.	**पौधे के अंग तथा उनमें कार्य विभाजन** 2.1 जड़ - स्थिरता, अवशोषण 2.2 तना - सवंहन, पत्ती, फूल फलों का धारण 2.3 पत्तियां - प्रकाश संश्लेषण 2.4 फूल - प्रजनन **पौधों में विभिन्न अंगोंका रुपान्तरण** 3.1 भोजन एकत्रीकरण - मूली, गाजर, गन्ना, आलू 3.2 सहारा देना - बरगद 3.3 आरोहण - मटर, अंगूर 3.4 जलहानि को रोकने - मरूदभिद		
४.	**जन्तुओं के वाह्य एवं आंतरिक अंगों के कार्यों में विविधता** 4.1 श्वसन अंग - साँस लेने के लिये 4.2 पाचन अंग - भोजन के पाचन के लिए 4.3 ज्ञानेन्द्रियां - संवेदन शीलता के लिये 4.4 हृदय - रक्त संचार हेतु 4.5 वृक्क - उत्सर्जन हेतु 4.6 भुजाएँ/पख/पंख - प्रचलन हेतु 4.7 जननांग - प्रजनन हेतु 4.8 मस्तिष्क एवं नाँड़िया - शारीरिक नियमन हेतु		

ईकाई का नाम-९. वायु कक्षा – ६

१.	**हमारे चारों ओर वायु -** 1.1 वायु पृथ्वी के वातावरण का निर्माण करती है। 1.2 वायु स्थान घेरती है तथा उसमें संहति होती है। 1.3 वायु रंगहीन, गंधहीन, अदृश्य तथा गैसीय होती है।	परिवेश के आधार पर वायु का परिचय - ट्यूब, गुब्बारे	चित्रांकन, प्रश्नोत्तर एवं परिचर्चा द्वारा।
२.	**वायु गैसों का मिश्रण है -** 2.1 वायु के मुख्य अवयव नाईट्रोजन, कार्बन डाई आक्साइड एवं जलवाष्प है। 2.2 आक्सीजन वायु का सर्वाधिक आवश्यक अवयव है। 2.3 आक्सीजन का उपयोग श्वसन एवं दहन में होता है।	चार्ट के माध्यम से वायु की मुख्य अवयवी तत्वों का परिचय।	
३.	**वायु की आवश्यकता -** 3.1 सजीव जीवित रहने के लिये वायु में श्वास लेते हैं। 3.2 जलीय जीव जल में घुली O_2का उपयोग श्वसन के लिये करते हैं। 3.3 हरे पौधे प्रकाश संश्लेषण द्वारा अपने भोजन (मण्ड, शर्करा) का निर्माण CO_2द्वारा करते हैं।	प्रयोग प्रदर्शन, भ्रमण एवं उदाहरण तथा परिचर्चा के माध्यम से परिचय। प्रयोग प्रदर्शन द्वारा।	
4.	वायु की उपयोगिता - 4.1 जलने में। 4.2 श्वसन में। 4.3 गुब्बारा, साइकिल, मोटर, कार के ट्यूब में भरने से। 4.4 वायु गैसों तथा वाष्पों के फैलाव में सहायक है। 4.5 सूर्य की हानिकारक किरणों को वायुमंडल रोकता है। (ओजोन परत)		

1.	जीवन के लिये जल की आवश्यकता एवं उपयोगिता - 1.1 सभी जीवधारियों का मूलभूत घटक है। 1.2 सजीवों को अपने अस्तित्व एवं रख-रखाव हेतु जल आवश्यक है। 1.3 मनुष्य को धुलाई, सफाई, सिंचाई तथा उद्योग जैसे कार्यों में जल आवश्यक है। 1.4 जल अनेक वनस्पतियों तथा जन्तुओं का वास स्थान है। 1.5 कीटाणुओं, बीजों, फलों का परिवहन करता है। 1.6 जीवधारियों में जल, लसिका, रक्त आदि खाद्य खनिज तथा गैसां के परिवहन का माध्यम है।	परिवेश में प्राप्त प्राकृतिक स्रोतों का अवलोकन एवं चित्रांकन द्वारा।	चित्रांकन, प्रश्नोत्तर एवं परिचर्चा द्वारा
2.	जल के स्रोत - 2.1 सागर जल का प्रमुख स्रोत है। 2.2 झीलों, नदियों, तालाब, भूमिगत स्रोत तथा वर्षा जल के अन्य स्रोत है। 2.3 ताजा जल के स्रोत। 2.4 अशुद्धियों तथा स्वाद के आधार पर भिन्नता।	भ्रमण, उदाहरण एवं अनुभव द्वारा	
3.	जल के विशिष्ट भौतिक गुण - 3.1 शुद्ध जल सामान्य ताप पर रंगहीन, गंधहीन, स्वादहीन तथा पारदर्शक होता है। 3.2 जल की तीन अवस्थाएँ। 3.3 सामान्य ताप पर द्रव होता है। 3.4 शून्य अंश सेन्सियस पर बर्फ के रूप में जम जाता है। 3.5 100^0C पर जल उबलता है तथा वाष्प में परिवर्तित हो जाता है। 3.6 जल के बहाव का गुण ताप के साथ नहीं बदलता।	प्रयोग प्रदर्शन एवं अवलोकन तथा परिचर्चा द्वारा स्पष्टीकरण थर्मामीटर, जल, लैम्प, बर्तन	
4.	जल की अवस्था परिवर्तन के साथ प्रकृति में जलचक्र 4.1 जल का अवस्था परिवर्तन ताप की आपूर्ति तथा निष्कासन का परिणाम है। 4.2 सभी जलीय वस्तुओं से जल वाष्प के रूप में वाष्पित होती है। 4.3 जल वाष्प द्रव तथा ठोस में संघनित होकर बर्षा तथा हिमपात या ओला वृष्टि करती हैं। 4.4 प्रकृति में जलचक्र एक सतत् प्रक्रिया है।	प्रयोग प्रदर्शन, चार्ट, अवलोकन एवं परिचर्चा द्वारा वाष्पन एवं संघनन का स्पष्टीकरण।	
5.	मृदु एवं कठोर जल- 5.1 जल की कठोरता इसमें घुले लवणों (खनिज अशुद्धियों) के कारण होती है। 5.2 कठोरता स्तर की जांच साबुन द्वारा। 5.3 उबालकर एवं रासायनिक पदार्थों की क्रिया सेजल की कठोरता को दूर करना। 5.4 जल की कठोरता से हानियाँ (औद्योगिक उपयोग एवं कपड़े धोने में)	प्रयोग प्रदर्शन एवं परिचर्चा द्वारा -साबुन, कपड़ा, बर्तन, लैम्प आदि।	
6.	जल एक प्रमुख प्राकृतिक सम्पदा है तथा इसके संरक्षण की आवश्यकता है - 6.1 जल प्रदूषण 6.2 जल संरक्षण हेतु वर्ज्य पदार्थों से बचाव 6.3 जल के अनेक उपयोग एवं आवश्यक संसाधन 6.4 भारत में पेयजल की समस्या	चार्ट, भ्रमण एवं दैनिक जीवन के अनुभव, उदाहरण के साथ परिचर्चा से स्पष्टीकरण।	

ईकाई का नाम-११. ऊर्जा

कक्षा – ६

१.	**ऊर्जा कार्य करने की क्षमता -** 1.1 यांत्रिक अथवा शारीरिक कार्य करने में ऊर्जा आवश्यक। 1.2 कार्य की माप वस्तु की स्थिति में परिवर्तन (विस्थापन) बल के पदों में। 1.3 अधिक कार्य के लिए अधिक ऊर्जा आवश्यक। 1.4 किसी वस्तु पर कृत कार्य का ऊर्जा के रुप में संचित होना। 1.5 ऊर्जा युक्त वस्तु-बल लगाने में सक्षम	1. दैनिक जीवन की परिस्थितियों, अनुभवों पर परिचर्चा। 2. व्यावहारिक जीवन सम्बन्धी समस्याओं में कृत कार्य की गणना। 3. उदाहरण, अवलोकन एवं परिचर्चा। साधन सामग्री - चित्र एवं चार्ट, पम्पिंग सेट का माडल, नत समतल तथा बेलन	मूल्यांकन 1. प्रश्न पूछ कर तथा तालिका बनवाकर। 2. कृत कार्य की गणना (जूल में) करवाकर।
२.	**ऊर्जा के विभिन्न रुप -** 2.1 यांत्रिक ऊर्जा। 2.2 रासायनिक ऊर्जा 2.3 ध्वनि ऊर्जा 2.4 प्रकाश ऊर्जा 2.5 विद्युत ऊर्जा 2.6 उष्मीय ऊर्जा	ऊर्जा के विभिन्न स्वरुपों को स्पष्ट करने वाले उदाहरणें पर परिचर्चा साधन सामग्री - गेंद, स्प्रिंग, कमानीदार तुला, चार्ट, फोटोग्राफिक कैमरा, केतली, अंगीठी	प्रश्न पूछकर, तालिका बनवाकर।
3.	ऊर्जा के विभिन्न स्रोत - 3.1 ईंधन 3.2 भोजन 3.3 बायोगैस 3.4 सौर ऊर्जा 3.5 चलती वायु, समुद्री ज्वार भाटा, तरंग और बहता पानी। 3.6 पावर प्लान्ट 3.7 ऊर्जा पुन: प्राप्त करने तथा ऊर्जा पुन: न प्राप्तकरने वाले स्रोत	1. चित्र प्रदर्शन 2. उदाहरणें पर परिचर्चा 3. भ्रमण साधन सामग्री - सूखी लकड़ी, कोयला, चित्र एवं चार्ट, वायु में घूमने वाली फिरकी का माडल।	

ईकाई का नाम-१२. प्राकृतिक संतुलन

कक्षा – ६

1.	पर्यावरण के जीवित/अजीवित घटक - 1.1 हमारे चारों ओर जीवित/अजीवित वस्तुएँ है। 1.2 मनुष्य पौधों/जन्तुओं पर निर्भर है। 1.3 पौधे जन्तुओं पर निर्भर है। 1.4 पौधे और जन्तु दोनों ही निर्जीव घटकों पर निर्भर है। 1.5 पर्यावरण के सभी घटकों में परस्पर निर्भरता है	1. तालाब/जंगल का भ्रमण कार्यक्रम 2. शाकाहारी/मांसाहारी जन्तुओं की सूची 3. छात्रों में परिचर्चा एवं स्पष्टीकरण 4. प्रश्नोत्तर विधि 5. व्यक्तिगत/सामूहिक परियोजनाएँ - जैसे खाद्य श्रृंखला बनवाना दाना - चूहा - मेंढ़क - साँप - मोर साधन सामग्री - जीव जन्तुओं के चित्र फ्लैश कार्ड (पौधे/जन्तु)	1. सामूहिक परिचर्चा 2. प्रश्नोत्तर 3. बच्चों से फ्लैश कार्ड द्वारा खाद्य श्रृंखला बनवाने का अभ्यास।
2.	भोजन एव आवास सम्बन्धी पारस्परिक निभरता (खाद्य श्रृंखला)- 2.1 सभी सजीवों को जीवित रहने के लिए ऊर्जा की आवश्यकता है। 2.2 सूर्य ऊर्जा का एक मात्र स्रोत है। 2.3 सूर्य के प्रकाश की सहायता से पौधो प्रकाश संश्लेषण करते है। (प्रारम्भिक ज्ञान) 2.4 प्रकाश संश्लेषण निर्मित भोजन शाकाहारी जन्तुओं का भोजन बनता है। 2.5 मांसाहारी जन्तुओं के लिये शाकाहारी जन्तु भोजन बनाते है। 2.6 सभी पौधे और जन्तु मृत होकर सूक्ष्म कणों में टूटकर वायुमण्डल तथा मिट्टी में विलीन हो जाते है।		

१.	**आकाशी पिंडो के साथ बहुत दूर तक फैला क्षेत्र -** 1.1 ब्रह्मांड में अनेक तारे और ग्रह 1.2 तारे और ग्रह एक दूसरे से बहुत दूर 1.3 दो तारों के बीच की दूरी अरबों किलोमीटर 1.4 सभी आकाशी पिंड अंतरिक्ष में गतिमान 1.5 सूर्य निकटतम दूरी पर एक तारा। 1.6 ग्रहों की सूर्य के चारों ओर परिक्रमा 1.7 तारे स्वत: प्रकाशित नहीं होते और सूर्य की परिक्रमा नहीं करते। 1.8 रात्रि मेंकुछ विशिष्ट तारों का टिमटिमाना।	1. ग्रह, तारे, चन्द्रमा, उल्का आदि - परिचर्चा एवं चित्रांकन 2. सूर्य पृथ्वी से निकटतम तारा - उल्लेख परिचर्चा 3. तारों के बीच अरबों किलोमीटर की दूरी - परिचर्चा 4. ग्रह और तारा में अन्तर का स्पष्टीकरण। 5. आकाशीय पिण्ड निरन्तर गतिमान - उल्लेख 6. तारों का टिमटिमाना - परिचर्चा साधन सामग्री - निम्नलिखित चित्र/चार्ट दिन में सूर्य, रात्रि में आकाश, सूर्योदय, सूर्यास्त उल्का आदि।	1. आकाशीय पिंडों की सूची 2. ग्रह तारा में अन्तर एवं अन्य उप-प्रकरण -प्रश्नोत्तर द्वारा
२.	**उल्का और उल्का पिंड -** 2.1 उल्का और उल्का पिंड का सामान्य परिचय।	1. परिचर्चा - चित्रांकन	

विषय-विज्ञान

ईकाई का नाम-१. मानव, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी   कक्षा – ७

क्रमांक	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-साधन सामग्री	मूल्यांकन
1.	दैनिक जीवन में - विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी समाहित है। 1.1 परिवहन के क्षेत्र में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी 1.2 चिकित्सा के क्षेत्र में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी 1.3 जनसंचार के क्षेत्र में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी 1.4 मनोरंजन के क्षेत्र में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी 1.5 उद्योगों के क्षेत्र में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी 1.6 कृषि के क्षेत्र में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी 1.7 मत्स्य- पालन, कुक्कुटपालन, रेशमकीट पालन, सुअर पालन, सब्जी उत्पादन के क्षेत्र में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी 1.8 आधुनिक ईंधन (डीजल, पेट्रोल, कुकिंग गैस) के क्षेत्र में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी 1.9 दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी	1. भ्रमण के दौरान अवलोकन, परिचर्चा/स्पष्टीकरण 2. समूह चर्चा (परिचर्चा) - क्षेत्र के आधार पर लघु समूह चर्चा 3. प्रयोग प्रदर्शन से पिज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के समावेश को स्पष्ट किया जाय। 4. महत्त्वपूर्ण स्थलों जैसे - औद्योगिक प्रतिष्ठानों, शस्त्रगारों, आधुनिक प्रेसों, दूरसंचार प्रसारण केन्द्रों, चिकित्सीय अनुसंधान केन्द्रों, भवन-वास्तुकला संस्थानां, फैक्ट्री, मिलों, इलेक्ट्रानिक्स अनुसंधान केन्द्रों का स्थलीय निरीक्षण एवं परिचर्चा/चित्रांकन 5. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास से जीवन के स्तर सम्बन्धी लाभ तथा जीवन की गुणवत्ता पर होने वाली हानियों पर विवेचला (समूह-परियोजना)	1. प्रश्नोत्तर द्वारा 2. परिचर्चा द्वारा 3. भ्रमण के दौरान - पृच्छा 4. व्यक्तिगत एवं सामूहिक परियोजनाओं के दौरान अवलोकन एवं पृच्छाएँ
२.	**विज्ञान-प्रौद्योगिकी के विकास केसाथ साथ मानव जीवन में परिवर्तन हो रहा है।** 2.1 पाषाण युग तथा आधुनिक जीवन के क्रियाकलाप 2.2 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास द्वारा जीवन स्तर में सुधार-आनन्दमय, सुखी, आरामप्रद 2.3 विज्ञान-प्रौद्योगिकी का विकास तीव्र गति से और मानव के द्वारा अपनाया जाना। 2.4 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से मानव समाज को लाभ एवं हानियाँ		
३.	**प्रौद्योगिकी विकास द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में क्रान्ति** 3.1 औद्योगिक क्षेत्र में क्रांति 3.2 जनसंचार क्षेत्र में क्रांति (कम्प्यूटर/ईमेल/इन्टरनेट) 3.3 कृषि/फसल उत्पादन क्षेत्र में क्रांति 3.4 ईंधन के क्षेत्र में क्रांति 3.5 चिकित्सा के क्षेत्र में क्रांति 3.6 राष्ट्रीय सुरक्षा युद्ध/अस्त्र शस्त्रों के क्षेत्र में क्रांति		

ईकाई का नाम-२. पदार्थ की सरंचना एवं प्रकृति | कक्षा – ७

क्रमांक	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया- साधन सामग्री	मूल्यांकन
१.	**किसी पदार्थ की तीन अवस्थाएँ उनके रचनात्मक कणों, अणुओं अथवा परमाणुओं के बीच दूरी में अन्तर के कारण होती है -** 1.1 गैसीय अवस्था में अत्यधिक। 1.2 द्रव अवस्था में कम दूरी। 1.3 ठोस में परमाणु सन्निकट गठित होते है।	प्रयोग-प्रदर्शन, अवलोकन तथा परिचर्चा द्वारा **साधन सामग्री** - गुब्बारा, रेत, पानी, कांच की गोलियां, बीकर एवं विभिन्न प्रकार के धातु रुप	प्रश्नोत्तर, प्रदर्शन एवं परिचर्चा द्वारा
२.	**पदार्थ तत्व, मिश्रण एवं यौगिक के रुप में प्राप्त होते हैं-** 2.1 तत्व समान परमाणुओं से बने होते हैं तथा सभी पदार्थ तत्व से बने होते हैं। 2.2 दो या दो से अधिक तत्वों की रासायनिक क्रिया से यौगिक बनते हैं, जबकि उन तत्वों की मात्रा में नियमित अनुपात हो। 2.3 दो या दो से अधिक पदार्थों को किसी भी अनुपात में मिलाने पर मिश्रण बनता है।	प्रयोग-प्रदर्शन, निरीक्षण तथा परिचर्चा द्वारा साधन सामग्री - गन्धक के टुकड़े, माचिस, गिलास, चीनी, अरहर, मटर के दाने आदि उदाहरण, चित्रांकन एवं चार्ट द्वारा चार्ट एवं माडल द्वारा	
३.	**रसायन की भाषा -** 3.1 तत्वों के संकेत भिन्न होते हैं। 3.2 संकेत में एक परमाणु का बोध होता हैं। 3.3 सूत्र 3.4 एक यौगिक का सूत्र उसके अवयवी तत्वों के संकेतों की सहायता से व्यक्त किया जाता है।		
४.	**रासायनिक सूत्र से लाभ** 4.1 यौगिक की रचना सम्बन्धी समस्त सूचनाएँ देता है। 4.2 अवयवी तत्वों एवं उनके अनुपात का ज्ञान कराना। 4.3 अवयवी तत्वों के द्रव्यमान के अनुपात का ज्ञान कराता है।		

क्रमांक	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया- साधन सामग्री	मूल्यांकन
१.	**आक्साइड का बनना -** 1.1 धातुएँ जैसे मैगनीशियम, कैल्सियम, सोडियम आदि का आक्सीजन से क्रिया करके आक्साइड बनाना। 1.2 अधातुएँ जॅसे कार्बन, सल्फर आदि का आक्सीजन से क्रिया करके अम्लीय आक्साइड बनाना। 1.3 आक्साइड के भास्मिक एवं अम्लीय प्रकृति की परख (लिटमस द्वारा)	भ्रमण एवं चार्ट द्वारा स्पष्टीकरण **साधन सामग्री** - मैगनीशियम के तार, कैल्सियम, सोडियम, माचिस आदि।	प्रदर्शन, प्रश्नात्तर एवं सूचीकरण द्वारा
२.	**जल में घुलकर अम्लीय आक्साइड अम्ल एवं भास्मिक आक्साइड क्षार बनाते हैं-** 2.1 कुछ अम्लों के उदाहरण जो अम्लीय आक्साइड को पानी में घोलनेसे बनते है। 2.2 कुछ क्षार भास्मिक आक्साइड के जल में घुलने से बनते हैं। 2.3 जल में अत्यधिक विलेय भस्मों को क्षार कहते हैं।	उदाहरण एवं प्रदर्शन तथा परिचर्चा द्वारा	
३.	**अम्लों एवं भस्मों के विशिष्ट गुण-** 3.1 स्वाद 3.2 लिटमस पर प्रभाव 3.3 अम्ल और भस्म की पारस्परिक क्रिया एवं उदासीनीकरण। 3.4 अम्ल में की उपस्थिति (धामुओं की क्रिया से पृथक करना) 3.5 अम्ल की धातुओं, धातु आक्साइडों और कार्बोनेटों से क्रिया (समीकरण आवश्यक नहीं) 3.6 अम्ल की क्षय कारक प्रकृति	उदाहरण प्रदर्शन एवं अनुभव तथा परिचर्चा द्वारा - लिटमस, नींबू आदि।	
४.	**अम्ल और क्षार की प्रकृति में उपस्थिति -** 4.1 नींबू में 4.2 आँवले में 4.3 सिरके में 4.4 रेह में	परिवेश में पाये जाने वाले प्राकृतिक साधनों के स्वाद प्राप्त कराकर एवं परिचर्चा द्वारा	
५.	**घरेलू एवं औद्योगिक क्षेत्रों में अम्लों, भस्मों एवं लवणों का उपयोग -** 5.1 कुछ अम्लों का उपयोग अन्य अम्लोंके निर्माण में 5.2 उद्योग में। 5.3 हमारे शरीर में। 5.4 घरेलू आवश्यकताओं एवं कारखानों के लिए।	भ्रमण, चार्ट एवं परिचर्चा द्वारा	

ईकाई का नाम-४. ऊष्मा

कक्षा – ७

क्रमांक	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया- साधन सामग्री	मूल्यांकन
१.	**गरमाहट का मापन ताप द्वारा** 1.1 वस्तु का तुलनात्मक ठंडा तथा गर्म होना। 1.2 तापमान - तापमापन की युक्ति। 1.3 गर्म करने पर वस्तु के ताप का बढ़ना तथा ठंडा करने पर ताप का घटना।	प्रयोग एवं अनुभव के आधार पर परिचर्चा साधन सामग्री - कटोरी, पानी, तापमापी, स्प्रिट लैम्प	1 गर्म-ठंडा-तुलनात्मक प्रश्न 2. प्रश्नोत्तर
२.	**किसी वस्तु द्वारा ली गई या दी गई ऊष्मा की मात्रा की विभिन्न कारणों पर निर्भरता-** 2.1 वस्तु के ताप में अधिक वृद्धि के लिए अधिक ऊष्मा की आवश्यकता। 2.2 अधिक परिमाण की वस्तु में ताप में, वृद्धि के लिए अधिक ऊष्मा आवश्यक। 2.3 समान परिमाण की दो विभिन्न वस्तुओं के समान ताप बढ़ाने के लिए विभिन्न ऊष्मा की आवश्यकता। 2.4 ऊष्मा की मात्रा के मापन की विशिष्ट इकाई	1. प्रयोग-प्रदर्शन, एवं परिचर्चा। 2. ऊष्मा की इकाई का उल्लेख। **साधन सामग्री** - कटोरी, तापमापी, पानी, स्प्रिट, लैम्प	प्रश्नोत्तर द्वारा
३.	**गर्म अथवा ठंडा करने पर अवस्था में परिवर्तन -** 3.1 गर्म करने पर ठोस पदार्थ का पिघलना। 3.2 ठंडा करने पर द्रवों का ठोस अवस्था में परिवर्तन। 3.3 गर्म करने पर द्रवों का गैसीय अवस्था में तथा ठंडा करने पर गैसों का द्रव अवस्था में परिवर्तन।	प्रयोग प्रदर्शन एवं परिचर्चा **साधन सामग्री** -नैप्थलीन की गोलियाँ, कटोरी, पानी, मोमबत्ती, स्प्रिट, लैम्प	अवस्था परिवर्तन पर प्रायोगिक प्रश्नोत्तर
४.	**द्रवणांक तथा क्वथनांक पदार्थ के लिए लाक्षणिक ताप** 4.1 प्रत्येक ठोस पदार्थ का द्रवणांक एक निश्चित तापहोतो है। 4.2 प्रत्येक द्रव का क्वथनांक एक निश्चित ताप पर होता है। 4.3 किसी एक पदार्थ का द्रवणांक तथा हिमांक समान होता है। 4.4 अवस्था परिवर्तन के समय ताप अपरिवर्तित रहता है।	प्रयोग प्रदर्शन एवं परिचर्चा द्वारा सम्बन्धित उप-सम्बोधों का स्पष्टीकरण। साधन सामग्री - बर्फ, कटोरी, स्प्रिट, लैम्प, स्टैण्ड	1. द्रवणांक एवं क्वथनांक के प्रामाणिक मानों की सूची बनवाना। 2. प्रश्नोत्तर
५.	**वस्तुओं का गर्म करने पर प्रायः बढ़ना तथा ठंडा करने पर सिकुड़ना -** 5.1 ठोस, द्रव तथा गैस गर्म करने पर फैलते हैं तथा ठंडा करने पर प्रायः सिकुड़ते हैं। 5.2 ठोस की तुलना में द्रव तथा गैसों का प्रसार अधिक होता है।	प्रयोग प्रदर्शन एवं परिचर्चा। साधन सामग्री - बर्फ, कटोरी प्लेट, डाट, बोतल, स्प्रिअ लैम्प, मोमबत्ती	प्रयोगात्मक प्रश्नोत्तर
६.	**गर्म करने पर वस्तुओं के प्रसार का उपयोग - तापमापी के निर्माण में -** 6.1 साधारण तापमापी परे के ऊष्मीय प्रसार पर आधारित। 6.2 पानी के क्वथनांक एवं हिमांक पर तापमापी के नियत बिन्दु की निर्भरता।	प्रयोग प्रदर्शन, अवलोकन एवं परिचर्चा। साधन सामग्री - पानी, तापमापी, स्प्रिट लैम्प, क्लैमप स्टैण्ड	प्रश्नोत्तर विधि

७.	**दो वस्तुओं में ऊष्मा का स्थानान्तरण तब तक होता है जब तक उनका ताप समान न हो जाय-** 7.1 गर्म तथा ठंडी वस्तु को छोड़ देने पर चारों ओर की वस्तुओं के ताप तक क्रमशः ठंडी तथा गर्म होती है।	प्रयोग प्रदर्शन अवलोकन एवं परिचर्चा। साधन सामग्री - गरम पानी	जल्दी ठंडी तथा देर से ठंडी होने वाली वस्तुओं पर तुलनात्मक प्रश्नोत्तर
८.	**ऊष्मा संचरण की विधियां-चालन, संवाहन तथा विकिरण-** 8.1 चालन द्वारा ऊष्मा का स्थानान्तरण वस्तुओं के सम्पर्क से या वस्तु के एक भाग से दूसरे भाग तक होता है। 8.2 ठोसों में ऊष्मा का स्थानान्तरण चालन द्वारा होता है। 8.3 वस्तुएँ ऊष्मा की सुचालक तथा कुचालक हो सकती है। 8.4 संवाहन में पदार्थ के अणु एक स्थान से दूसरे स्थान पर ऊष्मा स्थानान्तरण हेतु जाते हैं। 8.5 द्रवों में ऊष्मा स्थानान्तरण संवाहन द्वारा होता है। 8.6 विकिरण द्वारा ऊष्मा का एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानान्तरण, माध्यम के कणों के बिना प्रयुक्त किये होता है।	प्रयोग प्रदर्शन, अवलोकन एवं परिचर्चा। साधन सामग्री - धातुओं की छड़ें, पानी, मोम, पोटैशियम परमैंगनेट, स्प्रिट लैम्प, स्टैण्ड, फ्लास्क।	प्रयोगात्मक एवं ज्ञानात्मक प्रश्नोत्तर
९.	**वस्तुओं के ऊष्मीय गुणों का उपयोग -** 9.1 ऊष्मीय प्रसार का तापमापी बनाने में उपयोग। 9.2 धातुओं के ऊष्मीय प्रसार की विभिन्नता का प्रयोग स्वतः नियंत्रक युक्ति हेतु द्विधातु पत्ती बनाने में किया जाता है। 9.3 पदार्थों के द्रवणांक तथा क्वथनांक की विभिन्नता का उपयोग मिश्रण के अवयवों को पृथक करने में होता है। 9.4 वस्तुओं की सुचालकता का उपयोग इन्सुलेशन हेतु करते हैं।		प्रयोगात्मक एवं ज्ञानात्मक प्रश्नोत्तर

ईकाई का नाम-५. प्रकाश कक्षा – ७

क्रमांक	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया- साधन सामग्री	मूल्यांकन
१.	**प्रकाश के विभिन्न स्रोत** 1.1 प्रकाश के स्रोत-प्राकृतिक तथा मानव निर्तिम 1.2 कुछ प्रकाश स्रोत अन्य स्रोतों की अपेक्षा अधिक चमकीले होते हैं। 1.3 प्रकाश स्रोत द्वारा प्रकाश का सभी दिशाओं में संचरण।	**शिक्षण अधिगम प्रक्रिया-साधन सामग्री** अवलोकन, अनुभव एवं परिचर्चा **साधन सामग्री** - परिवेशीय वस्तुएँ	**मूल्यांकन** कौशलात्मक प्रश्नोत्तर
२.	**प्रकाश का सीधी रेखा में चलना।** 2.1 छाया, प्रच्छाया तथा उनछाया। 2.2 प्रकाश स्रोत के बिन्दु। 2.3 अपारदर्शी तथा पारदर्शी वस्तुएँ। 2.4 सूर्य ग्रहण तथा चन्द्र ग्रहण	1. अनुभव, प्रयोग एवं परिचर्चा 2. चित्र अथवा मॉडल प्रस्तुतीकरण। **साधन सामग्री** - मोमबत्ती, लकड़ी के गुटके, कांच, तेल लगा कागज, चित्र एवं मॉडल	तुलनात्मक प्रश्नोत्तर किरण आरेख बनवाना
३.	**परावर्तन** 3.1 दर्पण की भाँति चमकदार समतल सतह प्रकाश के अच्छे परावर्तक 3.2 परावर्तन के नियम। 3.3 समतल अथवा कुल सतह से प्रकाश का परावर्तन	1. प्रयोग प्रदर्शन एवं उपयोग के उदाहरण 2. किरण आरेख द्वारा परावर्तन के नियम, एवं प्रतिबिम्ब का बनना। **साधन सामग्री** - समतल दर्पण, परावर्तन कोण, अभिलम्ब प्रदर्शित करने वाला चित्र किरण आरेख चित्र	प्रश्नोत्तर किरण आरेख बनवाना।
४.	**गोलीय परावर्तक तलों तथा समतल दर्पण द्वारा बने प्रतिबिम्ब में भिन्नता।** 4.1 गोलीय दर्पण का फोकस। 4.2 परावर्तन के नियमों द्वारा गोलीय दर्पण से बले प्रतिबिम्ब की स्थिति का ज्ञानं 4.3 गोलीय दर्पण द्वारा बने प्रतिबिम्ब का वास्तविक अथवा आभासी होना। 4.4 वस्तु तथा गोलीय दर्पण की अपेक्षिक स्थिति के अनुसार प्रतिबिम्ब की प्रकृति 4.5 गोलीय दर्पण का दैनिक जीवन में उपयोग।	1. प्रयोग प्रदर्शन एवं परिचर्चा 2. किरण आरेख द्वारा प्रतिबिम्ब का बनना। 3. दैनिक जीवन में गोलीय दर्पण के उदाहरण। **साधन सामग्री** - गोलीय दर्पण, मोमबत्ती, टार्च	तुलनात्मक प्रश्नोत्तर। ज्ञानात्मक प्रश्नोत्तर किरण आरेख बनवाना।
५.	**वस्तुओं के देखने के लिए प्रकाश आवश्यक** 5.1 वस्तुएँ जो प्रकाश उत्सर्जित करती हैं, का दिखाई देना। 5.2 अपने ऊपर आपतित प्रकाश को परावर्तित करने वाली वस्तुओं का दिखाई देना। 5.3 मानव नेत्र प्रकाश का पता लगाने में सहायक।	1. अनुभव एवं परिचर्चा 2. किरण आरेख बनवाना 3. मानव नेत्र का चित्रांकन **साधन सामग्री** - कागज, पेन्सिल, स्केल, मानव नेत्र का चित्र	1. प्रश्नोत्तर 2. किरण आरेख बनवाना।

ईकाई का नाम-६. ध्वनि कक्षा – ७

क्रमांक	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया- साधन सामग्री	मूल्यांकन
१.	**ध्वनि के प्रकार** 1.1 तीव्र तथा तीक्ष्ण ध्वनि 1.2 प्रिय तथा अप्रिय ध्वनि 1.3 कोई स्रोत विभिन्न दशाओं में विभिन्न प्रकार की ध्वनि उत्पन्न कर सकता है।	1. विभिन्न प्रकार की ध्वनि का प्रदर्शन, उदाहरण, परिचर्चा। 2. कम्पन करती हुई वस्तु द्वारा ध्वनि की उत्पत्ति का प्रदर्शन। 3. ध्वनि संचरण के लिए माध्यम की आवश्यकता - प्रयोग प्रदर्शन 4. मुँडेर सहित कुछ मुँह पर ध्वनि उत्पन्न कर, इसके परावर्तन का प्रदर्शन 5. ध्वनि परावर्तन से गूंज का प्रदर्शन - अनुभव एवं परिचर्चा 6. जन्तुओं में कान द्वारा ध्वनि का सुनायी देना, परिचर्चा 7. अनुभव के आधार पर ध्वनि से कान के पर्दे के कम्पन का स्पष्टीकरण। 8. अनुभव के आधार पर 'अधिक शोरगुल से कान के पर्दे के खराब होने की संभावना - इस पर नियंत्रण आवश्यक' - परिचर्चा 9. ध्वनि की चाल का स्पष्टीकरण एवं ताप पर निर्भरता का उल्लेख 10. 0^oC पर ध्वनि क्षण का उल्लेख **साधन सामग्री** - धातु की कटोरी, लकड़ी की छड़, स्कूल का घंटा, मुँगरी	1. ध्वनि के प्रकार की सूची 2. ध्वनि के संचरण के लिए माध्यम की आवश्यकता पर प्रश्नोत्तर द्वारा 3. अन्य सभी उप प्रकरण पर प्रश्नोत्तर एवं पृच्छा प्रपत्र द्वारा
२.	**कम्पन करती हुई वस्तु से ध्वनि की उत्पत्ति।** 2.1 वस्तु पर आधार करके ध्वनि का उत्पन्न होना। 2.2 आधार से वस्तु में कम्पन उत्पन्न होते हैं। 2.3 वस्तु के कम्पन समाप्त होने पर ध्वनि का बन्द होना।		
३.	**ध्वनि संचरण के लिए माध्यम आवश्यक** 3.1 स्रोत से ध्वनि का संचरण सभी दिशाओं में होता है।		
४.	**ध्वनि परावर्तन** 4.1 सतह पर टकराने से ध्वनि का परावर्तन 4.2 ध्वनि के परावर्तन से गूंज का उत्पन्न होना।		
५.	**जन्तुओं का ज्ञानेन्द्रियों द्वारा श्रवण** 5.1 मनुष्य एवं जन्तुओं के श्रवण हेतु ज्ञानेन्द्रियां कान हैं। 5.2 कान का पर्दा ध्वलि स्रोत की भाँति कम्पन करता है। 5.3 मानव कान एक कोमल अंग है इसके विशेष सुरक्षा की आवश्यकता है।		
६.	**शोर हानि का एक स्रोत है** 6.1 शोर अप्रिय होता है। 6.2 शोर कान के लिए तथा अन्य अंगों के लिए हानिकारक है। 6.3 शोर तथा इसके हानिकारक प्रभाव पर नियंत्रण आवश्यक है।		
७.	**ध्वनि की चाल** 7.1 किसी माध्यम में ध्वलि की चाल निश्चित ताप पर निश्चित होती है। 7.2 0 पर वायु में ध्वनि का मान		

ईकाई का नाम-७. स्थिर विद्युत

कक्षा - ७

क्रमांक	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-साधन सामग्री	मूल्यांकन
१.	**विद्युत आवेश की प्रकृति** 1.1 रगड़ने पर वस्तुओं का आवेशित होना। 1.2 आवेशित वस्तु का अनावेशित वस्तु की ओर आकर्षण। 1.3 आवेशित दो वस्तुओं के बीच आकर्षण तथा प्रतिकर्षण आवेशों का दो प्रकार का होना। 1.4 समान आवेशों के बीच प्रतिकर्षण तथा असमान आवेशों के बीच आकर्षण। 1.5 प्रतिकर्षण वस्तुओं के आवेशित होने का प्रमाण। 1.6 घर्षण द्वारा दो वस्तुओं में समान परिणाम के विपरीत आवेशें की उत्पत्ति। 1.7 सुचालक एवं कुचाला पदार्थ। 1.8 दो वस्तुओं के बीच आवेश का स्थानान्तरण। 1.9 विद्युत-धारा चालक आवेश का प्रवाह।	**शिक्षण अधिगम प्रक्रिया - साधन सामग्री** प्रयोग प्रदर्शल, अवलोकन, निरीक्षण एवं परिचर्चा द्वारा **साधन सामग्री** - कंघा, कागज, ऊनी, रेशमी कपड़े, आवेशित तथा उदासीन छड़े, टार्च, सेल, बल्व, ताँबा, डोरी, लोहे का तार आदि।	प्रयोग प्रदर्शल पर आधारित प्रश्न कौशलात्मक क्रिया - कलापों द्वारा

क्रमांक	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया- साधन सामग्री	मूल्यांकन
१.	**किसी वस्तु में यांत्रिक ऊर्जा का वस्तु की गति, स्थिति तथा विकृति के कारण होना।** 1.1 गतिमान वस्तु में गतिच ऊर्जा का होना। 1.2 ऊँचाई पर रखी वस्तु में स्थितिज ऊर्जा का होना। 13 किसी वस्तु में उसकी विकृति के कारण स्थितिज ऊर्जा का संचय। 1.4 यांत्रिक ऊर्जा, गतिज एवं स्थितिज ऊर्जा का योग। 1.5 रासायनिक ऊर्जा-स्थितिज ऊर्जा का एक रुप।	**शिक्षण अधिगम प्रक्रिया - साधन सामग्री** 1. उपयुक्त प्रयोग प्रदर्शन एवं अनुभवों के माध्यम से परिचर्चा 2. गुलेल, स्प्रिंग, घड़ी की चाभी के प्रदर्शन द्वारा स्थितिज ऊर्जा का बोध। **साधन सामग्री** - रबर की दो गेंदे, पिस्तौन का माडल, गुलेल, स्प्रिंग, घड़ी आदि।	तुलनात्मक प्रश्नोत्तर द्वारा। ज्ञानात्मक प्रश्नोत्तर द्वारा।
२.	**ऊर्जा का एक रुप से दूसरी रुप में रुपान्तरण।** 2.1 गतिज ऊर्जा का स्थितिज ऊर्जा में रुपान्तरण और इसके विपरीत। 2.2 यांत्रिक ऊर्जा का ऊष्मीय, प्रकाश, ध्वनि अथवा विद्युत ऊर्जा में रुपान्तरण। 2.3 विद्युत ऊर्जा का ऊर्जा के अन्य रुपों में रुपान्तरण। 2.4 किसी एक प्रकार की ऊर्जा का एक से अधिक अन्य रुपों में रुपान्तरण। 2.5 यांत्रिक क्रियाओं में ऊर्जा ह्रास का एक से अधिक अन्य रुपों में रुपान्तरण।	1. ऊपर फेंकी गेंद का नीचे गिरने का अवलोकन तथा परिचर्चा। 2. गुलेल से निकने छोटे पत्थर की गति का अवलोकन तथा परिचर्चा। 3. सूखे बालों में रगड़े कंघे को कागज के पास लाकर अवलोकन एवं परिचर्चा। 4. अन्य उदाहरणों एवं उपकरणों के माध्यम से अवलोकन, परिचर्चा एवं चित्रांकन। **साधन सामग्री** - गेंद, गुलेल, हथौड़ा, लोहे का टुकड़ा, प्लास्टिक का कंघा, कागज के टुकड़े।	
३.	**ऊर्जा के न्यायसंगत प्रयोग हेतु प्रोत्साहन।** 3.1 पुन: न प्राप्त होने वाले ऊर्जा के स्रोतों की समाप्ति निश्चित। 3.2 पुन: प्राप्त होने वाले ऊर्जा के स्रोतों को प्रोत्साहन एवं पुन: न प्राप्त होने वाले ऊर्जा के स्रोतों के प्रयोग को कम करने की आवश्यकता पर बल। 3.3 सौर ऊर्जा पर आधारित ऊर्जा की युक्तियों के प्रयोग हेतु प्रोत्साहन पर बल। 3.4 दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाली मशीनों एवं अन्य युक्तियों में ऊर्जा ह्रास को उचित रखरखाव द्वारा कम करने पर बल।	1. भ्रमण, उदाहरणों एवं चित्रांकन के माध्यम से परिचर्चा **साधन सामग्री** - सम्बन्धित चित्र	कौशलात्मक प्रश्नोत्तरक

क्रमांक	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया- साधन सामग्री	मूल्यांकन
१.	**इकाई के रुप में कार्य करने हेतु सजीवों में एक निश्यित संगठन होता है।** 1.1 जीवों में विभिन्न कार्य करते हेतु विभिन्न अंग होते हैं। 1.2 शरीर के प्रमुख कार्य अंगों एवं अंगतंत्रों के सम्मिलित रुप से भाग लेने से सम्पन्न होते हैं। 1.3 प्रत्येक अंग ऊतकों का बना होता है, जो उस अंग से सम्बन्धित कार्य करते हैं। एक ऊतक समान कोशिकाओं का समूह है।	मनुष्य पशुओं आदि के विभिन्न मॉडल दिखाकर विभिन्न अंगों के संगठन में समानता दिखाना-सुनना, देखना, छूना। **मनुष्य, मछली, घोड़, चिड़ियों आदि के विशिष्ट कार्यों का सूचीकरण** **मनुष्य तथा मेढक के पाचन अंगों के चार्ट के माध्यम से परिचर्चा द्वारा छात्रों से निष्कर्ष निकलवाना** **प्रयोग, माडल चार्ट के उदाहरणों द्वारा**	परिचर्चा कराकर एवं प्रश्न पूछकर। सूचीकरण के माध्यम से। चर्चा एवं पृच्छा। अवलोकन कराते हुए पृच्छा।
२.	**कोशिका जीवधारी की एक क्रियात्मक एवं संरचनात्मक इकाई है।** 2.1 सभी सजीवों का शरीर कोशिकाओं का बना होता है। 2.2 कुछ जीवधारी एक कोशिका के बने होते है। 2.3 कुछ जीवधारी बहुत सी कोशिकाओं के बने होते हैं। 2.4 कोशिका विभिन्न आकार एवं परिमाप की होती है। व्यक्ति की वृद्धि में कोशिकाओं का योगदान है।	अमीबा के चित्र द्वारा या तालाब के पानी को माइस्क्रोप से दिखाकर हाइड्रा के चित्रों को दिखाकर विचार विमर्श द्वारा एवं मुर्गी, मेढक, मछली के अंडों का अवलोकन कराकर।	पृच्छा द्वारा।
३.	**पादक ऊतक विभिन्न प्रकार के होते हैं।** 3.1 प्रविभाजी ऊतक वृद्धि में सहायक हैं और वृद्धि बिन्दुओ पर व्याप्त होते हैं। 3.2 कुछ ऊतक जल एवं भोजन के संवहन में सहायक होते हैं। 3.3 कुछ ऊतक पौध को यांत्रिक सहारा प्रदान करते हैं। 3.4 विभिन्न कार्यों के सम्पादन हेतु ऊतकों में भिन्नता होती है। नोट : Ground Tissue को विस्तार से दिया जाये।	प्रयोग द्वारा (जलकुम्भी के अग्र सिरों को काटकर पुन: जल में छोड़कर) गुलमेंहदी अथवा टमाटर के पौधों को काटकर रंगीन पानी में रखकर निरीक्षण करवाना व निष्कर्ष निकलवाना। प्रयोग, भ्रमण एवं समूहचर्चा द्वारा। परिर्चा के माध्यम से एवं अवलोकन कराकर।	अवलोकन कराते हुए पृच्छा
४.	**विभिन्न प्रकार के जन्तु ऊतक** 4.1 इमोथीलियम ऊतक शरीर और अंगों का स्तर बनाते हैं। 4.2 संयोजी ऊतक विभिन्न अंगों को जोड़ते हैं और सहारा प्रदान करते हैं। 4.3 पेशी ऊतक सिकुड़ कर अंगों को गति प्रदान करने में सहायक होते हैं और जन्तु को चलने में सहायता देते हैं। 4.4 तंत्रिका ऊतक उद्‌दीपन के संवहन में सहायता पहुँचाता है और सहायता करता है।	मनुष्य के आमाशय की आन्तरिक संरना के चित्र के माध्यम से, ऊतकों के प्रकार, परिचर्चा, चित्रों का प्रदर्शन एवं उच्चारण। हाथ की पेशियाँ, हृदय का धड़कना, दौड़ना आदि क्रियाओं के माध्यम से।	

क्रमांक	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया- साधन सामग्री	मूल्यांकन
1.	**जल के अवयवी तत्वों का ज्ञान –** 1.1 जल के आवयी तत्वा हाइड्रोजन एवं आक्सीजन हैं। 1.2 इनमें आयतानुसार 2.1 का अनुपात होता है।	प्रयोग प्रदर्शन एवं परिचर्चा द्वारा **साधन सामग्री –** द्रोणिका, जल, मोमबत्ती, माचिस	तुलना तथा अवलोकन एवं परिचर्चा द्वारा।
2.	**जल के भौतिक एवं रासायनिक गुण–** 2.1 ऊष्मा का सुचालक है। 2.2 बर्फ जल का ही एक रूप है तथा जल से हल्का होता है। 2.3 कुछ धातुओं (Na, Mg) के साथ क्रिया।	प्रयोग प्रदर्शन एवं परिचर्चा द्वारा **साधन सामग्री –** बीकर, बर्फ	विचारों के आदान प्रदान से एवं कौशल द्वारा।
3.	**जल एक अच्छा विलायक है।** 3.1 लवण तथा खनिजों हेतु। 3.2 O_2 N_2 एवं CO_2 हेतु। 3.3 जल में विलेय O_2 जल जन्तुओं के श्वसन में। 3.4 जल में विलेय लवण से जल खारा हो जाता है। 3.5 जल की दी गयी मात्रा में किसी दिये गये ताप पर विलेय पदार्थ की मात्रा सीमित होती है। 3.6 ताप और विलायक की मात्रा का विलेयता पर प्रभाव।	प्रयोग प्रदर्शन, चार्ट एवं परिचर्चा द्वारा। परिवेश के भ्रमण द्वारा। **साधन सामग्री –** नमक, पानी, सोडावाटर की बोतल, ग्लूकोज, चीनी आदि।	
4.	**जल के खारापन के कारण –** 4.1 अत्यधिक मात्रा में खनिजों के विलेय होने के कारण। 4.2 सामान्यत: जल मृदा में उपस्थित लवणों एवं खनिजों को घोलता हैं 4.3 नदियों तथा वर्षा से सागरों को स्वच्छ जल मिलता है, परन्तु सतत वाष्पीकरण से खारा हो जाता है। 4.4 खारे जल की अनुपयुक्तता। 4.5 समुद्र साधारण नमक का स्रोत है।	भ्रमण एवं परिचर्चा द्वारा।	
5.	**जल की कठोरता –** 5.1 जल में Mg के लवणों की उपस्थिति उसे कठोर बना देती है। 5.2 कठोर जल घरेलू एवं औद्योगिक उपयोग हेतु अनुपयुक्त। 5.3 जल की कठोरता दूर करने की विधियाँ– – रासायनिक क्रिया एवं आसवन विधि से।	दैनिक जीवन के अनुभव एवं प्रयोग प्रदर्शन तथा परिचर्चा द्वारा – **साधन सामग्री –** केतली, बर्तन, साबुन, कपड़ा आदि।	
6.	**जल का आसवन विधि द्वारा शुद्ध करना –** 6.1 100°C पर जल का वाष्पन के रूप में परिवर्तित होना। 6.2 वाष्प के ठंडा होने पर जल के रूप में संघनित होना। 6.3 खारे जल के खारेपन को दूर करके उसे पीने एवं बर्तन में रखने योग्य बनाया जा सकता है।		
7.	**जल को प्रदूषित करने वाले कारक –** 7.1 सजीव और निर्जीव की उपस्थिति से। 7.2 जीवाणुओं, जैविक पदार्थों, मूलमूत्र-प्रवाह एवं मानव क्रियाकलापों से। 7.3 औद्योगिक इकाइयों द्वारा निष्काषित वर्ज्य पदार्थ द्वारा। 7.4 कार्बनिक एवं अकार्बनिक रसायनों एवं उर्वरकों के प्रयोग द्वारा। 7.5 घरेलू क्रियाकलापों से। 7.6 जीवधारियों के लिएप्रदूषित जल हानिकारक हैं 7.8 जल-प्रदूषण नियंत्रित करने के उपाय।	भ्रमण एवं परिचर्चा द्वारा।	

क्रमांक	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया- साधन सामग्री	मूल्यांकन
1.	**हवा क्या है –** 1.1 गैस, जलवष्प और ठोस के सूक्ष्म कणों का मिश्रण है।	भ्रमण एवं परिचर्चा द्वारा।	क्रियाकलापों द्वारा कौशलात्मक क्रिया द्वारा प्रश्न एवं परिचर्चा द्वारा।
2.	**वायु के अवयवों की प्रतिशतता –** 2.1 कुछ अवयवों का विशिष्ट प्रतिशत होता हे, जो स्थान-स्थान पर परिवर्तित होता है। 2.2 O_2 N_2 और CO_2 विशेष प्रतिशत कें होते हैं, जो उपेक्षणीय मात्रा में परिवर्तित होते हैं। 2.3 जल-वाष्प एवं सूक्ष्म ठोस कणों की मात्रा में स्थान एवं समय के अनुसार पर्याप्त परिवर्तन होता है।	प्रयोग प्रदर्शन, निरीक्षण एवं परिचर्चा द्वारा।	
3.	**हवा के कुछ घटकों का प्रतिशत मानव क्रियाओं द्वारा परिवर्तित होता है –** 3.1 हवा द्वारा भूमि का क्षरण होने वाले स्थानों में धूल के कणों की मात्रा अधिक होती है। 3.2 ईंधन के जलने से वायु धूम्र एवं CO_2 की मात्रा बढ़ती है। 3.3 औद्योगिक कारखानों से अधिक मात्रा में निकलने वाली गैसें सल्फर डाई आक्साइड एवं हाइड्रोजन सल्फाइड आदि गैसों से युक्त होती है। 3.4 मृत जीवों के अवशिष्टों से वायु में हाइड्रोजन सल्फाइड एवं अमोनिया आदि मिलती है।	परिवेश का भ्रमण, निरीक्षण और अवलोकन, परिचर्चा द्वारा।	
4.	**आक्सीजन का बनाना –** 4.1 प्राकृतिक एवं रासायनिक दोनों स्त्रोतों से तैयार की जाती है। 4.2 हरी वनस्पतियाँ प्रकृति में प्रकाश संश्लेषण से आक्सीजन बनाती है। 4.3 आक्सीजन सक समृद्ध पदार्थों को गरम करके (पोटेशियम क्लोरेट, परमैंगनेट) प्रयोग प्रदर्शन। 4.4 अधिक मात्रा में वायु से।	प्रयोग प्रदर्शन एवं परिचर्चा द्वारा। **साधन सामग्री –** बीकर, हाइड्रिला, परखनली, पोटैशियम परमैंगनेट तथा पोटैशियम क्लोरेट आदि।	क्रियाकलाप आधारित प्रश्न, पृच्छा प्रपत्र द्वारा।
5.	**वायु के प्रदूषित होने के कारण –** 5.1 अनैच्छिक पदार्थों के संयोग से। 5.2 कार्बन डाई आक्साइड से। 5.3 अन्य गैसों एवं कणों की उपस्थिति से। 5.4 बन्द परिवेश में धूम्रपान करने वाले स्त्रोतो से।	पूर्वज्ञान, भ्रमण एवं परिचर्चा द्वारा।	

क्रमांक	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया- साधन सामग्री	मूल्यांकन
6.	**प्रदूषित वायु का जीवधारियों पर प्रभाव –** 6.1 सभी जीव प्रदूषित वायु से न्यूनाधिक प्रभावित होते हैं। 6.2 प्रकाश संश्लेषण को प्रभावित करना। 6.3 नशीली एवं दुर्गन्धयुक्त गैसें मनुष्य एवं अन्य जन्तुओं तथा पौधों में हानिकारक लक्षण पैदा करते हैं। 6.4 प्रदूषित वायु से बीमारियाँ तथा व्यतिक्रम उत्पन्न होता है। 6.5 कार्बन मोनो आक्साइड मनुष्य एवं जीवधारियों के लिए घातक। 6.6 कार्बन डाई आक्साइड पौधों के लिए लाभदायक।	प्रयोग प्रदर्शन, निरीक्षण्धा, नअुभव एवं परिचर्चा द्वारा। **साधन सामग्री –** मोमबत्ती, अंगीठी, कोयला, पानी, पंखा आदि।	
7.	**हवा के घटकों का उपयोग –** 7.1 बीमारियों, पर्वतारोहण, गोताखोरी और अन्तरिक्ष यात्रा में O_2 का उपयोग होता हैं 7.2 O_2 जलने में। 7.3 नाइट्रोजन उर्वरक बनाने मैं 7.4 CO_2 पोधों के लिए प्रकाश संश्लेषण द्वारा भोजन बनाने में। 7.5 CO_2 आग बुझाने में, अग्निशमन यंत्र का सचित्र वर्णन और इसके प्राप्ति हेतु बैंकों, कार्यालयों, रेलवे स्टेशनों को बताया जाये।	भ्रमण, प्रयोग प्रदर्शन, निरीक्षण एवं परिचर्चा द्वारा। **साधन सामग्री –** गमले में लगा पौधा।	

क्रमांक	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-साधन सामग्री	मूल्यांकन
1.	**पौधे एवं जन्तु हमारे शरीर को कई प्रकार से प्रभावित करते हैं –** 1.1 कुछ जीवधारी हमारे लिये हानिकारक हैं। 1.2 अधिकांश जीवधारी हमारे लिये लाभदायक। 1.3 कुछ पौधे खुजलाहट पैदा करते हैं। 1.4 कुछ पौधे जहरीले होते हैं। 1.5 कुछ दूसरों को काटते हैं। जबकि कुछ अन्य पौधे जन्तुओं में रोग उत्पन्न करते हैं। 1.6 कुछ जन्तु रोगों के वाहक हैं। 1.7 कुछजन्तु फसल तथा अन्य पौधों को नष्ट करते हैं।	लाभदायक, हानिकारक जन्तुओं के चार्ट्स मॉडल, संग्रह एवं परिवेश क ी सहायता से परिचर्चा। पर्यावरण के माध्यम से हानिकारक एवं लाभदायक जन्तु एवं पादपों का अलग-अलग सूचीकरण। रोग उत्पन्न करने वाले जन्तुओं के चार्ट्स के माध्यम से परिचर्चा। लाभदायक जन्तुओं के चार्ट्स के माध्यम से, मधुमक्खी, लाख का कीट, केंचुआ आदि की परिचर्चा।	अवलोकन कराते हुए पृच्छा। सूचीकरण कराकर। अवलोकन के साथ पृच्छा।
2.	**पौधों का बहुत आर्थिक महत्व है –** 2.1 कुछ लाभदायक पौधों की खेती होती है। 2.2 सब्जी, फल, दालें, मसालें, तेल तथा रेशे पौधों से प्राप्त होते हैं। 2.3 पौधों से हमें दवाएँ, इमारती लकड़ी, ईंधन प्राप्त होते हैं। 2.4 सजावट के मकसद से कुछ पौधों की बन्धन बाड़।	पर्यावरण के माध्यम से बोध कराना कि फसली पौधे खाद्य पदार्थ देते वाले हैं। सब्जी तथा फलों के चाट्स, परिचर्चा द्वारा व्याख्या। वृक्षों के चार्ट के माध्यम से युक्ल्प्टस तथा पॉपुलर आदि के वृक्षों की लकड़ी के उपयोग बताना।	सूचीकरण कराकर। बन्धनवाड़ वाले पेड़ पौधों का चार्ट से पृच्छा द्वारा।
3.	**जन्तु हमारे लिए कई प्रकार से लाभदायक हैं–** 3.1 जन्तुओं सये हमें भारी संख्या में उत्पाद मिलते हैं। 3.2 कुछ लाभदायक जन्तु पालतू होते हैं जबकि अन्य जंगली होते हैं। 3.3 कुछ मछलियों से खाने का तेल मिलता हैं। 3.4 भेड़, बकरी तथा पोल्ट्री चिड़ियों से हमें गोश्त व अण्डे मिलते हैं। 3.5 चौपायों से दूध भी प्राप्त होता है। 3.6 शहद की मक्खी से शहद मिलता है। 3.7 भेड़ व बकरी से ऊन मिलता है। 3.8 रेशम के कीड़े रेशम देते हैं। 3.9 अनेक जन्तुओं की त्वचा एवं चमड़ा विभिन्न उद्देश्यों से उपयोगी होता है। 3.10 हाथी दाँत एवं जन्तु उत्पाद हैं। 3.11 चूना एवं मोती जन्तुओं से प्राप्त होते हैं। 3.12 लाख के कीटों से लाख मिलता है। 3.13 कुछ जन्तुओं को पेंट्स के रूप में रखते हैं। 3.14 प्रयोगशालीय अध्ययन में कुछ जन्तु प्रयोग होते हैं। 3.15 कुछ जन्तु कार्य-जन्तु वाहक (ट्रांसपोर्ट) के रूप में लाभदायक है।	भ्रमण कराकर परिचर्चा द्वारा एवं लाभदायक कीटों के चार्ट के माध्यम से मधुमक्खी से शहद, रेशम के कीट से रेशम तथा लाख के कीट से लाख का उल्लेख। पर्यावरण एवं चार्ट के माध्यम से लाभदायक जन्तुओं का उल्लेख। लभदायक जन्तुओं का सूचीकरण कराना। भ्रमण द्वारा एवं भार-वाहक पशुओं के चार्ट द्वारा परिचर्चा के माध्यम से मेढक, तिलचट्टा, केंचुआ, मछली, घोंघा, सीपी आदि का अगली कक्षाओं में विच्छेदन किया जाता है, बोध कराना।	अवलोकन कराते हुए

विषय – विज्ञान

इकाई का नाम - 13 भोजन, स्वरस्थ्य एवं रोग **कक्षा - ७**

क्रमांक	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया साधन सामग्री	मूल्यांकन
1.	**वृद्धि और जीवन बनाये रखने के लिए भोजन आवश्यक है।** 1.1 वृद्धि और जीवन बनाये रखने के लिए भोजन आवश्यक है। 1.2 भोजन से आवश्यक पदार्थ और कार्य करते योग्य ऊर्जा मिलती है। 1.3 जन्तु अन्य जीवधारियों से भोजन प्राप्त करते हैं।	दैनिक आहार की तालिका बनाकर निष्कर्ष निकलवाना। स्वस्थ व्यक्ति तथा भूखे व्यक्ति की कार्य क्षमता में अन्तर बताकर ऊर्जा का बोध। विभिन्न जीवधारियों द्वारा लिये जाने वाले भोजन की परिचर्चा करके सारणी बनवाएँ निष्कर्ष निकलवाएँ कि जन्तु अपना भोजन स्वयं नहीं बनाते।	सूचीकरण द्वारा। अवलोकन कराते हुए पृच्छा। परिचर्चा के साथ पृच्छा द्वारा। सारणी बनवाकर पृच्छा द्वारा।
2.	**भोजन विभिन्न प्रकार के आधारीय घटकों से मिलकर बना होता है–** 2.1 भोज्य पदार्थों का वर्गीकरण भोजन के अन्दर के अवयव के आधार पर होता हैं कार्बोहाइड्रेट, वसा, विटामिन, जल। 2.2 कार्वोहाईड्रेट मुख्यत: ऊर्जा देता है। 2.3 वसा भी ऊर्जा देती है। 2.4 प्रोटीन मुख्यत: शरीर की रचना हेतु पदार्थ बनने में सहायता करती है। 2.5 शरीर के सामान्य कार्यों में विटामिन और खनिज लवण सहायक होते हैं। 2.6 पानी भोजन का आधार भूत घटक है और अन्य पोषक पदार्थों के प्रयोग हेतु आवश्यक है। 2.7 भोजन में रफ़ेज की कुछ मात्रा आवश्यक है। 2.8 भोजन के कुछ यौगिक या अवयव जीवधारी नहीं बना सकते हैं। 2.9 विभिन्न भोजन पदार्थों में विभिन्न घटक होते हैं।	आटा, बेसन, घी, संतरा आदि के माध्यम से परिचर्चा करके सारणी बनवाना। घी, दलिया, चना, रोटी, के माध्यम से परिचर्चा। भोजन, गाजर, मूली, खीरा की सहायता से निष्कर्ष निकलवाएँ कि सलाद से दाँतों में भोजन फँसता नहीं और पेट में आसानी से खिसकता है। संतुलित भोजन के चार्ट द्वारा परिचर्चा।	पृच्छा द्वारा। प्रश्नोत्तर
3.	**अच्छे स्वास्थ्य के लिए संतुलित आहार आवश्यक –** 3.1 संतुलित आहार उचित प्रकार एवं उचित मात्रा में पोषण पदार्थ देता है। 3.2 विभिन्न प्रकार के भोजन के सही संयोग से संतुलित आहार बनता हैं 3.3 आयु और कार्य की प्रकृति के आधार पर संतुलित आहार बदलता रहता है। 3.4 संतुलित आहार की प्राप्ति भोजन के ठीक चयन से होती है न कि मूल्य से। 3.5 भोजन का चयन उसके पोषण मूल्य और Nutrition Value पर आधारित होना चाहिए।	संतुलित आहार के चार्ट किस पोषक तत्व की कमी से, कौन सा रोग – व्याख्या तथा सारणी बनवाना।	सारणी पूरी कराकर, पृच्छा द्वारा।

पच्छा द्वारा।

4.	**अच्छे स्वास्थ्य के लिये सही भोजन आवश्यक।** 4.1ठीक प्रकार का उचित मात्रा में भोजन व्यक्तिगत स्वास्थ्य निश्चित करता है। 4.2 अपर्याप्त भोजन कुपोषण उत्पन्न करता है। 4.3 कार्बोहाइड्रेट की कमी से क्षीण वृद्धि, स्कर्वी रोग, रतौंधी, बेरी-बेरी, कब्ज़ और सूखा रोग हो जाता है। 4.5 खनिजों की कमी से रूधिर अल्पता और दोषपूर्ण दाँत विकसित हो जाते हैं।	विटामिन प्राप्ति के साधन से सम्बन्धित चार्ट के माध्यम से स्कर्वी, सूखा, बेरी-बेरी, क्षीण वृद्धि का कारण विटामिन न मिलना, उल्लेख।	
5.	**भोजन के परीक्षण की आवश्यकता है–** 5.1 पके या बिना पके दोनों ही भोजन बहुत देर तक रखे रह जाने से खराब हो जाते हैं। 5.2 बिना पके (कच्चे) भेजन को रोडन्ट कीट पतंगे, बैक्टीरिया से बचाव की आवश्यकता है। 5.3 पके भोजन के सूक्ष्म कीटों से बचाने की आवश्यकता है। 5.4 भोजन साधारण विधियों द्वारा परिरक्षित किया जा सकता है जैसे कि अन्तराल से उबालना और ठण्डा करना। 5.5 खराब भोजन एवं दूषित जल व्यतिक्रम और रोग उत्पन्न करते हैं।	पके फल (कटे हुए) के माध्यम से निष्कर्ष– सभी प्रकार के भोजन पदार्थ खुली हवा में फफूँद व जीवाणुओं के कारण खराब हो जाते हैं। फ्रिज, उबालना, रसायन, जैम, जैली के माध्यम से परिचर्चा।	परीक्षण कराते हुए पृच्छा द्वारा। अवलोकन कराते हुए पृच्छा।
6.	**स्वास्थ्य विज्ञान के ज्ञान, स्वच्छता और लोगों की आदतों पर स्वास्थ्य जीवन निर्भर है।** 6.1 स्वास्थ्य में व्यतिक्रम शरीर के उचित ढंग से कार्य न करते का परिणाम है। 6.2 रोग भी व्यतिक्रम उत्पन्न करते हैं। 6.3 कुछ रोग सूक्ष्मजीवों के कारण उत्पन्न (उदाहरण दें।) 6.4 रोग उत्पन्न करने वाले जीव जल द्वारा भी (उदाहरण दें) 6.5 वायु द्वारा भी संदूषण होता है। 6.6 कुछ रोग शारीरिक सम्पर्क से फैलते हैं। 6.7 वाहक जीवधारियों के द्वारा भी रोगों का ट्रांसमीशन होता है। 6.8 व्यक्तिगत स्वच्छ आदतें और पर्यावरणीय स्वच्छता भी व्यक्ति और समाज के स्वास्यि को प्रभावित करते हैं। 6.9 उचित पर्यावरणीय स्वच्छता से रोगों का फैलना रूकता है। 6.10 कुछ रोग संचारी नहीं होते हैं। (उदाहरण देना) 6.11 कुछ व्यक्तिगत आदतें जैसे धूम्रपान और नशीली वस्तुओं का आदी होता खतरनाक है।	हैजा, नेत्र लाल होना, मलेरिया, चेचक तथा डायरिया रोग का – मौसम, माध्यम, रागाणु का नाम, दृश्य या अदृश्य कालम के चार्ट द्वारा परिचर्चा भ्रमण कराते हुए स्वास्थ्य सम्बन्धी पूर्ण जानकारी। मच्छरों का उन्मूलन सफाई अभियान के द्वारा बोध कराना कि मलेरिया व हैजे की रोकथाम गन्दगी न जमा होने देने से हो सकती है। परिचर्चा एवं शराबी मनुष्य के चार्ट द्वारा निष्कर्ष निकलवाना।	चार्ट दिखाकर पृच्छा द्वारा। पुच्छा सफाई अभियान के बीच पृच्छा द्वारा। परिचर्चा के बीच पृच्छा।

विषय – विज्ञान

इकाई का नाम - 14 मृदा (मिट्टी)

कक्षा - ७

क्रमांक	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया साधन सामग्री	मूल्यांकन
1.	**मृदा संगठन – विभिन्न अवयवों से हुआ है।** 1.1 मृदा (मिट्टी) विभिन्न रंगों तथा संकणों की होती है। 1.2 मृदा के कणों पर उर्वरा शक्ति निर्भर करती है।	1. प्रयोग प्रदर्शन एवं प्रेक्षण – मिट्टी के विभिन्न सैम्पल द्वारा। 2. अवलोकन एवं परिचर्चा – सांप, दीमक, चींटी की बाँबी को दिखाकर	1. प्रश्नोत्तर प्रविधि 2. समूह कार्य में अवलोकन 3. परिचर्चा में अवलोकन 4. सूची निर्माण द्वारा।
2.	**मृदा निर्माण चट्टानों पर मौसम के प्रभाव से होता है–** 2.1 वायु वर्षा और बहता हुआ जल चट्टानों को तोड़कर छोटे-छोटे कणों के बनाने में सहायक है।	3. भ्रमण – सड़कों के किनारे भ्रमण द्वारा वृक्षारोपण को स्पष्ट करना। 4. अवलोकन एवं उपयोग पर चर्चा – कुम्हार की काकर्यशाला।	5. प्रयोग / प्रेक्षण के समय प्रश्न (पृच्छा) 6. भ्रमण के दौरान प्रश्न।
3.	**मृदा महत्वपूर्ण प्राकृतिक सम्पदा है।** 3.1 मिट्टी जीवों के लिये वास स्थान का कार्य करती है। 3.2 जीवों के लिए मृदा खनिज लवण प्रदान करती है। 3.3 मृदा का उपयोग भवन निर्माण, बर्तन निर्माण में होता है।	5. वृक्षारोपण के महत्व पर समूह परिचर्चा। 6. बच्चों द्वारा समूह कार्य – उपयोग, भूमि कटाव, वृक्षारोपण, उपजाऊ और ऊसर मिट्टी पर।	
4.	**मृदा अपरदन विभिन्न स्त्रोतों से होता है।** 4.1 पौधों की जड़ें मिट्टटी को बाँधकर भूमि कटाव रोकती है। 4.2 भूमि को वृक्षहीन रखने से भूमि कटाव होता है।	**साधन सामग्री –** 1. विभिन्न पदार्थों से मिट्टी – ऊसर, उपजाऊ मिट्टी 2. दीमक की (बाँबी) / चींटी का घर / बर्र का घर	
5.	**मनुष्य के विभिन्न कार्यों से मृदा प्रदूषित होती है।** 5.1 रासायनिक पदार्थों से मृदा प्रदूषित होती है।	3. कुम्हार के कच्चे बर्तन 4. वृक्षारोपण सम्बन्धी	

विषय – विज्ञान

इकाई का नाम - 1 कार्बन और उसके यौगिक

कक्षा - ८

क्रमांक	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया साधन सामग्री	मूल्यांकन
1.	**कार्बन की उपस्थिति (सजीव या निर्जीव में) –** 1.1 कार्बन और उसके यौगिक उपयोगी हैं। 1.2 कार्बन यौगिक सभी सजीवों, भोजन, बसा एवं विटामिन का निर्माण करते हैं। 1.3 कार्बन यौगिक के बहुत से प्रकार औषधियों में प्रयुक्त होते हैं। कुछ औषधियों के नामों का उल्लेख। 1.4 निर्जीव वस्तुओं में कार्बन मुक्त या यौगिक के साथ में उपस्थित हो सकता है।	प्रयोग, प्रदर्शन एवं परिचर्चा द्वारा **साधन सामग्री –** कागज, लकड़ी, रबर, टायर, ग्रेफाइट, पेन्सिल आदि।	
2.	**प्रकृति में कार्बन बहुत से रूपों में पाया जाता है–** 2.1 हीरा, ग्रेफाइट,, कोयला, लकड़ी का कोयला, कोक आदि कार्बन के रूप हैं। 2.2 कार्बन के विभिन्न रूपों के विभिन्न गुण उपयोगी होते हैं।	अवलोकन कराकर परिचर्चा **साधन सामग्री –** हीरा, ग्रेफाइट, कोयाला, लकड़ी आदि।	
3.	**कार्बनिक रसायन का परिचय –** 3.1 H_2 के साथ कार्बन के यौगिक हाइड्रोकार्बन कहलाते हैं। मेथेन, एथेन, एथिलीन एवं सटिलीन के सूत्र। 3.2 सरलतम हाइड्रोकार्बन, मेथेन–वायु की अनुपस्थिति में मृत पोधों के सड़ने से बनती है। 3.3 मेथेन कोयले की खानों में भी पायी जाती है।	चार्ट, अवलोकन एवं परिचर्चा द्वारा। **साधन सामग्री –** छिद्रयुक्त मिट्टी की गोलियां, रंग, झाडू की सींक आदि।	
4.	**कार्बन ईंधन का आवश्यक अवयव है–** 4.1 दैनिक जीवन में ईधन मुख्यभूमिका निभाता हैं जैसे– भोजन पकाने, यातायात एवं उद्योग में। 4.2 ईंधन के बहुत से स्रोत हैं। 4.3 भिन्न-भिन्न प्रकार के ईंधन भिन्न-भिन्न मात्रा में ऊर्जा एवं ऊष्मा उत्पन्न करते हैं। कोयला, मिट्टी का तेल, पेट्रोल, लकड़ी, गैसीय ईंधन से प्राप्त ऊष्मा का ज्ञान कराया जाय (गुणात्मक ज्ञान) 4.5 अधिक परम्परागत ईंधनों में कार्बन यौगिकों के दहन से ऊर्जा प्राप्त होती है। 4.6 ईंधन का चयन, उसके उपयोग, सुविधा और आवश्यकता पर निर्भर करता है।	भ्रमण एवं प्रदर्शन जैसे – 1. यातायात के साधनों का 2. उद्योगों का 3. ईट भ्टठों का 4. चूना भट्ठी आदि का **साधन सामग्री –** पर्यावरण में उपलबध ईधन जैसे– लकड़ी, कोयला, मिट्टी का तेल, कुकिंग गैस आदि।	

5.	**पेट्सेलियम ईंधन तथा अन्य उत्पाद का प्रमुख स्त्रोत है–** 5.1 पेट्रोलियम जीवाश्म ईंधन है, जो मुख्यत: हाईड्रोकार्बनों के कारण, मृतजीवों और पौधों के अपघटन से बनता है। 5.2 पेट्रोलियम बहुत से हाइड्रोकार्बन (ठोस, द्रव एवं गैस) का मिश्रण है। 5.3 उद्योगों हेतु पेट्रोलियम एक प्रमुख कच्चा माल है। 5.4 पेट्रोलियम के आंशिक आवन से बहुत से उपजात पेट्रोरसायन के रूप में प्राप्त होते हैं, जो बहुत उपयोगी है।	भ्रमण, परिचर्चा एवं प्रदर्शन तथा अवलोकन द्वारा पुष्टि। **साधन सामग्री** – परिवेश में पाये जाने वाले पेट्रोलियम प्रदत्त वस्तु	
6.	**कोल, ईधन और उसके अन्य उत्पादों का दूसरा स्त्रोत है–** 6.1 कोल जीवाश्म ईधन हैं, जो पृथ्वी पर्त के अन्दर से लाखों वर्षो से दबे मृत पौधों पर उच्च ताप एवं दाब के प्रभाव से बनता है। 6.2 कोल को गर्म करके कोक एवं चारकोल प्राप्त किया जा सकता हैं 6.3 अनेकों उपयोगी रसायनों के औद्योगिक निर्माण में चारकोल का उपयोग। 6.4 कोक ईधन के रूप में प्रयुक्त होता हैं 6.5 कोल की गुणवत्ता उसमें उपस्थित कार्बन की प्रतिशतता से ज्ञात की जाती हैं 6.6 कोल के प्रकार	1. पूर्वज्ञान तथा परिचर्चा द्वारा 2. निरीक्षण द्वारा **साधन सामग्री** – कोलतार, चारकोल, कोक	
7.	**किसी वस्तु का दहन आक्सीजन की उपस्थित में होता है–** 7.1 कुछ धातुएँ दहनशील है कुछ नहीं। 7.2 दहन सदैव O_2 की उपस्थिति में होता है। 7.3 दहन से प्रकाश एवं उष्मा उत्पन्न होती है। 7.4 दहन के लिए आवश्यक ३ शर्तें। 7.5 तेल-दहन, तत्काल-दहन एवं विस्फोट ये सभी दहन के प्रकार हैं। 7.6 दहनशील पदार्थों के हटाने से, O_2 युक्त वायु को रोक देने से, CO_2 का प्रवाह करने से,, आग पर धूल डालने से आग बुझाई जा सकती है।	प्रयोग प्रदर्शन एवं उदाहरण द्वारा **साधन सामग्री** – मोमबत्ती, मिट्टी का तेल, पेट्रोल, गिलास, उपले आदि। भ्रमण, एवं प्रदर्शन तथा अवलोकन द्वारा	

क्रमांक	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया साधन सामग्री	मूल्यांकन
1.	**मानव की ऊर्जा की आवश्यकताओं की विभिन्न स्त्रोतों से पूर्ति –** 1.1 पौधों और जीवों से प्राप्त भोजन सजीवों को ऊर्जा देने में प्रयुक्त होता है। 1.2 सूर्य – ऊर्जा का स्त्रोत है। 1.3 ईंधन ऊर्जा का स्त्रोत है। 1.4 विद्युत ऊर्जा का दूसरा स्त्रोत है। 1.5 मल-मूत्र, गोबर आदि ऊर्जा के स्त्रोत हैं।	1. विभिन्न स्त्रोतों का उदाहरण सहित,, स्पष्टीकरण। 2. सूर्य ऊर्जा का प्रमुख स्त्रोत – दैनिक जीवन के उदाहरणों द्वारा बोध। 3. विभिन्न प्रकार के ईंधन ऊर्जा के स्त्रोत, परिचर्चा एवं उदाहरण द्वारा स्पष्टीकरण। 4. बायो गैस प्लान्ट अथवा इसका चित्र दिखाकर, मलमूत्र, गोबर आदि से प्राप्त ऊर्जा का व्यवहारिक उपयोग – परिचर्चा	1. ऊर्जा के स्त्रोतों की सूची द्वारा। 2. सौर ऊर्जा एवं इसके उपयोग प्रश्नोत्तर द्वारा। 3. बायो गैस प्लांट से प्राप्त ऊर्जा पर प्रश्नोत्तर, नामांकित चित्र।
2.	**ऊर्जा के कुछ स्त्रोत पुनः प्राप्त करने योग्य हैं और कुछ नहीं–** 2.1 ईंधन गैसे कोयला, पेट्रोलियम उत्पाद आदि पुनः न प्राप्त होने वाले ऊर्जा के स्त्रोत हैं। 2.2 पुनः न प्राप्त वाले स्त्रोत समाप्त हो जाते हैं। 2.3 पुनः न प्राप्त होने वाले ऊर्जा स्त्रोत पर सतत् सघनरूप से निर्भरता ऊर्जा संकट उत्पन्न कर सकती है। 2.4 जल, ऊर्जा, वायु, जैव ऊर्जा,, सौर ऊर्जा पुनः प्राप्त न होने वाले ऊर्जा के स्त्रोत हैं।	5. बिजली से चलने वाले पंखे, आटा पीसने की चक्की, ट्यूब वेल आदि अथवा इनके चित्र दिखाकर – सम्बोध का स्पष्टीकरण। 6. पुनः न प्राप्त होने वाले ऊर्जा के स्त्रोत- कोयला, पेट्रोलियम आदि क्योंकि दहन के पश्चात् ये समाप्त हो जाते हैं। परिचर्चा द्वारा बोध।	4. बिजली से चलने वाले उपकरणों की सूची। 5. पुनः न प्राप्त होने वाले ऊर्जा के स्त्रोतों की सूची।
3.	**हमारे जीवन के लिए ऊर्जा आवश्यक है।** 3.1 जीवन के अस्तित्व के लिए ऊर्जा की आवश्यकता। 3.2 भोजन पकाने, प्रकाश उत्पन्न करने, गर्म करने, यातायात आदि के लिए ऊर्जा की आवश्यकता। 3.3 उद्योग और कृषि के लिए ऊर्जा।	7. चलती वायु से कागज की फिरकी घूमने का प्रदर्शन। बहते जल से टरवाइन का घूमना। चित्र द्वारा प्रस्तुतीकरण एवं पुनः ऊर्जा प्राप्त करने वाले ऊर्जा के स्त्रोत का बोध। 8. दैनिक जीवन के उदाहरणों द्वारा ऊर्जा की आवश्यकता का बोध, परिचर्चा।	6. पुनः प्राप्त होनेवाले ऊर्जा के स्त्रोतों के अधिकाधिक उपयोग की आवश्यकता– प्रश्नोत्तर द्वारा।
4.	**ऊर्जा की मांग वृद्धि की ओर है।** 4.1 मनुष्य के बढ़ते हुए क्रियाकलापों के साथ 4.2 जनसंख्या वृद्धि के साथ।	9. जनसंख्या विस्फोट के फलस्वरूप अधिक साधन एवं ऊर्जा की आवश्यकता पर परिचर्चा, स्पष्टीकरण।	7. जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में ऊर्जा की आवश्यकता पर प्रश्न।
5.	**वैकल्पिक ऊर्जा स्त्रोतों का विकास, उपयोग अति आवश्यक है–** 5.1 पुनः प्राप्त हो सकने वाले ऊर्जा स्त्रोतों का अत्यधिक उपयोग ऊर्जा संकट हल करने में सहायक हैं। 5.2 सौर ऊर्जा, वायु, ज्वारभाटा जैविक पदार्थ, जल आदि की ऊर्जा पर आश्रित युक्तियाँ, वैकल्पिक ऊर्जा के स्त्रोत के रूप में ऊर्जा संकट हल करने में सहायक। 5.3 नाभिकीय ऊर्जा एक न समाप्त होने वाला ऊर्जा स्त्रोत है।	10. वायु, जल पुनः प्राप्त होने वाले ऊर्जा के स्त्रोतों के अधिकाधिक उपयोग की आवश्यकता, उदाहरण, भ्रमण। 11. वैकल्पिक ऊर्जा के स्त्रोत का उपयोग, उदाहरण एवं भ्रमण 12. नाभिकीय ऊर्जा – कभी न समाप्त होने वाला ऊर्जा का स्त्रोत परिचर्चा, सम्बन्धित चित्र / चार्ट का प्रदर्शन।	8. अधिक ऊर्जा की मांग का कारण प्रश्नोत्तर द्वारा। 9. कभी न समाप्त होने वाले ऊर्जा के स्त्रोत पर प्रश्न।
6.	**ऊर्जा का विवेकपूर्ण उपयोग बढ़ती ऊर्जा की मांग को पूरा करने में सहायक–** 6.1 दैनिक क्रियाकलापों में बहुत सी क्रियाओं से ऊर्जा प्राप्त होती है। 6.2 ऊर्जा अपव्यय की रोकथाम और ऊर्जा बचत की उचित आदतों का ज्ञान ऊर्जा बचत में सहायक। 6.3 उचित डिजाइन की युक्तियों का उपयोग और उनका रखरखाव ऊर्जा बचत में सहायक।	13. ऊर्जा का विवेकपूर्ण उपयोग – समूह में कार्य परिचर्चा। **साधन सामग्री –** विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ, पेड़-पौधों, बायो गैस प्लान्ट का चित्र, लकड़ी कोयला का चार्ट, कागज की फिरकी, बहते जल से चलती टरबाइन का चित्र, स्टोव, लैम्प, मोटरकार, ट्रैक्टर, परमाणु भट्टी का चित्र।	

इकाई का नाम - 3 खनिज एवं धातु

कक्षा - ८

क्रमांक	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया साधन सामग्री	मूल्यांकन
1.	**खनिज प्राकृतिक रूप में पाये जाने वाले पदार्थ हैं–** 1.1 खनिज पृथ्वी तल पर, पृथ्वी के गर्भ में, सागर और महासागर में पाये जाते हैं 1.2 मृत जीवों और पौधों के अपघटन के फलस्वरूप एवं तड़त तथा मौसम के चट्टानों पर प्रभाव से खनिजों का निर्माण। 1.3 खनिज शुद्ध पदार्थ हो सकते हैं या मिश्रण। 1.4 चट्टानों दो या दो अधिक खनिजों से जिसमें बालू भी सम्भावित है, से बनी होती है। 1.5 खनिज में धातु व अधातु अपने तत्व में मिश्रित हो सकते हैं।	भ्रमण, अवलोकन तथा प्रदर्शन एवं परिचर्चा द्वारा। **साधन सामग्री** – सोडियम क्लोराइड, लाइम स्टोन, संगमरमर, कोयला, जिप्सम आदि के द्वारा उपसंबोधों की पुष्टि।	तालिका बनाकर प्रश्नोत्तर द्वारा।
2.	**अयस्क एक लाभकर खनिज है, जो धातुओं के निष्कर्षण में प्रयुक्त होता है–** 2.1 सभी अयस्क खनिज हैं परन्तु सभी खनिज अयस्क नहीं हैं 2.2 किसी अयस्क में एक या एक से अधिक धातुएँ हो सकती हैं। 2.3 भारत में अधिकतर खनिज पाये जाते हैं। 2.4 लोहा और कुछ अन्य पदार्थ भारत में आदि काल से प्रयुक्त होते हैं। लोहा, चांदी, एल्यूमिनियम, तांबा, सीसा आदि के कुछ अयस्कों का नाम बताइये।	संग्रहालयों का अवलोकन, शैक्षणिक भ्रमण। पूर्व ज्ञान एवं उदाहरण द्वारा– **साधन सामग्री–** प्राचीन बर्तन, सिक्के, औजार, मुद्राएँ आदि के माध्यम से।	
3.	**अयस्क के धातु निष्कर्षण में विभिन्न पद सम्मिलित हैं (लोहा)** 3.1 सान्द्रण 3.2 सांद्रित अयस्क का जारण। 3.3 कार्बन, हाइड्रोजन सल्फाइड एवं विद्युत विच्छेदन द्वारा अवकरण। 3.4 अशुद्ध धातु का शोधन। 3.5 पिग आयरन एवं इस्पात।	चार्ट एवं भ्रमण।	

4.	**धातुओं के गुण –** 4.1 कठोरता एवं भंगुर। 4.2 अधिकांश ठोस होती हैं 4.3 चमक होती है। 4.4 अधिकांश आघातवर्घ्य एवं तन्य होती हैं। 4.5 उष्मा एवं विद्युत सुचालक होती है। 4.6 धातुओं का घरेलू एवं औद्योगिक वृहत उपयोग है। 4.7 कुछ धातुएँ O_2 से क्रिया करके आक्साइड बनाती है। सोडियम, मैगनीशियम का उदाहरण दें। 4.8 पानी से क्रिया, उपरोक्त धातुओं के उदाहरण के साथ। 4.9 अम्लों की क्रिया (जस्ते के उदाहरण से)	भ्रमण, अवलोकन, प्रयोग प्रदर्शन, भ्रमण एवं परिचर्चा द्वारा – पर्यावरण में उपलब्ध धातुओं के तार, बर्तन, चादरें (धातु) मोमबत्ती, माचिस, टार्च, बल्ब, सेल, मशीनें, आदि द्वारा।	परिवेश भ्रमण से सम्बन्धित प्रश्नों के माध्यम से। कार्यानुभव द्वारा।
5.	**धातुओं का संरक्षण –** 5.1 अम्ल और वायु द्वारा रासायनिक क्रिया। 5.2 संरक्षण रोकने के उपाय।	प्रयोग प्रदर्शन एवं निरीक्षण द्वारा **साधन सामग्री –** रेगमाल, तार, बर्तन, पानी नींबू, सिरका आदि।	
6.	**संकर धातु –** 6.1 संकर धातु धातुओं का संभाग मिश्रण है, जिन्हें धातुओं को एक साथ गलाकर बनाया जाता है। 6.2 धातुओं के बहुत से गुण प्रदर्शित करता है। 6.3 कुछ विशिष्ट गुण प्रदर्शित करते हैं, जो उनके अवयवों से भिन्न होते हैं। 6.4 घरेलू एवं औद्योगिक क्षेत्र में कुछ उपयोग।	अनुभव एवं उदाहरण द्वारा **साधन सामग्री –** तांबा, एल्यूमीनियम, पीतल के बर्तन, कीलें, पेन्ट, चमकदार प्लेट आदि।	

क्रमांक	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया साधन सामग्री	मूल्यांकन
1.	**मानव-निर्मित वस्तुओं का उपयोग–** 1.1 वस्त्र रूप में 1.2 भवन निर्माण में 1.3 घरेलू कार्यों में। 1.4 कृषि कार्यों में 1.5 औषधि के रूप में कुछ सामान्य औषधियों के नाम।	1. परिचर्चा एवं प्रदर्शन विधि द्वारा मानव निर्मित वस्तुओं का भवन-निर्माण, घरेलू कार्य तथा कृषि में उपयोग। 2. मानव निर्मित औषधियों पर परिचर्चा एवं सूचीकरण। 3. प्रासंगिक उदाहरण। **साधन सामग्री – ईंट, बालू, बर्तन, उर्वरक आदि।**	1. सूचीकरण 2. पृच्छा प्रपत्र
2.	**संश्लेषित रेशे** 2.1 नाईलान, डेक्रान, रेयान, टेरीलीन इत्यादि। 2.2 एक उच्च आणविक द्रव्यमान वाले पालीमर नाम से जाने वाले यौगिक हैं। 2.3 कुछ गुणों में प्राकृतिक रेशों से अच्छे होते है गुण दें 2.4 आग के प्रति संवेदनशील हैं अत: आग से सावधानी बरतें। 2.5 इनके उपयोग से कुछ लोगों को एलर्जी हो जाती है।	1. वस्तुओं का अवलोकन करवाकर परिचर्चा द्वारा प्रकृति प्रदत्त (सूती, ऊनी एवं रेशमी) तथा मानव निर्मित (नाइलान, डेक्रान, रेयान, टेरिलीन आदि) का स्पष्टीकरण। 2. प्रयोग प्रदर्शन – पृथक टुकड़ों को जलाकर एवं रियान, नायलॉन, पालिस्टर आदि संश्लेषित रेशों से बने वस्त्रों को पहन कर आग से सावधानी बरतना चाहिए यह भी स्पष्ट करें। 3. परिचर्चा द्वारा बोध कराएँ कि असंतृप्त हाइड्रोकार्बन के बहुत से अणु आपस में संयोग करके उच्च अणुभार का यौगिक बनाते हैं जिसे पॉलीमर कहते हैं। **साधन सामग्री** –सूती, ऊनी, रेशमी, टेरिलीन, नायलौन आदि के टुकड़े।	1. प्रकृति प्रदत्त एवं मानव निर्मित संश्लेषित रेशों से बने वस्त्रों का वर्गीकरण। 2. क्रिया आधारित प्रश्नोत्तर।
3	**मानव निर्मित पदार्थ प्लास्टिक** 3.1 अनेकों प्रकार के प्लास्टिक हैं, जो कठोरता, पारदर्शकता एवं द्रवणांक में भिन्न हैं 3.2 प्लास्टिक उच्च आणविक द्रव्यमान के पालीमर हैं। 3.3 इनके गुणों के कारण इनकी उपयोगिता बढ़ जाती हैं। 3.4 प्लास्टिक पुन: प्राप्त हो सकते हैं।	1. अवलोकन एवं स्पष्टीकरण – प्लास्टिक की वस्तुओं का अवलोकन कराएँ एवं पालीमर की परिभाषा स्पष्ट करें। **साधन सामग्री** – पर्यावरण में उपलब्ध पौलीथीन की थैलियां, थर्माकोल का टुकड़ा, प्लग स्विच, प्लास्टिक कप आदि।	1. ज्ञानात्मक प्रश्नोत्तर। 2. पृच्छा प्रपत्र। 3. सूचीकरण।
4.	**कांच** 4.1 बालू (सिलिका) सोडा और चूने का सामांगी मिश्रण है। 4.2 इसका औद्योगिक निर्माण, इसके अवयवी पदार्थो को उच्च ताप पर गलाकर किया जाता है। 4.3 इसकी कोई निश्चित संरचना नहीं होती हैं 4.4 इसकी गुणवत्ता इसके अवयवों और उनकी शुद्धता पर निर्भर होती है। 4.5 इसका उपयोग घरेलू औद्योगिक, भवन सामग्री आदि विशिष्ट कार्यों में। 4.6 कांच के २ या ३ प्रकारों के नाम। 4.7 रंग प्रदान करने में इसमें धात्विक यौगिकों का उपयोग होता है।	1. प्रदर्शन एवं परिचर्चा – कांच की बनी विभिन्न सामग्रियों को दिखाकर परिचर्चा द्वारा कांच के औद्योगिक निर्माण पर प्रकाश। 2. धूप के चश्में का अवलोकन कराकर स्पष्ट करें कि यह आँख को हानिकारक सूर्य की पराबैंगनी किरणों से बचाते हैं। 3. कांच के प्रकार (मृदु, कठोर एवं फ्लिन्ट आदि) को अवलोकन एवं परिचर्चा द्वारा स्पष्ट करें। **साधन सामग्री** – शीशी सोडा बोतल, चश्में के शीशे आदि।	1. कांच के उपयोग से बनी वस्तुओं की सूची बनवाना। 2. कांच के प्रकार तथा उसके निर्माण में प्रयुक्त पदार्थ की तालिका बनवाना। 3. कांच को रंग देने वाले पदार्थ की तालिका बनवाना।

5.	**मृत्तिका और उसके उपयोग** 5.1 मृत्तिका में मिट्टी एवं चीनी मिट्टी (केथालिन) होती है। 5.2 मिट्टी को उच्च ताप पर पका कर मृतिका प्राप्त होती है। 5.3 मृतिका पर चमकदार तह चढ़ाकर इसे जलरोधक बनाया जाता है। 5.4 मृतिका वस्तुओं को रंगीन बनाने हेतु उनमें रंगीन धात्विक यौगिक मिलाते हैं। 5.5 मृत्तिका काक शिल्प, खपरैल, मिट्टी के बर्तन, ईंट, कप, प्लेट आदि में विशिष्ट उपयोग है।	**अवलोकन एवं स्पष्टीकरण –** 1. मिट्टी के बर्तन, खिलौनों का अवलोकन एवं परिचर्चा 2. भ्रमण पर ले जाकर पकते हुए बर्तनों का अवलोकन कराएँ और स्पष्ट करें कि मिट्टी को उच्च ताप पर पकाकर मृतिका बनती है। 3. चीनी मिट्टी के बर्तन के प्रदर्शन एवं अवलोकन द्वारा दोनों में अन्तर स्पष्ट करें। 4. मिट्टी से बने कुछ रंगीन खिलौनों का प्रदर्शन एवं अवलोकन करायें और स्पष्ट करें कि कुछ खिलौनों को पेन्ट से रंग कर रंगीन बनाया जाता है। और कुछ को रंगीन बनाने के लिए मिट्टी में ही रंगीन धात्विक यौगिक मिलाते हैं। **साधन सामग्री** – मिट्टी, चीनी मिट्टी के बर्तन, खपरैल, ईंट, टाइल्स।	1. तुलनात्मक प्रश्नोत्तर। 2. ज्ञानात्मक प्रश्नोत्तर। 3. पृच्छा प्रपत्र द्वारा 4. लघु परियोजनाओं द्वारा।
6.	**साबुन और उसके उपयोग–** 6.1 साबुन अथवा कृत्रिम साबुन का चयन उनके उपयोग पर निर्भर करता है। 6.2 साबुन, वनस्पति तेल को कास्टिक सोडा के साथ गरम करके बनाया जाता हैं 6.3 यह कठोर जल के लिए उपयुक्त नहीं होता है। 6.4 साबुन के अतिरिक्त कृत्रिम साबुन संश्लेषित पदार्थों की सफाई हेतु प्रयुक्त होते हैं। 6.5 कृत्रिम साबुन से अच्छी सफाई होती है।	प्रयोग प्रदर्शन एवं अवलोकन – 1. साबुन और डिटरजेंट पाउडर (कृत्रिम साबुन) दोनों को अलग-अलग पानी में घुलवाकर झाग बनाने को कहें और अवलोकन कराएँ। 2. परिचर्चा द्वारा निष्कर्ष निकलवाएँ कि कृत्रिम साबुन ज्यादा झाग देता है और इससे कपड़े अधिक साफ होते हैं। 3. प्रयोग प्रदर्शन द्वारा बोध कराएँ कि कृत्रिम साबुन वनस्पति तेल और कास्टिक सोडा को गरम करके बनाया जाता है। 4. परिचर्चा द्वारा साबुन और कृत्रिम साबुन के उपयोग प्रदर्शन / अवलोकन एवं परिचर्चा **साधन सामग्री** – कपड़ा धोने का साबुन, पानी, टब, कृत्रिम साबुन, गन्दे कपड़ों के दो टुकड़े, वनस्पति तेल, कास्टिक सोडा, स्टोव।	1. तुलनात्मक प्रश्नोत्तर 2. साबुन और कृत्रिम साबुन के उपयोग पर प्रश्नोत्तर।
7.	**उर्वरक एवं रोगाणुनाशक–** 7.1 उर्वरक पृथ्वी पोषक तत्वों की कमी की पूर्ति करता है। 7.2 फसलों की उपज बढ़ाने हेतु उसका उपयोग होता है। 7.3 ये चूर्ण एवं दानेदार रूप में पाये जाते हैं। 7.4 इनके उचित भण्डारण की आवश्यकता हैं। 7.5 रोगाणुनाशक का उपयोग फसलों को हानिकारक जीवाणुओं से बचाने के लिये किया जाता है। 7.6 इनका चयन और उपयोग सावधानी से किया जाता है।	**प्रदर्शन अवलोकन एवं परिचर्चा –** 1. दैनिक जीवन के अनुभवों पर परिचर्चा 2. प्रयोग के माध्यम से पौधों के लिए उर्वरक की आवश्यकता का अवलोकन। 3. पर्यावरण में उपलब्ध उर्वरक का प्रदर्शन एवं अवलोकन। 4. परिचर्चा द्वारा रोगाणुनाशक तथा उर्वरक के भण्डारण और इनके उपयोग में सावधानी पर बल। **साधन सामग्री** – एक ही परिजाति के पौधे के दो गमले। जल, उर्वरक पर्यावरण के उपलब्ध उर्वरक।	1. उर्वरक के प्रकार एवं महत्व पर प्रश्नोत्तर। 2. वर्गीकरण पर आधरित प्रश्नोत्तर 3. लघु समूह परियोजना।

क्रमांक	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया साधन सामग्री	मूल्यांकन
1.	**दाब एकांक क्षेत्रफल पर कार्यरत बल** 1.1 बल में परिभाषा एवं दिशा का होना। 1.2 बल के प्रभाव में क्षेत्रफल में परिवर्तन के कारण परिवर्तन। 1.3 विभिन्न परिमाण के बलों का समान क्षेत्रफल पर प्रभाव। 1.4 किसी सतह पर बल आरोपित होने से ही दाब की उत्पति। 1.5 आरोपित बल के परिमाण में वृद्धि एवं क्षेत्रफल में कमी होने पर दाब में वृद्धि। 1.6 आरोपित बल के परिमाण में कमी एवं क्षेत्रफल बढ़ने से दाब में कमी।	1. दाब, बल तथा क्षेत्रफल में सम्बन्ध का स्पष्टीकरण। 2. एक ईट, दो ईट को ऊपर उठाने में अधिक बल के प्रयोग का प्रदर्शन। 3. बल की दिशा में वस्तुओं का विस्थपित होना - प्रदर्शन, परिचर्चा। 4. कील, पिन आदि का आसानी से धंसना। 5. बालू पर ईंट को लेटाकर और सीधा खड़ा करने पर दाब में परिवर्तन का बोध। 6. स्पंज अथवा रुई के ढेर पर छोटे वाट का धंसना। 7. गुब्बारा फुलाकर वायु दाब का सभी दिशाओं में होने का बोध। 8. वायु दाब का अर्थ, उल्लेख, परिचर्चा।	1. दाब की अवधारणा पर क्रिया आधारित प्रश्न। 2. दाब, बल, क्षेत्रफल में सम्बन्ध पर प्रश्न। 3. दाब को प्रभावित करने वाले कारकों पर प्रश्नोत्तर। 4. दैनिक जीवन में दाब के उदाहरण, पृच्छा प्रपत्र द्वारा। 5. वायु दाब पर क्रिया आधारित प्रश्न। 6. जल पम्प, फुटबाल पम्प की कार्यविधि पर प्रश्नोत्तर चित्र के माध्यम से। 7. निर्दव दाबमापी पर कौशलात्मक प्रश्न।
2.	**वायु द्वारा सभी दिशाओं में दाब, वायुमंडल दाब** 2.1 वायु दाब का सभी दिशाओं में होना। 2.2 वायु दाब-एकांक क्षेत्रफल पर आरोपित वायु स्तंभ के भार के रूप में। 2.3 प्रामाणिक वायु दाब (समुद्र तल पर) 2.4 वायु दाब में स्थान एवं समय के सापेक्ष परिवर्तन। 2.5 वायु दाब में ऊँचाई के सापेक्ष परिवर्तन। 2.6 वायुमंडलीय दाब की माप। 2.7 निद्रव बैरोमीटर 2.8 जल पम्प 2.9 साइकिल पम्प 2.10 फुटबाल पम्प	9. प्रमाणिक वायु दाब का ज्ञान, इसके मान– $1.013X10^5$ न्यू. /मी.^{2} की गणना। 10.वायु दाब का विभिन्न स्थानों एवं समयों पर भिन्न-भिन्न होने का उल्लेख, परिचर्चा। 11.वायु दाब ऊँचाई के साथ बदलने का ज्ञान 12.वायुदाब मापी द्वारा वायुदाब की माप, प्रदर्शन, अवलोकन। 13.निर्द्रव, दाबमापी, जलपम्प, साईकिल पम्प, फुटबाल पम्प की कार्यविधि का सचित्र स्पष्टीकरण। 14.ईट को पानी में भरी बाल्टी में डुबाकर शिक्षार्थियों की सहभागिता से विस्थापित द्रव और ईट के आयतन में सम्बन्ध -प्रदर्शन, परिचर्चा	8. प्रमाणिक वायुदाब की गणना। 9. द्रव में डुबोने पर वस्तु के भार में कमी पृच्छा प्रपत्र द्वारा। 10.उत्प्लावन बल की अवधारणा पर प्रश्न। 11.उत्प्लावन बल और वस्तु द्वारा विस्थापित द्रव के भार में सम्बन्ध -क्रिया आधारित प्रश्न। 12.आभासी भार के अव-धारणा प्रश्नोत्तर द्वारा। 13.प्लवन सिद्धान्त पर क्रिया आधारित प्रश्न। 14.जलयान के तैरने के कारण – प्रश्नोत्तर।
3.	**द्रव में डूबी हुई वस्तु के भार में कमी।** 3.1 डूबी हुई वस्तु द्वारा अपने आयतन के बराबर द्रव का विस्थापन।	15.पानी से भरी बाल्टी में पत्थर के टुकड़े को तली से धीरे-धीरे ऊपर उठाने पर	15.वायु तथा गैस के उत्प्लावन बल पर क्रिया आधारित प्रश्न।

		3.2 डूबी हुई वस्तु पर द्रव द्वारा आरोपित उत्प्लावन बल। 3.3 वस्तु को द्रव में डुबाने पर द्रव द्वारा आरोपित उत्प्लावन बल में परिवर्तन एवं अधिकतमक मान। 3.4 उत्प्लावन बल द्वारा विस्थापित द्रव के भार में समानता/आर्किमिडीज का सिद्धान्त। 3.5 वस्तु को द्रव में डुबोने पर उसके भार में कमी। 3.6 भार को समान रखते हुए वस्तु की आकृति बदलकर उत्प्लावन बल में परिवर्तन। 3.7 वस्तु का आभासी भार। 3.8 प्लवन का सिद्धान्त वस्तु का भार = वस्तु द्वारा हटाएँ गए द्रव का भार, जलयान का तैरना। 3.9 वायु तथा गैस में उत्प्लावन।	भार में कमी के प्रदर्शन द्वारा उत्प्लावन बल का बोध। 16.उत्प्लावन बल के अधिकतम होने का प्रयोग प्रदर्शन-अवलोकन। 17.आभासी भार का बोध परिचर्चा द्वारा। 18.प्लवन सिद्धान्त का उल्लेख एवं स्पष्टीकरण। 19.जलयान के तैरने के कारण का बोध, परिचर्चा द्वारा। 20.उड़ते हुए गैस भरे गुब्बारे के अवलोकन, परिचर्चा द्वारा इन पर कार्यरत उत्प्लावन बल का बोध। 21.प्रयोग प्रदर्शन, अवलोकन, परिचर्चा। 22.द्रव दाब की गहराई पर निर्भरता का प्रदर्शन, अवलोकन। **साधन सामग्री** – कील, पिन, बालू, स्पंज, हथौड़ा, ईट, जल, बाल्टी, कमानीदार तुला, आप्लावी बर्तन, धागा आदि। गुब्बारा जल और फुटबाल पम्प, साईकिल पम्प अथवा इनके नामांकित चित्र।	16.द्रव दाब का सभी दिशाओं में होना क्रिया आधारित प्रश्न। 17.गहराई के साथ द्रव बदलने पर प्रश्नोत्तर।
4.		**तरल पदार्थों में दाब** 4.1 द्रव द्वारा बर्तन की पेंदी पर दाब। 4.2 द्रव प्रत्येक दिशा में दाब डालता हैं 4.3 द्रव द्वारा क्षैतिज दिशा में दाब। 4.4 द्रव के दाब का गहराई के साथ बदलना।		

इकाई का नाम – ६. प्रकाश और प्रकाश यंत्र कक्षा-८

क्रमांक	प्रकरण/उपप्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया-साधन सामग्री	मूल्यांकन
1. 2 3 4. 5.	**अपवर्तन** 1.1 प्रकाश किरण का एक माध्यम से दूसरे माध्यम में जाने पर मुड़ना। 1.2 आपतित और अपवर्तित किरण। 1.3 आपतन कोण का अपवर्तन कोण से बड़ा अथवा छोटा होना 1.4 दैनिक जीवन में अपवर्तन के उदाहरण। **लेंस द्वारा अपवर्तन** 2.1 उत्तल लेंस और अवतल लेंस 2.2 लेंस का मुख्य अक्ष और फोकस 2.3 लेंस का प्रकाश केन्द्र **लेंस द्वारा प्रतिबम्ब की प्रकृति, आकार आदि का वस्तु की लेंस से दूरी पर निर्भरता–** 3.1 लेंस द्वारा वास्तविक और आभासी प्रतिबिम्ब का बनना। 3.2 सीधा एवं उल्टा प्रतिबिम्ब। 3.3 प्रतिबिम्ब की स्थिति में वस्तु की स्थिति के सापेक्ष परिवर्तन। **लेंसों के संयोजन से प्रकाश-यंत्रों का निर्माण** 4.1 लेंसों के संयोजन से प्रकाश-यंत्रों का निर्माण। 4.2 दृष्टि दोष एवं उपयुक्त लेंस द्वारा निवारण। 4.3 सूक्ष्मदर्शी–सूक्ष्म वस्तुओं को देखने का एक सहायक प्रकाश– यंत्र 4.4 दूरदर्शी-दूरस्थ वस्तुओं को देखने में एक सहायक प्रकाश–यंत्र **प्रिज्म द्वारा प्रकाश का अपवर्तन** 5.1 प्रिज्म द्वारा अपवर्तन, आपतित, अपवर्तित और निर्गत किरण तथा वर्णक्रम का सामान्य परिचय।	1. प्रयोग, प्रदर्शन, अवलोकन–पानी में डूबी पेंसिल का मुड़ी हुई तथा पानी भरे बीकर की तली में सिक्के का उठा हुआ दिखाई देना। अपवर्तन के कारण 2. आपतित किरण, अपवर्तित किरण, आपतन कोण, अपवर्तन कोण आदि का किरण आरेख द्वारा प्रदर्शन, व्याख्या। 3. दैनिक जीवन में अपवर्तन की सामान्य घटनाएँ– उदाहरण द्वारा स्पष्टीकरण– कांच का गिलास, जल, पेंसिल, सिक्का, उत्तल तथा अवतल लेंस 4. विभिन्न प्रकार के लेंस का प्रदर्शन रेखा चित्र द्वारा स्पष्टीकरण 5. लेंस का फोकस, मुख्य अक्ष, प्रकाश केन्द्र आदि का किरण आरेख द्वारा प्रदर्शन, स्पष्टीकरण। 6. प्रयोग, प्रदर्शन, अवलोकन द्वारा लेंस से बने आभासी, वास्तविक प्रतिबिम्बों का स्पष्टीकरण। 7. मानव नेत्र का चार्ट द्वारा प्रदर्शन, परिचर्चा। 8. दृष्टिकोण का किरण आरेख द्वारा स्पष्टीकरण। 9. सूक्ष्मदर्शी, दूरदर्शी एवं इनके किरण आरेख का प्रदर्शन, मानव नेत्र का नामांकित चित्र, दूरदर्शी सूक्ष्मदर्शी 10. प्रिज्म द्वारा अपवर्तन का किरण आरेख। 11. वर्णक्रम का प्रदर्शन, अवलोकन तथा इन्द्रधनुष का उदाहरण तथा चित्र-प्रिज्म द्वारा बने वर्णक्रम का चित्र, इन्द्रधनुष का चित्र।	1. अपवर्तन की घटनाएं एवं उनके किरण आरेख द्वारा। 2. आपतन कोण, अपवर्तन कोण में सम्बंध। 3. उत्तल लेंस और अवतल लेंस में अन्तर- इनके रेखा चित्र द्वारा। 4. लेंस का मुख्य अक्ष, फोकस, प्रकाश केन्द्र आदि पर कौशल के प्रश्न। 5. लेंस द्वारा बने प्रतिबिम्ब पर क्रिया आधारित प्रश्न। 6. मानव नेत्र विषयक कौशल के प्रश्न 7. दृष्टिदोष एवं इनके निवारण पर प्रश्न तथा सम्बन्धित किरण आरेख बनाने का कौशल 8. सूक्ष्मदर्शी एवं दूरदर्शी में अंतर पर प्रश्न तथा सम्बन्धित कौशलात्मक प्रश्न 9. प्रिज्म द्वारा अपवर्तन का किरण आरेख बनाने का कौशल। 10. वर्णक्रम, इन्द्रधनुष पर प्रश्नोत्तर 11. आभासी एवं वास्तविक प्रतिबिम्ब में अन्तर पर प्रश्न।

इकाई का नाम – ७. चुम्बकत्व

कक्षा – ८

क्रमांक	प्रकरण/उपप्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया–साधन सामग्री	मूल्यांकन
1.	**चुम्बक के गुण** 1.1 विभिन्न प्रकार के चुम्बक। 1.2 चुम्बक द्वारा अन्य चुम्बकीय पदार्थों को चुम्बकित करना। 1.3 चुम्बक का विभिन्न कार्यों में उपयोग 1.4 चुम्बकीय आकर्षण, प्रतिकर्षण 1.5 चुम्बक के आस-पास के क्षेत्र में चुम्बकीय प्रभाव। 1.6 कुछ पदार्थों के आर-पार चुम्बकीय प्रभाव। 1.7 चुम्बक के उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव। 1.8 प्रतिकर्षण न कि आकर्षण, चुम्बकत्व का निश्चित परीक्षण। 1.9 स्वतंत्र रूप से लटके चुम्बक का उत्तर-दक्षिण दिशा में स्थिर होना। 1.10 पृथ्वी का चुम्बक की भांति व्यवहार। 1.4 दैनिक जीवन में अपवर्तन के उदाहरण।	1. विभिन्न प्रकार के चुम्बकों का प्रदर्शन तथा चुम्बक के पदार्थों का उल्लेख परिचर्चा। 2. चुम्बकीय ध्रुवों, आकर्षण, प्रतिकर्षण का प्रदर्शन, स्पष्टीकरण। 3. चुम्बकीय क्षेत्र का बोध। 4. स्वतंत्र रूप से लटके चुम्बक का उत्तर दक्षिण दिशा में स्थिर होने का प्रदर्शन एवं कारण का उल्लेख। 5. चुम्बक के रख रखाव में सावधानियों का प्रदर्शन। 6. पृथ्वी का चुम्बक की भांति व्यवहार का स्पष्टीकरण। 7. विद्युत धारा के चुम्बकीय प्रभाव का प्रयोग प्रदर्शन, अवलोकन। 8. विद्युत चुम्बक तथा धारावाही परिनालिका का चुम्बक की भांति व्यवहार का प्रयोग प्रदर्शन, अवलोकन, परिचर्चा। 9. विद्युत चुम्बक के विभिन्न उपयोग के उदाहरण, सूचीकरण-विभिन्न प्रकार के चुम्बक अथवा इनके चित्र (छड़-चुम्बक, बेलनाकार चुम्बक, नाल चुम्बक आदि। बच्चे लोहे की छीलन, आलपीन, विद्युत सेल, तार, चुम्बकीय सूई, परिनालिका, कच्चे लोहे का बेलन।)	1. विभिन्न प्रकार के चुम्बकों की सूची इनके चित्र सहित। 2. चुम्बकीय ध्रुव, आकर्षण, प्रतिकर्षण पर क्रिया आधारित प्रश्न। 3. चुम्बकों का रख रखाव, प्रश्नोत्तर। 4. विद्युत चुम्बक के विभिन्न उपयोगों की सूची। 5. धारावाही परिनालिका के चुम्बकीय व्यवहार पर प्रश्न।
2.	**चुम्बकत्व विद्युत धारा से सम्बद्ध होना।** 2.1 चालक द्वारा विद्युत धारा के प्रवाह से चुम्बकत्व का प्रदर्शन। 2.2 धारावाही परिनालिका का चुम्बक की भांति व्यवहार। 2.3 विद्युत चुम्बक के विभिन्न उपयोग		

इकाई का नाम – ८ सूक्ष्म जीवों की दुनिया

कक्षा – ८

<table>
<tr><th>क्रमांक</th><th>प्रकरण/उपप्रकरण</th><th>शिक्षण अधिगम प्रक्रिया–साधन सामग्री</th><th>मूल्यांकन</th></tr>
<tr><td>1.</td><td>सूक्ष्म जीव-अत्यन्त छोटे तथा विभिन्न आकार एवं आकृति के होते हैं।
1.1 सूक्ष्म जीव-सूक्ष्मदर्शी से दिखाई देते हैं।
1.2 प्रोटोजोआ, जीवाणु, वायरस, कुछ फंजाई (फंफूदी), कुछ शैवाल के रूप में सूक्ष्मजीव पाये जाते हैं।
1.3 सूक्ष्म जीव सर्वव्यापी है।</td><td rowspan="7">1. तालाब के गन्दे पानी का सूक्ष्मदर्शी द्वारा अवलोकन।
2. सूक्ष्म जीवों की चित्रों के द्वारा पहचान।
3. अस्पताल में भ्रमण-टी.वी. कालरा का टीकाकरण।
4. परिवेशीय उदाहरणों से स्पष्टता जैसे जुकाम, चेचक।
5. स्वास्थ्य सम्बन्धी चार्ट्स का प्रदर्शन एवं परिचर्चा।
6. पादप रोगों का अवलोकन
7. चिकित्सक को B.C.G. पोलियो D.P.T. के टीके लगाते हुये चित्रों का प्रदर्शन।
8. किसान द्वारा कीटनाशक के छिड़काव के चित्र के माध्यम से स्पष्टीकरण।
9. स्वास्थ्य सम्बन्धी फिल्म शो।
10. दही, पनीर, अचार, सिरका, इडली, डोसा के बनाने का प्रदर्शन/स्पष्टीकरण।
11. मटर/चना की जड़ों की गांठों का अवलोकन एवं परिचर्चा।
12. परिवेश के उदाहरणों के द्वारा स्पष्टीकरण जैसे-अचार की फफूंदी, दीमक से सुरक्षा के उपाय।
13. दैनिक जीवन के उदाहरणों द्वारा स्पष्टीकरण-जैसे शल्य क्रिया औजारों, दूध को गर्म करके जीवाणु से मुक्त किया जाना
साधन सामग्री–सूक्ष्मदर्शी, तालाब का पानी, चार्टस, रोगग्रस्त पौधे, कीटनाशक, फिल्में, दूध-नींबू, दही, मटर की जड़ें, शल्य औजार आदि।</td><td rowspan="7">1. प्रश्नोत्तर प्रविधि।
2. पृच्छा द्वारा।
3. बोध प्रश्न पूछकर।
4. समूह कार्य के दौरान मूल्यांकन।
5. भ्रमण के समय पृच्छा।
6. व्यक्तिगत/ सामूहिक परियोजना द्वारा।</td></tr>
<tr><td>2.</td><td>कुछ सूक्ष्मजीव रोग उत्पन्न करते हैं।
2.1 मनुष्य में अधिकांश संक्रामक रोग सूक्ष्म जीवों द्वारा उत्पन्न होते हैं जैसे, जीवाणु द्वारा कालरा, टाइफाइड तपेदिक।
2.2 वायरस द्वारा जुकाम, चेचक, प्रोटोजोआ–मलेरिया, फाइलेरिया।</td></tr>
<tr><td>3.</td><td>रोगजनक सूक्ष्म जीवों के संक्रमण के अनेक तरीके हैं।
3.1 हवा, पानी, मिट्टी तथा जीवों के द्वारा रोगजनक सूक्ष्मजीवों का फैलाव।
3.2 हवा द्वारा फैलने वाले रोग, जुकाम, इन्फलुऐन्जा।
3.3दूषित पानी और मिट्टी द्वारा अनेक रोगों को सूक्ष्म जीव फैलाते है।
3.4रोगी से स्वस्थ जीवों में रोगाणुओं का स्थानान्तरण होता है जैसे– मलेरिया, फाइलेरिया।</td></tr>
<tr><td>4.</td><td>रोगजनक सूक्ष्मजीवों द्वारा उत्पन्न रोगों को फैलने से रोका जा सकता है।
4.1 प्रदूषण को मिट्टी तथा जल के नियंत्रित करके।
4.2 रोगवाहक (मच्छर/मक्खी) पर नियंत्रण करके।
4.3 स्वच्छता की आदतों के माध्यम से।
4.4 प्रतिरक्षण/टीकाकरण द्वारा जैसे पोलियों, बी.सी.जी., डी.पी.टी.।
4.5 एन्टीबॉयोटिक इनकुलेशन संक्रमण की रोकथाम करता है।
4.6 पादप रोगों को पेस्टीसाइड, इंसेक्टीसाइड (कीटनाशक), डिसइन्फेक्शन का प्रयोग करना।</td></tr>
<tr><td>5.</td><td>कुछ सूक्ष्म जीव–जीवाणु लाभदायक होते है।
5.1 दही, पनीर, सिरका, शराब, इडली, डोसा, ब्रेड, खमीर बनाने वाले जीवाणु लाभदायक।</td></tr>
<tr><td></td><td>5.2 एन्टीबायोटिक पदार्थ।
5.3 नाइट्रोजन स्थिरीकरण बैक्टीरिया जो भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाते हैं।
5.4 सूक्ष्म जीवों द्वारा कार्बनिक पदार्थ का अपघटन होता है जिससे पदार्थ सड़ जाता है।
5.5 भोजन के रूप में प्रयोग जैसे-मशरुम (गुच्छी), ईस्ट, शैवाल।
5.6 उद्योग धन्धे में प्रयोग-जैसे चमड़े, सिरका, एल्कोहल, दवाओं के निर्माण</td></tr>
<tr><td>6.</td><td>सामग्री के उचित संग्रह तथा संरक्षण से जीवाणुओं द्वारा हानि पहुंचाने को रोक सकते हैं।
6.1 फैब्रिक तथा चमड़े के सामानों का मूल्य कम न हो इसके लिए उचित संग्रह जरूरी है।
6.2 टिम्बर को सूक्ष्म जीवों से बचाव के लिए पेंट करना।
6.3 अनुचित तरीके से संग्रह किया गया भोजन, फल, सब्जी, जीवाणु द्वारा नष्ट हो जाते हैं।
6.4 दूषित जल, भोजन हानिकारक है।
6.5 भोजन को उचित ढंग से संग्रह करने के लिए रेफ्रीजेटर, स्ट्रेलाइजेशन द्वारा सुरक्षित किया जाता है।
6.6 गर्म करने पर सूक्ष्म जीव मर जाते हैं (उबाल कर ठंडा करने पर पाश्चराइजेशन)</td></tr>
</table>

इकाई का नाम – ९ विद्युत धारा कक्षा - ८

<table>
<tr><th>क्रमांक</th><th>प्रकरण/उपप्रकरण</th><th>शिक्षण अधिगम प्रक्रिया–साधन सामग्री</th><th>मूल्यांकन</th></tr>
<tr><td>1.</td><td>विद्युत धारा प्राप्त करने के विभिन्न स्रोत–
1.1 विभिन्न कार्यों में विद्युत का व्यापक प्रयोग।
1.2 विद्युत धारा किसी चालक में आवेश का प्रवाह है।
1.3 शुष्क सेल थोड़े समय के लिए विद्युत धारा प्राप्त करने का सामान्य स्रोत।
1.4 संचायक सेल अधिक समय तक विद्युत धारा प्राप्त करने का स्रोत।
1.5 पावर स्टेशन में विद्युत उत्पादन हेतु जनित्र का प्रयोग
1.6 पावन हाऊस तथा घरों में विधुत धारा की आपूर्ति हेतु मेन्स का प्रयोग।
1.7 दिष्टधारा शुष्क सेल बैटरी से प्राप्त विद्युत धारा।
1.8 प्रत्यावर्ती धारा विद्युत मेन्स द्वारा दी गई विद्युत धारा है।</td><td rowspan="5">1. दैनिक जीवन में विद्युत धारा के उपयोग का अवलोकनार्थ पुष्टि
2. विभिन्न प्रकार के विद्युत सेल का प्रदर्शन, अवलोकन, परिचर्चा।
3. चित्र, चार्ट का प्रदर्शन, परिचर्चा, स्पष्टीकरण।
4. दिष्टधारा एवं प्रत्यावर्ती धारा में अन्तर का स्पष्टीकरण।
5. विद्युत विभवान्तर, धारा, प्रतिरोध, विद्युत वाहक बल एवं इनके मात्रकों का स्पष्टीकरण–ट्यूबवेल, विद्युत पंखा एवं अन्य वैज्ञानिक उपकरणों के चित्र शुष्क सेल, संचायक सेल, जनरेटर के चित्र।
6. प्रयोग, प्रदर्शन एवं दैनिक जीवन के उदाहरण।
7. विद्युत सुचालक एवं विद्युत रोधी पदार्थों का प्रदर्शन, उपयोगिता पर परिचर्चा–विद्युत सुचालक एवं विद्युत रोधी तार विद्युत बल्ब, विद्युत चुम्बक, वोल्टामीटर।
8. सरल परिपथ का इसके विभिन्न अवयव सहित नामांकित रेखाचित्र द्वारा स्पष्टीकरण।
9. विद्युत धारा के विभिन्न प्रभाव का प्रदर्शन, परिचर्चा, स्पष्टीकरण।
10. विद्युत उपकरणों के प्रयोग में अपेक्षित सावधानियों का उल्लेख, परिचर्चा, प्रदर्शन एवं स्पष्टीकरण।
11. विद्युत परिपथ में शार्ट 'सर्किटिंग' प्रदर्शन एवं स्पष्टीकरण।</td><td rowspan="5">1. परिचर्चा एवं प्रश्नोत्तर द्वारा।
2. दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाले वैद्युत उपकरणों की सूची।
3. विभिन्न विद्युत सेल, एवं विद्युत धारा पर तुलनात्मक प्रश्नोत्तर
4. विद्युत धारा, आवेश, समय में सम्बन्ध प्रश्नोत्तर द्वारा।
5. विद्युत विभवान्तर, धारा, प्रतिरोध के मात्रकों का ज्ञान–प्रश्नोत्तर द्वारा।
6. विद्युत वाहक बल की संकल्पना पर प्रश्न।
7. विभिन्न विद्युत सेल के विद्युत वाहक बल के मानों की सूची।
8. वोल्ट, ऐम्पीयर, ओम में सम्बन्ध पृच्छा प्रपत्र द्वारा।
9. विद्युत धारा के विभिन्न प्रभाव, उपयोगिता पृच्छा प्रपत्र द्वारा।
10. शार्ट सर्किटिंग का कारण इससे हानि प्रश्नोत्तर द्वारा।</td></tr>
<tr><td>2</td><td>विद्युत धारा, आवेश और समय में सम्बन्ध तथा विद्युत धारा का मात्रक–
2.1 विद्युत धारा=विद्युत आवेश/समय
2.2 विद्युत धारा का मात्रक ऐम्पीयर</td></tr>
<tr><td>3.</td><td>विद्युत धारा प्राप्त करने के विभिन्न स्रोत–
3.1 चालक के सिरों पर विभवान्तर होने पर विद्युत आवेश का प्रवाह।
3.2 विभवान्तर=चालक में व्यय ऊर्जा/प्रवाहित आवेश
3.3 विभवान्तर का मात्रक वोल्ट=जूल/कूलॉम
3.4 विद्युत वाहक बल=इसके ध्रुवों के बीच अधिकतम विभवान्तर।
3.5 कुछ सेलों के विद्युत वाहक बलों के मान।
3.6 वोल्टमीटर–विभवान्तर मापक का यंत्र/युक्ति
3.7 अमीटर–विद्युत धारा मापन का यंत्र/युक्ति</td></tr>
<tr><td>4.</td><td>विद्युत प्रतिरोध तथा इसका मात्रक–
4.1 प्रतिरोध–विद्युत प्रवाह में रुकावट का गुण।
4.2 प्रतिरोध धारा तथा विभवान्तर में सम्बन्ध।
4.3 प्रतिरोध का मात्रक ओम=वोल्ट/एम्पियर</td></tr>
<tr><td>5.</td><td>विद्युत स्रोत–अन्य प्रकार की ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में रूपान्तरित करने का स्रोत है।
5.1 शुष्क सेल द्वारा रसायनिक ऊर्जा में रूपान्तरण।
5.2 विद्युत उत्पादकों, द्वारा यांत्रिक ऊर्जा में रूपान्तरण।
5.3 पावर प्लान्ट्स द्वारा ऊष्मीय, नाभिकीय, यांत्रिक आदि</td></tr>
</table>

	ऊर्जा का विद्युत ऊर्जा में रूपान्तरण। 5.4 सोलर सेल द्वारा सौर ऊर्जा का विद्युत ऊर्जा में रुपान्तरण।		
6.	**विद्युत धारा को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में सहायक और सहायता न करने वाले पदार्थ** 6.1 विद्युत सुचालक पदार्थ 6.2 विद्युत रोधी पदार्थ 6.3 विद्युत धारा प्रवाह में तार के ऊपर विद्युतरोधी पदार्थ की एक पतली पर्त का उपयोग।		
7.	**विद्युत परिपथ-विद्युत धारा प्रवाह का एक बन्द मार्ग** 7.1 सरल परिपथ के भाग-विद्युत धारा का श्रोत (सेल) धारा प्रवाहित करने की युक्ति, स्विच, विद्युत सुचालक तार। 7.2 विद्युत परिपथ-विद्युत के अवयवों को जोड़ने का रेखा चित्र 7.3 विद्युत परिपथ के विभिन्न अवयवों का संकेतों द्वारा प्रदर्शन।		
8.	**विद्युत धारा के विभिन्न प्रभाव** 8.1 विद्युत धारा का ऊष्मीय प्रभाव-विद्युत बल्ब 8.2 चालक में उत्पन्न ऊष्मा की लम्बाई, पदार्थ की मोटाई पर निर्भरता। 8.3 विद्युत धारा का चुम्बकीय प्रभाव। 8.4 विद्युत धारा का रासायनिक प्रभाव		
9.	**विद्युत धारा का सावधानीपूर्वक प्रयोग न होने पर हानिकारक प्रभाव** 9.1 खराब इन्सुलेशन अथवा प्रबल धारा के कारण-शार्ट सर्किटिंग 9.2 फ्यूज-विद्युत परिपथ में एक सुरक्षात्मक युक्ति 9.3 घरेलू विद्युत उपकरणों के प्रयोग में सावधानियाँ एवं सुरक्षात्मक उपाय।		

इकाई का नाम – १० अनुकूलन एवं जैव विकास   कक्षा - ८

क्रमांक	प्रकरण/उपप्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया–साधन सामग्री	मूल्यांकन
1.	**एक खास पर्यावरण में जीवधारियों द्वारा सफल जीवन व्यतीत करने की क्षमता को अनुकूलन कहते हैं।** 1.1 सजीव वातावरण के अनुसार अनुकूलित होते हैं। 1.2 कुछ रचनात्मक विशेषताओं के कारण अनुकूलन की क्षमता प्राप्त होती है। 1.3 स्थलीय जीवों में ऐसी रचनात्मक विशेषताएं होती हैं जो उन्हें जमीन पर सफलता पूर्वक रहने के योग्य बनाती हैं। 1.4 जलीय जीवों में ऐसी रचनात्मक विशेषताएं होती है जो उन्हें जल में सफलता पूर्वक रहने योग्य बनाते हैं। 1.5 कीटों एवं पक्षियों में उड़ने के लिए विशेष अनुकूलन है।	1. तालाब के मछली, मेढक जलीय जन्तुओं का निरीक्षण। मछली का वाह्य आकार, गलफड़े मेढक के कूदते समय का चित्र। 2. नागफनी, बबूल, खजूर, ऊंट के चित्रों के माध्यम से अवलोकन व परिभ्रमण। 3. वायवीय जन्तुओं व कीटों का निरीक्षण द्वारा अनुकूलित अंगों का उल्लेख 4. एक कोशकीय तथा बहुकोशकीय प्राणियों की चित्रों के माध्यम से परिचर्चा। 5. अवलोकन एवं तुलना द्वारा स्पष्टीकरण। 6. लेमार्कवाद, डार्विनवाद के बारे में जिराफ की गर्दन, चूहे की पूंछ वाले प्रयोग के प्रति शिक्षक के द्वारा उल्लेख। 7. सरीसृप वर्ग के जन्तु जैसे छिपकली, गिरगिट के विकास को स्पष्ट करें। 8. अवशेषी अंग के माध्यम से विकास को स्पष्ट करें।	परिचर्चा के बीच पृच्छा द्वारा। अवलोकन के बीच पृच्छा। पृच्छा द्वारा। तुलना प्रविधि पृच्छा द्वारा।
२	**विद्युत धारा, आवेश और समय में सम्बन्ध तथा विद्युत धारा का मात्रक–** 2.1 एक कोशकीय जन्तु एवं पौधे सरलतम होते हैं। 2.2 जीवों के अंगों द्वारा अंगतंत्रों का निर्माण हुआ। 2.3 क्रमिक जटिलता/जैव विकास के सम्बन्ध में विभिन्न वैज्ञानिकों के विचार लेमार्कवाद संक्षिप्त, डार्विनवाद (परिचय) 2.4 जैव विकास की पुष्टि के लिये प्रमाण जैसे संरचना क्रियाएं, जीवाश्म, अवशेषी अंग आदि से।		

इकाई का नाम – ११ जीवन की प्रक्रियाएं

कक्षा – ८

क्रमांक	प्रकरण/उपप्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया–साधन सामग्री	मूल्यांकन
1.	**जीवधारी कुछ ऐसी आधारभूत क्रियाएं करते हैं जो उनके जीवन के लिये और उन्हें स्थायी बनाये रखने के लिए आवश्यक हैं–** 1.1 सभी जीवधारियों में पायी जाने वाली आधारभूत प्रक्रियाएं हैं–पोषण, श्वसन, उत्सर्जन, उद्दीपनों के प्रति उत्तेजनशीलता, वृद्धि और प्रजनन। 1.2 जीवन की सभी प्रक्रियाओं के लिये ऊर्जा की आवश्यकता होती है। 1.3 ऊर्जा भोजन से मिलती है।	मनुष्य, पशु एवं पौधों के उदाहरण देते परिचर्चा-जीवन सम्बंधी प्रक्रियाएं जैसे श्वसन, प्रजनन, पोषण, उत्सर्जन आदि समान रूप से होती है। परिवेशीय जीवधारियों का निरीक्षण प्रयोग, प्रदर्शन एवं अवलोकन	परिचर्चा के बीच प्रश्नोत्तर द्वारा अवलोकन कराते हुए मूल्यांकन अवलोकन कराते हुए पृच्छा प्रदर्शन कराते हुए पृच्छा द्वारा
२	**हरे पौधे अपना भोजन स्वयं बनाते हैं–** 2.1 हरे पौधे भोजन बनाने के लिए जल, कार्बन डाई आक्साइड और सूर्य के प्रकाश का उपयोग करते हैं। 2.2 जीवन को बनाये रखने के लिये प्रकाश संश्लेषण आवश्यक है।	परिवेश में फफूंदी लगे तने, मच्छर, मक्खी का प्रेक्षण द्वारा। तालाब की खाद्य श्रृंखला की परिचर्चा एवं निष्कर्ष	निष्कर्ष के माध्यम से पृच्छा पृच्छा द्वारा
3.	**कुछ जीवधारी अपना भोजन निर्जीव और सड़ने वाले जैव पदार्थों से या दूसरे जीवधारियों से प्राप्त करते हैं।** 3.1 जन्तु एवं वे पौधे जो हरे नहीं होते हैं बने बनाये भोजन पर निर्भर होते हैं। 3.2 कुछ जीवधारी मृत एवं सड़ते हुए जैव पदार्थों से पोषण प्राप्त करते हैं। 3.3 जन्तु अपना भोजन पौधों और दूसरे जन्तुओं से प्राप्त करते हैं। 3.4 विभिन्न जन्तुओं में पोषण प्राप्त करते की विधियां भिन्न-भिन्न होती है। 3.5 जन्तु पोषण के अन्तर्गत अन्तर्ग्रहण, पाचन, अवशोषण, स्वांगीकरण और बहि:क्षेपण (मल त्याग) करते हैं। 3.6 जन्तुओं में पोषण प्रक्रिया सम्पन्न करते के लिए विशिष्ट अंग होते हैं।	जंतुओं से संबंधित खाद्य श्रृंखला का चार्ट की सहायता से परिचर्चा मनुष्य की भोजन नली के चार्ट द्वारा उपसम्बोध स्पष्ट करें। आक्सीजन मास्क का चित्र दिखाते हुए आक्सीजन की आवश्यकता का परिचर्चा	परिचर्चा के माध्यम से पृच्छा
4.	**जीवन के लिये आवश्यक ऊर्जा श्वसन क्रिया से प्राप्त होती है–** 4.1 श्वसन क्रिया में जन्तु और वायुमण्डल के बीच गैसीय आदान प्रदान शामिल है। 4.2 विभिन्न जन्तुओं में विभिन्न श्वसन अंग होते है। 4.3 मनुष्य श्वसन क्रिया अनेक अंगों की सहायता से करते हैं। 4.4 पौधे रन्ध्रों और वातरन्ध्रों से श्वसन करते हें। 4.5 श्वसन क्रिया कोशिकीय प्रक्रिया है जो सभी जीवधारियों में समान है।	जन्तु एवं उनके श्वसनागों की सूची।	पृच्छा द्वारा।

क्रमांक	प्रकरण/उपप्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया–साधन सामग्री	मूल्यांकन
	4.6 श्वसन क्रिया में धीरे-धीरे ऊर्जा, शर्करा के टूटने से निकलती है। 4.7 अधिकांश जीवधारियों को श्वसन के लिए आवश्यकता होती है। 4.8 कुछ जीवधारी आक्सीजन की अनुपस्थिति में करते हैं।		पृच्छा द्वारा।
5.	**शरीर में पदार्थों के परिवहन हेतु द्रव माध्यम और वाहिनियों की आवश्यकता होती है–** 5.1 शरीर के अन्दर विभिन्न आवश्यकताओं के अनुसार अनेक पदार्थ होते हैं। 5.2 विकसित पौधों में वाहिनियों का तन्त्र होता है जो जल, लवण और घुले हुए भोजन को शरीर के सभी भागों में ले जाते हैं। 5.3 मनुष्य के समान जन्तु में भी परिवहन हेतु वाहिकाओं और हृदय से बना तन्त्र होता है। 5.4 रुधिर, पोषक पदार्थ, भोजन, गैस, हारमोन और वर्ज्य पदार्थों को ले जाते हैं। 5.5 घावों से रुधिर ह्रास होने से कभी-कभी रुधिर आदान की आवश्यकता हो जाती है।	जल संस्थान से घरों तक जल पहुंचने का सम्बन्धित चार्ट की सहायता से स्पष्टीकरण।	पृच्छा द्वारा।
6.	**जीवधारियों के शरीर में बनने वाले वर्ज्य पदार्थों का निष्कासन आवश्यक है।** 6.1 जैविक प्रक्रियाओं में वर्ज्य पदार्थों की उत्पत्ति होती है। 6.2 वर्ज्य पदार्थ शरीर के लिए हानिकारक होते हैं अत: इनके निष्कासन की आवश्यकता है। 6.3 वर्ज्य पदार्थों का निष्कासन पौधों में-गैस व जल के रूप में होता है।	उत्सर्जन सम्बन्धी उदाहरणों द्वारा स्पष्टीकरण	पृच्छा द्वारा।
7.	**किसी जीव के अंगों और उनकी प्रक्रियाओं का नियंत्रण और समन्वयन पर्यावरण में प्रभावी जीवन के लिए होता है।** 7.1 सभी जैविक प्रक्रियाएं परस्पर सम्बंधित हैं। 7.2 सभी जैविक प्रक्रियाएं और अंगों में समन्वयन की आवश्यकता है। 7.3 जन्तुओं में समन्वयन तंत्रिका तन्त्र और हार्मोन्स द्वारा होता है। 7.4 पौधों में समन्वय हार्मोनों द्वारा होता है।	दैनिक जीवन के विभिन्न उदाहरणों द्वारा स्पष्टीकरण	परिचर्चा के बीच पृच्छा द्वारा। पृच्छा द्वारा। अवलोकन कराते हुए पृच्छा द्वारा। परिचर्चा का माध्याम से। परिचर्चा के माध्यम से पृच्छा द्वारा।
8.	**शारीरिक अपंगता (विकलांगता), नेत्रहीनता, बहरापन, अनियंत्रित शारीरिक वृद्धि आदि पर्यावरण में प्रभावी जीवन हेतु रुकावट डालती है।** 8.1 प्रक्रियाओं में असन्तुलन के कारण मनुष्य में शारीरिक	विकलांगों पर आधारित परिचर्चा (सहानुभूति, आत्मविश्वास, पुनर्वास एवं आत्म निर्भरता के सन्दर्भ में) यह स्थिति प्रतयेक के साथ किसी भी समय आ सकती है।	पृच्छा द्वारा। पृच्छा द्वारा। पृच्छा द्वारा। मूल्यांकन

क्रमांक	प्रकरण/उपप्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया-साधन सामग्री	मूल्यांकन
	व्याधियां आ जाती है। 8.2 विकलांगता, उसके लक्षण एवं प्रकार। 8.3 विकलांगता के कारण-चोट लग जाना, मानसिक आघात बुखार तथा जन्मजाता कारण होते हैं। 8.4 जन्म के समय मस्तिष्क में चोट लग जाने से सेरीब्रल पैलसी हो जाती है। 8.5 तेज बुखार आ जाने पर या सिर में चोट लग जाने से सेरीब्रल पैलसी होकर मनुष्य में अपंगता आ जाती है। 8.6 मस्तिष्क के बांयें भाग पर आघात होने पर शरीर का दांया भाग तथा मस्तिष्क के दाएं भाग पर आघात होने पर शरीर का बायां भाग प्रभावित होता हैं फलस्वरूप पेशियों में कड़ापन आ जाता है। 8.7 विकलांगता के प्रति राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय प्रयास एवं सामाजिक दायित्व। 8.8 उच्च श्रेणी के जन्तुओं में पेशियों और हड्डियों की समन्वित गति से क्रिया होती है। 8.9 हड्डी, टूटना, मोच आना, रक्त स्त्रव का प्राथमिक उपचार एवं पेशियां टेढ़ी हो जाना, शारीरिक अपंगता का प्रारम्भिक उपचार 8.10 *विभिन्न जीवधारियों में गति की क्रियाविधि भिन्न-भिन्न होती है।* 8.11 भोजन यापन, आवास खोजने, प्रजनन तथा प्रकीर्णन में गति सहायक होती है।	विकलांगता के कारणों पर समूह कार्य हाथ पैरों का टेढ़ापन, (पेशियां कड़ी होना), का चार्ट की सहायता से सेरीब्रल पैल्सी के परिणाम का उल्लेख। उपयुक्त उदाहरणों द्वारा स्पष्टीकरण, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय प्रयासों का परिचय दें। स्पष्ट बोध कराते हुए संवेदना जाग्रत करना कि विकलांग भी समाज का एक अंग ही नहीं, हमारे समान हैं। हमारे साथ भी यह दुर्घटना हो सकती है। हड्डी टूटना, मोच आना, पेशियां टेढ़ी हो जाने से अंग का गति न कर पाने का उदाहरण देते हुए स्पष्टीकरण। परिचर्चा के माध्यम से स्पष्ट बोध कराएं कि पेशियां टेढ़ी होना तथा शारीरिक अपंगता का प्राथमिक उपचार एक्सरसाइज तथा सरकारी सहायता प्राप्त करना। परिवेशीय जीवों की विभिन्न प्रकार की गतियों का सूचीकरण-भोजन, आवास, प्रजनन-प्रकीर्णन पर आधारित सूची।	
9.	**प्रजनन से जीवन में सतता सुनिश्चित होती है।** 9.1 जीवधारी अपने जैसे जीव उत्पन्न करके स्वत: संख्या में वृद्धि करते है। 9.2 जीवधारी विभिन्न विधियों से संख्या में वृद्धि करते है।-वर्धी प्रजनन, अलैंगिक प्रजनन तथा लैंगिक जनन (उदाहरण सहित) 9.3 लैंगिक जनन ऐसे अंगों के मिलाप से होता है जो दोनों लिंगों में भिन्न भिन्न होते हैं (परागण व निषेचन के उल्लेख सहित)	प्रजजनन पर आधारित परिचर्चा। अण्डे, बच्चे देने वाले जन्तुओं के उदाहरण	पृच्छा द्वारा।
10.	**सभी जीवधारियों में वृद्धि और विकास होता है।** 10.1 शरीर के भागों की या पूरे शरीर की वृद्धि कोशिका विभाजन और कोशिकीय वृद्धि के कारण वृद्धि होती है। 10.2 एक कोशिकीय जीवधारी में कोशिका वृद्धि होती है। 10.3 पौधे अनिश्चित वृद्धि दर्शाते हैं। 10.4 मनुष्य के समान जन्तु भी एक निश्चित अवस्था तक वृद्धि करते हें। उसके बाद वृद्धि रुक जाती है। 10.5 बहुकोशिकीय जीवधारी अपना जीवन एक कोशिका से प्रारम्भ करते हैं। 10.6 बहुकोशीय जीव नियमित परिवर्तनों के बाद एक विशिष्ट स्वरूप धारण करता है।	आसपास के विभिन्न उदाहरणों पर आधारित समूह चर्चा मनी प्लाण्ट, घी क्वार पर परिचर्चा	पृच्छा द्वारा।

क्रमांक	प्रकरण/उपप्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया–साधन सामग्री	मूल्यांकन
1.	**प्राकृतिक सम्पदा जीवित रहने के लिए आवश्यक है–** 1.1 सम्पदा इस्तेमाल योग्य पदार्थ एवं ऊर्जा का खजाना है। 1.2 प्राकृतिक सम्पदाएँ विभिन्न रूपों में उपलब्ध हैं। 1.3 पृथ्वी पर द्रव्यीय संपदा उपजग्ध है। 1.4 ऊर्जा मुख्यत: सूर्य से प्राप्त होती है। 1.5 जीवित जीवधारी अपनी सारी आवश्यकताएं प्रकृति से प्राप्त करते हैं। 1.6 सूर्य से ऊर्जा प्राप्त करते हैं। 1.7 अन्य जीवों की तुलना में मनुष्य को अधिक सम्पदा की आवश्यकता पड़ती है। 1.8 मानव जाति की सुरक्षा, शरण एवं भोजन जैसी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्राकृतिक सम्पदा का उपयुक्त विवरण आवश्यक है।	प्रकृतिक में विद्यमान, मिट्टी, जल, वायु पेड़-पौधे, जीवजन्तु, नदी पहाड़ आदि का निरीक्षण कराएं। पर्यावरण में पायी जाने वाली वस्तुओं को वर्गीकृत करके परिचर्चा के माध्यम से ऊर्जा का दैनिक जीवन में महत्व है व ऊर्जा का आदि स्रोत सूर्य है, उल्लेख करना। सूर्य से उष्मा, प्रकाश व अनेक विकिरण प्राप्त होते हैं।	निरीक्षण कराते हुए पृच्छा द्वारा। पृच्छा द्वारा
2.	**विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक सम्पदायें हैं–** 2.1 हवा, पानी, मिट्टी, खनिज तथा ऊर्जा प्रकृति की मुख्य सम्पदाएँ हैं। 2.2 पौधे एवं जन्तु दोनों ही प्रकृति की सम्पदाओं में शामिल है। 2.3 ये सम्पदाएं नवीकरणीय हैं। 2.4 नवीकरणीय सम्पदाएं जैसे पानी, जंगलात भी समाप्त हो सकते हैं। 2.5 जंगल एवं जंगल के जीवधारी महत्वपूर्ण संपदाएं है। 2.6 जंगलों को समाप्त करते तथा पौधे एवं जन्तु जीवन के खतरे से स्पेसीज लुप्त हो जाती है।	**प्रकाश संश्लेषण की क्रिया का विवेचन** प्रयोग प्रदर्शन एवं परिचर्चा द्वारा बोध कराना कि सूर्य के प्रकाश से पेड़-पौधे प्रकाश संश्लेषण की क्रिया द्वारा अपना भोजन बनाते हैं, हरे पेड़-पौध भोजन निर्माण की प्रक्रिया में वायुमण्डल से CO_2 मृदा से जल, सूर्य से सौर ऊर्जा लेकर उसे रासायनिक ऊर्जा में बदलती है। यह सभी प्राकृतिक संपदाएं है। पौधे वायुमण्डल में आक्सीजन मुक्त करते है। ये सांस लेने में काम आती है। पर्यावरण के माध्यम से कोयला, लकड़ी, डीजल, पेट्रोल, मिट्टी का तेल आदि के जलने से ऊर्जा प्राप्ति का उल्लेख करना। ऊर्जा की प्राकृतिक स्त्रोत के माध्यम से परिचर्चा	पृच्छा के माध्यम से परिचर्चा द्वारा प्रश्नोत्तर के माध्यम से। पर्यावरण में भ्रमण के समय पृच्छा पृच्छा द्वारा
3.	**बढ़ती हुई मनुष्य की आवश्यकताओं से सम्पदाएं कम हो सकती हैं।** 3.1 बढ़ती हुई जनसंख्या का संपदा पर अत्यधिक दबाब पड़ता है। 3.2 फिजूल खर्ची की आदत, अधिक आराम/सुविधाएँ तथा युद्ध में संपदाओं का आवश्यकता से अधिक प्रयोग होता है। 3.3 अनुपयुक्त प्रयोग तथा गलत प्रक्रियाओं से संपदाओं का अपक्षय होता है।	दैनिक जीवन के उदाहरणों द्वारा उल्लेख कि मनुष्य अपने रहन-सहन की अधिक आरामदेह, मनोरंजक सुविधाजनक बनाने के लिए तरह-तरह की सामग्रियों का निर्माण करता है। विभिन्न उदाहरणों द्वारा उल्लेख	परिचर्चा में पृच्छा द्वारा

क्रमांक	प्रकरण/उपप्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया–साधन सामग्री	मूल्यांकन
4.	**मानव जाति के जीवित रहने के लिए प्राकृति संपदाओं का संदाय आवश्यक है–** 4.1 प्राकृतिक सम्पदा का अपक्षय मानवजाति के उत्तर जीवन के लिए खतरनाक है। 4.2 कुछ प्राकृतिक संपदा के अपक्षय से पर्यावरणीय प्रदूषण होता है। 4.3 प्रदूषण एवं पेड़-पौधों के अंधाधुन्द काटने से आवश्यक संपदाओं का ह्रास होता है। 4.4 पारस्थितिक संतुलन को बनाये रखने के लिए संपदाओं का सविधिक प्रयोग आवश्यक है। 4.5 कुछ संपदाओं की सुरक्षा एवं संरक्षण आवश्यक है। 4.6 विभिन्न संपदाओं के लिए संरक्षण की प्रक्रिया भिन्न-भिन्न होती है। 4.7 व्यक्तिगत समुदाय, शासन एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर से संरक्षण का प्रयास आवश्यक है।	परिचर्चा के माध्यम से बोध कराना कि मनुष्य सर्वोच्च विकसित प्राणी है इसलिए उसकी आवश्यकताएं भी अन्य प्राणियों से अधिक है। घर पास-पड़ोस, विद्यालय में मनोरंजन के साधनों की सूची तैयार कराना। वस्तुओं की सूची, ऐसे पदार्थों के नाम की सूची जिससे वस्तुएं बनायी जाती हैं जैसे–लकड़ी, प्लास्टिक, रबर आदि।	सूची बनवाते हुए पृच्छा द्वारा

इकाई का नाम – १३ कृषि पद्धतियां और उपकरण

कक्षा – ८

क्रमांक	प्रकरण/उपप्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया–साधन सामग्री	मूल्यांकन
1.	**पादपों एवं जंतुओं की व्यवस्था मनुष्य के लिए लाभदायक है–** 1.1 विभिन्न आवश्यकताओं के लिये विभिन्न पौधों की खेती की जाती है। 1.2 विभिन्न आवश्यकता के लिए विभिन्न जन्तु पाले जाते हैं। 1.3 कुछ पादपों एवं जन्तुओं की व्यवस्था प्राकृतिक दशाओं में होती है जैसे जंगलों एवं समुद्रों में। 1.4 अच्छी व्यवस्था से फसल उत्पादन अधिक उपज होता है। 1.5 अच्छी व्यवस्था सुव्यवस्थित पद्धतियों से प्रापत की जा सकती है।	1. पूर्व ज्ञान पर आधारित तालिका बनाकर . 2. भ्रमण एवं अवलोकन द्वारा जन्तुओं और वनस्पतियों का परिचय 3. कृषि यंत्रों/उपकरणों के चित्र/चार्ट का प्रदर्शन एवं स्पष्टीकरण 4. कृषि अनुसंधान केन्द्रों का भ्रमण 5. उपलब्ध कृषि उपकरणों का प्रदर्शन एवं स्पष्टीकरण 6. नई प्रजातियों के नाम एवं विशेषताएं , कीटनाशकों, उर्वरकों की सूची तथा विशेष विवरण के चार्ट्स का प्रदर्शन। 7. चने का खेल, मटर का खेल, गेहूं का खेल का अवलोकन एवं परिचर्चा। 8. समूह कार्य एवं परिचर्चा 9. कुकुटशाला, दुग्ध शाला, कृषि कार्य, मौन पालन गृहों का परिभ्रमण, अवलोकन एवं परिचर्चा। **साधन और सामग्री–** 1. पर्यावरण के विभिन्न प्रकार के जंतुओं, गाय, भैंस, बकरी, बैल, सुअर। 2. कृषि यंत्र/उपकरण-हल आदि बुआई पड्लि, खुर्पी, निराई आदि के उपकरण। 3. संग्रहालय की वस्तुयें 4. किसान मेले 5. कृषि प्रदर्शनी आदि।	1. बोधात्मक प्रश्नों द्वारा 2. पृच्छा प्रविधि 3. वर्णन प्रविधि 4. समूह कार्य के दौरान अवलोकन 5. तालिका/ तुलना द्वारा 6. प्रतियोगिता द्वारा
2.	**अधिक उत्पादन हेतु सुधरी प्रणालियों की आवश्यकता होती है–** 2.1 कृषि की आधारभूत पद्धतियाँ है, क्रमानुसार जुताई, समतल करना, बुआई, खाद देना, सिंचाई, फसल सुरक्षा, कटाई एवं भण्डारण। 2.2 कुछ कृषि पद्धतियां सभी फसलों के लिये समान कुछ सफलों के अनुसार परिवर्तित होती है। 2.3 उद्यान कर्म में भी आधारभूत नियम एवं पद्धतियां एक समान है।		
3.	**कृषि पद्धतियों में भांति भांति के कृषि उपकरणों/यंत्रों की आवश्यकता होती है।** 3.1 कृषि उपकरण मानव चलित और यांत्रिक दोनों होते हैं। 3.2 विविध कृषि उपकरण जैसे–विभिन्न प्रकार के हल, पाटा, बुआई उपकरण, निराई के उपकरणों, कटाई, मड़ाई, कीटनाशकों के छिड़काव के यंत्र, ओसाई के उपकरण, तथा अनाज भण्डारण के उपकरणों का विवरण। 3.3 कृषि उपकरणों एवं यंत्रों के रखरखाव की आवश्यकता होती है।		
4.	**फसल उत्पादन में गुणात्मक एवं मात्रिक सुधार संभव है।** 4.1 मांग के अनुसार फसल उत्पादन में मात्रिक सुधार की आवश्यकता है। 4.2 फसल उत्पादन में गुणात्मक सुधार नई प्रजातियों एवं कृषि पद्धतियों से सम्भव है। 4.3 फसल उत्पादन में मात्रिक सुधार मृदा की तैयारी, विशेष खाद देने, समय से सिंचाई करने से सम्भव है। 4.4 उर्वरकों तथा कीटनाशकों का अविवेकपूर्ण प्रयोग घातक सिद्ध हो सकता है। 4.5 खाद्यान्नों का समुचित वितरण समाज के लिये आवश्यक है।		
5.	**जन्तु उत्पादों को प्राप्त करने के लिये जन्तुओं की व्यवस्था (प्रबधंन) आवश्यक है–** 5.1 विशेष प्रयोजनों से जन्तु पाले जाते हैं। जैसे– मधुमक्खी-शहद के लिये, कुकुट पालन, मत्स्य पालन, रेशम कोट पालन, भेड़ पालन, सुअर पालन, गाय, भैंस पालन आदि। 5.2 जंतुओं से गुणात्मक एवं मात्रिक उत्पादों की प्राप्ति के लिये उचित भोजन, आवास, प्रजनन एवं देखरेख की आवश्यकता होती है।		

इकाई का नाम – १४. रक्त की संरचना, रक्तवर्ग एवं रक्त आधान   *कक्षा - ८*

क्रमांक	प्रकरण/उपप्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया–साधन सामग्री	मूल्यांकन
1.	**रुधिर (रक्त) की सरंचंना–** 1.1 रुधिर का महत्व 1.2 लाल रुधिर कणिकाएँ 1.3 श्वेत रुधिर कणिकाएँ 1.4 ब्लड प्लेट लेट्स-प्लाज्मा आदि 1.5 रुधिर के कार्य 1.6 रुधिर का जमना तथा इसके लाभ	1. रक्त के महत्व पर शिक्षक कथन 2. रुधिर कणों के चित्रों का प्रदर्शन एवं परिचर्चा (स्पष्टीकरण) 3. अवलोकन (रक्त फिल्म का-सूक्ष्मदर्शी द्वारा) (परिचर्चा एवं परिचर्चा) 4. समूह कार्य-एवं परिचर्चा 5. रक्त वर्ग पर लैंड स्टीनर का कथानक	1. पृच्छा प्रविधि 2. समूह कार्य के दौरान अवलोकन 3. परिचर्चा के साथ पृच्छाएं 4. प्रश्नोत्तर 5. भ्रमण के दौरान-पृच्छाएं 6. चित्रों के प्रदर्शन के समय प्रश्न पूछना।
2.	**रुधिर वर्ग-रुधिर बैंक (ब्लड बैंक)** 2.1 रक्त वर्ग- A,B,AB तथा O 2.2 रक्त वर्ग का महत्व	**भ्रमण एवं परिचर्चा** 6. ब्लड बैंक (जिला अस्पताल में स्थित) **शिक्षक द्वारा**-रक्त के आदान-प्रदान पर स्पष्टीकरण	
3.	**रक्त का आदान-प्रदान** 3.1 रक्त दान क्यों? 3.2 रक्त का आदान-प्रदान कैसे	7. दूषित रक्त परिसंचरण द्वारा एड्स के प्रसार तथा निवारण के उपायों का उल्लेख।	

इतिहास/नागरिक शास्त्र

शिक्षण के सामान्य उद्देश्य :

1. इतिहास के प्रत्येक काल के लोगों की जीवन-शैली, जीवन-स्तर एवं पूरे परिवेश को समझने के लिए समकालीन, समाजार्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक विशेषताओं से अवगत होना।
2. अतीत की घटनाओं का वस्तुपरक विश्लेषण कर, तार्किक व वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ चिंतन करने की क्षमता विकसित करना, जिसके फलस्वरूप 'सर्वधर्म समभाव' की भावना सशक्त हो, सामाजिक, साम्प्रदायिक विषमताओं का अन्त हो एवं एकीकृत, समानता-मूलक समाज सशक्त हो।
3. जीवन के विविध पहलुओं में निरंतर परिवर्तनों से अवगत होना, ताकि वे मानव विकास-क्रम को क्रमबद्ध रूप में विश्लेषित करने में सक्षम हो सकें।
4. भारत में मानव-विकास के विभिन्न चरणों को रेखांकित करते समय, विश्व-सभ्यता के कैनवास पर इसको स्थित करने का बोध पैदा होना।
5. सभ्यताओं एवं संस्कृतियों के अध्ययन के साथ-साथ, विकसित हो रहे मानव की विभिन्न संस्थाओं (सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं प्रशासनिक) के विकास से भी अवगत होना।
6. अतीत को समझते हुए वर्तमान सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक समस्याओं को समझने एवं निराकरण की क्षमता विकसित होना।
7. मानव-विरासत में प्राप्त मिली-जुली सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा करना एवं राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ होना।
8. भारतीय संस्कृति के वैविध्य में निहित एकता का बोध होना।
9. यह बोध होना कि 'राष्ट्रीय संस्कृति' के विकास में देश के विभिन्न भागों के निवासियों ने सम्मिलित योगदान किया।
10. राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव की प्रवृति का विकास करना एवं उनके हेतु सतत् प्रयास की प्रक्रिया को सशक्त करना।
11. कारणों एवं परिणामों के महत्व के आधार पर घटनाओं को विश्लेषित करने की क्षमता बढ़ाना एवं उसके आधार पर राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम को समझाना।
12. विज्ञान, तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी के विकास एवं आविष्कारों के साथ-साथ, प्रभुत्व वैज्ञानिकों, आविष्कारकों, चिंतकों एवं दार्शनिकों की उपलब्धियों एवं उनके प्रभावों से अवगत होना।
13. इतिहास के अध्ययन के साथ-साथ उसके अध्ययन के स्रोतों (प्राथमिक एवं द्वितीय श्रेणी) के महत्व का भी बोध कराना।
14. ऐतिहासिक महत्व की कृतियों के संरक्षण हेतु जागृति विकसित करना।
15. नागरिक-शास्त्र के अध्ययन से नागरिक के अधिकारों, कर्तव्यों एवं अच्छे नागरिक के गुणों एवं दायित्वों के बोध के फलस्वरूप लोकतंत्र एवं समाजवाद को सशक्त बनाने की क्षमता विकसित करना।
16. ग्रामीण एवं शहरी प्रशासन से लेकर राज्य (प्रान्तीय) एवं केन्द्र के कार्यपालिका, न्यायपालिका एवं व्यवस्थापिका के अंगों एवं उससे सम्बद्ध विभिन्न स्तरों के अधिकारियों से परिचित कराना, ताकि पूर्ण प्रशासन एवं प्रशासनिक पद्धति का बोध हो सके।
17. मानवाधिकारों, बाल-अधिकारों, विकलांगों एवं स्त्रियों के अधिकारों से अवगत कराना ताकि वास्तविक समता एवं समानता-मूलक की संरचना सम्भव हो सकें।
18. राष्ट्रीय सम्पत्ति के प्रति सुरक्षा का बोध विकसित कराना, ताकि कुछ मौलिक समस्याओं का तात्कालिक निदान स्थानीय स्तर पर ही संभव हो सके।
19. पर्यावरण के प्रति जागृति विकसित कराना ताकि एक संतुलित मानवीय समाज का अस्तित्व सुरक्षित व संरक्षित रह सके।
20. नागरिक -शास्त्र के अध्ययन के फलस्वरूप विद्यार्थियों के अंदर 'नागरिक बोध' (सिविक सेंस) विकसित हो सके।

अपेक्षित योग्यता	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
1. मानव की उत्पत्ति से लेकर पूर्व, मध्य एवं उत्तर पाषाण युग तक की विकास-यात्रा से अवगत होना। 2. धातु-युग के विकास एवं आविष्कारों से परिचित होना, जिसमें धन-संचय एवं वस्तु-विनिमय भी सम्मिलित हैं। 3. उक्त कालों के औजारों, उपकरणों एवं दैनिक प्रयोग की वस्तुओं से भी अवगत होना।	1. पृथ्वी पर मानव की उत्पत्ति एवं विकास **प्रागैतिहासिक काल** क. आदिमानव, पूर्व पाषाण युग, औजारों का युग, खानाबदोश जीवन से व्यवस्थित जीवन के आरम्भ तक। ख. मध्य पाषाण युग- (पूर्व पाषाण युग एवं उत्तर पाषाण युग की प्रवृत्तियाँ एवं खेती का आरम्भ) ग. उत्तर पाषाण युग-अस्त्र, शस्त्र अन्य उपकरण एवं व्यवस्थित जीवन तक की यात्रा। स्थायी बस्तियों की स्थापना, कृषि का विकसित स्वरुप। घ. धातु-युग-तांबे, कांसे और लोहे के हथियारों और उपकरणों का व्यापक प्रयोग। वस्तु विनिमय और धन संचय।	1. व्याख्यान 2. लघु कथानक 3. चित्र प्रदर्शन 4. समूह चर्चा 5. प्रेक्षण	1. प्रश्नोत्तर 2. विवरणात्मक प्रश्न 3. अतिलघु एवं बहु विकल्पीय प्रश्न 4. चित्राधारित प्रश्न 5. मानचित्र अंकन संबंधी प्रश्न। 6. तुलनात्मक प्रश्न। 7. मौखिक प्रश्न उपकरणों एवं चित्रों को दिखाकर।
1. सिंधु-घाटी सभ्यता के विशेष संदर्भ में, विश्व नदी-तटीय सभ्यताओं से अवगत होना। 2. ये सभ्यताएं नदी तट पर ही क्यों विकसित हुई-इससे परिचित होना 3. समकालीन नगर-व्यवस्था, प्रशासन एवं लिपि के विकास से परिचित होना।	2. नदी घाटी सभ्यताएं (हड़प्पा सभ्यता) क. विश्व की प्रमुख नदी घाटी सभ्यताएं-नाम, काल एवं स्थान। ख. हड़प्पा सभ्यता, खोज, विस्तार एवं कालक्रम। ग. हड़प्पा सभ्यता-नगर योजना सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं अन्य विशेषताएं। कला व लिपि।	-उपरोक्त सभी- तथा माडल निर्माण विश्व का मानचित्र जिसमें प्रमुख सभ्यताओं का अंकन तथा उनकी प्रमुख वस्तुएं हैं।	-उपरोक्त सभी-
1. वैदिक कालीन समाज की परिस्थितियों से अवगत होना।	३. वैदिक कालीन सभ्यता क. आर्यों के उद्भव संबंधी विभिन्न मत ख. सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा आर्थिक स्थिति।	1. व्याख्यान 2. परिचर्चा 3. समूह कार्य एवं चर्चा 4. मानचित्र प्रदर्शन	1. लिखित एवं मौखिक प्रश्न 2. विभिन्न उपकरणों की चित्रों द्वारा पहचान। 3. प्रश्न-विवरणात्मक, लघु, अतिलघु एवं बहु विकल्पीय। 4. मानचित्र संबंधी प्रश्न।
1. जैन तथा बौद्ध धर्म जैसे नए धर्मों की पृष्ठ भूमि से अवगत होने के साथ, उनके सिद्धान्तों कार्यों एवं उपलब्धियों से अवगत होना। 2. गणराज्यों के उदय के साथ	4. ईसा पूर्व छठी शताब्दी क. इस समय की राजनीतिक स्थिति ख. जैन तथा बौद्ध धर्म का अभ्युदय ग. नये धार्मिक एवं सामाजिक विचारों का उदय, उनका प्रचार-प्रसार तथा उन पर आधारित सामाजिक परिवर्तन, महावीर स्वामी व	उपरोक्त 1. विश्व मानचित्र बाह्य आक्रमण के संदर्भ में।	उपरोक्त

अपेक्षित योग्यता	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया-विधि युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
प्राचीन भारत के इस विशेष विकास की प्रमुख विशेषताओं से परिचित होना। 3. मगध के उत्कर्ष के साथ-साथ, भारत में विदेशी (यूनानी) आक्रमण के कारणों एवं प्रभावों से परिचित होना, विशेषतया सिकन्दर के आक्रमण के संदर्भ में।	गौतमबुद्ध-जीवनियां व शिक्षाएं घ. गणराज्यों का शासन और उनका पराभव ङ. मगध का उत्कर्ष, भारत में बाहरी आक्रमण (सिकन्दर का भारत पर आक्रमण एवं उसका भारत पर प्रभाव)		
1. समकालीन भारतीय परिवेश ने कैसे छोटे राज्यों के विजय/विलय से एक वृहद् साम्राज्य का रूप धारण किया-इससे अवगत होना। 2. मौर्यों के शासन-प्रबंध, सैन्य व सामाजिक सुधार एवं अशोक के बौद्ध धर्म के प्रसार से अवगत होना। 3. विदेशों में सांस्कृतिक भारत अथवा 'वृहत्तर भारत' की परिकल्पना के साथ-साथ, भारत में विदेशी जातियों के आगमन के विषय में अवगत होना।	**5. राजनीतिक एकता का युग-** **(मौर्य साम्राज्य का उदय, मौर्य काल में भारत-मध्य एशिया सम्पर्क** क. मौर्य साम्राज्य का उदय, चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा सुदृढ़ शासन व्यवस्था का आरम्भ। ख. अशोक द्वारा बौद्ध धर्म का प्रसार, उसकी धार्मिक नीति और लोक कल्याणकारी कार्य। ग. अशोक के स्तम्भ लेख, शिला लेख और उनकी वास्तुकला। घ. मौर्यकाल के बाद भारत में अनेक विदेशी जातियों का आगमन। कुषाण-कनिष्क का साम्राज्य, धर्म तथा राजनीति।	1. व्याख्यान 2. समूह कार्य एवं चर्चा 3. समकालीन स्मारकों, शिलालेखों, स्तम्भों आदि के चित्र प्रदर्शन। 4. मानचित्र 5. प्रेक्षण/भ्रमण 6. तथ्यों एवं जानकारियों का संग्रह	1. प्रश्न-लिखित एवं मौखिक 2. लघु, अतिलघु एवं बहु विकल्पीय प्रश्न। 3. सत्य/असत्य कथनों पर आधारित प्रश्न। 4. रिक्त स्थानों की पूर्ति 5. मानचित्र अंकन 6. चित्रों पर आधारित प्रश्न-लिखित एवं मौखिक। 7. विवरणात्मक प्रश्न
1. गुप्तकालीन भारत के प्रशासन, समाजार्थिक विकास एवं साम्राज्य-विस्तार व सांस्कृतिक विकास से अवगत होना। 2. हूणों के आक्रमण के संदर्भ में, गुप्त साम्राज्य में परिवर्तनों एवं उसके पराभव के कारणों से परिचित होना।	6. गुप्त काल क. भारत में गुप्त साम्राज्य की स्थापना व उत्कर्ष (समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त द्वितीय और स्कन्दगुप्त) ख. गुप्तकालीन समाज, धर्म, साहित्य, विज्ञान और कला। ग. हूणों का आक्रमण और गुप्त साम्राज्य का पराभव।	उपरोक्त 1. चित्रों का माडल निर्माण। 2. अभिनय 3. पुरातात्विक स्त्रोतों से सम्बन्धित वस्तुओं के चित्रों का एलबम। 4. विश्व मानचित्र विशेषकर हूणों के आक्रमण के संदर्भ में।	उपरोक्त
1. वर्धन, चालुक्य एवं पल्लव कालीन भारत की सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक विशेषताओं से परिचित होना 2. हर्षवर्धन एवं परवर्ती शासकों की उपलब्धियों से परिचित होना।	**7. वर्धन काल, चालुक्य एवं पल्लव काल** क. वर्धन वंश का संक्षिप्त इतिहास एवं उस समय की राजनीतिक, सामाजिक स्थिति। ख. हर्षवर्धन राज्य की साहित्यिक व सांस्कृतिक उपलब्धियां। ग. हर्षवर्धन के बाद की शक्तियां (नामोल्लेख मात्र) घ. चालुक्य एवं पल्लव काल की राजनीतिक एवं सामाजिक विशेषताएं।	1. व्याख्यान 2. समूह परिचर्चा 3. मानचित्र प्रदर्शन 4. चित्र/चार्ट प्रदर्शन 5. जानकारियों का संग्रह	1. लिखित एवं मौखिक प्रश्न 2. लघु, अतिलघु तथा बहुविकल्पीय प्रश्न। 3. सत्य/असत्य कथनों पर आधारित प्रश्न। 4. रिक्त स्थानों की पूर्ति 5. विवरणात्मक एवं विवेचनात्मक प्रश्न। 6. मानचित्र पर आधारित प्रश्न।

अपेक्षित योग्यता	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया-विधि युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
1. यह जानना कि कैसे केन्द्रीकरण के बाद विभक्तिकरण एवं विकेन्द्रीकरण पुन: सशक्त हो जाता है। 2. छोटे राज्यों-उत्तर में प्रतिहार, गहड़वाल, चंदेल, चौहान, परमार, पाल एवं अन्य तथा दक्षिण में चालुक्य, पल्लव एवं चोल वंश द्वारा सत्तासीन होने की प्रक्रिया से परिचित होना। 3. दक्षिण भारतीय राज्यों के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक व सांस्कृतिक विकास क्रम का ज्ञान होना।	8. **भारत में छोटे राज्यों का युग** (उत्तर भारत एवं दक्षिण भारत) क. प्रतिहार वंश, गहड़वाल वंश, चंदेल वंश, चौहान वंश, परमार वंश, पाल वंश तथा अन्य। ख. राजपूतों की शासन व्यवस्था, सामाजिक, राजनीतिक दशाएं, साहित्य एवं कला। ग. राष्ट्रकुल, चालुक्य, पल्लव एवं चोल वंश। घ. दक्षिण भारत की शासन व्यवस्था, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक स्थिति, साहित्य, कला एवं विज्ञान।	उपरोक्त	उपरोक्त
1. अपनी सम्पूर्ण सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं से परिचित होना 2. इस बात का जानना कि कैसे अनेकता में एकता अन्तर्निहित होती है, जो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा को सशक्त करती है	9. **हमारी सांस्कृतिक विरासत** क. भारतीय संस्कृति की सामान्य विशेषताएं। ख. वसुधैव कुटुम्बकम तथा विभिन्नता में एकता।	1. *व्याख्यान* 2. समूहवार परिचर्चा 3. देश की मौलिक विशेषताओं के आधार पर चर्चा/ परिचर्चा	1. लिखित एवं मौखिक प्रश्न। 2. लघु, अतिलघु, बहु विकल्पीय एवं विवरणात्मक प्रश्न। 3. विवेचनात्मक एवं स्थिति में डालकर प्रश्न। 4. रिक्त स्थानों की पूर्ति।
1. भारत का विदेशों से संपर्क एवं वृहत्तर भारत' में बौद्ध धर्म एवं व्यवसायिक सम्पर्क के योगदान से परिचित होना 2. यूनान, रोम, मध्येशिया, चीन, तिब्बत, कोरिया, जापान, मलाया, सुमात्रा, जावा एवं श्रीलंका में भारतीय धर्म, संस्कृति एवं परम्पराओं की जानकारी पा सकेगा	10. **भारत का विदेशों से संपर्क और वृहत्तर भारत** क. यूनान, रोम, मध्य एशिया, चीन, कोरिया, जापान व तिब्बत से सांस्कृतिक एवं व्यापारिक संपर्क। ख. दक्षिण पूर्व एशियाई देशों, यूनान, मलाया, सुमात्रा, जावा, श्रीलंका आदि से सांस्कृतिक एवं व्यापारिक संपर्क	उपरोक्त तथा 1. विश्व के भौगोलिक एवं राजनीतिक मानचित्र 2. दक्षिण पूर्व एशिया में स्थित हिन्दु मंदिरों एवं मूर्तियों के चित्रों का प्रदर्शन एवं परिचर्चा। 3. विश्व के अन्य देशों से संपर्क के संदर्भ में बौद्ध धर्म का प्रचार एवं व्यापार आदि के उद्धरणों द्वारा।	उपरोक्त 1. विवरणात्मक एवं सूचनात्मक प्रश्न। 2. लघु, अति लघु, बहु विकल्पीय रिक्त स्थानों की पूर्ति संबंधी प्रश्न 3. चित्रों पर आधारित प्रश्न 4. मानचित्र अंकन 5. क्विज प्रतियोगिता 6. सूचनाओं, जानकारियों एवं चित्रों का संग्रह।

अपेक्षित योग्यता	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
1. समाज में सहयोग, समानता एवं सहभागिता के महत्व को समझ सकेगा। यह भी जान सकेगा कि कैसे इनके आधार पर लोकतंत्र एवं समाजवाद सशक्त एवं आपसी भेदभाव समाप्त होता है। 2. शिक्षा के महत्व को समझ सकेगा, सामाजिक आन्दोलन की जरूरत जान सकेगा एवं आदर्श नागरिक के गुणों से अवगत हो सकेगा।	1. समुदाय के विकास की आवश्यकताएं तथा उनकी पूर्ति के साधन। क. समाज में सहयोग, सहभागिता तथा समानता की आवश्यकता-सहभागिता का आधार लोकतंत्र, समानता का आधार समाजवाद तथा सहयोग के लिए आपसी भेदभाव का अंत। ख. उपरोक्त हेतु शिक्षा की भूमिका, आवश्यक विधान बनाना तथा सामाजिक आंदोलन की जरूरत-आदर्श नागरिक के गुण एवं नई पीढ़ी की भूमिका। ग. तीन मुख्य संवैधानिक आधार-लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता एवं समाजवाद।	1. व्याख्यान 2. चार्ट-प्रदर्शन 3. कहानी/ कहावत	1. प्रश्नोत्तर 2. लघु प्रश्न 3. बहु विकल्पीय प्रश्न 4. मौखिक प्रश्न
1. स्थानीय-ग्रामीण एवं नगर स्वायत्त-शासन के सिद्धान्तों एवं संस्थाओं से अवगत हो सकेगा।	2. स्थानीय स्वायत्त शासन ग्रामीण एवं नगर प्रशासन। क. ग्रामीण परिवेश में स्वायत्त शासन-ग्राम पंचायत, न्याय पंचायत, क्षेत्र पंचायत तथा जिला पंचायत के गठन तथा कार्यों की प्रारम्भिक जानकारी। ख. नगर प्रशासनिक संस्थाएं-नगर पंचायत, नगर पालिका परिषद एवं, नगर निगम एवं उनके कार्य।	1. व्याख्यान 2. चार्ट 3. अभिनय 4. अवलोकन	1. प्रश्नोत्तर 2. लघु प्रश्न 3. बहु विकल्पीय 4. मौखिक प्रश्न 5. चार्ट निर्माण 6. वाद-विवाद प्रतियोगिता
1. स्थानीय प्रशासनिक इकाइयां, जिले की न्याय-व्यवस्था, लोक- अदालत एवं जिले के विभिन्न अधिकारियों एव उनके कार्यों से अवगत होना। 2. राष्ट्रीय पर्वों व प्रतीकों एवं उनके महत्वों से परिचित होना।	3. स्थानीय प्रशासन-इकाईयां/कार्य क. जिले की न्याय-व्यवस्था, लोक-अदालत, उल्लेख मात्र। ख. जिले के अधिकारी तथा उनके कार्य ग. हमारे राष्ट्रीय प्रतीक एवं पर्व। उनका महत्व उनके प्रति जनता की जागरूकता तथा जिम्मेदारी।	1. व्याख्यान 2. चार्ट एवं पोस्टर	1. प्रश्नोत्तर 2. लघु-प्रश्न 3. वस्तुनिष्ठ प्रश्न
1. सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका से अवगत होना।	4. स्वतंत्र भारत का बदलता समाज, शिक्षा एवं स्त्रियों के संदर्भ। **क. शिक्षा**–शिक्षा का उद्देश्य, विज्ञान तथा तकनीकी शिक्षा पर विशेष बल। **ख. स्वास्थ्य**–शुद्ध जल अस्पताल सुविधा प्रदूषण की समस्या छोटा परिवार एवं बच्चों की देखरेख **ग. स्त्रियों का उत्थान**–स्त्री शिक्षा, बाल विवाह पर रोक, दहेज प्रथा का बहिष्कार, बालक-बालिका के मध्य भेद-भाव का विरोध।	1. व्याख्यान 2. चार्ट 3. माडल निर्माण 4. भ्रमण/अवलोकन 5. स्वास्थाधिकारी/ चिकित्साधिकारी से बातचीत	1. प्रश्नोत्तर 2. लघु-प्रश्न 3. वस्तुनिष्ठ 4. चार्ट/पोस्टर 5. मौखिक चर्चा 6. वाद-विवाद

अपेक्षित योग्यता	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया-विधि युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
1. अरब में इस्लाम के उदय के कारणों व परिस्थितियों से अवगत होना। 2. कबीलों में विभक्त अरब के एकीकरण से परिचित होना। 3. इस तथ्य से परिचित होना कि कैसे अरब एकता एवं भारतीय विखंडन ने अरब आक्रमण की पृष्ठभूमि तैयार की।	1. अरब में इस्लाम का उदय एवं प्रचार। विश्व में इस्लाम का प्रसार। क. कबीलों में विभक्त अरब। ख. इन कबीलों के मध्य शांति-व्यवस्था, सामंजस्य एवं एकता की स्थापना में इस्लाम की भूमिका। ग. अरब व्यापारियों का भारतीय सामुद्रिक तटों से संपर्क। सिंध में इस्लाम का राजनीतिक प्रवेश। उक्त प्रवेश के समय सिंध की परिस्थितियां- राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक।	1. व्याख्यान 2. कथानक (पैगम्बर मोहम्मद साहब से सम्बन्धित) 3. मानचित्र 4. चार्ट 5. समूह-चर्चा	1. प्रश्नोत्तर (दीर्घ, लघु एवं बहु-उत्तरीय प्रश्न) 2. मानचित्र अंक
1. इस्लाम के अनुयायियों के आगमन के समय भारत की समस्त परिस्थितियों से अवगत होना। 2. भारतीय राजपूत-युग एवं सामन्तवाद की विशेषताओं से परिचित होना। 3. पश्चिमोत्तर सीमा से तुर्क प्रवेश एवं उत्तर-भारत में तुर्क विजय से परिचित होना।	2. (अ) इस्लाम के आगमन के समय भारतवर्ष की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थिति। क. भारत में राजपूत युग ख. भारतीय सामान्तवाद (यूरोपीय सामन्तवाद से अंतर) ग. भारत में इस्लाम का आगमन (पश्चिमोत्तर सीमा से उत्तर भारत में प्रवेश) **२(ब) भारत में तुर्की राज्य की स्थापना**–महमूद गजनबी एवं मोहम्मद गोरी के आक्रमणों के स्वरूप, कारण एवं परिणाम।	उपरोक्त	उपरोक्त
1. भारत में तुर्क-शासकों यथा ऐबक, इल्तुतमिश, रजिया एवं बलबन के समय राज्य-विस्तार एवं शासन सुदृढ़ीकरण की प्रक्रिया से अवगत होना।	3. भारत में तुर्क शासकों की विजय-योजना क. तुर्क आक्रमण के समय भारतवर्ष की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थिति। ख. **कुतुबुद्दीन ऐबक** :जीवन एवं उपलब्धियां। ग. **इल्तुतमिश** : जीवन एवं उपलब्धियां। घ. इल्तुतमिश के उत्तराधिकारी (शेष के नामोल्लेख किन्तु रजिया एवं नसिरूद्दीन महमूद की विशेष चर्चा) ङ. **बलबन** : जीवन एवं उपलब्धियां (राज्य के सुदृढ़ीकरण एवं राजस्व की प्रतिष्ठा-वृद्धि के विशेष संदर्भ सहित) तथा उसके उत्तराधिकारी।	1. व्याख्यान 2. वंशावली-चार्ट 3. मानचित्र (तुर्क-विजयों एवं प्रसार हेतु) 4 समकालीन भवनों एवं सिक्कों के चित्र	1. प्रश्नोत्तर (दीर्घ, लघु एवं बहुविकल्पी) 2. बोधात्मक प्रश्न 3. मानचित्र पर आधारित प्रश्न 4. रिक्त स्थानों की पूर्ति 5. प्रेक्षण 6 सत्य/असत्य कथनों पर आधारित प्रश्न।

अपेक्षित योग्यता	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया-विधि युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
1. मध्येशिया में मंगोल-शक्ति के संगठन एवं प्रसार-योजना विशेषतया चंगेज खां एवं हलाकू खां के आक्रमणों से परिचित होना।	4.(अ) **मंगोलों का उदय एवं शक्ति प्रसार** क. मध्येशिया में मंगोलों का उदय एवं मध्येशिया में उनका क्रमिक फैलाव। ख. चंगेज खां का आक्रमण (1220-1226 ई.)। व हलाकू का आक्रमण (उल्लेख मात्र)	उपरोक्त	उपरोक्त
1. खिलजी कालीन भारत में प्रशासनिक, सैन्य, वित्तीय, भू-राजस्व, बाजार-नियंत्रण व सामाजिक-आर्थिक सुधारों से परिचित होना। 2. खिलजी साम्राज्यवाद से परिचित होना।	4 (ब) खिलजी कालीन भारत क. फिरोज खिलजी द्वारा सत्ता ग्रहण। ख. अलाउद्दीन खिलजी-उत्तर व दक्षिण भारत की विजय। उसके काल में मंगोल आक्रमण (उल्लेख मात्र)। उसके द्वारा किए गए वित्तीय सुधार, बाजार-नियंत्रण के विशेष संदर्भ में। उसके सामाजिक एवं सैनिक सुधार।	उपरोक्त	उपरोक्त
1. तुगलक कालीन भारतीय व्यवस्था, गयासुद्दीन तुगलक के कृषि-सुधार एवं मोहम्मद तुगलक की योजनाओं की वैज्ञानिकता से परिचित होना। 2. फिरोज तुगलक के सुधारों के कारण तुगलक वंश एवं दिल्ली-सल्तनत के पतनशील होने की प्रक्रिया से अवगत होना।	4. (स) तुगलक कालीन भारत क. गयासुद्दीन तुगलक की उपलब्धियां –कृषि सुधार के विशेष संदर्भ में। ख. मोहम्मद तुगलक का साम्राज्य-विस्तार। उसकी महत्वाकांक्षी योजनाएं एवं उसकी असफलता। ग. फिरोज तुगलक के सुधार (प्रशासनिक व समाजार्थिक)। उसका धार्मिक व राजनीतिक दृष्टिकोण। तुगलक साम्राज्य व वंश का पतन।		
1. तैमूर के आक्रमण के कारणों एवं परिणामों से परिचित होना। 2. सैय्यद व लोदी वंश के शासकों, उनके कार्यों से अवगत होना। 3. पृथक स्वतंत्र राज्यों से परिचित होना- विशेषतया बहमनी व विजयनगर राज्यों से ।	5 (अ) सैय्यद व लोदी कालीन भारत: क. तैमूर का आक्रमण व परिणाम। ख. सैय्यदों के काल का संक्षिप्त उल्लेख। ग. लोदी वंश का कालक्रम एवं पतन। घ. अनेक स्वतंत्र छोटे राज्यों का उदय (नाम व स्थापना तिथि एवं काल का उल्लेख मात्र) ङ. बहमनी एवं विजयनगर राज्यों का विशेष वर्णन।	1. व्याख्यान 2. वंशावली-चार्ट 3. मानचित्र 4. समकालीन भवनों/सिक्कों आदि के चित्र।	1. प्रश्नोत्तर (दीर्घ, लघु एवं बहु-विकल्पी) 2. बोधात्मक प्रश्न 3.. मानचित्र पर आधारित प्रश्न 4. प्रेक्षण 5. सत्य/असत्य कथनों पर आधारित प्रश्न

अपेक्षित योग्यता	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
1. सल्तनत कालीन हिन्दू व मुस्लिम समाजों के विभिन्न वर्गों से, हिन्दी व फारसी साहित्य के विकास से एवं स्थापत्य कला के विकास से अवगत होना। 2. सूफी एवं भक्ति आंदोलन से परिचित होना-उनके सिद्धान्तों को जानना तथा यह समझना कि कैसे इन्होंने सामाजिक एकता को सुदृढ़ बनाया।	5.(ब) सल्तनत काल की सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति क. हिन्दू व मुस्लिम समाजों की संरचना। ख. समाज के विभिन्न वर्गों का वर्णन। ग. सल्तनतकाल में हिन्दी व फारसी साहित्य का विकास। घ. सल्तनत कालीन कला, विशेषतया स्थापत्य-कला का विकास। ङ. सूफी एवं भक्ति आंदोलन एवं इनके कारण उपजा सांस्कृतिक समन्वय।	1. व्याख्यान 2. चार्ट (आविष्कारों एवं भक्ति, सूफी संतों के एवं प्रशासनिक गठन के) 3. समकालीन भवनों, चित्रों कृतियों, वैज्ञानिक व प्रौद्योगिकी के आविष्कारों के चित्रों के साथ समकालीन सिक्कों अथवा उनके चित्रों का प्रदर्शन। 4. वेशभूषा व उपयोग में लाई जाने वाली वस्तुओं के चित्रों का प्रदर्शन।	1. प्रश्नोत्तर (लघु, दीर्घ एवं बहुविकल्पी) 2. रिक्त-स्थानों की पूर्ति 3. वाद-विवाद (वर्गीकरण एवं सांस्कृतिक समन्वय पर) 4. व्यक्ति, साहित्य एवं कला पर आधारित कथानक।
1. सल्तनतकालीन समाजार्थिक विकास, प्रशासनिक संस्थाओं, कृषि, व्यापार, उद्योग, विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं तकनीक आदि के विकास से अवगत होना।	5(स) सल्तनतकाल की प्रशासनिक संस्थाएं एवं आर्थिक विकास : क. सल्तनतकाल का केन्द्रीय प्रशासन व राजस्व एवं सैन्य-व्यवस्था। ख. सल्तनकाल का प्रान्तीय एवं स्थानीय शासन, विशेषतया भू- राजस्व प्रबंधन। ग. सल्तनतकाल में कृषि, यातायात, व्यापार, उद्योग-धंधों एवं शस्त्रास्त्रों का विकास। विज्ञान, तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी के आविष्कार।		
1. मुगल साम्राज्य की स्थापना की पृष्ठभूमि एवं उसमें बाबर के योगदान से परिचित होना। 2. हुमायूं की असफलता के कारणों एवं शेरशाह की सफलता तथा उपलब्धियों से विशेषतया प्रशासनिक प्रबंधन से अवगत होना। 3. अकबर से विजयों तथा भारतीय शासकों के प्रतिरोध से परिचित होना। 4. अकबर की राजपूत व धार्मिक नीति के साथ-साथ, उसके शासन-प्रबंध, भू-राजस्व, सैन्य-प्रशासन आदि से अवगत होना।	6. (अ) मुगल साम्राज्य की स्थापना क. बाबर के आक्रमण के समय भारत की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थिति। ख. बाबर की विजयें एवं भारत में उसकी उपलब्धियां 6(ब) हुमायूं व शेरशाह के काल– क. हुमायूं एवं स्थानीय शासकों के मध्य संघर्ष (मुख्यतया बहादुरशाह व शेरशाह से संघर्ष) एवं उसके पतन के कारण। ख. शेरशाह द्वारा राज्य स्थापना एवं प्रशासनिक पुनर्गठन। ग. शेरशाह की मृत्यु, सूर वंश का पतन एवं हुमायूं की वापसी	1. व्याख्यान 2. चार्ट (बाबर, हुमायूं एवं अकबर के युद्धों के, अकबर के प्रशासनिक-सुधारों के, भवनों व चित्रकला से सम्बन्धित) 3. वंशावली चार्ट (समस्त मुगल शासकों का) 4. मानचित्र (बाबर के आक्रमण से पूर्व भारत का, एवं अकबर की विजयोपरांत) 5. भ्रमण/प्रेक्षण (ऐतिहासिक स्थलों का)	1. प्रश्नोत्तर (दीर्घ, लघु एवं बहुविकल्पी) 2. मानचित्र निर्माण व अंकन। 3. समकालीन भवनों एवं सिक्कों पर। 4. मौखिक परिचर्चा। 5. वाद-विवाद।

अपेक्षित योग्यता	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
5. अकबरकालीन साहित्य, स्थापत्यकाल एवं चित्रकला के विकास से परिचित होना	6 (स) अकबर का युग क. पानीपत का द्वितीय युद्ध (1556 ई0) ख. महाराणा प्रताप, दुर्गावती व चांदबीबी का विरोध। ग. अकबर की उत्तर व दक्षिण भारत की विजयें। घ. अकबर की धार्मिक व राजपूत नीति एवं समुदायों/सम्प्रदायों की एकता के प्रयास। ङ. अकबर का शासन-प्रबंध-केन्द्रीय, प्रान्तीय, भू-राजस्व, सैन्य (मनसबदारी व्यवस्था)। च. अकबरकालीन साहित्य एवं कला (विशेषतया स्थापत्य एवं चित्रकला का विकास)		
1. अकबर के बाद जहांगीर एवं शाहजहां के शासन एवं उनकी उपलब्धियों से परिचित होना।	7 (अ) अकबर के बाद मुगल काल : क. जहांगीर : जीवन व उपलब्धियाँ, नूरजहां का विशेष उल्लेख। ख. शाहजहां का युग, उसकी उपलब्धियां उसका स्थापत्य प्रेम एवं अपव्ययिता।	1. व्याख्यान 2. मानचित्र 3. चार्ट 4. कथानक	1. प्रश्नोत्तर (लघु, दीर्घ एवं बहु-विकल्पी) 2. मानचित्र 3. रिक्त स्थानों की पूर्ति
1. औरंगजेब के काल में गुरु गोविन्द सिंह, शिवाजी, बुंदेलों, राजपूतों, संतनामियों जाटों, बीजापुर एवं गोलकुंडा का विरोध व उससे संघर्ष तथा मुगलों के पतन में उसके उत्तरदायित्व से अवगत होना।	7(ब) औरंगजेब का काल : क. मुगलों के पतन में औरंगजेब का योगदान। ख. गुरु गोविन्द सिंह, शिवाजी व बीजापुर एवं गोलकुण्डा के शासकों से उसके संघर्ष। ग. उसका सिखों, जाटों, सतनामियों, बुंदेलों व राजपूतों के प्रति दृष्टिकोण।		
1. मुगल साम्राज्य के विघटन, पतन एवं नए राज्यों के उदय के कारणों से अवगत होना। 2. मराठा शक्ति के उत्कर्ष के कारणों, शिवाजी की प्रशासन व उसकी कमजोरियों तथा मराठों के पतन के कारणों से अवगत होना। 3. बंगाल, हैदराबाद व अवध के स्वतंत्र राज्यों के उदय से परिचित होना। 4. भारत में विदेशी शक्तियों के आगमन से परिचित होना।	8(अ) मुगल साम्राज्य का विघटन एवं पतन। मराठा राज्य का उदय एवं यूरोपीय शक्तियों का भारत में आगमन। क. मुगल साम्राज्य का विघटन, कारण, स्थानीय राज्यों का उद्‌भव (नामोंल्लेख मात्र) ख. मराठा शक्ति का उदय-शिवाजी का प्रशासन, उसकी कमजोरियां, मराठों का ह्रास पानीपत का तृतीय युद्ध(1761ई.) ग. बंगाल, हैदराबाद, अवध के क्रमशः पृथक स्वतंत्र हुए राज्य। घ. भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन।	1. व्याख्यान 2. चार्ट (समाज के वर्गीकरण, भक्ति व सूफी संतों का साहित्यों के विकास का, सैन्य-सुधार व मंसबदारी का) 3. भवनों एवं चित्रकला कृतियों का चित्र प्रदर्शन। 4. प्रेक्षण। 5. समूह परिचर्चा (भक्ति आंदोलन व सांस्कृतिक समन्वय पर) 6. जानकारियों का संग्रह	1. प्रश्नोत्तर (लघु, दीर्घ एवं बहु-विकल्पी) 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति 3. चार्ट निर्माण 4. कृतियों /चित्रों पर आधारित प्रश्न 5. बोधात्मक प्रश्न

अपेक्षित योग्यता	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया-विधि युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
1. मुगलकालीन समाज, हिन्दी व फारसी के साहित्य के विकास, स्थापत्य एवं चित्रकला के विकास से अवगत होना। 2. भक्ति एवं सूफी आंदोलनों उनके सिद्धान्तों एवं उनके द्वारा सामाजिक एकता की स्थापना से अवगत होना। 3. मुगलों के प्रशासनिक प्रबंधन, भू-राजस्व, जागीरदारी, जमीदारी, मंसबदारी प्रथाओं, सैन्य सुधारों, कृषि, उद्योग, व्यापार, यातायात, विज्ञान, तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी के विकास से अवगत होना।	9 मुगलकालीन भारत का समाज-आर्थिक एवं सांस्कृतिक-प्रशासनिक स्वरूप। अ. सामाजिक-सांस्कृतिक विकास क. मुगलकाल में हिन्दू-मुस्लिम समाज व उनके वर्गों का वर्णन। ख. मुगलकाल में हिन्दी-फारसी साहित्य का विकास। ग. मुगलकालीन स्थापत्य एवं चित्रकला का विकास। घ. भक्ति, सूफी, आंदोलन। सामाजिक सांस्कृतिक समन्वय में इनके अतिरिक्त अकबर ब द्वारा शिकोह के योगदान 9 (ब) मुगलकाल का प्रशासन : क. केन्द्रीय, प्रान्तीय एवं स्थानीय प्रशासन। ख. भू-राजस्व प्रबंधन, जागीरदारी, जमीदारी प्रथाएं। ग. सैन्य सुधार व मंसबदारी प्रथा। घ. कृषि, यातायात, व्यापार, उद्योग-धंधों का विकास। ङ. विज्ञान, तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी का विकास।	उपरोक्त	उपरोक्त

अपेक्षित योग्यता	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया-विधि युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
1. भारतीय स्वाधीनता-आन्दोलन के साथ, संविधान-निर्माण की विकास-यात्रा से परिचित होना। 2. राष्ट्र के संघीय ढांचे, मूल अधिकारों व कर्तव्यों एवं राज्य के नीति-निर्देशक तत्वों की जानकारी होना। 3. शासन के तीनों अंगों व्यवस्थापिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका से परिचित होना।	1. **भारतीय स्वाधीनता-आंदोलन की संक्षिप्त जानकारी (1909, 1919 एवं 1935 के अधि नियमों के उल्लेख)** क. संविधान-सभा का परिचय। ख. संविधान-निर्माण प्रक्रिया का सरल परिचय, संविधान की प्रमुख विशेषताओं में मूल अधिकार की जानकारी। ग. राष्ट्र का संघीय ढांचा, भारतीय नागरिकता, मूल कर्तव्यों तथा राज्य के नीति निर्देशक तत्वों की जानकारी। घ. शासन के तीन अंगों का परिचिय व्यवस्थापिका कार्यपालिका तथा न्यायपालिका।	1. व्याख्यान 2. चार्ट 3. समूह-चर्चा	1. प्रश्नोत्तर (दीर्घ, लघु एवं बहु-उत्तरीय) 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति 3. कथनों की सत्यता/असत्यता पर आधारित प्रश्न
1. केन्द्रीय शासन-व्यवस्था यथा संसद एवं सांसद के कार्यों एवं महत्व से अवगत होना 2. संघीय कार्यपालिका के शिखर, राष्ट्रपति, मंत्रिपरिषद एवं प्रधानमंत्री के कार्यों व अधिकारों से परिचित होना। 3. संघीय न्यायपालिका के गठन उसके कार्यविधि एवं उसके अधिकारों के विषय में अवगत होना।	2. **केन्द्रीय शासन-व्यवस्था।** क. संसद एवं उसकी सदस्यता की अर्हताएं तथा कार्यकाल, निर्वाचन तथा कार्य। संसद के अंग तथा उनका महत्व। ख. संघीय कार्यपालिका-राष्ट्रपति, संघीय मंत्री परिषद, इसकी कार्य-प्रणाली एवं प्रधानमंत्री का स्थान व कार्य। ग. संघीय न्यायपालिका-गठन, कार्यविधि तथा उसके अधिकार।	1. व्याख्यान 2. चार्ट 3. कथानक 4. वाद-विवाद 5. कक्षा-संसद का निर्माण	उपरोक्त
1. राज्य (प्रदेश) की शासन व्यवस्था के तीनों अंगों, उनके गठन, कार्य-प्रणाली, अधि कारों एवं महत्वों का ज्ञान होना। 2. केन्द्र-राज्य के पारस्परिक राजनीतिक, आर्थिक एवं प्रशासनिक संबंधों से अवगत होना।	3. **राज्य की शासन व्यवस्था :** क. राज्य शासन के तीन अंग व्यवस्थापिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका-इनका गठन, कार्य-प्रणाली तथा अधिकारों के विषय में ज्ञान। ख. केन्द्र-राज्य प्रशासनिक व राजनीतिक संबंध उनके मध्य कार्य विभाजन, संघ सूची, राज्य सूची एवं समवर्ती सूची का परिचय।	1. व्याख्यान 2. चार्ट/पोस्टर 3. वाद-विवाद	1. प्रश्नोत्तर (लघु, दीर्घ एवं बहु-विकल्पी) 2. मौखिक वार्ता 3. चार्ट पर आधारित प्रश्न
1. आधुनिक भारत की ग्रामीण सामाजिक व्यवस्था एवं शासन के साथ ही सहकारिता की अवधारणा से परिचित होना। 2. मेल-जोल तथा सहकारी भावना के महत्व से परिचित होना।	4. हमारा बदलता समाज-ग्रामीण प्रशासनिक व्यवस्था, कृषि-कार्य, बाजार-प्रणाली एवं सहकारिता। क. ग्रामीण विकास-ब्लाक के कार्य, कृषि कार्यों में सुधार। उपयुक्त बीज, खाद आदि। बढ़ती आबादी एवं बढ़ती जोतों की संख्या ख. सहकारिता की भावना-मेलजोल से कार्य/खेती करने की भावना-सहकारी कृषि। आवास निर्माण एवं उद्योगों का विकास	1. व्याख्यान 2. चार्ट/पोस्टर 3. वाद-विवाद 4. ब्लाक-कार्यालय का भ्रमण प्रेक्षण	उपरोक्त

अपेक्षित योग्यता	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया-विधि युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
1. पुनर्जागरण, व्यापारिक विस्तार व उपनिवेशों की खोज एवं उपनिवेशवाद के प्रयास में यूरोपीय राज्यों के कार्यों से अवगत होना (भारत के विशेष संदर्भ में)	1. 17वीं शताब्दी में यूरोप वालों का भारत मे व्यापारियों के रूप में प्रवेश, भारत में राजनीतिक सत्ता की स्थापना का प्रयास (विशेषत: बंगाल व दक्षिण भारत में) क. पश्चिम यूरोपीय देशों -ब्रिटेन, हालैण्ड, स्पेन तथा पुर्तगाल में सागरीय मार्ग खोजने तथा व्यापार वृद्धि के प्रयास। ख. यूरोप में पुनर्जागरण के फलस्वरूप सामुद्रिक ज्ञान का विस्तार, उससे उत्पन्न पारस्परिक औपनिवेशिक स्पर्द्धा तथा इसमें अंग्रेजों का अग्रणी होकर उभरना। (उल्लेख मात्र) ग. अंग्रेजों द्वारा भारत में राज्य स्थापना का प्रारम्भ (विशेषतया बंगाल एवं दक्षिण भारत में)	1. व्याख्यान 2. चार्ट 3. मानचित्र (विश्व) 4. पुनर्जागरण के अंतर्गत कुछ खोजों के चित्रों का प्रदर्शन उदाहरण के लिए 'नाविक कैम्पास' 5. सामूहिक परिचर्चा	1. प्रश्नोत्तर 2. लघु, दीर्घ, एवं बहु-विकल्पी प्रश्न) 2. मानचित्र अंकन 4. सामूहिक परिचर्चा
1. भारत में व्यापारिक हितों के विस्तार हेतु स्थापित ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कंपनी के राजनीतिकरण एवं उसके द्वारा भारत के औपनिवेशिक शोषण हेतु किए गए कार्यों से विशेषतया रियासतों को पराजित करके, साम्राज्य विस्तार की प्रक्रिया से अवगत होना। 2. प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के कारणों एवं परिणामों तथा भारत में प्रत्यक्ष ब्रिटिश प्रशासन की स्थापना से अवगत होना।	2. भारत में अंग्रेजी ईस्ट इण्डिया कंपनी द्वारा 1857 ई. तक अपने साम्राज्य का विस्तार, इसके साथ-साथ भारतीय उद्योग धन्धों का ह्रास इसके साथ अन्य कारणों से भी भारतीयों का अंग्रेजों के प्रति बढ़ता असंतोष, अंतत: अंग्रेजों के विरूद्ध प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, कंपनी के शासन का अंत, भारत ब्रिटिश साम्राज्य के शासन के अंतर्गत। क. ईस्ट इण्डिया कंपनी द्वारा भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का विकास-मराठों से संघर्ष, अंग्रेजों की विजय। ख. मैसूर तथा अन्य विरोधी भारतीय शक्तियों का दमन। ग. अंग्रेजों के प्रति असंतोष तथा उसके कारण। घ. भारतीय उद्योग धन्धों का पराभव, औपनिवेशिक शोषण, सैन्य व प्रशासनिक सुधारों का विरोध। ङ. प्रथम स्वतंत्रता संग्राम एवं उसके परिणाम। च. इंग्लैण्ड प्रशासन द्वारा भारतीय प्रशासन का प्रत्यक्ष दायित्व ग्रहण करना।	1. व्याख्यान 2. मानचित्र 3. चार्ट 4 प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के वीरों-वीरांगनाओं के चित्रों का प्रदर्शन 5. कथानक 6. अभिनय (प्रथम -स्वतंत्रता संग्राम	1. प्रश्नोत्तर (दीर्घ, लघु एवं बहु-विकल्पी) 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति 3. मानचित्र अंकन 4. चार्ट निर्माण 5. वाद-विवाद 6 चित्राधारित प्रश्न

अपेक्षित योग्यता	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
1. एक उपनिवेश के रूप में भारत में प्रशासनिक सुधार, शिक्षा, विज्ञान में प्रगति एवं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना से अवगत होना। 2. भारत में समाज-सुधार आन्दोलनों के उदय के कारणों, स्वरूप एवं परिणामों से परिचित होना। 3. भारत के औपनिवेशिक शोषण के कारणों एवं परिणामों से परिचित होना।	3 ब्रिटिश साम्राज्य के अंग के रूप में भारत में प्रशासनिक सुधार, शिक्षा तथा विज्ञान में प्रगति, समाज सुधारों का प्रारम्भ, किन्तु आर्थिक क्षेत्र में भारतीयों का शोषण यथावत् एवं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना। क. ब्रिटिश साम्राज्य के अंग के रूप में भारत में प्रशासनिक सुधार का क्रम। ख. शिक्षा तथा विज्ञान द्वारा भारत को आधुनिक बनाने का प्रयास तथा भारतीयों का अंग्रेजीकरण। ग. भारतीयों में समाज-सुधार की लहर तथा सामाजिक अवरोधों के निवारण हेतु प्रयास। घ. स्वतंत्रता के लिए वैधानिक संघर्ष का प्रारम्भ, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना। ङ. अंग्रेजों द्वारा जारी आर्थिक शोषण के प्रति भारी असंतोष, ब्रिटेन के उद्योगों के लिए भारत का बाजार के रूप में उपभोग	1. व्याख्यान 2. चार्ट (प्रशासनिक सुधारों को विशेष रूप से दर्शाने हेतु) 3. कथानक (विशेष रूप से समाज सुधार के संदर्भ में) 4. समकालीन वैज्ञानिक आविष्कारों के चित्र 5. वैज्ञानिक प्रगति का चार्ट (जो यह दर्शाए कि यह प्रगति क्रमशः कैसे हुई)	1. प्रश्नोत्तर (दीर्घ, लघु, बहु-विकल्पी) 2. चार्ट-निर्माण 3. वाद-विवाद 4 चित्र-आधारित प्रश्न
1. बीसवीं शताब्दी की परिस्थि-तियों में गांधी जी का उत्कर्ष एवं उनके नेतृत्व में विभिन्न आन्दोलनों के माध्यम से स्वतंत्रता प्राप्ति से अवगत होना। 2. ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों के विरोध के क्रांतिकारी रूप व नीतियों से सामाजिक मतभेद से अवगत होना। 3. प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों, उनके कार्यों एवं भूमिका से परिचित होना तथा सशक्त क्रान्तिकारियों की गति विधियों से अवगत होना। 4. देशी रियासतों में स्वतंत्रता संग्राम, 1909, 1919 व 1935 के विधान से अवगत होना।	4. बीसवीं शताब्दी में (1) गांधीजी के नेतृत्व में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, इस आंदोलन के प्रमुख कार्यक्रम, स्वदेशी आंदोलन, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन तथा भारत छोड़ो आंदोलन। (2) स्वतंत्रता आंदोलन में पत्रकारों तथा साहित्यकारों का योगदान (3)अन्य क्रान्तिकारियों तथा देशी रियासतों की जनता का स्वतंत्रता आंदोलन में सहयोग जिसके फलस्वरूप 1947 ई. में भारत की स्वतंत्रता। क. बीसवीं शताब्दी में स्वतंत्रता हेतु आंदोलन का वैधानिक तथा क्रान्तिकारी रूप। ख. अंग्रेजी औपनिवेशिक, आर्थिक एवं राजनीतिक नीतियों का विरोध। (अंग्रेजों द्वारा फूट डालकर शासन करने की नीति-मुसलमान, अछूत, जनजाति, कृषक, मजदूर तथा महिलावर्ग आदि में भारतीय समाज का विभाजन) ग. गांधीजी के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के स्वाधीनता आंदोलन के प्रमुख कार्यक्रम-स्वदेशी आंदोलन, असहयोग आंदोलन। प्रमुख आंदोलन-कर्ताओं की भूमिका एवं सशस्त्र क्रान्तिकारियों का योगदान। घ. ब्रिटिश भारत के अधीन भारतीय जनता तथा देशी रियासतों का स्वतंत्रता संघर्ष में योगदान।	1. व्याख्यान 2. मानचित्र 3. चार्ट 4 समूह परिचर्चा 5. प्रेक्षण/भ्रमण	1. प्रश्नोत्तर (लघु, दीर्घ एवं बहु-विकल्पी) 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति 3. सत्य/असत्य कथनों पर आधारित प्रश्न। 4. मानचित्र अंकन 5. वाद-विवाद

अपेक्षित योग्यता	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया-विधि युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
	ङ. 1919 के विधान द्वारा भारतीयों को अधिकार प्रदान किन्तु असंतोष में वृद्धि फलस्वरूप सविनय अवज्ञा आंदोलन। च 1935 का विधान, इसका विरोध, भारत छोड़ो आंदोलन। कैबिनेट मिशन तथा स्वतंत्रता की प्राप्ति।		
1. सांस्कृतिक क्षेत्र में समाज सुधारकों एवं समाज सेवी संस्थाओं के कार्यों, विशेषतया स्त्रियों एवं दलितों के उद्धार-कार्यों से अवगत होना।	5. सांस्कृतिक क्षेत्र में समाजसुधारकों तथा समाज सेवी संस्थाओं के कार्य, दलितों एवं स्त्रियों की दशा में सुधार के प्रयास। क. महादेव गोविन्द रानाडे, सैय्यद अहमद खां, विवेकानन्द आदि तथा समकालीन समाज सेवी संस्थाओं के समाज सुधार कार्यक्रमों की चर्चा ख. दलित वर्ग के उत्थान के लिए ज्योतिबा फुले, नारायण गुरु तथा अन्य सामाजिक नेताओं का योगदान।	1. व्याख्यान 2. चार्ट (प्रत्येक समाज सुधार आंदोलन एवं समाज सेवी संस्थाओं का) 3. कथानक 4. सम्बंधित चित्र / पोस्टर (विशेषतया दलित एवं स्त्री-सुधार के) 5. अभिनय 6. परिचर्चा (सामाजिक विषमताओं, कुप्रथाओं, अन्धविश्वासों आदि से सम्बंधित)	1. प्रश्नोत्तर (दीर्घ, लघु, बहु-विकल्पी) 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति 3. समाजिक भेद-भाव कु-प्रवृत्तियों पर चर्चा एवं उनके प्रश्न (मौखिक एवं लिखित)
1. स्वातंत्र्योत्तर भारत के संविधान निर्माण एवं पंचवर्षीय योजनाओं तथा उनके कार्यों, उपलब्धियों के मूल्यांकन से अवगत होना। 2. भारत में नई प्रशासनिक इकाईयों, प्रदेशों की पुनर्रचना आदि की जानकारी होना। 3. भारत की शांतिपूर्ण विदेश नीति के आधार में पंचशील सिद्धान्तों एवं उनकी प्रासंगिकता से अवगत होना।	6. स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय संविधान का निर्माण तथा पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा औद्योगिक तथा समाजार्थिक विकास के कार्य, शान्तिपूर्ण विदेशनीति के आधार पर भारत का विश्व-शांति का प्रयास। क. स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय संविधान का निर्माण एंव उसका क्रियान्वयन। ख. सामाजिक तथा आर्थिक सुधार, भारतीय प्रदेशों की पुनर्रचना तथा प्रशासनिक इकाईयों का गठन। ग. पंचवर्षीय योजनाएं–स्वरूप एवं विस्तार घ. भारत की विदेश नीति (पंचशील तथा गुट निरपेक्षता का तात्पर्य अपेक्षित) भारत पर पड़ोसियों के आक्रमण, भारत का विश्व शांति हेतु सतत् प्रयास।	1. व्याख्यान 2. पंचवर्षीय योजनाओं के चार्ट व ग्राफ अनुरेख आदि का अध्ययन। 3. प्रशासनिक इकाइयों के चार्ट आदि। 4. मानचित्र (विश्व एवं एशिया के, विश्व भारतीय विदेश नीति का प्रसार अंकित हो सकेगा।) एवं एशिया के मानचित्र द्वारा पड़ोसी देशों के साथ भारतीय संबंधों पर प्रकाश पड़ेगा।	1. प्रश्नोत्तर (लघु, दीर्घ एवं बहु-विकल्पी) 2. रिक्त-स्थानों की पूर्ति 3. मानचित्र अंकन 4. चार्ट-निर्माण (पंचवर्षीय योजनाओं, प्रशासकीय इकाईयों से संबंधित।)

अपेक्षित योग्यता	प्रकरण / उप प्रकरण	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया-विधि युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
1. स्वातंत्र्योत्तर भारत में प्रजातंत्र के सुदृढ़ीकरण की प्रक्रियाओं से अवगत होना। 2. शिक्षा, धर्म निरपेक्षता, सामाजिक एकता के महत्व एवं अस्पृश्यता की कुप्रथा में अवरोध के रूप में उसकी जानकारी होना। 3. देश की सुरक्षा के प्रति अपने उत्तरदायित्व के बोध से अवगत होना।	1. **भारत में प्रजातंत्र का सुदृढ़ीकरण** क. सामाजिक पुनर्निर्माण के प्रयास-शिक्षा, धर्म निरपेक्षता, सामाजिक भेद-भाव एवं अस्पृश्यता समाप्त करने के संवैधानिक प्रावधान एवं प्रयास। ख. आर्थिक पुनर्निर्माण-पंचवर्षीय योजनाओं की आवश्यकता एवं उनकी उपलब्धियाँ। ग. देश की सुरक्षा एवं उसके प्रति जनजागरूकता एवं जनता के अधिकार। राष्ट्रीय तथा भावात्मक एकता में साम्प्रदायिक एवं सामाजिक भेद-भाव का उन्मूलन।	1. व्याख्यान 2. चार्ट/पोस्टर 3. लघु-कथानक 4. अभिनय 5. वाद-विवाद	1. प्रश्नोत्तर 2. लघु-प्रश्न, दीर्घ प्रश्न, बहु-विकल्पी 3. सत्य/असत्य कथनों पर आधारित प्रश्न
1. अन्तर्राष्ट्रीय शांति में नस्लभेद के खतरे से परिचित होना। 2. प्रथम व द्वितीय विश्व युद्धों के कारणों एवं परिणामों से अवगत होना। 3. अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं व्यवस्था बनाए रखने में यूनेस्को, यूनिसेफ, डब्ल्यू एच.ओ. (Unesco, Unicef, WHO) आदि के योगदान व भारतीय विदेश नीति के मूलभूत सिद्धान्तों से परिचित होना।	2. **अन्तर्राष्ट्रीय शांति एवं सहयोग तथा इसमें भारत की भूमिका :** क. देशों के मध्य सम्बंधों में टकराव के कारण-रंगभेद के खतरे। ख. प्रथम एवं द्वितीय विश्वयुद्धों का सरल परिचय। ग. संयुक्त राष्ट्र की स्थापना प्रमुख अंग व उनके कार्य- यूनेस्को, यूनिसेफ, डब्ल्यू एच.ओ. (Unesco, Unicef, WHO) आदि का सरल परिचय। घ. भारतीय विदेशनीति का शांतिपूर्ण आधार पंचशील गुटनिरपेक्षता एवं अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एवं शांति की स्थापना का प्रयास। ङ. राष्ट्रकुल एवं सार्क का सरल परिचय।	1. व्याख्यान 2. चार्ट/पोस्टर 3. समूह चर्चा	उपरोक्त
1. स्वातंत्र्योत्तर भारत में समाजार्थिक एवं प्रौद्योगिकी क्रांति के परिणाम, बेरोजगारी एवं जनसंख्यावृद्धि को नियंत्रित करके, सुनियोजित विकास की प्रक्रिया से अवगत होना। 2. पर्यावरण के प्रति उत्तरदायित्व का बोध होना एवं उसके महत्व से अवगत होना। 3. स्वस्थ आदतों का विकास 4. बालाधिकार एवं बालश्रमिकों की समस्या के निदान-मार्गों से अवगत होना। 5. मानवाधिकारों एवं उनके महत्व तथा मानवाधिकार आयोग एवं उसके कार्यों से अवगत होना। 6. विकलांगों के प्रति मानवीय एवं प्राकृतिक न्याय से परिचित होना एवं उनके उत्थान के प्रयासों के विषय में नियमों/अधिनियमों/प्रावधानों से अवगत होना।	**3. हमारा बदलता समाज-** क. आर्थिक, प्रौद्योगिकी क्रांति एवं उनके महत्व, रोजगार, उद्योग धंधों के विकास, बेरोजगारी तथा जनसंख्या वृद्धि सीमित परिवार तथा सुनियोजित विकास का प्रयास। ख. पर्यावरण के प्रति भारतीय जागरूकता पर्यावण प्रदूषण से उत्पन्न खतरे एवं उनके उन्मूलन हेतु आवश्यक कदम। ग. शिष्टाचार के नियम, राष्ट्रीय संपत्ति की सुरक्षा, सड़क पर चलने के नियम, स्वास्थ्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण कदम। घ. बाल अधिकार, आशय एवं निर्धारित बाल अधिकार बाल श्रमिकों की समस्या इसके प्रतिकूल प्रभाव एवं इसके समापन के कार्य। बाल श्रमिकों को विद्यालयों में शिक्षित-प्रशिक्षित कर पुर्नस्थापित करने की योजनाओं का अमल। ङ. मानवाधिकारों की परिभाषा, मानवाधिकार आयोग, कार्य एवं अधिकार। च. विकलांगों के प्रति सामाजिक संवेदनशीलता एवं उत्तरदायित्व। 1. समाज में उनके प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन पर बल। 2. सरकार व अन्य संस्थाओं द्वारा उनकी सहायता। 3. उनकी मुख्यधारा में समानता के आधार पर गतिशीलता।	1. व्याख्यान 2. चार्ट/पोस्टर 3. कथानक 4. अभिनय 5. वाद-विवाद 6. भ्रमण/अवलोकन	1. प्रश्नोत्तर 2. लघु प्रश्न 3. बहुविकल्पी प्रश्न 4. रिक्त स्थानों की पूर्ति 5. कथन पर आधारित 6. मौखिक वार्ता

सामाजिक अध्ययन-भूगोल

भूगोल शिक्षण के सामान्य उद्देश्य–

1. प्राकृतिक पर्यावरण तथा मानव जीवन पर पड़ने वाले उनके प्रभावों को समझना।
2. भौगोलिक तथ्यों एवं सिद्धान्तों के अध्ययन से वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना।
3. देश तथा संसार में व्याप्त सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं को समझने तथा उनके हल करने की क्षमता विकसित करना।
4. विश्व में उपलब्ध विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों से परिचित होना तथा उनके यथोचित दोहन तथा संरक्षण की आवश्यकता का बोध करना।
5. विभिन्न देशों में घटित प्राकृतिक घटनाओं तथा उनसे प्रभावित जन-जीवन की जानकारी प्राप्त करना।
6. पृथ्वी से सुदूर निर्जन स्थलों की खोजों और उनकी प्राकृतिक स्थितियों से परिचित होना तथा अन्वेषण संबंधी साहसिक प्रवृत्ति का विकास करना।
7. भौगोलिक अध्ययन के आधार पर देश-प्रेम तथा भाईचारा के साथ-साथ विश्व-बन्धुत्व की भावना सुदृढ़ करना।

क्र.	शिक्षार्थी के लिये व्यवहारपरक उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	अधिगम की प्रक्रिया (विधि युक्तियां, अपेक्षित उपकरण)	मूल्यांकन-विधि
1.	• पृथ्वी द्वारा सूर्य के परिक्रमण व पृथ्वी के परिभ्रमण को समझना। • ऋतु परिवर्तन को समझना। • ऋतुओं की विशेषताएं पहचानना	**इकाई -1** **सूर्य-पृथ्वी, पृथ्वी व चन्द्रमा के संबंध** • पृथ्वी का उपग्रह चन्द्रमा, पृथ्वी-चन्द्रमा संबंध। • सौर परिवार। • नक्षत्र-राशियां। • पृथ्वी की गतियां। • उसका परिभ्रमण-दिन-रात। • उसका परिक्रमण -ऋतुपरिवर्तन, ऋतुओं की विशेषताएं, दिन-रात का छोटा-बड़ा होना।	• कक्षा में सहायक सामग्री की मदद से सूर्य से पृथ्वी की दूरी-निकटता बताई जाएं। • सहायक सामग्री की मदद से परिभ्रमण, परिक्रमण समझाया जाएं। • ऋतुओं की विशेषताएं पूछी, बताई, लिखी जाएं, उनकी सूची बनाई जाएं। • चन्द्रमा की कलाओं के चित्र दिखाएं। उनको कारण समझाएँ।	• चित्र, ग्लोब व एटलस पर प्रकरण संबंधी प्रश्नोत्तर पूछना व लिखवाना। • प्रकरण से संबंधित चित्र बनवाना।
2.	• मानचित्र या चित्र में-अक्षांश-देशांतर रेखाओं को पहचान सकना। • ध्रुवों को पहचानना। • अक्षांश देशांतर के आधार पर देश व महाद्वीप की स्थिति बताना। (मानचित्र देखकर)	**इकाई 2** • अक्षांस व देशांतर रेखाएं। • कर्क, मकर व भूमध्य रेखाएं। • उत्तरी व दक्षिणी ध्रुव। • अक्षांश-देशांतर रेखाओं के आधार पर क्रमशः भारत, एशिया व यूरेशिया का निर्धारण।	• मिट्टी का ग्लोब बनावाएं जिस पर रेखाएं खिंचवाई जाएं। • ग्लोब व नक्शे में अक्षांश-देशांतर रेखाएं दिखाई जाएं। • देश व महाद्वीप की स्थिति इन रेखाओं में दिखाई जायं। • ग्लोब चित्र व मानचित्र द्वारा कर्क, मकर व भूमध्य रेखाएं दिखाई व बताई जाए।	• चित्र, ग्लोब व एटलस दिखाकर प्रश्नोत्तर। • ढूंढ़-खोज की प्रतियोगिता
3.	• बच्चों द्वारा वायुमंडल की साधारण गतियों को पहचानना-समझना। • प्रदूषण की समझ होना। • उससे बचाव का महत्व समझना।	**इकाई -3 (क)** **पृथ्वी का वायुमंडल व उसके कारक** • वायुमंडल की गैसीय संरचना। • तापमान। • वायुदाब। • वायुमंडल की आर्द्रता • तापमान व वायुदाब में संबंध। • उच्च व निच्च वायु-दाब। • वायुमंडलीय प्रदूषण-गैसीय ध्वनि प्रदूषण, परमाणु-विकिरण। • प्रदूषण से बचाव।	• प्रकरण से संबंधित दृश्य व चित्र दिखाएं जायें।	• प्रश्नोत्तर द्वारा। • चित्र व पोस्टर बनवाकर।
	• जलवायु व मौसम की विशेषताओं व विविधताओं को पहचानना।	**इकाई 3 (ख)** **जलवायु और मौसम** • जलवायु के तत्व, मौसम के तत्व। • जलवायु तथा मौसम में सम्बंध और अंतर।	• बच्चों से आस-पास की जलवायु व मौसम का निरीक्षण करवाया जाय। • इस निरीक्षण के नतीजों को लिखवाया जाय। • चार्ट व चित्रों के उपयोग से जलवायु व मौसम की विशेषताएं समझाई जायं।	• प्रश्नोत्तर द्वारा। • निरीक्षण के अनुभवों को लिखवाकर। • प्रकरण से संबंधित अनुभव सुनकर

क्र.	शिक्षार्थी के लिये व्यवहारपरक उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	अधिगम की प्रक्रिया (विधि युक्तियां, अपेक्षित उपकरण)	मूल्यांकन-विधि
	• कृत्रिम उपग्रह का नाम व काम बताना • मौसम-निरीक्षण के यंत्रों का ठीक-ठाक प्रयोग करना। • उनके उपयोग का उद्देश्य व कारण समझना।	**इकाई - 3 (ग)** **मौसम निरीक्षण के साधन व यंत्र** • कृत्रिम उपग्रह प्रणाली-इनसैट सीरीज • बैरोमीटर, थर्मामीटर, वर्षामापी, वायुदिशा व वायुगतिमापक यंत्र	• कृत्रिम उपग्रह का चित्र दिखाया जाए, उसके बारे में बताया जाय। • मौसम निरीक्षक यंत्रों को कक्षा में दिखाया जाये। • बच्चों से इन यंत्रों का सामूहिक प्रयोग कराया जाय। • बच्चों से मौसम के आंकड़े नोट कराए जायं।	• यंत्रों का प्रदर्शन और उन पर प्रश्नोत्तर द्वारा • यंत्रों के प्रयोग द्वारा। • उनमें मौजूद गणनाएं पढ़वाकर
4.	• बच्चों द्वारा मानचित्र में अपने महाद्वीप की स्थिति, उसके पर्वतों, नदियों मैदानों को आसानी से बताना। • यूरेशिया के प्रमुख नगरों, बन्दरगाहों के नाम बताना, उन्हें मानचित्र में आसानी से ढूंढ लेना। • मानचित्र में प्रमुख रेल, हवाई व जल मार्गों को दर्शाना।	**इकाई -4 (क)** **यूरेशिया-यूरोप और एशिया** • यूरेशिया की सीमाएं व विस्तार। • सामुद्रिक स्थिति। • धरातल व नदियां, जलवायु, वनस्पति। • प्रमुख बन्दरगाह व नगर। • यूरेशिया के प्रमुख रेल, हवाई व जलमार्ग। • आर्थिक संसाधन	• ग्लोब, एटलस व नक्शों में प्रकरण से संबंधित चीजें दिखाई जाये। • उन्हें ढूंढने का अभ्यास कराया जाय। • छोटे-छोटे समूहों में नक्शों में अलग-अलग चीजें भरने का काम दिया जाये।	• नक्शों व ग्लोब में प्रकरण से संबंधित नामों की ढूंढ-खोज करवाना। • प्रश्नोत्तर द्वारा। • नक्शें बनवाकर तथा उनमें प्रकरण से संबंधित चीजें भरवाकर। • उपरोक्त की प्रतियोगिता करवाकर।
	• अलग-अलग देशों (सम्बन्धित देशों) के बारे में जानकारी होना। • अपने देश व दूसरे देश के आकार, आबादी आदि में तुलना करना। • अपने व इन देशों के निवासियों में तुलना करना। • जनसंख्या से उत्पन्न समस्या व समाधान के कारकों को जानना।	**इकाई-4 (ख)** **एशिया व यूरोप के कुछ प्रमुख देखों का अध्ययन (सीमाएं, विस्तार, धारातल, जलवायु, जनसंख्या, वन, कृषि, खनिज, उद्योग, व्यापार, रहन-सहन, भाषा व संस्कृति)** • पूर्वी एशिया-जापान। • उत्तरी एशिया-रूस। • पश्चिमी एशिया-ईराक। • यूरोप-ब्रिटेन। • भारत के पड़ोसी देश।	• छोटे-छोटे समूहों में नक्शों को बनवाने व भरवाने का खूब अभ्यास कराया जाय। • इन देशों से संबंधित चित्र जुटाकर दिखाए जाएं। • इनके त्यौहारों-पर्वों के बारे में बताया जायं। • इन देशों की लोककथाएं व कहानियों की किताबें जुटाकर बच्चों को पढ़वाई जायं। • देशों के निवासियों का फेंसी-ड्रेस-शो कराया जाय।	• प्रश्नोत्तर • नक्शे बनवाना-भरवाना • चित्रों में निवासियों की वेश-भूषा की पहचान करवाना। • शिक्षक की सूझ-बूझ के अनुसार अन्य तरीके।
5	• बच्चों में यात्राओं का आकर्षण पैदा करना। • उनमें जोखिम उठाने का साहस पैदा करना।	**इकाई - 5** **साहसिक यात्राएं** • वास्कोडिगामा की भारत यात्रा का वर्णन। • वास्कोडिगामा का यात्रा-मार्ग।	• चित्रों के साथ वास्कोडिगामा का यात्रा वृतान्त रोचक ढंग से बनाया जाय। • वास्कोडिगामा का यात्रा-मार्ग बनाकर बच्चों को दिखाया जाये। • बच्चों के अपने छोटे-छोटे यात्रा-अनुभव सुने जाये। • उनसे उनके यात्रा मार्गो के नक्शे बनवाएं-वर्णन लिखवाएं।	• बच्चों के यात्रा वृत्तान्त सुनना। • उनसे उनके यात्रा-अनुभव लिखाना। • यात्र-मार्गो के नक्शे बनवाना।
6.	• बच्चों द्वारा नक्शों में दिशाएं पहचानना। • उनके द्वारा विभिन्न स्थानों व स्थितियों को नक्शों द्वारा प्रदर्शित करना।	**इकाई - 6** **मानचित्रण** • नक्शे में दिशाओं की पहचान। • अपने गांव शहर का मानचित्रण। • अपने क्षेत्र, जिले व प्रदेश का मानचित्रण। • देश व महाद्वीप का मानचित्रण। • मानचित्रों में नगर, देश, नदियां, पर्वत आदि प्रदर्शित करना।	• बच्चों से प्रकरण से संबंधित मानचित्रण करवाया जाय। मानचित्र भरवाएं। • शिक्षक बच्चों की सहायता करें • छपे हुए मानचित्र में प्रकरण से संबंधित चीजों की ढूंढ-खोज' प्रतियोगिता कराएं।	• अधिगम के लिये दी गई विधियां-युक्तियां अपनाएं। • कुछ नये रुचिकर तरीके खोजें। उन्हें आजमाएं।

क्र.	शिक्षार्थी के लिये व्यवहारपरक उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	अधिगम की प्रक्रिया (विधि युक्तियां, अपेक्षित उपकरण)	मूल्यांकन-विधि
1.	• अक्षांश-देशान्तर रेखाएं खींचना। उनके बारे में बताकर। • देशांतर रेखाओं और समय के संबंध को समझना।	**इकाई -1** **अक्षांश-देशान्तर और समय** • देशान्तर रेखाएं और समय-गणना। • स्थानीय और मानक समय।	• ग्लोब के प्रयोग तथा चार्ट द्वारा बच्चों को देशांतर रेखाओं और समय-गणना का संबंध समझाने की कोशिश की जाये। • स्थानीय और मानक समय ग्लोब व देशांतरों की मदद से समझाएं • अक्षांश-देशांतर रेखाएं खींचने का अभ्यास कराएं।	• ग्लोब, मानचित्र और चार्ट पर आक्षांक्ष-देशांतर दिखाकर प्रश्नोत्तर । • देशांतर व समय के संबंधों पर प्रश्नोत्तर। • ये रेखाएं खींचने का अभ्यास।
2	• बच्चों द्वारा भूपटल निर्माण की प्रक्रिया को समझना।	**इकाई-2** **भूपटल की संरचनाएं** • सामान्य परिचय। • शैल-आग्नेय, अवसादी व रूपान्तरित शैलों का निर्माण, इनके कुछ उदाहरण, इनसे हानि-लाभ।	• संभव होने पर भ्रमण द्वारा इस प्रकार के शैल दिखाना। • विभिन्न प्रकार की मिट्टियों की परतें जमाकर 'अवसादी शैल-निर्माण' की प्रक्रिया समझाना। • चित्रों द्वारा शैल-निर्माण की प्रक्रिया समझाना।	• प्रश्नोत्तर। • भ्रमण के दौरान शैलों की पहचान कराके। • शैलों के चित्र बनवाकर
3.	• बच्चों द्वारा अपने परिवेश में मौजूद विभिन्न भू-आकृतियों को पहचान लेना।	**इकाई-3 (क)** **धरातल का रूप बदलने वाले कारक भूपटल का मुड़ना, टूटना व उठना** • इन क्रियाओं से बनी भू-आकृतियां -वलित पर्वत, दरार घाटी, ब्लाक पर्वत	• चित्रों और रेखाचित्रों की मदद से इन क्रियाओं और कारकों के बारे में समझाया जाये। • यदि आस-पास हों तो बच्चों से इन आकृतियों की खोज-बीन व पहचान कराई जाये।	• दृश्यों व चित्रों पर प्रश्नोत्तर। • माडल निर्माण। • छोटे-छोटे समूहों में चित्र-निर्माण
	• ज्वालामुखी व भूकम्प की जानकारी होना • इनकी हानियों से बचाव की समझ होना।	**इकाई-3 (ख)** **ज्वालामुखी व भूकम्प** • ज्वालामुखी का निर्माण और मानव जीवन पर प्रभाव, विश्व के कुछ प्रसिद्ध ज्वालामुखी। • भूकंप, उनके कारण, कुछ प्रसिद्ध भूकंपों के उदाहरण, उनका मानव जीवन पर प्रभाव।	• ज्वालामुखी व भूकम्पों के रोमांचक वर्णन सुनाए जाये। • भूकंप की सूचनाओं का संग्रह कराएं। • इनसे संबंधित रुचिकर व जानकारी परक छोटी पुस्तकें या लेख जुटाकर बच्चों को पढ़वाएं।	
	• बच्चों द्वारा भूपटल में परिवर्तन के लिए उत्तरदायी शक्तियों को पहचानना।	**इकाई-3 (ग)** **भूपटल में परिवर्तन-ऋतु अपक्षय तथा अपरदन परिवर्तनकारी शक्तियां** • प्रवाहित जल। • भूमिगत जल। • हिमानी • समुद्री लहरें • पवन।	• दृश्यों व चित्रों की मदद से इनके बारे में बताएं।	

क्र.	शिक्षार्थी के लिये व्यवहारपरक उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	अधिगम की प्रक्रिया (विधि युक्तियां, अपेक्षित उपकरण)	मूल्यांकन-विधि
4.	• बच्चों द्वारा परिवेश में धरातल के रूपों को पहचानना।	**इकाई -4** **धरातल के विविध रूप** • पर्वत, पठार व मैदान। • विश्व के कुछ प्रसिद्ध पर्वतों, पठारों और मैदानों के उदाहरण/नाम।	• परिवेश में इन रूपों की ढूंढ-खोज कराएं। • माडल निर्माण (सामूहिक रूप से) • चित्रों की मदद से समझाएं। • विश्व के प्राकृतिक मानचित्र में इन पर्वतों, पठारों व मैदानों की ढूंढ-खोज कराएं।	• चित्रों पर प्रश्नोत्तर। • अधिगम के दौरान अपनाई गई युक्तियों से।
5	• वायु की गतियों को पहचानना, इनके बारे में जानना और बताना।	**इकाई -5** **वायु की गतियाँ** • पवनों के प्रकार-नियतवाही व अनियतवाही पवनें। • चक्रवात व तूफान।	• दृश्य, चित्र व 'वर्णन' द्वारा समझाया-बताया जाय। • बच्चों की इस बारे में जानकारियां व अनुभवों को पूछा जाय। • नक्शों व चित्रों के प्रयोग से समझाएं।	• दृश्यों/चित्रों पर पूछताछ द्वारा। • बच्चों से इस बारे में उनकी जानकारियां व अनुभव लिखवाना। • संबंधित नक्शों और चित्रों पर प्रश्नोत्तर।
6	• प्रकरणों के चित्र बना सकना, उनके बारे में बता सकना। • धाराओं के नाम बता सकना। • उनके प्रभाव पर कुछ प्रश्नों के उत्तर दे सकना। • तूफान के लक्षण बता सकना, जल फुहार व आइसबर्ग के चित्र बना सकना।	**इकाई-6** ***समुद्र व उसकी गतियाँ*** • समुद्र की बनावट • संसार के प्रमुख सागर व महासागर। • ज्वार-भाटा। • समुद्री धाराएं। • कुछ प्रसिद्ध गर्म व ठंडी धाराएं, उनका तटों पर प्रभाव • समुद्री तूफान, जल फुहार, आइसबर्ग	• दृश्य, चित्र व 'वर्णन' द्वारा *समझाया-बताया जाय।* • बच्चों की इस बारे में जानकारियां व अनुभवों को पूछा जाय। • नक्शों व चित्रों के प्रयोग से समझाएं। • चित्रों व 'रोचक वर्णनों' का प्रयोग करें। • चित्र बनवाए जाएं।	• दृश्यों/चित्रों पर पूछताछ द्वारा। • बच्चों से इस बारे में उनकी जानकारियां व अनुभव लिखवाना। • संबंधित नक्शों और चित्रों पर प्रश्नोत्तर। • प्रश्नोत्तर (नाम बताकर पूछना कि कौन धारा ठंडी, कौन गरम।) • चित्र पहचानने की गतिविधि।
7.	• सम्बन्धित मानचित्र देखकर आसानी से प्रश्नों के उत्तर देना। • मानचित्र में संबंधित चीजें कमोबेश दर्शा सकना।	**इकाई -7 (क)** **कुछ महाद्वीपों का अध्ययन (सीमाएं, विस्तार, धरातल, नदियां, सामुद्रिक स्थिति, जलवायु, वनस्पति)** • अफ्रीका। • उत्तरी अमेरिका। • दक्षिणी अमेरिका। • आस्ट्रेलिया।	• नक्शों और अभ्यास पुस्तिका का खूब प्रयोग कराया जाये। • नक्शों में प्रकरण से सम्बन्धित चीजों की ढूंढ-खोज कराई जाये। • प्रकरणों से संबंधित जानकारियां कापियों में लिखवाएं-चित्र बनवाएं।	• प्रश्नोत्तर। • मानचित्र में ढूंढ खोज प्रतियोगिता • अलग अलग महाद्वीपों के मानचित्रों के टुकड़े जोड़ने की प्रतियोगिता हो (छोटे समूहों में)
	• बच्चों में नई जगहों के बारे में जानने की इच्छा पैदा होना। • उनके द्वारा प्रकरण से संबंधित प्रश्नों का उत्तर दे सकना।	**इकाई -7 (ख)** **उपर्युक्त महाद्वीपों के एक-एक देश का विस्तृत अध्ययन (वन, कृषि, खनिज, उद्योग, व्यापार, यातायात, जनसंख्या, रहन-सहन, भाषा व संस्कृति)**	• मानचित्र में संबंधित देश दिखाएं। • उनमें स्थानों की ढूंढ खोज प्रतियोगिता कराएं। • इन देशों के जन-जीवन से संबंधित चित्र जुटाकर बच्चों को दिखाएं। उनसे अपने देश के लोगों की तुलना कराएं।	• अधिगम के लिये दी गई युक्तियां अपनाएं।

क्र.	शिक्षार्थी के लिये व्यवहारपरक उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	अधिगम की प्रक्रिया (विधि युक्तियां, अपेक्षित उपकरण)	मूल्यांकन-विधि
		• अफ्रीका-दक्षिण अफ्रीका, जायरे, मिश्र। • उत्तरी अमेरिका - संयुक्त राज्य अमेरिका। • दक्षिण अमेरिका-ब्राजील • आस्ट्रेलिया।		
8.	• बच्चों की मानचित्रण में रुचि पैदा होना।	**इकाई-8** **मानचित्रण** • क्रमशः क्षेत्र, प्रदेश, देश, अलग-अलग महाद्वीपों के प्राकृतिक-राजनीतिक मानचित्र बनाने के अभ्यास। • मानचित्रों में विविध चीजें दर्शाने के अभ्यास।	• 'मानचित्र जोड़ों प्रतियोगिता कराएं तथा अभ्यास के नये तरीके खोजें।	• स्वयं युक्तियाँ/तरीकें निकालें।
9.	• बच्चों में यात्रा करने की इच्छा व साहस का बनना।	**इकाई-9** **साहसिक यात्राएं** • उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुव की यात्रा।	• यात्रा का जीवंत वर्णन करें। • बच्चों के यात्रा अनुभव लिखवाएं।	• अधिगम के लिये दी गई युक्तियां अपनाएं। • अपनी सूझ-बूझ से शिक्षक नये तरीके निकालें।

क्र.	शिक्षार्थी के लिये व्यवहारपरक उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	अधिगम की प्रक्रिया (विधि युक्तियां, अपेक्षित उपकरण)	मूल्यांकन-विधि
1.	● बच्चों द्वारा प्रकरण से संबंधित प्रश्नों का उत्तर देना। ● विभिन्न स्थानों को नक्शों में आसानी से बताना।	**इकाई -1** ● भारत की स्थिति सीमा व विस्तार ● धरातल, नदियां, सामुद्रिक स्थिति। ● जलवायु, वनस्पति, पर्यावरण। ● पर्यावरण प्रदूषण व उससे बचाव के लिये उपाय।	● चित्र, मानचित्र वर्णन, वार्तालाप व गतिविधियां।	● प्रश्नोत्तर। (लिखित व मौखिक) ● समूहों की प्रतियोगिता ● मानचित्रण द्वारा
2	● सिंचाई-साधनों को पहचानना व उनके उपयोग से परिचित होना। ● प्रकरण से संबंधित प्रश्नों के उत्तर देना। ● नक्शे में खनिज व उद्योगों के क्षेत्र बताना।	**इकाई-2** ● सिंचाई-जरूरत और साधन, नदी घाटी परियोजनाएं। ● कृषि-मुख्य उपज और वृद्धि की समस्याएं। ● हरित क्रांति, चावल, गेहूं, गन्ना, कपास, जूट तथा चाय बढ़ती आबादी के लिए उत्पादन बढ़ाने की आवश्यकता। ● खनिज-लोहा, मैगनीज, अभ्रक, कोयला, खनिज तेल, क्षेत्र और संभावना। ● उद्योग-कुटीर तथा भारी उद्योग, लोहा-इस्पात, वस्त्र, सीमेंट, चीनी, रासायनिक खाद, इंजीनियरिंग, जूट, अणु ऊर्जा।	● प्रयोगात्मक कार्य और भ्रमण द्वारा जानकारी-समझ प्राप्त करना। ● भ्रमण, मानचित्रण, वार्तालाप। ● सूचनाएं एकत्र करना।	● वार्तालाप। ● अधिगम-युक्तियाँ। ● अवलोकन द्वारा। ● सामूहिक रूप से (छोटे समूहों में) मानचित्र भरने की प्रतियोगिता। ● शिक्षक और भी तरीके खोजें।
3.	● यातायात के प्रमुख साधनों की जानकारी। ● बढ़ती जनसंख्या की समस्या की जानकारी व समाधान के कारक बताना। ● भारत के विभिन्न राज्यों का ज्ञान।	**इकाई-3** ● यातायात के साधन-रेल, सड़क और वायुमार्ग, प्रमुख बन्दरगाह। ● व्यापार-राज्यों के बीच व्यापार, विदेशों से व्यापार, आयात-निर्यात, प्रमुख वस्तुएं और उनके निर्यातक बंदरगाह। ● हमारे गांवों और नगरों की समस्याएं, जनसंख्या वृद्धि, जनसंख्या वितरण और जीवन की गुणवत्ता। ● भारत के राज्य मानचित्र में राज्यों के नाम पर राजधानियां। ● भारत में उत्तर प्रदेश।	● भ्रमण ● देखी गई वस्तुओं की सूची बनाना। ● नक्शों में यातायात के मार्ग दिखाना। ● बच्चों को चित्र, मानचित्र व प्रकरण से संबंधित सरल पुस्तकें-साधारण आंकड़े व खोजने के लिये दें। ● दो राज्यों की तुलना कराएं।	● अधिगम विधि से ही मूल्यांकन। ● प्रश्नोत्तर।

क्र.	शिक्षार्थी के लिये व्यवहारपरक उद्देश्य	प्रकरण / उप प्रकरण	अधिगम की प्रक्रिया (विधि युक्तियां, अपेक्षित उपकरण)	मूल्यांकन-विधि
4.	• वातावरण के प्रभाव का अनुमान लगाना।	**इकाई -4** • संसार के प्राकृतिक प्रदेश। • प्राकृतिक वातावरण का वहां के मानव जीवन पर प्रभाव। • विकास की ओर बढ़ती दुनियां, विज्ञान के आधुनिक संसाधन	• समझाना, वर्णन करना। • दो प्रदेशों के वातावरण की तुलना। • विज्ञान के चमत्कारी यंत्रों के बारे में बताना। संचार के साधनों का रोचक ढंग से परिचय देना।	• तुलनात्मक प्रश्न।
5.	• मानचित्र बनाना तथा मानचित्र में स्थान निर्धारित करना।	**इकाई -5** **मानचित्रण** • क्षेत्र व जिले का मानचित्रण। • राज्य व देश के मानचित्र को पढ़ना व भरना व मनाना। • संसार के मानचित्र में प्राकृतिक प्रदेशों को भरना।	• मानचित्र के पर्याप्त अभ्यास	• अधिगम विधि से ही मूल्यांकन
6.	• बच्चों में साहसिक यात्रा के प्रति जागरुकता का विकास।	**इकाई-6** **साहसिक यात्राएं** • भारतीय वैज्ञानिकों की अंटार्कटिका यात्रा। • माउण्ट एवरेस्ट-तेनजिंग नोरगे, महिला पर्वतारोही।	• रोचक यात्रा वर्णन सुनाएं। • रोचक यात्रा वर्णन पढाएं।	• बच्चों के उत्साह रुचि व अभिव्यक्ति क्षमता की जांच।
7.	• बच्चों द्वारा दल बनाकर स्वयं यह काम करना।	**इकाई-7** **प्रोजेक्ट-कार्य** • स्थानीय क्षेत्र में जनसंख्या की स्थिति का अध्ययन। • गांवों व नगरों में पर्यावरण प्रदूषण के कारणों का अध्ययन। • विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के रहन-सहन की तुलना करना।	• बच्चों के छोटे-छोटे समूह बनाकर, उन्हें तैयार करें और निकटस्थ क्षेत्रों में अध्ययन के लिये भेजें।	• बच्चों के अनुभव सुनना। • उनके द्वारा एकत्र लिखित सूचनाएं देखें।

चित्रकला

सामान्य उद्देश्य –

1. भौतिक जीवन को आनन्दप्रद एवं रोचक बनाना।
2. कल्पनाशक्ति तथा चिन्तन शक्ति का विकास।
3. प्राकृतिक दृश्यों के प्रति लगाव विकसित करना।
4. सौन्दर्यानुभूति सम्बन्धी भावों को जागृत करना।
5. बच्चों में सहयोग एवं बन्धुत्व के भावों का विकास करना।
6. सुन्दरता के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना।
7. स्थानीय परिवेश का ज्ञान प्राप्त करना।
8. शरीर की मांस-पेशियों में संतुलन तथा मस्तिष्क की एकाग्रता विकसित करना।
9. स्वतंत्र भाव प्रकाशन की क्षमता विकसित करना।
10. चित्रकला के माध्यम से जनसंख्या शिक्षा, स्वास्थ्य शिक्षा तथा पर्यावरणीय शिक्षा के प्रति जागरूक बनाना।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
सौन्दर्यानुभूति– ● बेकार वस्तुओं द्वारा नई कलात्मक वस्तु का रूप देना।	● कपड़े की रंगीन कतरन, विभिन्न आकर प्रकार तथा रंगीन चिड़ियों के पंख, टूटी रंगीन चूडियां, पत्रिकाओं के रंगीन पन्ने तथा व्यर्थ वस्तुओं को एकत्रित करना। ● बच्चों को प्रोत्साहित कराया जाए कि संकलित वस्तुओं के द्वारा वे अपनी कल्पना शक्ति द्वारा वस्तुओं का नया कलात्मक रूप प्रदान करें। जैसे– ❖ रंगीन कपड़े द्वारा कपड़े को विभिन्न आकारों में काटकर अथवा मोड़कर फूलपत्ती बनाना। ❖ चिड़ियों के रंगीन पंखों को कागज पर चिपकाकर पक्षी की आकृति बनाना अथवा कपड़े को पक्षी के आकार का काटकर, सिलकर उसमें बुरादा अथवा रूई भरकर पक्षी की आकृति प्रदान करना तथा उस पर रंगीन पंख चिपकाकर सजीव रूप प्रदान करना। अध्यापक उपरोक्त की भाँति की गई बेकार वस्तुओं द्वारा अन्य कलाकृतियां बच्चों से बनवाएं।	● बच्चों को प्रोत्साहित एवं उत्साहित किया जाए।
रंगों का पहचानना– ● प्रारम्भिक रंग पीला, लाल, नीला हरा। ● द्वितीय रंग नारंगी, बैंगनी, समुद्री तथा धानी।	● अध्यापक बच्चों को विभिन्न रंगों के फूल-पत्तियों को दिखाकर रंगों की पहचान कराएं। ● प्रारम्भिक रंगों को मिलाकर द्वितीय रंग प्राप्त कराएं। ● बच्चों द्वारा बनाए गए चित्रों में रंग भरने की विधि बताएं। ● बच्चों द्वारा बनाए गए चित्र में रंग भरते समय रंगों के चुनाव में अध्यापक सहयोग दें।	● रंग भरने की विधि तथा रंगों के चुनाव का मूल्यांकन।
मांसपेशियों का नियंत्रण तथा आकारों का ज्ञान ● रेखाओं तथा आकारों का ज्ञान। ● आयत, वर्ग, वृत्त, त्रिभुज को पटरी तथा प्रकार की सहायता से रचना करना तथा विभाजित करना। ● सरल रेखाओं पर लम्ब डालना। ● वर्ग, त्रिभुज के अन्तर्गत वृ त्त बनाना। ● सादे अक्षर लेखन विधि (हिन्दी अक्षर)	● अध्यापक ज्यामितीय विधि द्वारा बच्चों को श्यामपट्ट पर वर्ग, त्रिभुज, आयत, वृत्त सरल रेखाओं पर लम्ब डालना, अन्तर्गत वृत्त बनाना बताएं। ● रेखाओं तथा आकारों से संबंधित वस्तुएं बनाने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करें। जैसे-गेंद, गिलास, चौकोर डिब्बा आदि। ● सुन्दर अक्षरों में छोटे-छोटे वाक्य लिखाएं। जैसे-भारत, कमल, कान, ताल आदि।	● बच्चों के कार्यों का तुलनात्मक मूल्यांकन।
कल्पना शक्ति का विकास करना- ● स्वतंत्र भाव प्रकाशन ❖ प्राकृतिक दृश्य बनाना। ❖ मेला, तीज-त्यौहार के दृश्य बनाना। ❖ कहानी चित्रण।	● प्राकृतिक दृश्य बनाते समय अध्यापक बच्चों को पूर्ण सहयोग दें तथा दृश्य में दूर और पास को ज्ञान कराएं। दृश्य में रंग भरने की विधि बताएं। जैसे– पहाड़, पेड़, नदी, ताल तथा घर आदि का उचित स्थान पर दर्शाना। सूर्योदय, सूर्यास्त का दृश्य। ● अध्यापक बच्चों को तीज, त्यौहार, मेला, प्रदर्शनी आदि को देखने के लिए प्रोत्साहित करें। जैसे–दशहरा, दीपावली, ईद, बड़ा दिन आदि। ● कहानी चित्रण अध्यापक बच्चों को छोटी-छोटी शिक्षाप्रद कहानियां सुनाए तथा बच्चों को प्रोत्साहित करें कि वे अपनी कल्पना शक्ति से कहानी की किसी घटना को चित्रित करें तथा रंग भरें। जैसे–लोमड़ी, सारस की दावत', 'अंगूर खट्टे हैं' आदि।	● चित्रों की वास्तविकता तथा संदेश पूरक का मूल्यांकन।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
स्मृति का विकास- ● स्मृति चित्रण ● घरेलू प्रयोग में आने वाली सरल आकृति की वस्तुएँ तथा खेल का सामान।	● अध्यापक बच्चों को प्रोत्साहित करें कि वे घरेलू सामान तथा खेल के सामान का भली-भाँति निरीक्षण करें। ● अध्यापक वस्तुओं का आसान विधि द्वारा चित्रांकन बताए तथा निम्नलिखित वस्तुओं का चित्रांकन बच्चों द्वारा कराएं। जैसे-लोटा, कटोरी, थाली, गिलास, फुटबाल, हॉकी, गेंद।	● चित्र की वास्तविकता तथा अनुपात का मूल्यांकन।
कार्य के प्रति रुचि, उत्सुकता का विकास- ● आलेखन ❖ सरल प्राकृतिक तथा ज्यामितीय आलेखन	● अध्यापक बच्चों से फूल, पत्ती तथा कली की बनावट तथा रंग का ध्यानपूर्वक निरीक्षण कराएं। ● आयत तथा वृत्त में फूल, पत्तियों तथा कली पर आधारित सरल आलेखन की इकाई बनाकर रंग भराएं। इकाई की पुनरावृत्ति न कराएं। ● परकार तथा पटरी की सहायता से आयत तथा वृत्त में सरल ज्यामितीय आलेखन बनावाएं तथा रंग भरवाएं।	● आलेखन की रेखाओं में बल तथा रंगों के चुनाव का मूल्यांकन।
बढ़ती जनसंख्या के प्रति छात्रों को जागृत कराना- ● विज्ञापन ❖ जनसंख्या संबंधी दोष, निवारण।	● विषय संबंधी कहानियां, लेख आदि सुनाकर बच्चों से उनकी कल्पनाशक्ति का विकास कराते हुए चित्रण कराना। ● अध्यापक बच्चों को प्रोत्साहित कराएं कि वे स्वयं समस्याओं का निरीक्षण करें और चित्रों द्वारा समस्याओं का समाधान करें। जैसे- ❖ **शीर्षक-ऐसी स्थिति क्यों**-वर्षा में छाता लगाए तथा माता-पिता के साथ में उनके कई बच्चे, जिनमें कुछ बच्चे छाते के अंदर तथा कुछ छाते के बाहर भीगते हुए। **नोट** : इसी प्रकार उपरोक्त के विपरीत छाते के नीचे माता-पिता तथा दो बच्चे जो कि वर्षा से बचे हैं। ❖ **शीर्षक -बढ़ती जनसंख्या घटती सुविधाएं:** अस्पताल के कमरे का दृश्य, चार पलंग जिनपर दो-दो मरीज लेटे हैं, कुछ मरीज फर्श पर लेटे हुए। **नोट** : इसी प्रकार उपरोक्त विषय के विपरीत उचित सुविधाओं का दृश्य।	● प्रदर्शनी द्वारा तुलनात्मक मूल्यांकन। ● बच्चों द्वारा बनाए गए चित्रों का सामूहिक प्रदर्शन तथा मूल्यांकन कराया जाए।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
सौन्दर्यानुभूति– ● स्थानीय उपलब्ध बेकार वस्तुओं द्वारा सजावट। ● टूटी-फूटी वस्तुओं को कलात्मक रूप देना। ● टीन के डिब्बे, रंगीन मोती, रंगीन शीशे के टुकड़े लकड़ी की छीलन आदि का संकलन।	● अध्यापक बच्चों के कार्य में सहयोग प्रदान करें। ● अध्यापक कलाकृतियों के नमूने बनाकर बच्चों को दिखाएं तथा प्रोत्साहित करें। जैसे-टीन के डिबे में रंगीन मोती अथवा रंगीन शीशे के टुकड़े चिपकाकर कलात्मक रूप प्रदान कराएं। ● लकड़ी की छीलन को रंगकर विभिन्न आकार-प्रकार के फूल-पत्ती, कली आदि बनावाएं	● बच्चों की कल्पना शक्ति तथा बौद्धिक विकास का मूल्यांकन
रंगों का ज्ञान– ● आष्टवाल्ड रंग चक्र ● समीपी तथा विरोधी रंग	● बच्चों द्वारा बनाये गये आलेखन में रंगों का चुनाव तथा संयोजन में सहायता प्रदान करें। ● समीपी तथा विरोधी रंगों के महत्व को बताया जाए।	● सुंदर रंग संयोजन का मूल्यांकन
रेखा तथा आकार– ● पटरी परकार की सहायता से ज्यामितीय रचना कराना। जैसे–समबाहु त्रिभुज, समद्विबाहु त्रिभुज, षष्टभुज वर्ग अंतर्गत वृत्तों की श्रृंखला बनाना। ● हिन्दी अक्षर लेखन	● अध्यापक ज्यामितीय विधि द्वारा श्यामपट पर निर्मेय कर के बच्चों को बताएं। ● आकारों से संबंधित वस्तुएं बनाने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करें। जैसे-फुटबाल, बक्सा, पतंग आदि। ● ग्राफ विधि से हिन्दी के सरल अक्षर लेखन विधि बताई जाए तथा मात्राओं का प्रयोग भी कराया जाए जेसे-कला ही जीवन है, शुभ होली, ईद मुबारक आदि।	● स्पष्ट तथा स्वच्छ रेखाओं का मूल्यांकन।
स्वतंत्र भाव प्रकाशन– ● प्राकृतिक दृश्य ● मेला, तीज, त्यौहार, प्रदर्शनी ● व्यवसायिक कार्य ● कहानी चित्रण	● बच्चों को प्राकृतिक दृश्य बनाते समय अध्यापक उनका मार्गदर्शन करें। ● प्राकृतिक दृश्य में दूर और पास के अनुपात दर्शाने में विधि बताएं। ● नदी, पहाड़ पेड़ में रंग भरने की विधि से बच्चों को अवगत कराएं। ● व्यवसाय संबंधी चित्र बनाने से पहले बच्चों को व्यवसाय का निरीक्षण कराए। जैसे– सपेरा, मदारी, सब्जीवाला आदि। ● कहानी चित्रण कराने से पहले बच्चों को छोटी-छोटी शिक्षाप्रद कहानियां सुनाएं तथा सरल रेखाविधि द्वारा आकृतिकयां बनाने में मार्गदर्शन करें। जैसे–लालची कौआ, लालची कुत्ता, मगर और बंदर आदि।	● बच्चों की कल्पनाशक्ति का मूल्यांकन
स्मृति चित्रण– ● घरेलू प्रयोग की वस्तुएं, कताई, बुनाई, कृषि उपकरण तथा खेल के सामान।	● अध्यापक बच्चों को घरेलू सामान, खेल के सामान तथा शिल्प से संबंधित औजार एवं वस्तुओं का निरीक्षण करने के लिए प्रोत्साहित करें। ● बच्चों को सरल विधि द्वारा चित्रांकन विधि बताएं साथ ही चित्रों में छाया तथा प्रकाश का ज्ञान कराएं। ● निम्नलिखित वस्तुओं का चित्रांकन कराएं। बाल्टी, चम्मच, जग, कनस्तर, खुरपी, टोकरी, तकली, बैट, बाल, हथौड़ी, आरी आदि।	● चित्र की वास्तविकता अनुपात तथा प्रकाश छाया का मूल्यांकन

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
आलेख– ● प्राकृतिक ● ज्यामितीय ● अलंकारिक ● सूक्ष्म	● अध्यापक फूल, पत्ती तथा कली में अलंकारिक विधि को करके बताएं। ● आयत तथा वृत्त में अलंकारिक आलेखन की इकाई बनाकर पुनरावृत्ति कराएं तथा रंग भराएँ। ● सूक्ष्म आलेखन के प्रयोग तथा महत्व को बताएं। ● ज्यामितीय, सूक्ष्म, प्राकृतिक तथा अलंकारिक आलेखन में अंतर तथा समानता बतायी जाए।	● आलेखन की स्वच्छता, रेखाओं में बल तथा रंग संयोजन का मूल्यांकन
विज्ञापन– ● पर्यावरण संबंधी जागरूकता तथा निवारण।	● विषय संबंधी कहानियां, लेख आदि सुनाकर छात्रों से उनकी कल्पनाशक्ति का विकास कराते हुए रुचिपूर्ण चित्रण कराना जैसे– ● शीर्षक -मेरा कसूर क्या है। ❖ पेड़ को काटते हुए मनुष्य पेड़ के तने में दुखी मुद्रा में मानव मुखाकृति। ● शीर्षक –वृक्षारोपण, पर्यावरण संतुलन ❖ विद्यालय प्रांगण में छात्र-छात्राएं पेड़ लगाते हुए तथा पानी देते हुए, अध्यापक निर्देश देते हुए। ● शीर्षक - जीवों पर दया करो। ❖ बच्चों, पिंजड़े से निकालकर पक्षी को उड़ाता हुआ। ● शीर्षक - मेरी सेवा करो, मैं तुम्हें सुगन्ध दूंगा। ❖ पेड़ में खिला हुआ गुलाब, पेड़ के थाले में पानी देता बच्चा।	● प्रदर्शनी द्वारा तुलनात्मक मूल्यांकन

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
सौन्दर्यानुभूति– ● पत्रिकाओं के चित्र एकत्रित करना। ● कटर द्वारा पेन्सिल की छीलन, सूखे पुष्प तथा पत्तियां आदि का संग्रह करना ● कोलाज बनवाना।	● अध्यापक बच्चों के कार्य में सहयोग प्रदान करें। ● अध्यापक कलाकृतियों के नमूने बनाकर बच्चों को दिखाएं तथा कार्य के प्रति प्रोत्साहित करें। ❖ **कोलाज-** जैसे-पत्रिकाओं से विभिन्न प्रकार के चित्रों को काटकर अपनी कल्पना से चित्रों को दूसरे कागज पर चिपकाकर नया आयाम देना। ● पेन्सिल की छीलन, सूखे पुष्प एवं पत्तियों से बधाई पत्र बनाना। ● बच्चों द्वारा एकत्रित अन्य वस्तुओं में कलात्मक रूप ढूंढ़ना और सजीव बनाना। जैसे–सांप, पक्षी, पशु, मानवाकृति आदि। ● पुराने मोजे, कपड़ों की कतरन से गुड़ियां बनाना।	● बच्चों की कल्पनाशक्ति तथा कलात्मक अभिरूचि का मूल्यांकन
रंगों का ज्ञान– ● तटस्थ रंग काला तथा सफेद। ● रंगों के स्थायी भाव तथा प्रभाव।	● अध्यापक प्राथमिक तथा द्वितीय रंगों में काला तथा सफेद रंग को मिलाकर टिन्ट एवं शेड तैयार कराएं। ● आलेखन में गर्म तथा ठंडे रंग के प्रयोग के महत्व को बताएं। ● आलेखन में बड़ी जगह में ठंडे रंग तथा छोटी जगह में गर्म रंग का प्रयोग कराएं। ● आलेखन में समतल रंग भरने हेतु रंग में सफेद रंग मिलाकर प्रयोग कराएं। ● किसी त्रिभुज में रंग भरते समय स्थायी भाव तथा प्रभाव के गुण एवं महत्व बताएं।	● रंग संयोजन का मूल्यांकन करना।
रेखाओं तथा आकारों का ज्ञान– ● पटरी परकार की सहायता से ज्यामितीय रचना कराना। ● विभिन्न प्रकार के त्रिभुज की रचना तथा अन्तर्गत वृत्त की रचना। ● षटभुज के अन्तर्गत वृत्तों की श्रृंखला की रचना कराना। ● ग्राफ विधि से अंग्रेजी के अक्षर लेखन। ● श्यामपट पर सुलेख का अभ्यास कराना।	● अध्यापक ज्यामितीय विधि द्वारा श्यामपट पर विभिन्न प्रकार के त्रिभुज षटभुज की रचना बताना तथा अंतर्गत वृत बताना। ● त्रिभुज, आयत, वर्ग तथा षटभुज पर आधारित जयामितीय आलेखन का अभ्यास कराना। ● ग्राफ विधि से अंग्रेजी के अक्षर लिखाना। ● अंग्रेजी अक्षरों द्वारा छोटे-छोटे वाक्य लिखाना। जैसे (ART IS LIFE), (HEALTH IS WELTH) आदि	● स्पष्ट तथा स्वच्छ रेखाओं का मूल्यांकन।

स्वतंत्र भाव प्रकाशन– ● प्राकृतिक दृश्य ● व्यवसायिक कार्य का चित्रण ● कहानी चित्रण ● क्रियाकलाप चित्रण।	● बच्चों द्वारा कक्षा 7 की भांति उन्नत प्राकृति दृश्य बनाना जिसमें मानवाकृति, पशु-पक्षी का समावेश कराना। ● प्राकृतिक दृश्य में प्रभावशाली रंगों का प्रयोग कराना। ● प्राकृतिक दृश्य में जलरंग के प्रयोग की विधि बच्चों को बताना। ● व्यवसाय संबंधी चित्र बनाने से पहले बच्चों को व्यवसाय का निरीक्षण कराना जैसे– कुम्हार, लोहार, दर्जी, बढ़ई आदि। ● कहानी चित्रण कराने से पहले बच्चों को छोटी-छोटी शिक्षाप्रद कहानियां सुनाएं तथा सजीव आकृतिकयां बनाने में सहायता प्रदान करें। ● कक्षा 7 की कहानियों की पुनरावृत्ति सजीव ढंग से कराई जाय। ● अध्यापक विभिन्न प्रकार के क्रिया-कलाप का निरीक्षण कराये तथा बच्चों को चित्रण करने के लिये प्रोत्साहित करें। जैसे –फूटबाल, हॉकी खेलता बालक, रस्सी कूदती लड़की, चक्की चलाती महिला, खेत जोतता किसान आदि।	● बच्चों के बनाये हुए चित्रों की प्रदर्शनी द्वारा मूल्यांकन	
स्मृति चित्रण– ● कक्षा 7 की पुनरावृत्ति के अतिरिक्त घड़ी, जूता, कैंची, कीड़े मकोड़े, पशु-पक्षी तथा सब्जी एवं फल।	● अध्यापक पास-पड़ौस में पाये जाने वाले जीव-जन्तु तथा वस्तुओं के निरीक्षण हेतु बच्चों को प्रोत्साहित करें। ● अध्यापक जीव-जन्तु तथा वस्तुओं को बनाने हेतु सरल रेखाओं की विधि का प्रयोग कराते हुए सजीव चित्र बनाने की विधि बतायें चित्रांकन के समय अध्यापक समय-समय पर बच्चों के चित्रांकन में सहायता प्रदान करें तथा प्रोत्साहित करते रहें।	● बच्चे स्वयं एक-दूसरे के कार्यों का निरीक्षण करते हुए मूल्यांकन करें।	● अध्यापक को प्रशिक्षण एवं सामग्री प्रदान करें ।
आलेखन– ● कक्षा 7 के आलेखन की पुनरावृत्ति ● अल्पना। ● रंगोली	● प्रयोग के आधार पर आलेखन बनाना। जेसे–कमरे के फर्श के बीच तथा कोने का आलेखन, साड़ी का किनारा आदि। ● प्राकृतिक तथा अलंकारिक आलेखन में पशु-पक्षी, मछली, शंख आदि का समावेश कराया जाये। ● अल्पना के महत्व को बताया जाये। ● विभिन्न तीज-त्यौहारों पर विभिन्न प्रकार के अल्पना की जानकारी बच्चों को दी जाय। ● रंगोली तथा अल्पना के भेद, बनाने की विधि तथा माध्यम की जानकारी दी जाय।	● बच्चों द्वारा बनाये गये अल्पना, रंगोली तथा आलेखन का बच्चे स्वयं एक-दूसरे के कार्यों का निरीक्षण करते हुए मूल्यांकन करें।	● चित्रकला संबंधी प्रशिक्षण तथा सामग्री उपलब्ध कराई जाए।

विज्ञापन– ● प्रदूषण-जल, वायु, ध्वनि ● स्वास्थ्य-प्राथमिक उपचार तथा टीकाकारण	● विषय संबंधी विभिन्न प्रकार के प्रदूषण, स्वास्थ्य शिक्षा की जानकारी विभिन्न माध्यमों द्वारा छात्रों को करायी जाय। छात्रों को प्रोत्साहित किया जाय कि वे स्वयं समस्याओं का निरीक्षण करें तथा समाधान खोजें और अपनी कल्पनाशकित से चित्रों द्वारा समाज को अवगत कराएं। जैसे– **जल प्रदूषण** ● शीर्षक - ऐसा न करें। ❖ तालाब में पशु नहाते, मनुष्य नहाते, बर्तन धोते, तालाब के किनारे शौच करते, तालाब में मरे पशु तैरते चित्र बनाया जाय। **ध्वनि तथा वायु प्रदूषण** ● शीर्षक - इन परिस्थितियों से बचें। ❖ भीड़-भाड़ वाली सड़क पर मोटरों, बसों तथा मिल की चिमनियों से निकलता धुओं, बजते हुए लाउडस्पीकर का दृश्य। ● शीर्षक - समय पर टीका लगवायें ❖ नर्स बच्चे को टीका लगाते हुए अथवा पोलिया ड्राप पिलाते हुए।	● प्रदर्शनी द्वारा तुलनात्मक मूल्यांकन (छात्र स्वयं अपने चित्रों तथा अन्य छात्रों के द्वारा बनाये चित्रों का मूल्यांकन करें)	● विषय संबधित प्रशिक्षण अथवा अन्य सामाग्री (संदर्शिका, लेख आदि) उपलब्ध कराना।
शिक्षा में चित्रकला का महत्व– ● कला की उपयोगिता ● कला और जीवन ● शिक्षा में चित्रकला का स्थान तथा महत्व	● कला कितने प्रकार की होती है? ● शिल्प तथा चित्रकला में क्या समानता तथा अंतर है? ● जीवन में कला की क्या उपयोगिता तथा महत्व है? ● शिक्षा में चित्रकला की उपयोगिता का स्थान कितना महत्वपूर्ण है। ● उपरोक्त जानकारी लिखित रूप में करायी जाये तथा मौखिक प्रश्न पूछे जाये। ● अतिलघु प्रश्न दिये जाये।	● मौखिक प्रश्न के उत्तर का मूल्यांकन	● अध्यापक को प्रशिक्षण एवं सामग्री उपलब्ध करायी जाये।

विषय : चित्रकला

अध्यापक के लिए आवश्यक समर्थन–

1. अध्यापकों को चित्रकला सम्बम्धी आवश्यक प्रशिक्षण दिया जाए।
2. सेवापूर्ण प्रशिक्षण के साथ-साथ समय-समय पर सेवारत प्रशिक्षण भी दिया जाए।
3. न्याय पंचायत संदर्भ केन्द्र तथा विकासखण्ड संसाधन केन्द्र पर चित्रकला सम्बन्धी अधिक से अधिक जानकारी सम्बन्धित शिक्षकों को दी जाए।
4. चित्रकला सम्बन्धी आवश्यक सामग्रियों के संकलन हेतु शिक्षकों को प्रेरित किया जाए।
5. चित्रकला संबंधी विशिष्ट सामग्रियों को शिक्षकों को उपलब्ध कराया जाए।
6. चित्रकला सम्बन्धी शिक्षक संदर्शिकाएं उपलब्ध कराई जाएं।

विषय : संगीत गायन

सामान्य उद्देश्य–

1. छात्रों में संगीत (गायन) के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करना।
2. गीतों में निहित स्वर, ताल, लय आदि की अनुभूति कराना।
3. संगीत द्वारा राष्ट्रीयता, मानवता, भावात्मक एकता, नैतिकता आदि गुणों का विकास करना।
4. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जनसंख्या शिक्षा, सामाजिक वानकीय, पर्यावरण शिक्षा, पोषण, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता आदि से सम्बद्ध संबोधों का ज्ञान, गीतों के माध्यम से कराना।
5. गीतों द्वारा स्वस्थ मनोरंजन कराते हुये वांछित दृष्टिकोणों का विकास करना।

विशिष्ट उद्देश्य –

1. छात्रों में सुमधुर गायन क्षमता का विकास करना।
2. शुद्ध, कोमल/तीव्र स्वरों की पहचान को विकसित करना।
3. पाठ्यक्रम में उल्लिखित रागों को तथा गायन शैलियों की विशुद्धता से गाने की क्षमता का विकास करना।
4. सौन्दर्यानुभूति एवं रसानुभूति की क्षमता उत्पन्न करना।
5. संगीत के शास्त्रीय पक्ष का ज्ञान कराना।
6. छात्रों की आत्माभिव्यक्ति एवं तुलनात्मक क्षमता को विकति होने के अवसर प्रदान करना।
7. ताल एवं लय का व्यावहारिक ज्ञान, लयात्मक की अनुभूति करना।
8. रागों का स.प.सां स्वरों के साथ गाने का अभ्यास तथा हाथ से ताल लगाने की क्षमता का विकास करना।

नोट : कक्षा 6, 7, व 8 के संगीत के शिक्षण के समय विशेष ध्यान देने योग्य मुख्य बातें-

1. शुद्ध एवं विकृत स्वरों (तीव्र, विकृत स्वर) का ज्ञान, पहचान, परिपक्व कराने हेतु स्वर साधना अवश्य करायी जाय इसके अंतर्गत अलंकारादि का अभ्यास कराया जाय।
2. सौन्दर्यानुभूति एवं रसानुभूति कराने एवं छात्रों द्वारा सुमधुर गायन कराने हेतु शिक्षक सर्वप्रथम सम्पूर्ण गीत (प्रयाणगीत, लोकगीत, ख्याल, भजन आदि) का आदर्श गायन प्रस्तुत करें।
3. छात्रों को आत्माभिव्यक्ति के यथेष्ट अवसर दिये जायें।
4. ख्याल गायन के अतिरिक्त अन्य गीत यथासम्भव स्तरानुकूल रागों के निबद्ध हों, जिससे सम्बोधों का ज्ञान कराने के साथ ही रागों का शास्त्रीय परिचय भी छात्रों को प्राप्त कराया जाय।
5. शिक्षण क्रमश: आगे बढ़ने पर पिछले सीखे रागों एवं गीतों की पुनरावृत्ति भी अवश्य करायी जाये।
6. संगीत शास्त्र पक्ष की अपेक्षा गायन के क्रियात्मक पक्ष पर विशेष बल दिया जाय।
7. बच्चों में सृजनात्मक प्रवृत्ति को उभरने का अवसर दिया जाय।
8. विभिन्न पर्वो पर विद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रतिभागिता के लिए प्रेरित किया जाय।
9. छात्रों का मूल्यांकन विशेषत: दैनिक रूप से किया जाय।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया		मूल्यांकन
	विधि, युक्तियां	अपेक्षित उपकरण	
स्वर ज्ञान :– ● तीन अलंकार	● शिक्षक द्वारा अलंकार गायन की आदर्श प्रस्तुति ● अनुकरण विधि द्वारा कक्षा शिक्षण ● छात्रों से अभ्यास कराना।	हारमोनियम	● दैनिक अभ्यास व्यक्गित रूप से छात्रों को गवाना।
राग बिलावल :– ● परिचय ● तीनताल में निबद्ध राग ● बिलावल में छोटा ख्याल	● शिक्षक द्वारा राग बिलाव का परिचय ● राग का आरोह, अवरोह पकड़ के द्वारा प्रस्तुति ● राग बिलावल राग के बन्दिश की आदर्श प्रस्तुति। ● अनुकरण विधि द्वारा कला शिक्षण तथा अभ्यास कराना।	हारमोनियम, तबला	● अभ्यास/ दैनिक, व्यक्तिगत छात्रों द्वारा गायन सुनना।
ताल एवं लयकारी का ज्ञान– ● कहरवा (8 मात्रा) ● तीन ताल (16 मात्रा)	● ताल के बोलों का हथेली पर प्रदर्शन ● छात्रों को अनुकरण द्वारा ताल को हथेली पर लगवाना ● हाथ व तबले पर सम, ताली, खाली की पहचान कराना ● सम, ताली खाली भरी के चिन्हों को लिखकर प्रदर्शित करना।	तबला	● व्यक्तिगत रूप से ताल लगवाने और पहचानने के अवसर हाथ तथा तबले पर देना।
तीव्र स्वर वाले राग से परिचय– ● तीन ताल में निबद्ध, राग यमन में छोटा ख्याल ● बन्दिश के पूर्व स्वतंत्र अलाप।	● *शिक्षक द्वारा ख्याल गायन की सम्पूर्ण आदर्श* प्रस्तुति अनुकरण विधि द्वारा कक्षा शिक्षण एवं अभ्यास ● सामूहिक तथा व्यक्तिगत गायन में यथास्थान शिक्षक द्वारा सहायता तथा मार्गदर्शन ● तबले पर संगत के समय शिक्षक द्वारा छात्रों को सम, ताली, खाली भरी की पहचान कराया जाय	हारमोनियम, तबला	● राग से संबंधित मौखिक / लिखित प्रश्नोत्तर तीव्र व शुद्ध स्वर की पहचान कराना।
राष्ट्रीय एकता/सांस्कृतिक विरासत के प्रति अनुराग, सामूहिक रूप से कार्य करने की भावना। ● देशगान/जन्मभूमि, वन्दना/झण्डागान सामूहिक	● शिक्षक द्वारा देशगान / ... /... की आदर्श प्रस्तुति ● अनुकरण विधि द्वारा छात्रों से अभ्यास कराना। ● यथास्थान आवश्यकतानुसार सहायता, मार्गदर्शन ● मुख्य स्वर हेतु, सुमधुर गायक को अवसर देना	हारमोनियम, तबला	● अभ्यास
देशप्रेम/भारत की स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास, आत्म सम्मान उत्तरदायी नागरिकता ● शहीद गान सामूहिक	● शिक्षक द्वारा आदर्श प्रस्तुति ● अनुकरण द्वारा सामूहिक तथा टोलीवार अभ्यास कराना। ● गान वर्णित घटनाओं, प्रसंगों एवं कार्यों की छात्रों को प्रमाणिक जानकारी देना।	हारमोनियम, तबला	● व्यक्तिगत तथा टोली में गाने का अभ्यास।
जनसंख्या शिक्षा, पोषण एवं स्वाथ्य रक्षा ● भावगीत ● सीमित परिवार की कल्पना, खान पान की उचित आदतों से संबंधित गीत	● शिक्षक द्वारा भावगीत ज्ञापन शैली की विशेषताओं को आदर्श प्रस्तुति तथा परिचर्चा द्वारा स्पष्ट कराना ● गीत में निहित अपेक्षित भावों को चेहरे तथा हाथ पैरों द्वारा प्रदर्शित करना/कराना ● अनुकरण विधि द्वारा छात्रों को अभ्यास कराना। ● विद्यालयीय आयोजनों में प्रस्तुति हेतु प्रेरित करना।	हारमोनियम, ढोलक, ड्रम झांझ आदि	● गीत पर आधारित प्रश्नोत्तर सामूहिक एवं व्यक्तिगत रूप से सुनना।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण		मूल्यांकन
	विधि, युक्तियां	अपेक्षित उपकरण	
सामाजिक वानकी/पर्यावरण ● वन संरक्षण तथा वृक्षारोपण पर लोक गीत/भावगीत	● शिक्षक द्वारा गीत में निहित भावों को परिचर्चा द्वारा स्पष्ट किया जाना। ● शिक्षक द्वारागीत की आदर्श प्रस्तुति ● अनुकरण विधि से शिक्षण तथा अभ्यास	हारमोनियम, ढोलक, मंजीरा आदि	● अभ्यास गीत से संबंधित प्रश्नोत्तर
श्रमनिष्ठा/सौहार्द नैतिकता/समय पालन एवं अनुशासन/संवैधानिक दायित्व ● प्रयाणगीत (सामूहिक)	● शिक्षक द्वारा आदर्श गायन की प्रस्तुति ● जोश खरोश के साथ गाने की प्रेरणा देना ● अनुकरण विधि द्वारा शिक्षण तथा अभ्यास कार्य ● विशिष्ट अवसरों पर छात्रों द्वारा प्रस्तुत कराया जाना।	हारमोनियम, ड्रम/बाया, तबला, झाँझ आदि	● अभ्यास गीत से संबधित प्रश्नोत्तर
संगीत का शास्त्रीय ज्ञान :- ● संगीत, नाद, श्रुति, स्वर, सप्तक, आरोह-अवरोह, पकड़, आलाप, तान, लय, स्थायी अन्तरा, राग-थाट, वादी सम्वादी स्वरों का ज्ञान	● संगीत के पारिभाषिक शब्दों को उदाहरण द्वारा परिचर्चा के माध्यम से स्पष्ट कराया जाए ● आरोह-अवरोह, पकड़ लिखने का अभ्यास ● सप्तक, स्वर की पहचान व चिन्हित करना		● मौखिक तथा लिखित प्रश्नोत्तर द्वारा
सौन्दर्यानुभूति एवं आत्माभिव्यक्ति ● कलात्मक गीत	● शिक्षक द्वारा कलात्मक गीतों की प्रस्तुति ● प्रत्येक छात्र को गाने का व्यक्तिगत अवसर देना ● कलात्मक गीतों को गाने व सुनने हेतु प्रेरित करना।		● अभ्यास

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया		मूल्यांकन
	विधि, युक्तियां	अपेक्षित उपकरण	
स्वर ज्ञान ● तीन अलंकार (कक्षा 6 के अलंकारों से अलग कक्षा स्तरीय)	● शिक्षक द्वारा आदर्श गायन की प्रस्तुति। ● छात्रों द्वारा स्वरों का अभ्यास हो जाने पर द्रुत से द्रुततर लय में अनुकरण विधि द्वारा अलंकारों का अभ्यास छात्रा द्वारा कराना।	हारमोनियम	● अभ्यास व्यक्तिगत
राग परिचय, सर्वोच्च शक्ति में आस्था। नैतिक एवं सर्वधर्म समभाव ● राग भैरवी/खमाज में प्रार्थना ● दो भजन ● 'वैष्णव जन तो तेने कहिये, निर्धारित राग में सुविधानुसार	● शिक्षक द्वारा राग भैरवी तथा खमाज के स्वरूप को गायन द्वारा स्पष्ट कराना। ● प्रार्थना/भजन में निहित मूल्यों की परिचर्चा करके अर्थ व भावों से अवगत कराना। ● अुनकरण द्वारा कक्षा शिक्षण तथा अभ्यास।	हारमोनियम, तबला	● श्रवण तथा छात्रों द्वारा प्रस्तुतिकरण
राग परिचय, शास्त्रीय गायन ● राग आसावरी में आरोह -अवरोह, पकड़, लक्षणगीत को स्वरों के माध्यम से दुगुन तथा चौगुन की लय में गाना	● शिक्षक द्वारा कक्षा में राग आसावरी के स्परूप को आरोह-अवरोह पकड़ तथा लक्षणगीत की आदर्श प्रस्तुति। ● छात्रों द्वारा सामूहिक एवं व्यक्तिगत अनुकरण एवं अभ्यास। ● छात्रों को स्वतंत्र रूप से गाने का अवसर प्रदान करना।	हारमोनियम, तबला	● श्रवण, अभ्यास, प्रश्नोत्तर, लिखित/मौखिक
ताल एवं लयकारी का ज्ञान ● तीनताल (ठाह, दुगुन में) ● दादरा ● झपताल उक्त तालों का विभाग, मात्राखाली भरी सम तथा बोलों के साथ ताल परिचय	● ताल परिचय देकर ताल को हाथ पर लगाकर प्रस्तुति करना। ● कक्षा में ताल के संबंध में प्रस्तुति के आधार पर परिचर्चा। ● अनुकरण विधि द्वारा छात्रों से ताल लगवाना। ● शिक्षक ताल को तबले पर बजाकर छात्रों से ताली खाली भरी ठेके के बोलों की पहचान करायें।	तबला	● सामूहिक तथा व्यक्तिगत रूप से ताल लगवाना। ● प्रश्नोत्तर द्वारा परिचयात्मक ज्ञान की जानकारी।
राष्ट्रीय एकता संस्कृति की समान विरासत, सामूहिक रूप से काम करने की भावना। ● देशगान/भारत भू वन्दना झण्डागान (सहगान)	● आदर्श गायन की प्रस्तुति। ● विविध वाद्ययंत्रों के प्रयोग द्वारा सुमधुर एवं प्रभावी रूप में प्रस्तुती करना। ● अनुकरण विधि द्वारा छात्रों से गायन कराना। ● विशिष्ट अवसरों, पर्वों पर प्रस्तुति हेतु प्रेरित करना।	हारमोनियम, तबला, ड्रम, झॉझ, ढपली आदि	● श्रवण ● छात्रों द्वारा देशगान, झण्डागान के गीतों को सुनना। ● निहित भावों पर परिचर्चा करना
देशप्रेम/भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास/स्वदेशाभिमान ● शहीद गान-2	● शिक्षक क्षरा आदर्श गान की प्रस्तुति। ● गान में निहित भावों की जानकारी हेतु परिचर्चा करना। ● अनुकरण विधि द्वारा गाने की कुछ पंक्तियों को टुकड़ों में छात्रों द्वारा गवाना। ● सिखाये गये गीतों को राष्ट्रीय पर्वों पर छात्रों को प्रस्तुति हेतु प्रेरित करना।	हारमोनियम, तबला	● अभ्यास प्रश्नोत्तर

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया		मूल्यांकन
	विधि, युक्तियां	अपेक्षित उपकरण	
संवैधानिक जिम्मेदारियां श्रमनिष्ठा /समयानुपालन स्वानुशासन /स्वावलम्बन बालश्रम से संबंधित ● प्रयाणगीत सामूहिक श्रमनिष्ठा, समय-अनुपालन, बालश्रम	● शिक्षक द्वारा आदर्श गायन की प्रस्तुति ● गान में उत्साह उमंग हेतु लयात्मक वाद्यों का प्रयोग। ● अनुकरण विधि द्वारा छात्रों से अभ्यास कराना।	हारमोनियम, ड्रम/बाया, तबला आदि	● श्रवण प्रश्नोत्तर
पोषण, स्वास्थ्य रक्षा एवं पर्यावरणीय स्वच्छता ● स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के पारस्परिक संबंधों एवं नशाखोरी का स्वास्थ्य पर पड़नेवाले प्रभावों से संबंधित गीत।	● शिक्षक द्वारा गीत की आदर्श प्रस्तुति। ● गीत में निहित सम्बंधों व भावों को स्पष्ट करने हेतु परिचर्चा। ● अनुकरण विधि द्वारा कक्षा शिक्षण, सामूहिक व्यक्तिगत अभ्यास। ● समय-समय पर छात्रों को कविता रूप में भावों को अभिव्यक्त करने व गाने हेतु प्रेरित करना।	हारमोनियम, तबला लय के अनुसार वाद्य	● श्रवण प्रश्नोत्तर
जनसंख्या शिक्षा/ पर्यावरण/ सामाजिक वानिकी ● गीत-जनसंख्या विस्फोट से प्रभावित वन सम्पदा, बाल-विवाह के दुष्परिणाम से संबंधित देहेज विरोधी गीत	● गीत की आदर्श प्रस्तुति। ● गीत के भावों को परिचर्चा के द्वारा स्पष्ट कराना ● अनुकरण विधि द्वारा कक्षा शिक्षण एवं अभ्यास		● श्रवण प्रश्नोत्तर
संगीत का शास्त्रीय ज्ञान ● सप्तक, थाट, राग, अनुवादी, विवादी स्वर, सरगम, लक्षण गीत, सम, ताली, खाली भरी का चिह्न, कोमल तीव्र स्वर के पहचान चिह्न	● संक्षिप्त परिभाषाएं देना। ● सिखाई गई विषयवस्तु से उदाहरण दिये जाएं। ● लिखित रूप में छात्रों से कार्य कराया जाय।		● प्रश्नोत्तर लिखित, मौखिक प्रायोगिक

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया		मूल्यांकन
	विधि, युक्तियां	अपेक्षित उपकरण	
स्वर ज्ञान ● छः अलंकार (शुद्ध स्वर में)?	● शिक्षक द्वारा आदर्श गायन ● विभिन्न लयकारियों (दुगुन-चौगुन) में अभ्यास	हारमोनियम, तबला	● व्यक्तिगत रूप से अभ्यास द्वारा।
राग ज्ञान/सर्वोच्च शक्ति में आस्था/नैतिकता/सर्वधर्म समभाव ● यमन/भैरवी या पीलू या भीमपलासी में भजन/प्रार्थना	● भजन/प्रार्थना से सम्बद्ध रागों का शास्त्रीय परिचय देना। ● शिक्षक द्वारा आदर्श गायन। ● भजन/प्रार्थना में निहित सम्बोधों पर मौखिक परिचर्चा। ● अनुकरण विधि द्वारा कक्षा शिक्षण, सामूहिक एवं व्यक्तिगत रूप से अभ्यास कराना।	हारमोनियम	● अभ्यास एवं परिचर्चा व्यक्तिगत रूप से गाने का अवसर देना।
राग परिचय/शास्त्रीय शैली में गायन ● राग भैरव में छोटा ख्याल स्थाई तथा अंतरे की दो-दो आलाप व तानें ● राग वागेश्री व खमाज का आरोह-अवरोह व पकड़	● शिक्षक द्वारा आदर्श गायन का प्रस्तुतीकरण ● अनुकरण विधि द्वारा कक्षा शिक्षण ● रागों के संक्षिप्त आलाप का प्रस्तुतीकरण ● राग पहचान करवाना	हारमोनियम, तबला	● व्यक्तिगत एवं सामूहिक अभ्यास द्वारा।
राग परिचय/ऋतु एवं मौसमी गीत का ज्ञान ● राग काफी में होली ● ऋतु एवं मौसम संबंधी ● स्थानीय लोकगीतों तथा विभिन्न प्रान्तों के गीत	● शिक्षक द्वारा आदर्श गायन ● होली के अतिरिक्त मौसमी गीतों कजरी, बारहमासा, स्थानीय तथा विभिन्न प्रान्तों के विशिष्ट गीतों को स्वेच्छा से गाने हेतु अवसर प्रदान करना ● अनुकरण द्वारा कक्षा शिक्षण, छात्रों को सामूहिक व व्यक्तिगत रूप से अभ्यास कराना। ● विविध अवसरों पर गीतों को प्रदर्शन हेतु अवसर देना।	ढोलक, मंजीरा	● व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप में ढोलक व मंजीरा के साथ अभ्यास कराना।
राष्ट्रीय एकता/संस्कृति की समान विरासत/सामूहिक रूप से कार्य करने की भावना ● देशगान (सामूहिक) ● झण्डागान ● वंदेमातरम् (सामूहिक)	● शिक्षक द्वारा आदर्श गायन के अतिरिक्त विभिन्न वाद्यों का प्रयोग करके गीत को सुमधुर तथा रसात्मक बनाना। ● व्यक्तिगत एवं सामूहिक अभ्यास कराना।	ढोलक, मंजीरा, ढपली, झांझ आदि	● विभिन्न वाद्यों के साथ व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से गाने का अवसर प्रदाना करना।
देशप्रेम/भारत की स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास/ स्वदेशाभिमान ● शहीद गान (सामूहिक)	● शिक्षक द्वारा आदर्श गायन की प्रस्तुति। ● गान में निहित घटनाओं एवं प्रसंगों पर प्रामाणिक जानकारी देना (परिचर्चा) ● अनुकरण विधि द्वारा व्यक्तिगत एवं सामूहिक कक्षा शिक्षण। ● छात्रों को स्वेच्छा से सीखे हुये गीतों को गाने का अवसर देना तथा प्रोत्साहित करना।	ड्रम, हारमोनियम	● सम्बोधों पर परिचर्चा।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया		मूल्यांकन
	विधि, युक्तियां	अपेक्षित उपकरण	
संवैधानिक जिम्मेदारियां श्रमनिष्ठा/ समयानुपालन स्वानुशासन/ स्वावलम्बन ● प्रयाण गीत (सामूहिक)	● गीत का आदर्श पाठ प्रस्तुत करना। ● गीत में निहित लय के अनुकूल वाद्यों का प्रयोग ● अनुकरण विधि द्वारा छात्रों से अभ्यास कराना।	हारमोनियम, ड्रम	● छात्रों के व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से प्रस्तुतीकरण का अवसर
पोषण, स्वास्थ्य रक्षा एवं पर्यावरणीय स्वच्छता ● संतुलित आहार/खान पान की उचित आदतों से सम्बद्ध कव्वाली	● कव्वाली की गायन शैली से अवगत कराना। ● कव्वाली की आदर्श प्रस्तुति। ● अनुकरण विधि द्वारा कक्षा शिक्षण, व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से अभ्यास कराना।	ढोलक, हारमोनियम	● अभ्यास
जनसंख्या शिक्षा/पर्यावरण/ सामाजिक वानिकी ● भावगीत (जनसंख्या वृद्धि से बढ़ते प्रदूषण एवं विनष्ट होती वन सम्पदा का वर्णन हो)	● गीत की आदर्श प्रस्तुति। ● निहित सम्बोधों से अवगत कराना। ● सामूहिक एवं व्यक्तिगत अभ्यास कराना।	ढोलक, मंजीरा	● अभ्यास
ताल एवं लयकारी ज्ञान ● झूमताल (10 मात्रा) ● चार ताल (12 मात्रा) ● एक ताल (12 मात्रा) ● दुगुन, चौगुन	● ताल के बोलों को हथेली पर प्रदर्शन करना। ● छात्रों से हथेली पर लगवाना। ● तबले पर ताल बजाकर उसकी सम, खाली तथा ताली का अन्तर बताना। ● दुगुन, चौगुन आदि लयकारी का प्रदर्शन करना तथा छात्रों द्वारा कराना।	तबला	● लिखित एवं प्रयोगात्मक प्रश्नोत्तर
संगीत का शास्त्रीय ज्ञान ● राग भैरव, खमाज, भैरवी, काफी का राग परिचय। ● ख्याल, होली थाट, नाद का पूर्ण परिचय, गमक, मीड़, कण, मुर्की, नाद स्वर की संक्षिप्त परिभाषाएं। ● भातखण्डे/विष्णुदिगंबर का जीवन परिचय।	● टिप्पणियां देना। ● पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या एवं परिचर्चा करना। ● राग भैरव, खमाज, भैरवी तथा काफी का शास्त्रीय विवरण परिचर्चा द्वारा करना।		● लिखित एवं परिचर्चा प्रश्नोत्तर

अध्यापकों के लिए आवश्यक समर्थन :-

1. अध्यापकों को संगीत गायन से संबंधित रागों तथा तालों में विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाए।
2. देश-गान, देशभक्ति तथा शहीद-गीत आदि के संग्रह उपलब्ध कराए जाएं।
3. उक्त गीतों के संकलन के लिए शिक्षकों को प्रेरित किया जाए।
4. लोक गीतों तथा भाव गीतों के प्रस्तुतीकरण हेतु शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जाए।
5. विभिन्न धर्मों से संबंधित भजनों एवं गीतों के प्रस्तुतीकरण हेतु शिक्षकों को अभिप्रेरित किया जाए।

वाणिज्य

सामान्य उद्देश्य :-

1. व्यापार सम्बन्धी क्रियाकलापों का ज्ञान।
2. पत्र-व्यवहार के महत्व एवं विभिन्न शैलियों से परिचित होना।
3. व्यापारिक गतिविधियों को सम्पन्न कर सकने की दक्षता का विकास।
4. लेखा सम्बन्धी पत्रावलियों की देख-रेख कर सकने का कौशल विकसित करना।
5. औपचारिक पत्र लेखन के प्रमुख बिन्दुओं से अवगत होना तथा सही ढंग से पत्र लिखने की कला सीखना।
6. बहीखाता तैयार करने की योग्यता विकसित करना।
7. यातायात सेवाओं से संबंधित प्रमुख बातों की जानकारी।

वाणिज्य

पाठ्यक्रम के प्रमुख आधार बिन्दु :-

1. मान्य सिद्धान्तों और मूल्यों के अंतर्गत लचीलापन बना रहें जिससे विकास की दृष्टि से उसमें संशोधन-परिवर्तन संभव हो।
2. पाठ्यक्रम यथार्थ जीवन परिस्थितियों, आवश्यकताओं तथा जन आकांक्षाओं से संबंधित हो।
3. कार्यानुभव को अधिगम का स्रोत बनाया जाए। शिक्षण सैद्धान्तिक मात्र न रह जाए। क्रियात्मक रूप बना रहे।
4. सामाजिक न्याय, लोकतांत्रिक मूल्यों और राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से अनुकूल और सहायक सिद्ध हो।
5. पाठ्य सामग्री तथा शैक्षणिक क्रियाकलापों में कलात्मक अनुभूति और अभिव्यक्ति पर बल दिया जाए। शिक्षार्थियों में सौंदर्याप्रियता और शालीनता की भावना पल्लवित हो।
6. भाषाओं की शिक्षा में त्रिभाषासूत्र को अपनाया जाए।
7. चरित्र निर्माण, नैतिकता तथा मानवीय जीवन-मूल्यों के अनुपालन की प्रेरणा मिले।
8. शारीरिक शिक्षा तथा श्रम को आवश्यक अंग माना जाए।
9. विज्ञान और गणित की शिक्षा का उत्पादन और तर्कसंगत दृष्टिकोण से सहसंबंध बना रहे।
10. समग्र शिक्षा-योजना राष्ट्रीय विकास से जुड़ी रहनी चाहिए।
11. शिक्षार्थी को व्यक्तिगत विकास का अवसर मिले। सामूहिक शिक्षण प्रणाली में उसका व्यक्तित्व उपेक्षित होकर दब न जाए।
12. केन्द्रिक पाठ्यविषयों तथा राष्ट्रीय महत्व के प्रकरणों को यथा स्थान समाविष्ट किया जाए। 1. स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास, 2. संवैधानिक उत्तरदायित्व, 3. राष्ट्रीय अस्मिता के पोषक पाठ्यविषय, 4. हमारी समान सांस्कृतिक धरोहर, 5. लोकतांत्रिकता, धर्मनिरपेक्षता तथा समतामूलक समाज, 6. नर-नारी समानता, 7. पर्यावरण संरक्षण, 8. प्रगति में बाधक सामाजिक रूढ़ियों की समाप्ति, 9. छोटे परिवार का प्रतिमान, 10. वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास।
13. स्तरानुकूल पाठ्यपुस्तकों तथा पूरक सामग्री का निर्माण।
14. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के निहितार्थ-शिक्षक मार्गदर्शक है, उपदेशक अथवा ज्ञान लादने वाला नहीं, वह शिक्षार्थियों को स्वअधिगम, स्वानुभव और स्वाध्याय के लिए प्रेरक और प्रोत्साहक सिद्ध हो। छात्रों को विषय-सामग्री रटाने के स्थान पर उनकी समझ और बोध क्षमता बढ़ाने पर बल/शिक्षार्थियों की सक्रिय प्रतिभागिता का अवसर/उनमें उत्सुकता और जिज्ञासा की वृद्धि/प्रश्न पूछने, शंका समाधान, परिचर्चा आदि का अवसर/बालकों में सृजनात्मकता के विकास का अवसर/कक्षा बोझिलता की जगह आनंद का वातावरण/विषय के एक अंश का बोध करा लेने के बाद ही अगले अंश का शिक्षण, आदि।
15. यथोचित मूल्यांकन जिससे : 1. छात्र अपनी प्रगति से परिचित हों, अपनी कमियों तथा असफलताओं को भी जान सकें और उन्हें दूर करने के लिए प्रयत्नशील हों। 2. अभिभावक भी उनकी प्रगति से परिचित हों और आगे के विकास के लिए सहायक बनें। 3. शिक्षक मूल्यांकन के आधार पर अपनी शिक्षण प्रक्रिया में आवश्यक सुधार कर सकें। पाठ्य सामग्री के पुनरीक्षण और संशोधन का भी सुझाव दे सकें।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
वाणिज्य :- ● अर्थ ● महत्व ● व्यापारिक क्रियाएं, क्रय, विक्रय एवं सेवाएं।	● छात्रों को वाणिज्य क्रियाओं के सजीव उदाहरण जैसे दुकान, बैंक, डाकखाना आदि से परिचित कराना।	● सुबोध प्रश्नों द्वारा छात्रों के ज्ञान का आकलन एवं परीक्षा में प्रश्न उत्तर के माध्यम से मूल्यांकन।
व्यापारिक पत्र-व्यवहार :- ● माल के संबंध में पूछताछ का पत्र ● माल मंगाने का पत्र। ● माल भेजने का पत्र। ● शिकायती पत्र।	● छात्रों को विभिन्न प्रकार के पत्रों के नमूने दिखाना एवं विभिन्न प्रकार के पत्र लिखवाना।	
व्यापारिक पत्रों का संग्रहण (फाइलिंग) :- ● तार फाइल। ● कार्डबोर्ड फाइल। ● पिजनहोल फाइल। ● खड़ी फाइल।	● छात्रों को व्यापारिक पत्रों की प्राप्ति के बाद उनके संग्रहण के महत्व को बताते हुए विभिन्न प्रकारकी फाइलों को छात्रों के सम्मुख प्रदर्शित करना।	
बहीखाता :- ● अर्थ एवं महत्व ● प्रणाली का विवरण ❖ भारतीय बहीखाता प्रणाली ❖ पाश्चात्य बहीखाता प्रणाली ❖ दोहरा लेखा प्रणाली	● छात्रों को व्यापारिक भवनों में ले जाकर बहीखाता की प्रारम्भिक पुस्तकों को दिखाना।	

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
वाणिज्य सेवाएं :- ● बैंक, डाकखाना, बीमा। ● उपरोक्त सेवाओं का अर्थ, महत्व एवं लाभ, कार्य तथा भारतीय संदर्भ में उदाहरण।	● बैंक, डाकखाने एवं बीमा कम्पनी के कार्यालयों में ले जाकर, इन्हें इनकी कार्यविधि का व्यवहारिक ज्ञान दिलाना।	● विभिन्न संस्थाओं के दिखाने के समय छात्रों से संबंधित प्रश्न पूछना तथा लिखित प्रश्न उत्तर के माध्यम से छात्रों से प्राप्त ज्ञान का मूल्यांकन करना।
व्यापारिक कार्यालय :- ● संगठन, कार्यप्रणाली, आने-जाने वाले पत्रों का लेखा।	● छात्रों को व्यापारिक कार्यालय में ले जाकर कार्यालय अधीक्षकों के माध्यम से कार्यालय की गतिविधि का ज्ञान कराना।	
व्यापारिक पत्र-व्यवहार :- ● प्राप्त पत्रों का उत्तर। ● तकादे का पत्र। ● नियुक्ति के लिए आवेदन-पत्र। ● शिकायती पत्र। ● अवकाश हेतु प्रार्थनापत्र।	● व्यापारिक कार्यालय में तैयार किए गए पत्रों को छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत करके उन्हें पत्र-लेखन की शैली से विधिवत अवगत कराना तथा सही पत्र लिखने का प्रशिक्षण देना।	
बहीखाता-पाश्चात्य एवं भारतीय प्रणाली :- ● रोजनामचा ● खाते एवं उनके प्रकार ● भारतीय बहीखाता प्रणाली में तकादा/बही, कच्ची रोकड़ बही तथा पक्की रोकड़ बही का ज्ञान।	● व्यापारिक कार्यालय में छात्रों को ले जाकर उन्हें लेखाकार के माध्यम से रोजनामचा एवं खातों के प्रकार का व्यवहारिक ज्ञान देना तथा उन्हें देशी साहूकारों के पास ले जाकर भारतीय तकादा बही, कच्ची रोकड़ बही तथा पक्की रोकड़ बही का व्यवहारिक ज्ञान देना।	● प्रायोगिक कार्य की समीक्षा एवं प्रश्न।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
यातायात :- ● यातायात के प्रकार : रेल, सड़क एवं जलमार्ग।	● छात्रों को व्यापार में यातायात सेवाओं के महत्व से अवगत कराना। ● रेल आदि से माल की बुकिंग कराने का व्यावहारिक ज्ञान देना।	● छात्रों को प्रकरण से संबंधित संस्थाओं में ले जाकर प्रकरण से संबंधित प्रलेखों के संबंध में प्रश्न करना, अभ्यास कराना तथा लिखित परीक्षा द्वारा मूल्यांकन करना।
व्यापारिक क्षेत्र :- ● टाइप राइटर, टेलीफोन, गणना मशीन, फोटोस्टेट मशीन, संचार माध्यम के यंत्र, फैक्स।	● छात्रों को व्यापारिक यंत्रों का सैद्धान्तिक ज्ञान देने के साथ व्यापारिक यंत्रों को भी उनके समक्ष प्रस्तुत करना तथा इनका प्रयोग अध्यापक स्वयं करके दिखाए।	
मुद्रा :- ● परिभाषा व कार्य	● छात्रों को व्यवहारिक जीवन में और साथ ही व्यापारिक मुद्रा के महत्व को स्पष्ट कराना।	
बैंकिंग क्रियाएं :- ● रुपया जमा करना ● रुपया निकालना ● बैंकिंग प्रपत्र-चेक, ड्राफ्ट, पासबुक व रुपया निकालने के फार्म।	● छात्रों को बैंकिंग क्रियाओं के महत्व एवं इनकी तकनीकी से परिचित कराना और साथ ही उन्हें चेक, ड्राफ्ट आदि को तैयार कराना, सीखना।	
बहीखाता :- ● पाश्चात्य बही खातों को तैयार करना। ● भारतीय बहीखाता- जमा नकल बही, नाम नकल बही, बहीखाते के व्यापारिक शब्दावली।	● छात्रों को खतौनी (Ledger) तैयार करने एवं भारतीय बहीखाते के जमानकल बही एवं नामनकल बही तैयार करने का व्यवहारपरक ज्ञान देना।	
अर्थशास्त्र :- ● परिभाषा एवं विभाग	● छात्रों को उनके जीवन में अर्थशास्त्र का महत्व एवं अर्थ बताना ताकि उनको यह भी स्पष्ट कराना कि समस्त आर्थिक क्रियाओं एवं कार्यक्रमों को आधार अर्थशास्त्र है।	

अध्यापकों के लिए आवश्यक समर्थन :-

1. शिक्षकों को विषय सामग्री आवश्यक प्रशिक्षक प्रदान किया जाए।
2. स्थानीय परिवेश में उपलब्ध वाणिज्य सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करने के लिए शिक्षकों को प्रेरित किया जाए।
3. विषय सम्बन्धी ज्ञानार्जन हेतु अध्यापकों को संबंधित पुस्तकों का अध्ययन करने के लिए अभिप्रेरित किया जाए।
4. शिक्षकों को विभिन्न व्यावसायिक संस्थाओं में भेजकर व्यापारिक गतिविधियों का समुचित ज्ञान कराया जाए।
5. व्यापारिक यन्त्रों की पूर्ण तकनीक ज्ञान प्राप्त करने लिए अध्यापकों के प्रशिक्षण का आयोजन किया जाए।
6. विभिन्न प्रकार के व्यापारिक प्रलेखों/बहीखातों की पूर्ण जानकारी कराए जाने विषयक प्रशिक्षण दिए जाए।

पाठ्यक्रम कृषि-विज्ञान कक्षा ६, ७, ८

सामान्य उद्देश्य :-

1. छात्र-छात्राओं को सामूहिक रूप से कार्य करने तथा मानवीय मूल्यों जैसे सहयोग, सहिष्णुता, सद्भावना, सदाचार, आत्मविश्वास एवं श्रम की महत्ता के प्रति सम्यक दृष्टिकोण उत्पन्न करना।
2. शारीरिक श्रम करने वालों के प्रति समादर की भावना जागृत करना।
3. श्रम के प्रति निष्ठा उत्पन्न करते हुए उन्हें श्रमपरक कार्यों को करते हेतु अभिप्रेरित करना।
4. सामूहिक रूप से कार्य करते हुए बच्चों में सामाजिकता की भावना उत्पन्न करना।
5. बच्चों को करके सीखने का अवसर देकर उन्हें स्वावलम्बी बनाते हुए व्यावसायिक रूप से कुशल बनाना।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
1. मृदा ● मृदा की परिभाषा एवं घटक ● कणों के आधार पर वर्गीकरण ● कृषि के दृष्टिकोण से मृदा का वर्गीकरण ● विभिन्न प्रकार की मृदा के गुण-दोष, अच्छी मृदा के गुण।	● प्रेक्षण, परिचर्चा- विभिन्न मृदाओं की पहचान। स्थानीय भ्रमण के आधार पर प्रेक्षण द्वारा अनुभूत तथ्यों का अंकन। ● प्रश्नोत्तर- मृदा संग्रहरण परिचर्चा द्वारा पाठ का विकास। मृदा-चयन हेतु आवश्यक उपकरण यथा खुरपी आदि। मृदा संबंधी चार्ट आदि।	● ज्ञान, बोध, अनुप्रयोग हेतु लिखित एवं मौखिक परीक्षण। ● विभिन्न प्रकार की मृदाओं को पहचान संबंधी परीक्षण।
2. भूपरिष्करण- ● भूपरिष्करण की परिभाषा ● भूपरिष्करण के उद्देश्य ● भूपरिष्करण के प्रकार ● ऋतुओं के अनुसार जुताई ● जुताई से लाभ।	● प्रयोग, प्रदर्शन- जुताई, गुड़ाई, निराई एवं कटाई संबंधी उपकरण जैसे-हल, खुरपी, हसियां, कुदाल, फावड़ा आदि। ● परिचर्चा एवं प्रेक्षण आदि- भू परिष्करण संबंधी चार्ट।	● ज्ञान एवं बोध संबंधी परीक्षण के साथ संबंधी उपकरणों के अनुप्रयोग का व्यावहारिक ज्ञान संबंधी परीक्षण आदि।
3. खाद तथा उर्वरक- ● पौधों के मुख्य पोष तत्व एवं गौण पोषक तत्व। ● मुख्य पोषक तत्व का पौधों की वृद्धि में स्थान। ● खादों के प्रकार। ● जैविक खाद एवं उर्वरको की तुलना। गोबर, कम्पोस्ट, मल-मूत्र एवं हरी खाद बनाना, खली की खाद एवं गोबर संयंत्र से लाभ	● प्रदर्शन, प्रयोग-पौधों के आवश्यक प्रमुख एवं गौण तत्वों का चार्ट। ● परिचर्चा- विभिन्न खाद एवं उर्वरकों के नमूने। ● प्रश्नोत्तर- नमूने एवं मिश्रणों का प्रयोग। ● प्रदर्शन/प्रेक्षण- गोबर गैस संयंत्र का प्रतिरूप एवं कार्यकारी संयंत्र का प्रेक्षण	● पेपर पेंसिल परीक्षण, मौखिक परीक्षण। ● विभिन्न खाद एवं उर्वरकों के पहचान का परीक्षण। ● प्रेक्षण के आधार पर अपनी-अपनी प्रतिक्रियाओं की लिखित अथवा मौखिक अभिव्यक्ति परीक्षण।
सिंचाई एवं सिंचाई के यंत्र- ● पौधों के लिए जल की आवश्यकता। ● सिंचाई के स्रोत एवं साधन।	● परिचर्चा- सिंचाई के स्रोत तथा संसाधनों का चार्ट ● प्रेक्षण, प्रदर्शन- प्रतिरूप अथवा परिवेश के उपलब्ध संसाधनों का प्रेक्षण	● मौखिक/लिखित ज्ञान, बोध, अनुप्रयोग संबंधी प्रशिक्षण।
फसलों की सुरक्षा- ● फसलों की बाड़ लगाना। ● कंटीली झाड़ी लगाना। ● खाई द्वारा सुरक्षा। ● कंटीले तार लगाकर फसलों की सुरक्षा	● प्रयोग, प्रदर्शन- विद्यालय में बाड़ लगाने की क्रिया को बताकर परिवेश में लगी बाड़ का प्रेक्षण। कंटीली तार, घासफूस, लकड़ी या लोहे के खंभे आदि।	● व्यावहारिक परीक्षण (प्रयोगात्मक कार्यों के आधार पर) ● बाड़ की उपयोगिता पर संक्षिप्त निबंध लेखन आदि।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
बीज :- ● उन्नतशील बीज की पहचान। ● उन्नतशील एवं साधारण बीज की तुलना।	● प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- कक्षा में साधारण एवं उन्नतशील बीजों का संग्रह कराया जाय। उन्नत बीजों का प्रदर्शन करते हुए सामान्य बीजों से इसकी तुलना संबंधी परिचर्चा करायी जाए।	● तुलनात्मक परीक्षण उन्नत बीजों की महत्ता संबंधी निबन्ध लेखन।
मुख्य फसलों की खेती- ● धान, मक्का, सोयाबीन की खेती विधियां। ● गेहूं, मटर, आलू की खेती विधियां।	● प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- उन्नतशील बीजों का संकलन, उनको क्षेत्र में उन्नयन तथा तुलनात्मक दृष्टि से छात्र समूहों में परिचर्चा। परिवेशीय प्रेक्षण आदि।	● मौखिक/लिखित परीक्षण
बाग लगाना- ● बाग लगाने के लिए स्थान चयन। ● बाग में पौधे लगाने की विधि। ● पौधघर।	● प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- बाग लगाने के आवश्यक उपकरणों की उपलब्धता। बाग लगाने की विधियों संबंधी चार्ट। आदर्श पौधघर, परिवेशीय एवं परिचर्चा।	● मौखिक/लिखित परीक्षण। ● क्रियात्मक परीक्षण।
फलों की खेती- ● नींबू एवं अमरूद की खेती।	● प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- परिचर्चा द्वारा पाठ का विकास किया जायेगा तथा फलों की उन्नत कृषि की जानकारी विशेषरूप से प्रजातियों में संदर्भ में चार्ट के माध्यम से दी जायेगी।	
फल परिरक्षण- ● मुख्य फलों का परिरक्षण। ● फल परिरक्षण का वर्गीकरण। ● पपीता, आम एवं गाजर का अचार बनाना।	● प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- फल संरक्षण के लिए आवश्यक उपकरण आदि उपलब्ध फलों से अचार आदि बनाने की प्रक्रिया का अनुश्रवण परिवेश में प्रेक्षण।	● ज्ञान बोध, अनुप्रयोग संबंधी मौखिक/लिखित परीक्षण
प्राकृतिक आपदायें- ● लू ● पाला ● ओला ● कुहरा	● प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- गर्मी में चलने वाली तेज हवाओं तथा जाड़े ऋतु में पड़ने वाले ओला, पाला एवं कुहरा आदि के अंतर को बताते हुए संभावित हानियों की चर्चा एवं उनके निदान की विधियों का उल्लेख।	● लिखित/मौखिक परीक्षण

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
मृदा-विन्यास :- ● मृदा विन्यास का अर्थ। ● मृदा विन्यास के प्रकार ● रन्ध्राकाश का कृषि में महत्व। ● मृदा जल ● मृदाजल के प्रकार। ● वर्षा के जल को नष्ट होने से बचाना। ● मृदा-जल का संरक्षण।	● प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- परिवेशीय भ्रमण के आधार पर प्रेक्षण द्वारा अनुभूत तथ्यों के अंकन हेतु आवश्यक सामग्री। ● चार्ट द्वारा मृदा-जल के प्रकारों को जानना। मृदा में नमी संरक्षित करने की विधियों को प्रयोग/प्रेक्षण स्पष्ट करना।	● ज्ञान, बोध, संबंधी मौखिक / लिखित परीक्षण।
भू-क्षरण :- ● भू-क्षरण के अर्थ। ● भू-क्षरण के प्रकार। ● भू-वैज्ञानिक क्षरण। ● वाह्य शक्तियों द्वारा भूक्षरण। ❖ वातज भू-क्षरण ❖ जलीय भू-क्षरण ❖ लहरी ह्रास भू-क्षरण ● मृदा संरक्षण के उपाय	● प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- कक्षा में प्रदर्शन/स्थानीय परिवेश में भ्रमण कराकर वस्तु-स्थिति अवलोकन कराया जाए। कक्षा के छात्रों में भू-क्षरण रोकने की विभिन्न विधियों पर परिचर्चा करायी जाए।	● ज्ञान, बोध संबंधी लिखित/ मौखिक परीक्षण
भू-परिष्करण- ● भू-परिष्करण के प्रकार ● भू-परिष्करण का मिट्टी पर प्रभाव ● पाटा लगाने से लाभ। ● मिट्टी चढ़ाने से लाभ। ● जुताई के प्रकार ● भू-परिष्करण के यंत्र के रूप में विभिन्न कृषि यंत्र एवं देशी हल आदि	● प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- छात्रों से जुताई निराई, गुड़ाई, सिंचाई, कटाई आदि की क्रियाएं करायी जाए। जुताई के प्रकारों के चित्र विभिन्न कृषि यंत्रों के वास्तविक रूप। प्रतिरूप अथवा चार्ट का प्रयोग।	● भू-परिष्करण की विभिन्न क्रियाओं के अनुप्रयोग संबंधी परीक्षण ● कृषि यंत्रों के संचालन का व्यावहारिक अनुप्रयोग परीक्षण।
उर्वरकों के प्रकार एवं मृदा-परीक्षण- ● नत्रजनीय उर्वरक ● फासफेटिक उर्वरक ● पोटैशिक उर्वरक ● यौगिक एवं मिश्रण उर्वरक ● मृदा परीक्षण की आवश्यकता ● मृदा परीक्षण हेतु मिट्टी एकत्र करना। ● मृदा परीक्षण कराएं।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● नत्रजनयुक्त एवं फासफोरस युक्त उर्वरकों के नमूनों की उपलब्धता। ● पोटैशियम उर्वरकों की उपलब्धता। ● मिश्रण तथा यौगिक तैयार करना। ● मृदा परीक्षण हेतु नमूनों को एकत्र करने हेतु आवश्यक उपकरण एवं सामग्री। ● मृदा परीक्षण के नमूनों के प्रेषण हेतु आवश्यक शर्तों की जानकारी रखना।	● ज्ञान, बोध एवं अनुप्रयोग पर आधारित मौखिक/लिखित परीक्षण।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
सामान्य फसलें :- ● ज्वार अरहर एवं फूलगोभी की फसल के साथ पहाड़ी फसल गहत की कृषि।		
बागवानी एवं वृक्षारोपण ● वाटिका अभिन्यास ● बीज द्वारा प्रवर्धन, कायिक प्रवर्धन, कलम लगवाना, दाब लगाना। ● आम, केला एवं नाशपाती की उन्नतिशील खेती, वृक्षारोपण आदि।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● प्रदर्शनात्मक ढंग से बाग का विकास किया जायेगा तथा परिचर्चा एवं प्रेक्षण के आधार पर कायिक प्रवर्धन को स्पष्ट किया जायेगा। ● कलम एवं दाब कलम का चार्ट। ● आम, केला एवं नाशपाती की उन्नत प्रजातियों का चार्ट आदि।	● ज्ञान, बोध एवं अनुप्रयोग पर आधारित मौखिक/लिखित परीक्षण। ● कलम तैयार करने का व्यावहारिक परीक्षण आदि।
फल परिरक्षण- ● फल तथा फल पदार्थों के खराब होने के कारण- ❖ कवक ❖ खमीर ❖ जीवाणु/बैक्टीरिया ❖ एन्जाइम ● बोतल तथा डिब्बों को जीवाणुरहित बनाना तथा उनके मुंह बन्द करना। ● रासायनिक परिरक्षणों का प्रयोग करना-पोटैशियम मेटा बाई सल्फाइट, सोडियम बैन्जुएट, सोडियम मेटा बाई सल्फेट। ● नींबू का स्क्वैश बनाना। ● फलों का मुरब्बा एवं टमाटर की सास तैयार करना आदि।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● कवक, खमीर, जीवाणु एवं एन्जाइम्स के नमूनों द्वारा एक दूसरे के अन्तर को स्पष्ट करना। ● बोतल, डिब्बा, मोम, बर्नर, माचिस, स्क्वैश, मुरब्बा एवं सास रखने के लिए पात्रो का उचित रख-रखाव। ● मुरब्बा, स्क्वैश एवं सास तैयार करने की क्रमवार व्यावहारिक विधि का अनुशीलन छात्रों द्वारा।	● ज्ञान, बोध एवं अनुप्रयोग पर आधारित मौखिक/लिखित प्रश्न पूछे जाए। ● प्रयोगात्मक कार्यों द्वारा परीक्षण।
प्राकृतिक आपदाएं- ● सूखा ● बाढ़ ● भूस्खलन	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● परिवेश में उपलब्ध स्थिति का छात्रों द्वारा प्रेक्षण कराकर उनकी प्रतिक्रियाओं के अंकन के पश्चात् समूहगत परिचर्चा सम्पन्न करायी जाए। ● वास्तविक अथवा कृत्रिम परिवेश में भूस्खलन दर्शाया जाए जिससे छात्र स्थिति का बोध कर सकें।	● प्रतिक्रिया परीक्षण अथवा परिचर्चात्मक परीक्षण लिखित/मौखिक।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
मृदा-गठन :- ● गठन के आधार पर मृदा विभाजन। ● मृदा गठन का मृदा उर्वरता से संबंध। ● ऊसर तथा ऊसर बनने के कारण। ❖ लवणों का उन्मूलन। ❖ जटिल लवणों का साधारण लवणों में परिवर्तन। ● अम्लीय मृदा- अम्लीय एवं क्षारीय मृदा की तुलना। ● अम्लीय मृदा के बनने के कारण। ● अम्लीय मृदा सुधार।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● परिवेश की चयनित मृदा का प्रेक्षण कराते हुए उसकी कमियों को दूर करने का प्रयास प्रदर्शनात्मक ढंग से शिक्षक करेगा। ● अम्लीय एवं ऊसर मृदा के सुधार में प्रयुक्त होने वाले उपकरण तथा सामग्री।	● ज्ञानबोध, अनुप्रयोग पर आधारित प्रश्नों को पूछा जाए। ● मृदा सुधार की विधियों संबंधी परीक्षण।
जलवायु- ● जलवायु विज्ञान की परिभाषा। ● वर्षा मापक यंत्र, दाबमापी यंत्र। ● जलवायु के आधार पर कृषि क्षेत्रों का विभाजन।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● रेनगाज एवं वायुदाब मापी यंत्र का वास्तविक रूप/प्रतिरूप, यंत्रों के प्रयोग का प्रदर्शन।	● अनुप्रयोगात्मक परीक्षण।
प्राकृतिक आपदायें ● आंधी, तूफान एवं टिड्डी का प्रकोप	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● आंधी, तूफान पर सामूहिक परिचर्चा	● ज्ञान एवं बोध संबंधी मौखिक/ लिखित परीक्षण।
पशु पालन- ● पशुधन विकास की आवश्यकता। ● पशुधन विकास के मूलभूत तत्व। ● प्रजनन, वरण, पोषण, संरक्षण। ● गाय की उन्नत नस्लें- साहीवाल, सिन्धी, खैरीगढ़, केनबरिया, हरियाना गंगातीरी, फ्रीजियन, जर्सी, स्वच्छ दूध उत्पाद को प्रभावित करने वाले कारक ● पशु का स्वास्थ्य, पशु की सफाई।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● स्थानीय पशु-पालन फार्म का वीक्षण कराया जाए। ● फार्म पर उपलब्ध गायों की उन्नत नस्लों से बच्चों को परिचित कराया जाए। ● दुग्धशाला, दुग्धपात्र एवं दोहक की स्वच्छता संबंधी चार्ट द्वारा परिचर्चा ● संतुलित आहार संबंधी चार्ट। ● पशुओं के सामान्य रोग, लक्षण, निदान एवं उपचार संबंधी चार्ट।	● ज्ञान, बोध, अनुप्रयोग पर आधारित मौखिक/लिखित परीक्षण ● व्यावहारिक परीक्षण मौखिक /लिखित।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
● दुग्धशाला की सफाई, दुहने का बर्तन ग्वाला, दोहन विधि, चारा-पानी, दूध रखने की विधि। ● पशुओं के संतुलित आहार। ● पशुओं की सामान्य बीमारियां एवं उपचार-खुरपका, मुंहपका, अपुरा, पेचिस परजीवी कीड़े- जूं, चीकर तथा किलनी, जोंक, पेट का केंचुआ।		
बागवानी एवं वृक्षारोपण- ● बाग लगाते समय ध्यान देने योग्य बातें- बाग के लिए स्थान का चयन, पूर्व योजना पौधे लगाना, विभिन्न फलदार वृक्षों की दूरी, बाग लगाने की विधियां।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● बाग लगाने हेतु आवश्यक उपकरण, फावड़ा खुरपी, हजारा आदि। ● फलदार वृक्षों की आपसी दूरी संबंधी चार्ट। ● बाग लगाने की विभिन्न संबंधी चार्ट। ● टिड्डी नामक कीट के प्रकोप से हुई हानि को दर्शाता हुआ चार्ट। ● छात्र समूहों में परस्पर परिवर्चा एवं अध्यापक द्वारा दिशा निर्देश।	● ज्ञान, बोध, अनुप्रयोग पर आधारित मौखिक/लिखित परीक्षण।
कृषि यंत्र- ● जुताई के यंत्र, हलों के प्रकार। ● मेस्टन शावाश हलों का ज्ञान। ● अन्य कृषि यंत्र- कल्टीवेटर के कार्य एवं प्रकार, हैरो के कार्य एवं प्रकार, गार्डेन रैक डिबलर, करहा, मड़ाई के यंत्र के साथ सीडड्रील पैडी थ्रेसर, मेज कार्नशेकर, हारवेस्टर आदि।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● कृषि के विभिन्नयंत्र- हल, कल्टी वेटर, हैरो गार्डेन रैक डिबलर, करहा, मड़ाई के यंत्र सीड-ड्रिल, पैडी, थ्रेसर, मेज कार्नशेकर एवं कम्बाइन (हारवेस्टर) आदि का लघु प्रतिरूप अथवा चार्ट आदि।	● अनुप्रयोगात्मक संबंधी मौखिक /लिखित परीक्षण
सिंचाई की विधियां तथा जल निकास- ● सिंचाई की प्रमुख विधियां प्रवाह, क्यारी, कूंड़ थाला, बरहा तथा छिड़काव विधि। ● जल निकास का अर्थ, जल जमाव से हानियां। ● जल निकास से लाभ। ● जल निकास का प्रबन्ध।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● परिवेशीय प्रेक्षण अथवा सिंचाई की विधियों से संबंधित चार्ट। ● जल निकास से संबंधित उपकरण/ जल निकास संबंधी चार्ट।	● ज्ञान बोध एवं अनुप्रयोग संबंधी परीक्षण।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
सामान्य फसलें एवं फसलचक्र- ● धान, गन्ना, बरसीम, आलू की उन्नतिशील कृषि। ● फसल चक्र की परिभाषा। ● फसल चक्र के सिद्धांत। ● फसल चक्र से लाभ। ● कायिक प्रवर्धन की विधियां- कलम बांधना, चश्मा लगाना। ● शाक वाटिका का अर्थ तथा महत्व। ● शाक वाटिका के लिए ध्यान देने योग्य बातें, सफलता में बाधक बातें। ● पर्वतीय क्षेत्रों हेतु- आलू बुखारा एवं खूबानी की खेती। ● वृक्षारोपण का अर्थ, महत्व।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● विभिन्न उन्नतशील प्रजातियों का चार्ट। ● फसल चक्र के सिद्धांत संबंधी चार्ट आदि। ● कायिक प्रवर्धन में प्रयुक्त होने वाले यंत्र यथा- कटिंग एवं बडिंग नाइफ मास, पालीथीन, साधारण चाकू, मोम, ग्रीस आदि। ● आलु बुखारा एवं खुबानी की उन्नत-शील प्रजातियों संबंधी चार्ट। ● वृक्षारोपण हेतु फावड़ा, कुदाली, हजारा आदि।	● ज्ञान बोध एवं अनुप्रयोग संबंधी परीक्षण। ● क्रियात्मक परीक्षण (मौखिक/ लिखित)
फल परीक्षण- ● जैम जेली बनाना, जैली बनाने में ध्यान देने योग्य बातें। ● टमाटर की सास बनाना, अचार बनाना। ● तेल में आम का अचार बनाना। ● नमक में आम का अचार बनाना। ● सेब का अचार बनाना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● ऋतु के अनुसार उपलब्ध स्वस्थ चयनित फल, परिरक्षण संबंधी समस्त उपकरण एवं सामग्री आदि। ● सेब, तेल, नमक आदि।	● ज्ञान, बोध एवं अनुप्रयोग संबंधी परीक्षण। ● अनुप्रयोग संबंधी परीक्षण।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
● कम्पोस्ट खाद- ❖ कम्पोस्ट खाद तैयार करने की विधि ● फसलों की खेती ❖ धान, मक्का, सोयाबीन, गेहूं, आलू की खेती। ● क्यारियां बनाना- ❖ आलू, मटर, सोयाबीन तथा अन्य तरकारियों की क्यारी बनाना। ● भ्रमण- ❖ स्थानीय कृषि कार्य/उद्यानों का भ्रमण करना। ● पौधघर बनाना- ● अचार तैयार करना- ❖ सिरका द्वारा अचार तैयार करना। ❖ राई तथा नमक द्वारा गाजर का अचार तैयार करना। ● बाड़ लगाना- ● कृषि कक्ष को सजाना ● वृक्षों की पौध तैयार करना। ● वृक्षारोपण करना।	● प्रायोगिक कार्य करना जान लेगा तथा व्यावहारिक जीवन में उसका प्रयोग कर सकेगा। ● छात्र धान, मक्का, सोयाबीन, गेहूं एवं फसलों की मुख्य क्रियाओं को सम्पन्न न करें। ● छात्र स्वयं अपनी क्यारियां बनाकर तैयार क्यारियों में तरकारियों को उगाएं। ● छात्र स्थानीय कृषि फार्मों का/उद्यानों का भ्रमणकर निरीक्षण के मध्य आए तथ्यों का अपनी अभ्यास पुस्तिका में अंकन करें। ● छात्र टोलियां में बंटकर तरकारियों के पौधघर तैयार करें। ● छात्र सिरके के माध्यम से अचार तैयार करें। ● राई तथा नमक द्वारा छात्र गाजर का अचार तैयार करें। ● फार्म के चारों ओर कंटीले तार, झाड़ी एवं बांस द्वारा बाड़ लगवायी जाए तथा वृक्षों की पौध तैयार कर उनका रोपण कराया जाए।	● कम्पोस्ट खाद तैयार करने की विधि का क्रियात्मक मूल्यांकन। ● प्रमुख फसलों की मुख्य क्रियाओं का व्यावहारिक परीक्षण। ● छात्रों की व्यक्तिगत/सामूहिक क्रियाओं का क्रियात्मक मूल्यांकन। ● भ्रमण में वापस आने पर छात्रों में ज्ञान एवं बोध संबंधी प्रश्न पूछे जाएं। ● पौध-घर का क्रियात्मक परीक्षण। ● सिरका द्वारा अचार तैयार करने का क्रियात्मक परीक्षण। ● राई तथा नमक प्रयोग करते हुए अचार तैयार करने का परीक्षण। ● छात्रों द्वारा सम्पन्न क्रिया-कलापों का व्यक्तिगत/ सामूहिक मूल्यांकन किया जाए।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
● कम्पोस्ट खाद- तैयार करना। ● विद्यालय प्रांगण को फूलों से सजाना। ● तरकारियों की खेती करना। ● कृषि कक्ष को सजाना। ● खर-पतवारों का उन्मूलन। ● शैक्षिक भ्रमण ❖ स्थानीय कृषि कार्य तथा वाटिकाओं का भ्रमण करना। ● कायिक प्रवर्धन- ❖ आम, अमरूद, सेब तथा नाश-पाती में कायिक प्रवर्धन द्वारा नई पौध तैयार करना। ● फल संरक्षण- ❖ स्क्वैश तथा सेब का मुरब्बा तैयार करना। ● वृक्ष की पौधघर तैयार करना। ● बाड़ व्यवस्था।	● छात्र विद्यालय में अथवा घरों में कम्पोस्ट खाद तैयार करें। ● विद्यालय प्रांगण को पौधों से सजाया जाए। ● विद्यालय के कृषि-कक्ष को सजाते हुए तरकारियों के उत्पादन हेतु प्रोत्साहित किया जाए। ● स्थानीय कृषि-फार्म तथा वाटिकाओं का छात्रों को भ्रमण कराया जाए। ● आम, अमरूद तथा सेब एवं नाशपाती में कायिक प्रवर्धन द्वारा नयी पौध तैयार करायी जाए। ● स्क्वैश एवं सेब का मुरब्बा तैयार करने की क्रियात्मक जानकारी करायी जाए। ● कृषि फार्म में बाड़ की व्यवस्था करते हुए वृक्षों हेतु पौधघर तैयार करें।	● क्रियात्मक परीक्षण। ● व्यक्तिगत/ सामूहिक व्यावहारिक परीक्षण। ● उत्पादित तरकारियों में उगे खर-पतवारों के उन्मूलन हेतु व्यवहारिक परीक्षण। ● भ्रमण की वापसी पर छात्रों से ज्ञान एवं बोध के प्रश्न पूछे जाएं। ● क्रियात्मक/व्यावहारिक परीक्षण। ● क्रियात्मक/व्यावहारिक परीक्षण। ● व्यक्तिगत/सामूहिक/ व्यावहारिक परीक्षण।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
● विभिन्न प्रकार के यंत्रों का व्यावहारिक ज्ञान। छात्रों से अभ्यास कार्य कराना। ● भू-संरक्षण- मेड़बंदी, जुताई, क्षेत्र का समतलीकरण, ढाल के विपरीत जुताई, फसल उगाना। ● संग्रह- बीज, खाद, उर्वरक एवं पौधों का संग्रह। ● कायिक प्रवर्धन- कायिक प्रवर्धन की विधियों द्वारा नयी पौध तैयार करना ● व्यक्तिगत तथा सामूहिक कार्य। ● गमला भरना, पौधघर बनाना। ● बीजों को सुरक्षित करना। ● शैक्षिक भ्रमण। ● वृक्षों की पौधघर तैयार करना। ● बाड़ व्यवस्था- कृषि फार्म के चारों ओर बाड़ व्यवस्था करना।	● विभिन्न कृषि यंत्रों के कुशल संचालन हेतु अभ्यास द्वारा व्यावहारिक ज्ञान कराया जाए। ● भू-संरक्षण के उपायों का क्रियात्मक अभ्यास कराया जाए। ● खाद, बीज, उर्वरकों के संग्रह हेतु छात्रों को प्रोत्साहित किया जाए। ● कायिक प्रवर्धन क्रियात्मक ज्ञान कराया जाए। ● व्यक्तिगत एवं सामूहिक कार्यों के मूल्यांकन हेतु अनवरत अभ्यास कार्य कराया जाए। ● वृक्षों की पौधघर तैयार करायी जाए तथा कृषि फार्म के चारों ओर बाड़ लगाने की व्यवस्था की जाए।	● व्यावहारिक क्रियात्मक परीक्षण। ● क्रियात्मक परीक्षण। ● खाद, उर्वरक एवं बीजों के संग्रह हेतु क्रियात्मक परीक्षण। ● व्यावहारिक/क्रियात्मक परीक्षण। ● ज्ञान एवं बोध पर आधारित लिखित/मौखिक परीक्षण। ● क्रियात्मक परीक्षण।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
पशु-पालन में भेड़ ● भेड़ की महत्ता, ऊन एवं मांस। ● भेड़ की प्रमुख नस्लें-बीकानेरी, मांडिया, दक्खिनी एवं इस प्रदेश में पायी जाने वाली भेड़ की नस्लें। (क्षेत्र, शारीरिक बनावट, रंगादि) ● भेड़ की विदेशी नस्लें जो भारतवर्ष में भेड़ों की नस्ल सुधार के लिए उपलब्ध हैं-वर्णन सहित।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● स्थानीय भेड़-पालन फार्म का प्रेक्षण कराकर उन्नत नस्लों के विषय में अधिकाधिक जानकारी देने का भरसक प्रयास। ● लाइव स्टाक के उन्नत विदेशी नस्लों का प्रेक्षण अथवा विदेशी नस्लों की भेड़ों का चार्ट।	● ज्ञान-बोध, अनुप्रयोग पर आधारित लिखित/मौखिक परीक्षण।
पशु-पालन में बकरी- ● बकरी की महत्ता "गरीब की गाय।" ● दुग्ध एवं मांस उत्पादन। ● बकरियों की नस्लें-जमुनापानी, बरबरी, वित्तल, ब्लैक बंगाल (क्षेत्र, शारीरिक बनावट, रंगादि)	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● स्थानीय बकरी-पालन फार्म में देशी उन्नत नस्ल की बकरियों तथा विदेशी बकरियों का प्रेक्षण अथवा देशी/विदेशी उन्नत नस्लों की बकरियों का चार्ट आदि।	● ज्ञान-बोध, अनुप्रयोग पर आधारित लिखित/मौखिक परीक्षण।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
पशु-पालन में भेड़ ● पोषण। ● नवजात मेमनों का भरण-पोषण। ● चारे दाने की मात्रा। ● संतुलित आहार (वृद्धि एवं प्रजनन हेतु) ● चारों की आवश्यकता।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● पशु-अस्पताल (Veterinary Hospital) का प्रेक्षण ● संतुलित आहार संबंधी चार्ट।	● पेपर/पेंसिल परीक्षण। ● लिखित/मौखिक परीक्षण।
प्रजनन- ● नर-मादा का अनुपात। ● प्रजनन के प्रमुख सिद्धान्त। ● नस्ल सुधार। ● ऋतुकाल, ऋतुचक्र, गर्भाधान, मौसम आदि।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● भेड़ प्रजनन की विभिन्न विधियों का चार्ट अथवा पशु अस्पताल में बच्चों को लेजाकर पशु चिकित्सक/सहायक द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का प्रदर्शन।	● वस्तुनिष्ठ एवं वैषयिक परीक्षण
बकरी पालन- ● नवजात बच्चों का भरण-पोषण। ● चारे-दाने की मात्रा। ● संतुलित आहार (वृद्धि एवं प्रजनन हेतु)	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● दुग्ध एवं मांस के अधिक उत्पादन हेतु दाने एवं चारे की मात्रा का निर्धारण मानक स्तर के अनुकूल।	● भेड़ एवं बकरी पालन पर संक्षिप्त निबंधात्मक परीक्षण का आलेखन।
प्रजनन- ● नर-मादा का अनुपात। ● प्रजनन के प्रमुख सिद्धान्त। ● नस्ल सुधार। ● ऋतुकाल, ऋतुचक्र, गर्भाधान, मौसम आदि।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● ऋतुकाल, गर्भाधान एवं नस्ल सुधार पर परिचर्चा ● सरकार द्वारा इस स्तर पर उठाए गए कदमों पर विचार-विमर्श।	● भेड़-बकरी पालन पर मौखिक विचारों की अभिव्यक्ति का अवसर देकर मूल्यांकन किया जाए।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
भेड़- ● आवास व्यवस्था, विभिन्न पद्धतियां एवं प्रजातियां। ● सामान्य बीमारियों का प्रारम्भिक उपचार एवं औषधियां। ● वाह्य-आंतरिक परजीवी भेड़ के संक्रामक रोगों का निदान एवं रोकथाम।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● स्थानीय भेड़ पालन फार्म का भ्रमण कराकर प्रेक्षण करने को कहें। ● बीमारी संबंधी चार्ट। ● वाह्य एवं आंतरिक परजीवी का प्रदर्शन करते हुए इनके रोकथाम संबंधी उपायों पर परिचर्चा।	● वैषयिक परीक्षण ● वस्तुनिष्ठ परीक्षण
बकरी पालन- ● आवास व्यवस्था, रहन-सहन की व्यवस्था की विभिन्न प्रजातियां। ● सामान्य बीमारियों का प्राथमिक उपचार एवं औषधियां। ● वाह्य एवं आंतरिक परजीवी। ● बकरियों के सामान्य रोगों का निदान एवं रोकथाम।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● बकरी की सामान्य बीमारियों के प्राथमिक उपचार एवं औषधियों विषय परिचर्चा। ● परजीवियों के रोकथाम संबंधी परिचर्चा में शिक्षार्थियों की प्रतिभागिता ● बकरियों के सामान्य रोगों के निदान एवं रोकथाम संबंधी परिचर्चा।	● ज्ञान-बोध एवं अनुप्रयोग पर आधारित परीक्षण

पाठ्यक्रम - कुक्कुट पालन एवं मौन पालन कक्षा - ६

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
कुक्कुट पालन- ● कुक्कुट पालन से लाभ। ● मनुष्य के आहार में मांस एवं अण्डे का महत्व। ● मांस एवं अण्डे वाली उपयुक्त जातियां। ● उपलब्धि और जानकारी उपयुक्त मुर्गियों की। ● उपलब्धि और जानकारी (शारीरिक बनावट और औसत उत्पादन)	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● स्थानीय कुक्कुट पालन कार्य का प्रेक्षण कराकर विभिन्न नस्लों के कुक्कुटों से छात्रों को अवगत कराया जाए अथवा कुक्कुट की उन्नत नस्लों के चार्ट का प्रदर्शन।	● ज्ञान-बोध एवं अनुप्रयोग पर आधारित परीक्षण।
मौन पालन- ● मधुमक्खी की महत्ता। ● जन्तुजगत में मधुमक्खी का स्थान। ● मौन पालन से लाभ। ● मधुमक्खी की कालोनी का ज्ञान। ● भारतवर्ष में मधुमक्खी की जातियां।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● स्थानीय क्षेत्र में लगे मधुमक्खी के प्राकृतिक छत्ते अथवा कृत्रिम मधुमक्खी के छत्ते का प्रेक्षण एवं तुलनात्मक परिचर्चा। ● भारतीय मधुमक्खी की विभिन्न जातियां संबंधी चार्ट।	● बोधात्मक एवं अनुप्रयोगात्मक परीक्षण। ● मधुमक्खी पालन पर संक्षिप्त लेख प्रतियोगिता का आयोजन। ● भारतीय मधुमक्खी की विभिन्न जातियों की सूची का चार्ट।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
पशु विज्ञान में कुक्कुट के विषय में सामान्य ज्ञान- ● पोषण। ● संतुलित आहार। ● प्राणी का प्रबन्ध। ● खनिज लवण एवं खनिज। ● संकर चूजे। ● अण्डा देने वाली (लेयर्स) तथा मांस उत्पादन करने वाली (ब्रोयलर्स) मुर्गियों की जानकारी।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● कुक्कुट के संतुलित आहारों में प्रयुक्त विभिन्न सामग्रियों की सूची बनाकर छात्रों को अवगत कराया जाए। ● संकर चूजे का चार्ट। ● लेयर्स एवं ब्रोयलर्स मुर्गियों के चार्ट।	● ज्ञानात्मक एवं बोधात्मक परीक्षण/लिखित एवं मौखिक प्रश्न पूछे जाए। ● लेयर्स एवं ब्रोयलर्स प्रजातियां पर संक्षिप्त विचाराभिव्यक्ति लिखित रूप में बच्चों को करने को कहा जाए।
मौन पालन- ● यौन गृहों की बनावट तथा उपयोगिता ● मौन पालन में आने वाले उपकरणों की सूची एवं उनका वर्णन। ● मधुमक्खी पालन प्रारम्भ करना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● कृत्रिम यौन-गृह सेट। ● मौन पालन में प्रयुक्त उपकरणों की सूची एवं उनके कार्यों का स्पष्टीकरण शिक्षक द्वारा किया जाए। ● मौन पालन हेतु अनुप्रेरण।	● कृत्रिम यौन गृह सेट का प्रदर्शन करने को कहा जाए।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
पशु पालन में कुक्कुट के विषय में सामान्य ज्ञान- ● आवास-व्यवस्था। ● कुक्कुट पालन की विभिन्न प्रजातियां बिछाली और पिंजरों में डीप लिटर तथा केज सिस्टम ● सामान्य बीमारियों की जानकारी एवं प्राथमिक उपचार। ● कुक्कुट के संक्रामक रोग का निदान एवं उनके उपचार।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● कुक्कुट आवास का प्रेक्षण ● डीप किटर एवं केज सिस्टम का चार्ट। ● सामान्य बीमारियों एवं उपचार संबंधी चार्ट। ● संक्रामक रोग एवं उसकी रोकथाम संबंधी चार्ट।	● पेपर/पेंसिल परीक्षण। ● ज्ञान-बोध संबंधी परीक्षण। ● वस्तुनिष्ठ/विषयनिष्ठ परीक्षण।
मौन पालन- ● नये मौन गृहों में मधुमक्खी की उचित देखभाल। ● मौसमी फूलों (पासचरेज) के बारे में जानकारी एवं व्यवस्था। ● मौसम के अनुकूल प्रवन्ध करना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● मौनगृहों की देखभाल एवं उसका रख-रखाव आदि। ● मौसमी पुष्प पादपों का रोपण एवं उसकी समुचित देखभाल आदि।	● अनुप्रयोगात्मक परीक्षण। ● व्यावहारिक परीक्षण।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
वन से प्राप्त सामग्री- **(जीवनोपयोगी)** ● आक्सीजन, वर्षा, मिट्‌टी, लकड़ी, फल, औषधि। ● वनों की उपयोगी लकड़ियों से प्राप्त उपयोगी वस्तु। इमारती लकड़ी जैसे- देवदार, सागौन, शीशम, साल, चीड़ से दरवाजा, आलमारी, मेज, कुर्सी तथा रेल की पटरियां बनती हैं।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● स्थानीय भ्रमण कराकर वनों को दिखाया जाए। ● वनों में प्राप्त जड़ी-बूटियों का संकलन कराया जाए। ● विभिन्न इमारती लकड़ियों को पहचनवाकर कक्षा में उनसे निर्मित वस्तुओं का प्रेक्षण कराया जाए।	● ज्ञान-बोध एवं अनुप्रयोग संबंधी लिखित/मौखिक परीक्षण
वनों से प्राप्त औषधियां- ● मिक, मोडा, बिच्छू घास, मकोय, तुलसी, पुनर्नवा, तिमूर, इलायची, गेंदा, लहसुन आदि से विभिन्न औषधियां बनायी जाती हैं।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● वनों से प्राप्त औषधियों की पहचान कर विभिन्न जड़ी-बूटियों के प्रयोग का प्रदर्शन करते हुए परिचर्चा की जाय।	● विभिन्न जड़ी-बूटियों का विभिन्न रोगों में प्रयोग करने संबंधी परीक्षण।
रेशम कीट-पालन – ● रेशम कीट पालन वाले पेड़ अर्जुन, टसर, शहतूत। इनके रेशमों से कपड़ा उद्योगों में से एक है। रेशम के कीड़े आजकल बाज नामक पौधों पर भी पाला जाता है।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● विभिन्न पौधे एवं वृक्षों की पहचान कराया जाए, जिनपर रेशम के कीट सरलतापूर्वक पाले जा सकते हैं।	● रेशम कीट पालन हेतु संक्षिप्त वर्णन/निबंधात्मक परीक्षण।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
वन से प्राप्त होने वाली उपयोगी वस्तुएं- ● पेन्ट, तेल, शहद। ● तेल निकालने वाले पौधे- महुआ, नीम, सरसों, तिल, सोयाबीन, सूरजमुखी, अरण्डी, अलसी, मूंगफली तारपीन इन चीजों से रंग तथा पेन्ट बनाया जाता है।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक स्थानीय वनों का भ्रमण कराकर विभिन्न वृक्षों की पहचान करायेगा तथा उनसे प्राप्त होने वाली वस्तुओं की सूची छात्रों से बनावाएगा।	● ज्ञान, बोध, अनुप्रयोग संबंधी लिखित/मौखिक परीक्षण।
वनों से गोंद- ● गोंद बबूल, नीम, पीपल एवं महुआ आदि के दूध से प्राप्त होता है।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक गोंद के प्रषोकर का प्रदर्शन करेगा तथा छात्र उनका अनुशीलन करेंगे।	● अनुप्रयोगात्मक परीक्षण
वनों से प्राप्त वस्तुएं- ● वनों से प्राप्त वस्तुओं में कागज बनाने की लकड़ी अधिक प्रसिद्ध है। जिनमें यूकिलिप्टस, पाइपर, बांस पेड़ की छाल की लुग्दी आदि। ● चमड़ा सिझाने के लिए बबूल की छाल का प्रयोग किया जाता है। ● वनों से लाख, कत्था तथा विरोजा प्राप्त होता है।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● बबूल जैसे उपयोगी वृक्ष के विभिन्न अंगों के प्रयोग को बतलायेगा तथा बबूल की छाल का उपयोग चमड़ा सिझाने में किस प्रकार किया जाता है उसका प्रदर्शन/वर्णन करेगा।	● अनुप्रयोगात्मक परीक्षण

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
वन से प्राप्त आवश्यक वस्तुएं- ● घास, खाद, बांस, रामबांस, सरकण्डे, नरकुल से चटाई, बच्चों के खेल की बांसुरी, कलम आदि बनाए जाते हैं। ● रस्सी बनाना- रामबांस से रस्सी, नारियल से रस्सी, मूंज से रस्सी, वगई से रस्सी बनाना। ● बांस-टोकरियां- बांस से टोकरी, अरहर के डण्ठल से टोकरी, ताड़ खजूर के पत्तों से चटाई एवं टोकरी बनाना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक छात्रों को स्थानीय वनों का भ्रमण कराकर चटाई, रस्सी बनाने से संबंधित उपकरणों के साथ चटाई बनाने की क्रिया का प्रदर्शन करेगा तथा छात्र उनका अनुशीलन करेंगे।	● अनुप्रयोगात्मक एवं बोध के प्रश्नों का निर्माण कर छात्रों का मूल्यांकन लिखित/मौखिक किया जायेगा।
वनों से प्राप्त जीवजन्तु- ● जीव-जन्तुओं से खाल, ऊन, मांस पाया जाता है। ● हाथी के दांत से कंघी, मेज तथ कुर्सियां बनायी जाती हैं। ● हिरन के खाल की चटाई।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● वन्य जन्तुओं के विभिन्न अंगों जैसे दांत एवं सींग आदि से बनने वाली कई वस्तुओं के उपयोग से परिचित हो जायेगा।	● अनुप्रयोगात्मक एवं बोध के प्रश्नों का निर्माण कर छात्रों का मूल्यांकन लिखित/मौखिक किया जायेगा।
वनों से प्राप्त फूल, फल- ● बहुत से फल, फूल वनों से प्राप्त होते हैं। ● फल तथा फूलों से शर्बत, स्क्वैश बनाये जाते हैं।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक फलों एवं फूलों के रसों से प्राप्त होने वाले पदार्थ- शर्बत, स्क्वैश आदि का प्रदर्शन करेगा तत्पश्चात् छात्र अध्यापक की क्रियाओं का अनुशीलन करेंगे।	● अनुप्रयोगात्मक एवं बोध के प्रश्नों का निर्माण कर छात्रों का मूल्यांकन लिखित/मौखिक किया जाए।
अन्य पदार्थ- ● कत्था, रबड़, दियासलाई बनाने की लकड़ी आदि वनों से प्राप्त होती है। जिससे उद्योग धन्धे चलते हैं।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● स्थानीय परिवेश का भ्रमण कराकर कत्था, रबड़ एवं दियासलाई आदि के बनाने के संदर्भ में परिचर्चा की जाए।	● ज्ञान, बोध पर आधारित लिखित/मौखिक परीक्षण द्वारा बच्चों का मूल्यांकन किया जाए।
वनों से लाभ- ● इमारती लकड़ी, दियासलाई, लाख, रबड़ आदि पाये जाते हैं। ● मिट्टी का कटाव रूकता हैं। ● अधिक वर्षा संभावित है। ● शेर, चीते, नीलगाय, लोमड़ी, सियार आदि वन्य जन्तु पाये जाते हैं।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● वनों से प्राप्त इमारती लकड़ी का प्रयोग किन-किन कार्यों में होता है, इस संदर्भ में शिक्षक छात्रों के बीच परिचर्चा की जाए। ● वनों से प्राप्त होने वाले लाभों पर बच्चों से स्वतंत्र भावाभिव्यक्ति करायी जाए जिससे उन्हें अपने विचारों को व्यक्त करने का अवसर मिल सकेगा।	● ज्ञान, बोध पर आधारित लिखित/मौखिक परीक्षण द्वारा बच्चों का मूल्यांकन किया जाए।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
● फल संरक्षण का सामान्य ज्ञान एवं परिभाषा। ● फल संरक्षण का कारण, महत्व एवं उपयोगिता। ● फलों के विकृत होने के कारकों के नाम। ● फल संरक्षण के सिद्धांत का परिचय- अस्थायी, स्थायी। ● फल संरक्षण की विधियों का अन्य ज्ञान-निर्जलीकरण (सुखाना) घरेलू पदार्थों जैसे- नमक, चीनी, सिरका, मसाला द्वारा संरक्षण- इन विधियों से लाभ-हानियां। ● फल संरक्षण के विभिन्न उत्पाद- जैम, मुरब्बा, जूस, सूखे फल, अचार, चटनी। ● उपर्युक्त उत्पाद तैयार करने के उपयोग में आने वाले उपकरण एवं उनकी प्रयोग विधि।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक स्थानीय फल संरक्षण के केन्द्र का भ्रमण कराकर प्रेक्षण करायेगा। ● कक्षा में फल-संरक्षण हेतु शिक्षक प्रदर्शन का कार्य करेगा तथा छात्र अनुशीलन करेंगे। ● प्रदर्शनात्मक ढंग से पाठ का विकास होगा तथा छात्र शिक्षक का अनुकरण करेंगे। ● विभिन्न उपयोग में आने वाले उपकरणों की पहचान करवाकर विभिन्न प्रक्रिया में उनके प्रयोग पर परिचर्चा की जाए।	● अनुप्रयोग एवं बोध पर आधारित लिखित/मौखिक परीक्षण

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
● फल संरक्षण का कारण, महत्व और उपयोगिता। ● फलों के विकृत होने के कारण- इन्जाइम्स, फफूंदी, जीवाणु इन्जाइम्स एवं खमीर के बारे में विस्तृत ज्ञान। ● फल संरक्षण के सिद्धांतों का पूर्णज्ञान। ● फल संरक्षण की विभिन्न उत्पादें- जेली, कैण्डी, शर्बत एवं अचार। ● फल संरक्षण की विधियां- घरेलू, रासायनिक पदार्थों द्वारा जैसे- चीनी, नमक, सिरका, तेल, मसाला, बोतलबन्दी। इन विधियों के प्रयोग से लाभ-हानियां। ● उपर्युक्त उत्पाद तैयार करने के उपयोग में आने वाले उपकरणों एवं उनकी प्रयोग विधि।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● स्थानीय फल संरक्षण केन्द्र का भ्रमण कराकर छात्रों को प्रेक्षण करने को शिक्षक कहेगा। ● कक्षा में शिक्षक परिचर्चा करेगा। ● प्रदर्शनात्मक तरीके से कक्षा के समस्त को उत्पाद तैयार करने हेतु प्रेरित करे। ● कक्षा में शिक्षक प्रयोग/प्रदर्शन के द्वारा फल संरक्षण की विधियों पर परिचर्चा करेगा। ● विभिन्न उपकरणों की पहचान कराते हुए इनके सही प्रयोग के ढंग को शिक्षक स्पष्ट करेगा।	● बोध- अनुप्रयोग पर आधारित लिखित/मौखिक परीक्षण।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
● फल संरक्षण का महत्व, उपयोगिता का पूर्ण ज्ञान। ● फलों के विकृत होने के कारण- फफूंदी और जीवाणु की विस्तृत जानकारी। ● अस्थायी एवं स्थायी संरक्षण का महत्व, उदाहरण सहित ज्ञान। ● फल संरक्षण की विधियां- निर्जली करण, डिब्बा बन्दी आदि। ● फल संरक्षण में रासायनिक पदार्थों का प्रयोग- कब, क्यों और कैसे करें। ● फल संरक्षण के विभिन्न उत्पाद, हर एक में कोई एक उत्पाद (कक्षा 6, 7 में तैयार किए हुए से भिन्न) ● विभिन्न उत्पाद तैयार करने में उपयोग में आने वाले उपकरण एवं उनकी प्रयोग विधि।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● फलों के विकृत होने वाले कारकों के विषय में शिक्षक छात्रों के बीच परिचर्चा करेगा। ● शिक्षक कक्षा के छात्रों के बीच प्रयोग/प्रदर्शन करेगा तथा छात्र शिक्षक द्वारा सम्पादित क्रियाओं का अनुसरण करेंगे। ● फल संरक्षण में रासायनिक पदार्थों का प्रयोग शिक्षक करेगा तथा आदर्श क्रियान्वयन छात्र सावधानी पूर्वक प्रेक्षण करेंगे।	● बोध एवं अनुप्रयोग पर आधारित लिखित/मौखिक परीक्षण।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
● मिट्टी-मिट्टी की परिभाषा, कणों के आधार पर मिट्टी का वर्गीकरण, मिट्टी के गुण।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● स्थानीय परिवेश का भ्रमण कराकर छात्रों से प्रेक्षण करने को कहेगा। कणों के आधार पर मृदा का संकलन कराया जाए।	● ज्ञान एवं बोध के लिखित/ मौखिक प्रश्नों द्वारा मूल्यांकन।
● भू-परिष्करण- परिभाषा, उद्देश्य, ऋतुओं के अनुसार जुताई तथा उससे लाभ।		
● जुताई-गुड़ाई यंत्र- गुड़ाई एवं जुताई के यंत्रों को बताना, बागवानी के यंत्रों का प्रयोग, हैण्डकार्क, हेज सीपर बडिंग, ग्राफ्टिंग, नाइफ, आरी गार्डेन रेक, सिकिल गैती।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● विभिन्न कृषि कर्षण की क्रियाओं का प्रदर्शन करते हुए कर्षण से संबंधित एवं अन्य यंत्रों का व्यावहारिक प्रयोग कराया जाए।	● बोधात्मक एवं अनुप्रयोगात्मक परीक्षण के प्रश्नों द्वारा मूल्यांकन।
● बीज- उन्नतशील बीज की पहचान, साधारण तथा उन्नतिशील बीज की तुलना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● साधारण एवं उन्नतिशील बीजों की पहचान कराकर इनकी तुलना करायी जाए।	● ज्ञानात्मक परीक्षण।
● खाद, उर्वरक- पौधों के आवश्यक पोषक तत्व, खादों के प्रकार, गोबर कम्पोस्ट, मल-मूत्र, हरी खादें, खलियों की खाद।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● खाद-उर्वरकों के अंतर को स्पष्ट करते हुए विभिन्न जैविक खादों के तैयार करने के तरीकों से अवगत कराया जाए।	● ज्ञान, बोध एवं अनुप्रयोग एवं आधारित परीक्षण मौखिक /लिखित प्रश्नों द्वारा मूल्यांकन।
● सिंचाई- पौधों के लिए जल की आवश्यकता, सिंचाई की परिभाषा, सिंचाई के स्रोत, कुआं, तालाब, नहर, झरने एवं नालियों का निर्माण।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● पौधों के लिए जल की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए छात्रों को परिवेश के सिंचाई के स्रोतों का प्रेक्षण कर अपनी-अपनी अभ्यास पुस्तिका में विवरण अंकित करने को कहें।	● प्रेक्षण निष्कर्ष पर आधारित वर्णनात्मक/विवरणात्मक मूल्यांकन
● बाग लगाना- बाग लगाने का चुनाव पहाड़ी एवं मैदानी मिट्टी में अंतर, जल निकास, पहाड़ी एवं मैदानी भाग में सिंचाई की व्यवस्था।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● स्थानीय परिवेश में बाग लगाने की योजना से संबंधित प्रेक्षण। ● बागों की सिंचाई संबंधी चार्ट द्वारा पाठ का विकास।	● मौखिक/लिखित प्रश्नों द्वारा मूल्यांकन
● फलों की खेती- (पहाड़ी) सेब एवं आड़ू। (मैदानी) आम, अमरूद।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● छात्रों से विभिन्न पहाड़ी एवं मैदानी फलों के उगाने संबंधी परिचर्चा करायी जाए।	● ज्ञान एवं बोध पर आधारित परीक्षण।
● तरकारी की खेती- पहाड़ी भाग : सागिया, मिरचा (वन्डर चीली), लाही की खेती, फूलगोभी, पात गोभी एवं गांठ गोभी। मैदानी भाग: आलू, मटर खरबूजा एवं कुम्हड़ा।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● छात्रों से विभिन्न पहाड़ी एवं मैदानी तरकारियों से उगाने संबंधी परिचर्चा करायी जाए।	● ज्ञान एवं बोध पर आधारित परीक्षण।
● फल संरक्षण- आम तथा पपीता का अचार बनाना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● आम एवं पपीता के अचार बनाने में प्रयुक्त उपकरणों एवं सामग्रियों की सूची बनवायी जाए तथा छात्रों से अचार तैयार करने की विधि जानने को कहा जाए।	● अनुप्रयोगात्मक परीक्षण द्वारा मूल्यांकन

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
● मृदा का विकास- मृदा विकास के प्रकार ।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● परिवेशीय प्रेक्षण के आधार पर विभिन्न मृदाओं का संकलन कराया जाए।	● ज्ञानात्मक / बोधात्मक परीक्षण।
● भू-क्षरण- परिभाषा, क्षरण के प्रकार।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● प्रेक्षण के आधार पर भू-क्षरण के कारक एवं प्रकारों को बताया जाए अथवा भू क्षरण संबंधी चार्टों के आधार पर परिचर्चा करायी जाए।	● ज्ञानात्मक / बोधात्मक परीक्षण।
● खाद, उर्वरक- पौधों के मुख्य पोषक तत्वों हेतु खाद एवं उर्वरकों का योगदान: नाइट्रोजन, फासफोरस एवं पोटास आदि। ● उर्वरकों का वर्गीकरण- फासफेटिक एवं पोटैसिक उर्वरकों के प्रयोग की विधि तथा लाभ।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● उर्वरकों की पहचान कराकर इनकी विशेषताओं को स्पष्ट किया जाए।	● लिखित / मौखिक प्रश्नों द्वारा परीक्षण।
● सिंचाई के यंत्र-हजारा, बेड़ी, ढेकुली, मोठ, रहट, चेनपम्प, नलकुप आदि।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● सिंचाई के विभिन्न यंत्रों की जानकारी कराते हुए इन्हें प्रयोग करने के ढंग से अवगत कराया जाए।	● ज्ञान, बोध एवं अनुप्रयोग पर आधारित मौखिक / लिखित परीक्षण के प्रश्नों द्वारा मूल्यांकन
● विद्यालय वाटिका-विद्यालय वाटिका का विन्यास पेड़ पौधों की सूची, पहाड़ी पेड़ : रामबांस, भांग। मैदानी : गोल्ड-मोहर, अमलतास, कचनार, अशोक आदि।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● विद्यालय वाटिका के सुसज्जित करने एवं उसके रख-रखाव में छात्र/छात्राओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करायी जाए।	● ज्ञान, बोध एवं अनुप्रयोग पर आधारित मौखिक / लिखित परीक्षण के प्रश्नों द्वारा मूल्यांकन
● झाड़ी-पहाड़ी : काफल, हिसालू, किलमोड़ा, शहतूत। मैदानी : मेंहदी, चांदनी, नीलकांटा, गुड़हल आदि।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● स्थानीय झाड़ियों का वीक्षण कराकर इनकी उपयोगिता स्पष्ट करायी जाए।	● ज्ञान, बोध एवं अनुप्रयोग पर आधारित मौखिक / लिखित परीक्षण के प्रश्नों द्वारा मूल्यांकन
● झाड़ी एवं लताएँ-झाड़ी पौधे उगाना। ❖ पहाड़ी झाड़ी : बनबेलियां, वरूख अजूबा। ❖ मैदानी झाड़ी : सावनी, कामनी, बेला, रातरानी। ❖पहाड़ी लताएं : हरसिंगार, डहेलिया, गुलाब, प्राची। ❖मैदानी लताएं : रेलवे क्रीपर, बिगनोनिया,	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● स्थानीय परिवेश के आधार पर झाड़ी एवं लताओं के अंतर को स्पष्ट कराया जाए।	● सत्य / असत्य, रिक्त स्थानों की पूर्ति, मैचिंग परीक्षण।
● शोभा वाले पौधे - क्रोटान, अकलीका वैजन्ती, सुदर्शन ● गमला-गमले में पौध कोलिप्स, गुलदाउदी, पौथारस, क्रोन्सिया, रजनीगंधा	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शोभा वाले पौधों की पहचान कराकर इन्हें घर- विद्यालय की सजावट हेतु गमलों में लगाया जाए।	● ज्ञान, बोध एवं अनुप्रयोग पर आधारित मौखिक / लिखित परीक्षण।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
● मौसमी फूल की खेती- ❖ बरसात : बाकसम, जीनिया, मुर्गकेश ❖ जाड़ा : गेंदा, गुकखैरा, फ्लाक्स डहेलिया, कैलेन्डुला कैन्डीहक्ट। ❖ गर्मी : पारचुलाका, क्रोचियां, सूरजमुखी, गेलाडिंया, गुलाब पहाड़ी एवं देशी।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● विभिन्न ऋतुओं में उगाये जाने वाले मौसमी फूलों को गमलों/क्यारियों में लगवाया जाए	● ज्ञान, बोध एवं अनुप्रयोग पर आधारित मौखिक / लिखित परीक्षण
● प्रवर्धन-बीज द्वारा प्रवर्धन, कायिक प्रवर्धन : इससे लाभ, इसकी विधियाँ गूंटी बांधना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● बीजों द्वारा पौधे के उगाने की जानकारी करायी जाए। कायिक प्रवर्धन में प्रयुक्त होने वाले यंत्रों का प्रयोग कराते हुए गूंटी बांधना सिखाया जाए।	● अनुबोधात्मक परीक्षण पर आधारित लिखित/ मौखिक प्रश्नों द्वारा।
● फलों की खेती- ❖ पहाड़ी फल : खूबानी, नाशपाती एवं चीकू की खेती ❖ मैदानी फल : आम, केला, सेब एवं नाशपाती की खेती	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● पहाड़ी तथा मैदानी फलों की खेती का सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान कराया जाए।	● ज्ञान, बोध पर आधारित लिखित / मौखिक प्रश्नों द्वारा मूल्यांकन।
● फल परिरक्षण – ❖ फल तथा पदार्थों के नष्ट होने के कारण कवक, खमीर, जीवाणु, इंजाइम्स। ❖ बोतल, डिब्बों का जीवाणुनाशक तथा मोम द्वारा उनके मुंह बन्द करना। ❖ रासायनिक परिरक्षकों का प्रयोग ❖ स्क्वैश बनाना- संतरा, नींबू, टमाटर आदि। ❖ मुरब्बा बनाना- बेल,सेब एवं आंवला आदि	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● फल उत्पादों को विकृत करने वाले कारकों की जानकारी करायी जाए। ● बोतल/डिब्बों को स्टेरीलाइज (जीवाणुनाशक) कराकर रासायनिक परिरक्षकों के प्रयोग को बताया जाए। ● विभिन्न उपलब्ध मौसमी फलों के स्क्वैश एवं मुरब्बा तैयार करने का व्यावहारिक ज्ञान दिया जाए।	● ज्ञान, बोध पर आधारित लिखित / मौखिक प्रश्नों द्वारा मूल्यांकन।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
● मृदा गठन- मृदा गठन सामान्य परिचय, गठन के आधार पर वर्गीकरण।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● परिवेशीय प्रेक्षण कराकर अथवा मृदा गठन संबंधी चार्ट के द्वारा पाठ का विकास परिचर्चा के माध्यम से किया जायेगा।	● ज्ञान, बोध संबंधी परीक्षण लिखित/मौखिक।
● जलवायु विज्ञान- समान्य ज्ञान कृषि एवं बागवानी हेतु जलवायु का निर्धारण।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● जलवायु के सामान्य ज्ञान के अंतर्गत जलवायु मापक यंत्रों का सामान्य प्रयोग किया जायेगा।	● ज्ञान, बोध संबंधी परीक्षण लिखित/ मौखिक।
● सिंचाई- सिंचाई की विधियां, जो बागवानी में प्रयुक्त होती हैं। प्रवाह एवं क्यारी विधि का निर्माण। फलदार वृक्षों के लिए सिंचाई विधि जल निकास का अर्थ एवं व्यवस्था।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● बाग की सिंचाई हेतु उपयुक्त चार्ट के द्वारा पाठ का विकास।	● मौखिक/लिखित प्रश्नों द्वारा परीक्षण।
● शाक वाटिका- शाक वाटिका का महत्व, शाक वाटिका की सफलता में बाधक कारक।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● विद्यालय वाटिका का उपयोग करते हुए शाक वाटिका के महत्व से बच्चों को परिचित कराना।	● सत्य/असत्य, रिक्त स्थानों की पूर्ति, बहु विकल्पक लिखित परीक्षण।
● बाग लगाना- बाग लगाने के लिए स्थान का चयन, जलवायु, मिट्टी, जल निकास, सिंचाई के साधन, जंगल, भट्ठे से दूर होना, पूर्व योजना, पौधे लगाना, दाब लगाने की विधि।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● जल निकास की आवश्यकता, महत्व एवं उद्देश्य को स्पष्ट करने हेतु स्थानीय प्रेक्षण/चार्ट।	
● कायिक प्रवर्धन- प्रवर्धन की विधियां कलम बांधना, काठी तथा जिमी कलम, चश्मा चढ़ाना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● दाब, कलम, गूंटी एवं चश्मा लगाने आदि की क्रियाओं हेतु आवश्यक उपकरण- कटिंग, ग्राफ्टिंग एवं बडिंग, नाइफ का प्रयोग करते हुए व्यावहारिक ज्ञान दिया जाए।	● क्रियात्मक व्यावहारिक परीक्षण संबंधी प्रश्न पूछे जाए।
● फसल चक्र- कुछ आवश्यक फसल चक्र टमाटर, लौकी, कुम्हड़ा, करेला, करैली, तोरई, फूलगोभी, भिन्डी, पालक, मक्का, आलू, प्याज। पहाड़ी क्षेत्र- सागिया, मिरचा, लाही, तरोई, फूल एवं गांठ गोभी, आलू, मूली, लौकी, प्याज, लहसुन, धनिया।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● फसलचक्र की आवश्यकता एवं सिद्धान्तों को परिचर्चा द्वारा शिक्षक कक्षा में स्पष्ट करेगा।	● पेपर/पेंसिल परीक्षण।
● फलों की खेती- ❖ पहाड़ी- आलूबुखारा, खूबानी, प्लम की खेती। ❖ मैदानी- कटहल, आँवला, बेल की खेती।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● पहाड़ी-मैदानी फलों एवं तरकारियों की उन्नत कृषि का विवरण परिचर्चा द्वारा शिक्षक करेगा। आवश्यक होने पर विद्यालयीय क्यारियों में इनका वाचन एवं संरक्षण किया जायेगा।	● ज्ञान, बोध एवं अनुप्रयोगी संबंधी परीक्षण लिखित/ मौखिक मूल्यांकन।
● फल परीक्षण- ❖ जैम बनाना। ❖ जेली बनाना। ❖ सास बनाना। ❖ अचार बनाना	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● जैम, जैली तथा सास एवं अचार आदि तैयार करते में प्रयुक्त होने वाले समस्त उपकरणों से परिचय कराकर आवश्यक सामग्रियों की सूची बच्चों से बनवायी जायेगी।	● क्रियात्मक परीक्षण द्वारा मूल्यांकन।

शिल्प-शिक्षण के सामान्य उद्देश्य-

1. छात्र-छात्राओं को सामूहिक रूप से कार्य करने तथा मानवीय मूल्यों जैसे सहयोग, सहिष्णुता, सद्‌भावना, सदाचार, आत्मविश्वास एवं श्रम की महत्ता के प्रति सम्यक् दृष्टिकोण उत्पन्न करना।
2. शारीरिक श्रम करने वालों के प्रति आदर की भावना जागृत करना।
3. व्यक्तिगत एवं सामूहिक कार्य द्वारा श्रम के प्रति निष्ठा उत्पन्न करते हुए छात्र-छात्राओं में श्रमपरक कार्यों को सम्पादित करने हेतु अभिप्रेरित करना।
4. स्वत: करके सीखने का अवसर देना एवं कृत कार्यों के प्रति पूर्ण निष्ठा का भाव रखना।
5. क्रियाओं के माध्यम से आत्म-विश्वास एवं स्वावलम्बन का भाव छात्र/छात्राओं में जागृत करना।
6. देश के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में सहयोग देने की भावना विकसित करना।
7. जीवनोपयोगी आवश्यक वस्तुओं को अपने हाथों से तैयार करने का कौशल विकसित करना।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
● काष्ठ शिल्प के अन्तर्गत ट्रे यंत्रों के प्रयोग से दैनिक जीवन की छोटी-छोटी वस्तुएं बनाई जा सकती हैं- **सैद्धान्तिक** ❖ट्रे के समस्त साधारण यंत्र जैकप्लेन स्मूथिंग प्लेन (बड़ा रन्दा), टेननसा, (आरी) मुंगरी, हथौड़ी, गुमिया, फर्मर, चीजेल (/खानी), दो फुटा, मार्किंग नाइफ, रेती इत्यादि और उनका प्रयोग।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक काष्ठ कला के अन्तर्गत शिल्प से संबंधित यंत्रों तथा उनके प्रयोग को बतायेगा। छात्र अनुशीलन करेंगे।	● बोध एवं प्रयोग पर आधारित लिखित/मौखिक परीक्षण।
● प्रयोग की वस्तुएं- ❖नापने की विधि आधे, चौथाई तथा आठवें भाग में विभाजन करना। मापों के अनुसार त्रिभुज, चतुर्भुज आदि आकृतियों को खींचना। दिए हुए माप के अनुसार भाग करना तथा उसपर परम्परागत चिह्न लगाने की विधि तथा उनके नाम। आरी से चीरना, रंदा करने की विधि ज्ञात करना। सरल मॉडलों के प्लान खाका तथा इलीवेशन (सम्मुख भाग का चित्र) बनाने का प्राथमिक ज्ञान।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● नापने की विधियों का प्रदर्शन करेगा माप के अनुसार आकृतियाँ बनाना। अनुशीलन करेंगे। ● आरी से चीरना, रंदा चलाना, चित्र का नमूना बनायेगा। छात्र अनुशीलन करेंगे।	● लिखित प्रश्नों द्वारा परीक्षण। ● प्रायोगिक कार्यों द्वारा चित्रों का मूल्यांकन।
● क्रियात्मक- ❖बनावट तथा औजारों के प्रयोग को ध्यान में रखते हुए क्रमानुसार भिन्न-भिन्न श्रेणी के माडल तैयार करना, जैसे- पेंसिल तेज करते का पैड, तख्ती ब्रेकेंट (दीवालगीर), कोट टांगने का हुक, कलमदान (एक दवात का) खुरपा और गडांसे का बेंट, सन कातने का ढेरा, सादा बुक रैक, बचे टुकड़ों से खिलौने।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● प्रदर्शन करते समय विभिन्न बिन्दुओं पर परिचर्चा करते हुए एक-एक दिन में एक मॉडल का प्रदर्शन करेगा। छात्र अनुशीलन करेंगे।	● बनाये गये मॉडलों का निरीक्षण कर मूल्यांकन।
● वृक्षों से हमें विभिन्न प्रकार की लकड़ी प्राप्त होती है। ❖विभिन्न प्रकार की लकड़ियों का प्रारम्भिक ज्ञान।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक छात्रों को स्थानीय काष्ठ कला केन्द्रों पर ले जाकर वीक्षण कराकर परिचर्चा करायेगा तथा अच्छे नमूने व वस्तुओं को स्वत: बनाने के लिए प्रेरित करेगा।	● छात्र की व्यक्तिगत क्षमताओं के विकास संबंधी प्रायोगिक कार्यों द्वारा मूल्यांकन।
संबंधित कला- खण्ड-अ ● पुनरुत्पादन तथा पुनर्निरुपण ❖स्वतंत्र भाव प्रकाशन तथा स्मृति से (रचना) चित्रण करना। क्राफ्ट कार्यों से	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● स्थानीय प्रदर्शनी का भ्रमण कराकर चित्रों का प्रदर्शन करते हुए चित्रण करेगा, माडलों के अनुसार रेखाचित्र, पोस्टर, पुरातन चित्र, आलंकारिक डिजाइनों को प्रदर्शित करते हुए चित्रण भी करेगा तथा बच्चे अनुशीलन करेंगे।	● क्रियात्मक कार्य कराकर मूल्यांकन। ● व्यक्तिगत रूप से डिजाइन बनवाकर परीक्षण।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
संबंधित अनुभवों का पुनर्निरुपण में विशेष बल। ❖व्यवहार योग्य यंत्रों तथा क्राफ्ट के कार्य में बने माडलों के क्रमानुसार अनुरूप चित्रण केवल रेखाचित्र/पोस्टर बनाने का परिचय। ❖परम्परागत (पुरातन) चित्र/ड्राइंग का अनुकरण आलंकारिक डिजाइन तथा सरल आकृतियों की नकल।		
● **रंग तथा डिजाइन-** ❖रंगचक्र (आस्टवाल्ड) के मुख्य छः रंगों की पहचान तथा वर्गीकरण, पीला, नारंगी, लाल, नीला, बैंगनी तथा समुद्री हरा। तटस्थ रंगों का प्रयोग तथा वस्तुओं को रंगते समय विरोधी तथा समान रंगों का प्रयोग। ❖प्राकृतिक वस्तुओं को तथा आलंकारिक सरल आकारों को प्रयोग करके किनारा तथा धरातलीय डिजाइन बनाना। काष्ठशिल्प के काम में आने वाले यंत्र तथा माडलों को डिजाइन की इकाइयों में प्रयोग। ❖कागज काटकर ठप्पे से छपाई, ठप्पों से स्प्रे द्वारा डिजाइन।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● आस्टवाल्ड रंगचक्र का प्रदर्शन तथा उन्हें बनाने की विधि तटस्थ रंगों का कहां प्रयोग होता है। विरोधी तथा समान रंगों के प्रयोग का स्थान की पहचान नमूनों द्वारा प्रदर्शित करेगा। छात्र अनुशीलन करेंगे। ● शिक्षक नमूने रूप में धरातली डिजाइन की इकाइयों को चित्रित करेगा तथा छात्रों को स्वयं बनाने हेतु प्रेरित करेगा।	● रंगचक्र का ज्ञान प्रश्नोत्तर परीक्षण द्वारा। ● तटस्थ रंग, समान रंग, विरोधी रंगों का उपयोग कराकर परीक्षण। ● धरातलीय डिजाइन कलिगत रूप से बनाना।
खण्ड-ब ● साधारण यंत्रों के मुक्त हस्तचित्र। ● कक्षा में तैयार किये गये माडलों का रेखाचित्र।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● कागज काटकर डिजाइन बनाना। ● मोड़ना, रेखांकित करना व काटना। ● ठप्पे बनाकर डिजाइन बनाना। ● स्प्रे करने का आदर्श प्रस्तुत करेगा। छात्र अनुशीलन करेंगे।	

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
● ट्रे यंत्रों के प्रयोग से अनेक प्रकार की वस्तुएँ बनाई जाती हैं। **सैद्धान्तिक** ❖ ट्रे के औजार तथा अन्य विशिष्ट औजार जैसे- खतकश, मोटर टाइज, रूखानी, टेननसा, हैन्डन्सा, स्मूथिंग तथा जैक प्लेन, नेल पंच, हैण्डड्रिल, ब्रेस और साधारण बिट्स, हथौड़ा तथा स्क्रू ड्राइवर- यंत्रों का नाम परिचय, उचित प्रयोग तथा रख-रखाव। आकार बनाना तथा किसी वस्तु को क्रासकट-सा तथा टेनन-सा से नियत रूप में काटना, चक्ररेखा में चिजेल और मलेट की सहायता से काटना और उसकी सफाई रेती तथा कागज से करना। ❖ विभिन्न प्रकार की लोहे की कलें तथा पेंच और उनका उचित प्रयोग।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक एक-एक करके ट्रे और औजारों को प्रदर्शित करते हुये उसको प्रयोग करके दिखाते हुए उसमें उचित प्रयोग व रख-रखाव संबंधी बिन्दुओं पर परस्पर चर्चा करेगा। ● शिक्षक क्रासकट-सा तथा टेनन-सा से आकार बनाने, चिजेल और मलेट की सहायता से चक्ररेखा में काटने तथा रेती आदि से सफाई करके दिखाएगा व छात्रों से पुनः क्रियात्मक कार्य करायेगा।	● प्रायोगिक कार्य अनुप्रयोगात्मक प्रश्न परीक्षण। ● क्रियात्मक कार्यों द्वारा परीक्षण।
● वस्तुओं को बनाने से पूर्वक उनका उचित रेखाचित्र व माडल बनाने से सुविधा होती है- ❖साधारण नमूनों तथा उनके जोड़ों के नापने की रीतियां (विधियां) तथा आमने-सामने के किनारे के निशानों के महत्व। ❖ मीटर और सेंटीमीटर के साधारण पैमानों का बनाना। आर्थोग्राफिक, प्रोजेक्शनल ड्राइंग का कुछ उच्च कोर्स और प्रयोगात्मक कार्यों में उनका महत्व। कक्षा में बनाये गये नमूनों का साधारण आइसोमेटिक दृष्टिकोण।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● साधारण नमूनों, जोड़ों को नापने की विधियां, निशानों के महत्व को प्रदर्शित करते हुए परिचर्चा कराएगा तथा छात्रों द्वारा क्रियात्मक कार्य कराएगा।	● प्रयोगात्मक एवं लिखित परीक्षण द्वारा। ● क्रियात्मक किए गए कार्यों के मूल्यांकन द्वारा।
● वृक्षों की लकड़ियाँ विभिन्न कार्यों में प्रयोग की जाती हैं- ❖अधिक महत्वपूर्ण देशी लकड़ियों का प्रारम्भिक ज्ञान तथा उनकी पहचान, उनका उपयोग जैसे- आम, शीशम, देवदार, चीड़ आदि। ❖वृद्धि, बनावट तथा फिटिंग का प्रारम्भिक ज्ञान, प्लाईवुड का ज्ञान।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● विभिन्न प्रकार की आम, शीशम, देवदार, चीड़ आदि की लकड़ियों का प्रदर्शन उपयोगिता बताते हुए, पहचान कराते हुए परिचर्चा करायेगा।	● लिखित क्रियात्मक परीक्षण द्वारा।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
क्रियात्मक कार्य- ● दैनिक प्रयुक्त की जाने वाली वस्तुएं स्वत: तैयार की जा सकती हैं। ❖नमूने- आयताकार, घरौची, कोट, हैंगर, लकड़ी की खूंटी, दीवाल दीबट, दियासलाई और मिट्टी के दीपक आदि रखने के लिए। दीवाल ब्रेकेट, छोटी ट्रे, बुनने वाले हैम्प के लिए घूमने वाली चरखी, पीढ़ा, बेकार लकड़ी के टुकड़ों से खिलौने बनाना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा - ● शिक्षक काष्ठ-शिल्प केन्द्र पर ले जाकर छात्रों को निरीक्षण कराएगा तथा परस्पर परिचर्चा करायेगा।	● क्रियात्मक कार्यों द्वारा ।
संबंधित कला- ● कक्षा छ: से कुछ उच्चकोटि के अभ्यास ❖ज्यामिति आकारों तथा पैटर्न की ड्राइंग। रेखा कोण तथा त्रिभुजों पर आधारित साध्य (प्रावलम्पस) ❖आलंकारिक आलेख, अजन्ता की आकृति तथा मुगलकालीन कला ❖ वस्तुओं के क्रमिक रेखांकन प्रधानत: प्रयोगात्मक कार्य में प्रयोग किए गए औजारों की ड्राइंग और पेंसिल द्वारा नमूनों की आइसोमेटिक ड्राइंग। ❖**प्रकृति चित्रण-** फल, पत्तियाँ, पौधे, चिड़ियां, कीड़े, सांप आदि।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक विभिन्न प्रकार के लकड़ी के उपकरणों को बनाने की सभी क्रियाओं को कक्षा में तैयार कर प्रदर्शित करेगा तथा छात्रों द्वारा क्रियात्मक कार्य ब अभ्यास करायेगा।	● क्रियात्मक कार्यों का मूल्यांकन करके। ● लिखित तथा क्रियात्मक प्रशिक्षण द्वारा।
● **रंग और आलेखन-** तटस्थ रंगों (सफेद, काला, भूरा) तथा गौड़ रंगों का प्रयोग। ❖पहले से बताए रंगों में पत्ती हरा और आसमानी को सम्मिलित करना। ❖धरातलीय तथा पैटर्नों के किनारे में पुनरावृत्ति अलंकारिक पूर्ण रूप से बने हुए माडल तथा शिल्प में प्रयोग किए जाने वाले औजारों से आलेखन बनाना। ❖विभिन्न प्रकार के स्टेंसिल के काम। ❖विज्ञापन चित्र और तूलिका के स्वतंत्र संचालन से अक्षर लिखना, पोस्टर रंगों का प्रयोग।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● रंगों का प्रयोग करते हुए समुचित स्थान पर प्रदर्शन स्पष्ट कराते हुए छात्रों से क्रियात्मक कराएगा।	● लिखित तथा प्रयोगात्मक कार्यों द्वारा। ● छात्रों द्वारा व्यक्तिगत रूप से बनवाकर।
खण्ड (ब)- ● प्रयोग में आने वाले कठिन औजारों का मुक्तहस्त रेखांकन, स्मूथिंग प्लेन टेनन-सा, जैक प्लेन, मारटिश, चिजेल। ● सरल माडलों के नमूने डिजाइन। ● माडलों का आइसोमेट्रिक व्यू।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक स्वयं मुक्त हस्त चित्रण के नियम की जानकारी कराते हुए किसी वस्तु को बनाने का प्रदर्शन करेगा।	● क्रियात्मक कार्यों को कराकर मूल्यांकन।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
ट्रे यंत्रों तथा कुछ विशिष्ट यंत्रों के प्रयोग से बारीक कार्य हो सकता है- **सैद्धान्तिक कार्य-** ● निम्नलिखित यंत्रों का माडल बनाने में प्रयोग- गिमलेट, रिबेट, प्लेन, प्लायर, राउटर प्लेन, अंशवेधक, धनुषाकार आरी, बेबेल यंत्रों के विभिन्न अंगों का ज्ञान तथा उनका उपयोग तथा रेखाचित्र बनाना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक स्वयं चित्र बनाकर प्रदर्शित करेगा। ● यंत्रों का प्रदर्शन व प्रयोग करके दिखाएगा।	● मौखिक तथा लिखित परीक्षण। ● यंत्रों के उचित प्रयोग का प्रेक्षण।
● माडल का निर्माण- अंत व मध्य के आधे पर का जोड़ ब्रिडिल, रिबिटेड बटस्टड, मारटिस टेनन कोट की खूंटी, गुड्डियों का घर, ब्रैकेट, तौलिया टांगने का रैक आदि।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक द्वारा वस्तुओं का निर्माण करके की जाने वाली सावधानियों को बताते हुए क्रियात्मक कार्य करते हुए प्रदर्शन कर छात्रों द्वारा क्रियात्मक कार्य कराएगा।	● मौखिक तथा लिखित परीक्षण। ● निर्मित वस्तुओं की प्रदर्शनी।
● **अन्य कार्य-** ❖ औजारों पर धार देना। ❖ धातु के बने कब्जा, पेंच को फिट करना। ❖ पच्चीकारी करना। ❖ रंग द्वारा स्टेंसिल के काम द्वारा सजाना। ❖ आथोग्राफिक प्रोजेक्शन और आइसामैट्रिक व्यू बनाना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● औजारों पर धार देना, कब्जा व पेंच फिट करना, पच्चीकारी तथा सजावट का प्रदर्शन कराना तथा छात्राओं से अनुशीलन।	● मौखिक तथा लिखित परीक्षण। ● कृत कार्यों का प्रेक्षण।
● **लकड़ी की पहचान-** ❖ लकड़ी की बनावट, विकास, सुखाने की जानकारी। ❖ माडल और खिलौने के लिये उचित लकड़ी चुनना। ❖ प्लाईवुड की पहचान और महत्व	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● विभिन्न प्रकार की लकड़ियों को संग्रह कर उनकी पहचान कराना। लकड़ी सुखाना।	● मौखिक तथा लिखित परीक्षण। ● कृत कार्यों का प्रेक्षण।
● **क्रियात्मक कार्य-** ❖ माडल- स्टूल, नहाने की चौकी पत्रकक्ष (रैक), पुस्तक स्टैण्ड, दीप स्तम्भ, घड़ी के चित्र के फ्रेम, खिलौने बनाना, फ्रेट मशीन से चित्रों को काटना। बचे छोटे टुकड़ों से खिलौने बनाना। ● नोट- छात्रों को समानुपातिक तथा अन्य प्रकार के खिलौने तैयार करने के लिए उत्साहित करना। औजार बनने की रीति भी उन्हें बताई जानी चाहिए। कुछ माडल इतिहास, भूगोल तथा विज्ञान से संबंधित बनवाए जाए।		
संबंधित कला- खण्ड-अ ● पुनरुत्पाद तथा पुनर्निर्माण- कक्षा 7 की भांति तथा कुछ उच्च स्तर का कार्य।		
● परम्पराओं से नकल करना- मध्यकालीन तथा प्राचीनकाल की कला से अलंकारिक तथा सरल आकृतियों का चित्रण।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक द्वारा विभिन्न मध्यकालीन तथा प्राचीन काल की अलंकारिक तथा सरल आकृतियों का वीक्षण कराना। प्रदर्शनी का निरीक्षण कराना।	● शिक्षक स्थानीय संबंधित केन्द्रों का निरीक्षण कराएँ।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
• रेखाओं, कोण, त्रिभुज और समबहुभुज पर आधरित साध्य बनाना; सभी आकारों के अन्दर और बाह्य वृत्तों का निर्माण।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- • शिक्षक द्वारा रेखाओं के माध्यम से त्रिभुज, समबहुभुज आकारों के अंदर बाहर वृत का निर्माण का प्रदर्शन कर छात्रों से क्रियात्मक कराया जाएगा।	• स्थानीय प्रदर्शनी का भ्रमण कराकर चित्रकारी का तरु-तरुण ज्ञान करे।
• विज्ञापन कार्य और अक्षर लिखना- कक्ष की सजावट के लिये विज्ञापन चित्र तैयार करना।		
• हस्तकला कार्य की माडल ड्राइंग, छाया पेंसिल द्वारा निकट दूर का संबंध बताना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- • शिक्षक द्वारा पेंसिल से चित्रों की पूर्ति तथा निकट दूरी के संबंध को प्रदर्शित कर परिचर्चा कराया जाएगा।	• छात्राओं का अधिक से अधिक आदर्श प्रस्तुत कराए।
• प्रकृति के फलों तथा पत्तियों; पौधे, पक्षियों, कीटाणुओं, घोंघे आदि का अध्ययन।		
खण्ड-ब • रंग और डिजाइन, तटस्थ रंग तथा वर्ण सफेद, काले और भूरे रंग के दो विभाग सेकेण्डरी रंग, आस्टवाल्ड चक्र के ठंडे व गर्म रंग, टिन्टस तथा शेड्स, उन्नति प्रकार के माध्यमिक तथा अन्य रंग में समानता।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- • शिक्षक टिन्ट शेड्स देकर छात्राओं द्वारा उनका अनुप्रयोग कर अन्तर देकर क्रियात्मक कार्य कराएगा।	
• किनारा, धरातलीय पैटर्न की पुनरावृत्ति। • Applique work क्राफ्ट से संबंधित व्यवहारिक कार्य। • स्केल प्लेन (साधारण पैमाना)	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- • छात्रों को बनाने हेतु अनुशीलन प्रेरित करना।	
• क्षेत्र बी- गिमलेट, पिन्सर्स, रिलेट प्लेन आदि का मुक्त हस्त चित्रण। • माडलों का आर्थोग्राफिक प्रोजेक्शनल ड्राइंग और आइसोमैट्रिक चित्र। • उच्चत स्तर की माडलों की डिजाइन बनाना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- • अनुशीलन।	

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियाँ, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
● कपास से बिनौलों को अलग करके रूई प्राप्त करना। ❖ हाथ ओटनी- लकड़ी का बेलन, सलाख या कना, हत्था, खम्भे।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक कपास से बिनौले को अलग करने की क्रिया का प्रदर्शन करेगा तथा छात्र अनुशीलन करेंगे।	● लिखित/मौखिक प्रश्नों को पूछकर मूल्यांकन किया जाएगा।
● सूत कातना- सुदर्शन, किसान और यर्वदा चर्खे के भागों के विषय में ज्ञान देना। उनके भागों को फिट करना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● विभिन्न प्रकार के चर्खों के विषय में बच्चों को सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक जानकारी कराएगा।	● लिखित/मौखिक प्रश्नों को पूछकर मूल्यांकन किया जाएगा।
● रूई को साफ करके सूत प्राप्त करना- धुनकी की बनावट, पेखा, डंडी, मत्था तथा तात के विषय में जानकारी देना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● तकली एवं चरखों से सूत निकालने का व्यावहारिक कार्य बच्चों से कराएगा। छात्र अनुशीलन करके प्रायोगिक क्रिया को पुष्ट करेंगे।	● लिखित/मौखिक प्रश्नों को पूछकर मूल्यांकन किया जाएगा।
● कताई द्वारा सूत- तकली एवं चर्खे द्वारा सूत कातना। ❖ क्रियाएं- खींचना, बट देना, लपेटना, सिद्धान्तों के ज्ञान, अटेरन पारिता की आवश्यकता।		● क्रियात्मक परीक्षण के आधार पर चरखे को खोलने, जोड़ने जैसी क्रियाओं द्वारा व्यक्तिगत/सामूहिक मूल्यांकन होगा।
● सूत की मोटाई एवं बारीकी- ❖ सूत का अंक निकालना- सूत की लंबाई, मोटाई एवं बारीकी का सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त करना। सूत के भार एवं लम्बाई का ज्ञान।		● क्रियात्मक कार्य पर आधारित मूल्यांकन।
● सूत की मजबूती- अच्छे सूत के मुख्य गुण सूत की बारीकी एवं मोटाई, व्यास, बट और शल की समानता, अंक और शक्ति का संबंध।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● अच्छे सूत की विशेषता बताते हुए सूत का अंक निकालने का क्रियात्मक ज्ञान कराया जाएगा।	● क्रियात्मक कार्य पर आधारित मूल्यांकन।
● मोटे बारीक कपड़े का ज्ञान- बटने का सिद्धान्त, बटने के लिए आवश्यक सामग्री, उनके नामों की जानकारी।		● क्रियात्मक कार्य पर आधारित मूल्यांकन।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
● बुनाई की प्रारम्भिक क्रिया- ❖ आसन या निवाड़ की तानी, दोबाबिन द्वारा खूंटे द्वारा करना, ताने के भरी हुई दोबाबिनों, दो खूंटे सरकण्डे आदि। ❖ बट का प्रयोग, दम बनाने के लिए किया जाता है। ❖ देशी व विलायती बट के विषय में जानकारी। ❖ देशी व विलायती बट-हिल्ड हुक। यंत्र- आसन बनाने के लिए चाकू और पंजे की आवश्यकता पर बल।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● आसन, निवाड़ एवं झाड़न आदि की बुनाई के लिए क्रियात्मक/व्यावहारिक ज्ञान कराकर उक्त सामग्रियों को तैयार करना होगा।	● क्रियात्मक कार्य पर आधारित मूल्यांकन।
● बुनाई- ❖ दम बनाना, खेवा डालना, खेवा ठोकना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● दम बनाना तथा खेवा डालने का क्रियात्मक ज्ञान दिया जाएगा।	● क्रियात्मक/प्रयोगात्मक परीक्षण के आधार पर मूल्यांकन।
● बुनाई हेतु सूत का चुनाव- ❖ दरी की चौड़ाई और लंबाई एवं मोटाई एवं बारीकी के आधार पर मोटे तथा पतले सूत के चयन का ज्ञान। ❖ निवाल और गलीचों में कितना और कौन सा सूत (अंक) प्रयोग किया जाएगा।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● छात्र ताने बाने में लगने वाले सूत की मात्रा किस अंक के सूत का प्रयोग किया जाएगा का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करेगा। शिक्षक छात्रों की अपेक्षित सहायता हेतु तत्पर रहेंगे।	● क्रियात्मक/प्रयोगात्मक परीक्षण के आधार पर मूल्यांकन।
● मूल्य ज्ञात करना- ❖ ताने व बाने में कितना सूत लगा श्रम की लागत, इन सभी को जोड़कर कपड़े का मूल्य निकाला जाता है। इसका ज्ञान कराया जाए। ● क्रियात्मक कार्य- ❖ काष्ठकला की भांति माडल/चित्र/डिजाइन बनाना। ❖ यंत्रों का चित्रण- बाविन टट्टी, कंघी, फ्रेम, तकुये आदि का स्वतंत्र चित्रण। ❖ कपड़े की बुनाई- ग्राफ कागज पर सादी बुनावट, आसनी की बुनावट की डिजाइन।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● छात्र ताने बाने में लगने वाले सूत की मात्रा, किस अंक के सूत का प्रयोग किया जाएगा का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करेगा। शिक्षक छात्रों की अपेक्षित सहायता हेतु तत्पर रहेंगे।	● क्रियात्मक/प्रयोगात्मक परीक्षण के आधार पर मूल्यांकन।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
कपड़ा बुनने की प्रारम्भिक क्रिया- ● ताने को बेलन पर चढ़ाना। ● ताने का बेलन, फ्रेम, घसीटा- रीड हुक, हील्ड हुक का ज्ञान।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक द्वारा ताने को बेलन पर चढ़ाना तथा फ्रेम, घसीट रीड हुक, हील्ड हुक का प्रदर्शन व चर्चा करेंगे।	● क्रियात्मक कार्यों के वीक्षण द्वारा।
● बुनाई-प्रारम्भिक क्रिया- ताने को करघे पर चढ़ाना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● छात्र अनुशीलन करेंगे।	● क्रियात्मक कार्यों के वीक्षण द्वारा।
● बुनाई की प्रारम्भिक क्रिया- बुनाई की दो विशेष क्रियाएं ❖ दम बनाना, बाना डालना, ठोंकना ❖ बाना खोलना, लपेटना	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक द्वारा बुनाई की दो क्रियाओं का प्रदर्शन किया जाएगा। छात्र अनुशीलन करेंगे।	● छात्रों की बुनाई के नमूनों का निरीक्षण।
● कपड़ा बुनने का यंत्र- करघे के भागों के नाम, हत्था, कपड़े तथा पानी का बेलन, मंती, पौसार, पौवड़ी, साथी, रोलर, पुल्ली, जैक, खम्भे तथा खूंटे के कामों की जानकारी।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● करघे के विभिन्न भागों के नाम व काम बताते हुए प्रयोग करना व बताना। छात्रों द्वारा अनुशीलन करना।	● विभिन्न भागों का प्रयोग कराकर।
● बुनाई का यंत्र- बय और कंघी का पारस्परिक संबंध, बय तथा कंघी का अंक ज्ञात करना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक द्वारा बय तथा कंघी का अंक ज्ञात करने का नियम स्पष्ट कराया जाएगा। छात्र अनुशीलन करेंगे।	● लिखित एवं मौखिक परीक्षण।
● सादा कपड़ा बुनना- साधारण कपड़े को दो बयों से बुनने का सिद्धान्त के विषय में जानकारी।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक द्वारा दो बयों से बुनने का प्रदर्शन कर सिद्धान्त बताते हुए छात्र द्वारा अनुशीलन।	● लिखित एवं मौखिक परीक्षण।
● कपड़ा बुनने के लिए सूत की मात्रा ज्ञात करना- कपड़ा बुनने का अंक निकालने का नियम।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● बटे हुए ताने के अंक निकालने का नियम उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जाएगा। छात्र अनुशीलन करेंगे।	● लिखित एवं मौखिक परीक्षण।
● कपड़े की बुनावट- ग्राफ कागज की उपयोगिता, ग्राफ कागज पर ताने और बाने की बुनाई की विधि को दिखाने की विधि। ❖साधारण कपड़े पर आलेखन	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● ग्राफ कागज के प्रयोग की विधि तथा उस पर ताने व बाने की बुनाई का प्रदर्शन करेगा। छात्र अनुशीलन करेगा।	● प्रयोगात्मक, रेखाचित्रों का चित्रण कराकर बुनाई का वीक्षण करेगा।
● कपड़ा बुनना- करघे पर ताना चढ़ाना, बय को बेलन तथा पावड़ियों से बांधना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक करघे पर ताना चढ़ाकर बेलन तथा पावड़ियों से बांधेगा।	● प्रयोगात्मक, क्रियात्मक प्रदर्शन कराकर।
● दैनिक जीवन में प्रयोग आने वाले वस्त्र- झाड़न, तौलिया, कमीज तथा पायजामे के लिए कपड़ा बुनना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● स्थानीय कताई बुनाई केन्द्रों का निरीक्षण कराकर आवश्यक यंत्रों का निरीक्षण व परिचर्चा कराया जाए।	● सभी बनाए गए कार्यों का निरीक्षण करना।
● कताई बुनाई संबंधित कला- ❖ भाग-अ : काष्ठ कलाकी भाँति दैनिक जीवन मेंउपयोग आने वाली वस्तुएं- माडल बनाना, चित्र बनाना, डिजाइन बनाना। ❖ भाग-आ : यंत्रों का चित्रण- बेलन, बय, कंघी, आदि का मुक्त हस्त चित्रण। ❖ कपड़े की बुनाई : कपड़े की बुनाई के लिए ग्राफ पेपर पर डिजाइन बनाने का ज्ञान।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● विभिन्न प्रकार के कपड़े बुनने का प्रदर्शन। ● दैनिक जीवन के उपयोग में आने वाली वस्तुओं का माडल बनाना, चित्र तथा डिजाइन बनाना व छात्रों को परिचर्चा द्वारा स्पष्ट कराना। छात्रों द्वारा अनुशीलन। ● ग्राफ पेपर पर डिजाइन का प्रदर्शन तथा छात्रों द्वारा अनुशीलन।	● छात्रों द्वारा बनाये गए माडल, चित्र एवं डिजाइन का वीक्षण करके। ● व्यक्तिगत कार्यों का निरीक्षण करके।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
● कपास की कृषि- अच्छे बीज का चयन, कपास की कृषि तथा कपास चुनने का समय और ढंग का ज्ञान।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक बच्चों को कपास की उन्नत प्रजातियों का चयन करके बीज शोधन की क्रिया को बतायेगा तथा तैयार किए गए क्षेत्र में बीजों की बुवाई कर अच्छी कृषि करने का ज्ञान कराएगा।	● बोध एवं अनुप्रयोग के आधार पर मूल्यांकन का कार्य किया जाएगा।
● तन्तु या रेशा- कपास के अतिरिक्त अन्य तन्तु- प्राकृतिक रेशा, प्राणिज रेशा, पत्तियों के रेशे, खनिज तन्तु, सुधारे हुए रेशे, कृत्रिम रेशं के विषय में जानकारी।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● विभिन्न रेशों का व्यावहारिक ज्ञान बच्चों को दिया जाएगा।	● बोध एवं अनुप्रयोग के आधार पर मूल्यांकन का कार्य किया जाएगा।
● भारत के वस्त्र- भारत के वस्त्र-उद्योग का विकास : हिन्दूकाल, मुगलकाल और बीसवीं सदी के वस्त्र उद्योग के विषय में ज्ञान।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● भारत में वस्त्रोद्योग के इतिहास क्षेत्र का विभिन्न कालों के अनुसार यथा- हिन्दू, मुगल एवं बीसवीं सदी से संबंधित का ज्ञान कराएगा।	● ज्ञान एवं बोधात्मक परीक्षण द्वारा मूल्यांकन किया जाएगा।
● करघा उद्योग- करघा उद्योग की अवनति के कारणों का ज्ञान, वस्त्र उत्पादन कला में आधुनिक उन्नति। राजकीय हैण्डीक्राफ्ट उत्पादन केन्द्र, मशीने, खादी के उत्पादक केन्द्र।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● करघा उद्योग पर शिक्षक करघे का प्रवर्धन करते हुए उसके विभिन्न अंगों का ज्ञान कराएगा।	● ज्ञान एवं बोधात्मक परीक्षण द्वारा मूल्यांकन किया जाएगा।
● कपड़ा- धारीदार ताना बनाना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● धारीदार ताने बनाने का ज्ञान देना। ताने को माड़ी देकर मजबूत करने की क्रियाकर प्रदर्शन एवं छात्र अनुशीलन करेगा।	● लिखित वस्तुनिष्ठ परीक्षण द्वारा मूल्यांकन किया जाएगा।
● सूत को मजबूत बनाना- ताने को माड़ देने की विधि का ज्ञान।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● ताने को माड़ी देकर मजबूत करने की क्रियाकर प्रदर्शन एवं छात्र अनुशीलन करेगा।	● लिखित वस्तुनिष्ठ परीक्षण द्वारा मूल्यांकन किया जाएगा।
● सादी बुनावट के कपड़े तैयार करना- सादी-बुनाई इस विधि से विभिन्न प्रकार के सुन्दर कपड़े बनाने की विधि का ज्ञान।		● लिखित वस्तुनिष्ठ परीक्षण द्वारा मूल्यांकन किया जाएगा।
● ट्वील का कपड़ा बुनना- 2/2 की साधारण ट्वील बनाना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● 2/2 का साधारण ट्वील बनाने की सैद्धान्तिक विधि का ज्ञान कराया जाएगा।	● क्रियात्मक/सैद्धान्तिक परीक्षण द्वारा मूल्यांकन होगा।
● कपड़ा बुनने के लिए सूत का भार मालूम करना- ❖ ताने और बाने में लगने वाले सूत का वजन मालूम करने का ज्ञान करना। ❖ कपड़े के मूल्य निर्धारण का सिद्धान्त।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक द्वारा सूत का भार निकालकर प्रदर्शन कर परिचर्चा। छात्रों द्वारा अनुशीलन। ● सूत के वजन मालूम करने के नियम को स्पष्ट कराना। छात्रों द्वारा अनुशीलन।	● लिखित, मौखिक, प्रायोगिक परीक्षण।
● कपड़ा बुनना- ❖ विशेष अंक के सूत से कपड़ा बनाने का ज्ञान। ❖ बय तथा कंघी के अंक निकालने की विधि का ज्ञान।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● विशेष अंक के सूत से कपड़ा बनाने का नियम उदाहरण द्वारा स्पष्ट कराएगा। छात्र अनुशीलन करेंगे। ● बय तथा कंघी के अंक निकालने की विधि को उदाहरण द्वारा स्पष्ट करना। छात्रों द्वारा अनुशीलन।	● लिखित, मौखिक, प्रायोगिक क्रियात्मक परीक्षण।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
दैनिक लेखन सामग्री की आवश्यकता सैद्धान्तिक - ● निम्नलिखित यंत्र और उनके प्रयोग : फोल्डर, लोहे के स्केल, सुरक्षित किनारे के स्केल, चाकू तथा कैंची आदि।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक पुस्तक कला के अंतर्गत शिल्प से संबंधित यंत्र एवं उनके प्रयोग को बताएगा तथा छात्र उनका अनुशीलन करेंगे।	● बोध एवं प्रयोग पर आधारित लिखित/मौखिक परीक्षण
● चिपकाने की वस्तुएं- लेई तथा गोंद की तैयारी।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● लेई तथा गोंद का प्रयोग करते हुए कार्यकलापों का प्रदर्शन करेगा। छात्र अनुशीलन करेंगे।	● बोध एवं प्रयोग पर आधारित लिखित/मौखिक परीक्षण
● कागज तथा दफ्ती की तौल नाप तथा प्रकार।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● कागज एवं दफ्ती नाप तौल संबंधी कार्य-कलापों का प्रदर्शन करेगा तथा छात्र अनुशीलन करेंगे।	● बोध एवं प्रयोग पर आधारित लिखित/मौखिक परीक्षण
● क्रियात्मक- ❖ झण्डियां, जंजीरें, वर्गाकार लिफाफे, आयताकार लिफाफे, कागज के थैले, बीज रखने के थैले, फिरकी, मुड़ने वाले कवर वाली साधारण कापियां।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● कागज एवं दफ्ती नाप तौल संबंधी कार्य-कलापों का प्रदर्शन करेगा तथा छात्र अनुशीलन करेंगे।	● क्रियात्मक सम्पादित कार्य का व्यक्तिगत एवं सामूहिक मूल्यांकन होगा।
● संबंधित कला- ❖ भाग-अ : काष्ठ कला के सामान ❖ भाग-ब: फोल्डर तथा चाके आदि मुक्त हस्त चित्र ❖ बनी वस्तुओं को सजाना, कटे कागज, ठप्पे, स्प्रेकार्य।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● संबंधित क्रियात्मक कार्य के तहत अण्डी, लिफाफे एवं जंजीरों का विकास करेगा। ● सजावट हेतु कटे कागज के ठप्पे एवं स्प्रे कार्य किया जाएगा।	● क्रियात्मक कार्य के आधार पर व्यावहारिक परीक्षण।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
● कागज तथा दफ्ती से बनाई जाने वाली वस्तुएं सैद्धान्तिक - ❖ निम्नलिखित यंत्रों का प्रयोग तथा संरक्षण-विभाजक, गुनियां, छेदक, हथौड़े, बैंकिंग बोर्ड, खड़े शिकंजे। ❖ वर्गीकरण- क्रियात्मक कार्य के अन्तर्गत वस्तुओं की नाप, ऊंचाई तथा रंग, कागज, दफ्ती तथा जिल्द साजी का कपड़ा।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक पुस्तक कला में प्रयुक्त होने वाले यंत्र विभाजक, गुनिया, छेदक, हथौड़े, शिंकजे तथा बैंकिंग बोर्ड के विषय में क्रियात्मक/सैद्धान्तिक जानकारी कराएगा।	● लिखित/मौखिक प्रश्न पूछकर। ● कृत कार्य का प्रेक्षण। ● प्रदर्शनी का आयोजन।
● कागज तथा दफ्ती हमारे देश में बनाई जाती है- ❖ भारत में उपलब्ध कागज तथा दफ्ती के प्रकार, इनको बनाने के मुख्य केन्द्र। ❖ दफ्ती की वस्तुओं को बनाने की मौलिक विधियां। ❖ कागज को मोड़कर पृष्ठ बनाने की विधि, आधे, चौथाई तथा आठवें भागों में बांटना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● स्थानीय कागज उद्योग केन्द्र का भ्रमण कराकर दफ्ती एवं कागज तैयार करने की मौखिक विधि यों की जानकारी कराएगा।	● बोध, अनुप्रयोग पर आधारित प्रश्न आदि।
क्रियात्मक- ● कागज के फूल, पतंग, बधाई पत्र, निमंत्रण पत्र, लिफाफे, अखबार की थैली, जुड़ी तथा खुली फाइलें, समाचार पत्रों के कवर, लिखने के पैड, स्याही सोख्ता, साधारण दफ्ती के बक्स, तानी या फीते की सिलाई, पुस्तकों, रजिस्टरों तथा पुस्तिकाओं की केस जिल्द- बन्दी।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक क्रियात्मक कार्य करते हुए छात्रों को अनुशीलन हेतु प्रेरित करेंगे।	● क्रियात्मक परीक्षण द्वारा व्यक्तिगत एवं सामूहिक मूल्यांकन किया जा सकता है।
संबंधित कला- ● भाग-अ : काष्ठ कला के सामान। ● भाग-ब : ❖ विभाजक, गुनिया, गोल करने के हथौड़े, बैंकिंग बोर्ड आदि के चित्र। ❖ विभिन्न प्रक्रियाओं के चित्र। ❖ माडलों का सजाना। ❖ नियंत्रित और अनियंत्रित अबरी, स्टेंसिल, लेई और कंघी की अबरी।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक क्रियात्मक कार्य का प्रदर्शन छात्रों के बीच करते हुए उनसे अनुशीलन की अपेक्षा करेगा।	

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
● दैनिक प्रयोग में आने वाली वस्तुएं कागज व दफ्ती से बनाई जाती हैं: **सैद्धान्तिक -** ❖ संरक्षण तथा प्रयोग, खड़े शिकंजे पड़े शिकंजे, काटने का रंदा, सिलाई का चौखटा, वर्किंग बोर्ड चाकू तथा कैंची पर धार देना। ❖ कागज बनाने का इतिहास/भारत में कागज बनाने का उद्योग- कारखाने तथा घरेलू उद्योग। ❖ विभिन्न प्रकार की जिल्दबन्दी, केस जिल्दबन्दी, पुस्तकालय जिल्दबन्दी।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक किसी स्थानीय केन्द्र का वीक्षण कराकर छात्रों को जिल्दबन्दी दफ्ती से विभिन्न वस्तुएं तैयार करने के कौशलों को विकसित करेगा। ● कागज बनाने के इतिहास एवं भारत में कागज उद्योग, कारखाने पर परिचर्चा होगी।	● बोधा अनुप्रयोग पर आधारित वस्तु निष्ठ एवं वैषयिक परीक्षण द्वारा मूल्यांकन किया जाएगा।
क्रियात्मक : ● कागज के फूलों के गुच्छे, लिफाफे, थैले, फाइलें, एलबम, जिल्दबन्दी, चित्रों तथा मानचित्रों का सुधार तथा चिपकाना, पेंसिल रखने के स्थानसहित पुस्तिकाएं, पुरानी पुस्तकों का सुधार, पुस्तकालय जिल्दबन्दी, दफ्ती के बाक्स, अबरी द्वारा भित्ती-पत्र।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक क्रियात्मक कार्य का प्रदर्शन करेगा तथा छात्र उसका अनुशीलन करेंगे।	● क्रियाशीलता के आधार पर व्यक्तिगत एवं सामूहिक परीक्षण
संबंधित कला : ● भाग-अ : काष्ठ कला के सामान। ● भाग-ब ❖ मुक्त हस्त चित्रण यंत्रों का। ❖ विविध क्रियाओं संबंधी आकृतियां ❖ बनी हुई वस्तुओं को सजाना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक क्रियात्मक कार्य का प्रदर्शन करेगा तथा छात्र उसका अनुशीलन करेंगे।	● क्रियाशीलता के आधार पर व्यक्तिगत एवं सामूहिक परीक्षण

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
● दैनिक जीवन में धातुओं की बनी अनेकों उपयोगी वस्तुएं होती हैं, इनमें से कुछ को हम स्वयं भी बना सकते हैं। **सैद्धान्तिक :-** ❖ मनुष्य के लिए धातु की उपयोगिता। ❖ साधारण धातुओं की पहचान जैसे- लोहा, तांबा, सीसा और अल्यूमिनियम। ❖ काम आने वाले औजारों की देखभाल और उनका उचित प्रयोग।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● स्थानीय विक्रय केन्द्रों पर ले जाकर प्रेक्षण कराना तथा परिचर्चा करना तथा प्रयुक्त होने वाले औजारों की सूची बनवाना।	● बोध, अनुप्रयोग पर आधारित प्रश्न/परीक्षण।
प्रयोगात्मक : ● यंत्रों- स्केल, स्क्रूड्राइवर, ट्राई स्क्वायर, परकार, ठठरे की रेती और टांका लगाने के यंत्र का प्रयोग। ● माडल बनाना- अधिकतर टीन का जैसे : तश्तरी, लैम्प, कब्जे, छोटे बाक्स, खिलौने आदि। ● टांका लगाना, धुआं, लेई तथा कंघी के द्वारा सजाना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● क्रियात्मक कार्यों का सम्पादन कराते हुए बच्चों को करके सीखने तथा उन्हें सजावट द्वारा आकर्षक बनाने हेतु प्रेरित कर अवसर देना।	● क्रियात्मक परीक्षण।
संबंधित कला :- ● खण्ड-अ : काष्ठ कला के सामान। ● खण्ड-ब : ❖ यंत्रों के चित्र बनाना। ❖ तैयार किये माडलों का चित्र। ❖ सजावट के लिये डिजाइन।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक क्रियात्मक कार्यों द्वारा टांका लगाना, धुआं, लेई तथा कंघी द्वारा क्रियाविधि द्वारा छात्रों को अवगत कराएगा।	● क्रियात्मक कार्यों का व्यक्तिगत एवं सामूहिक परीक्षण किया जाएगा।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
● धातुएं हमारे लिए बड़ी उपयोगी होती हैं; इनसे हम अनेक वस्तुएं बना सकते हैं। सैद्धान्तिक :- ❖ धातु व अधातु में अन्तर, लोहा, तांबा, चांदी, सोना, सीसा और जस्ता के गुणों की पहचान। ❖ मिश्र धातुएं - पीतल। ❖ औजारों की देखभाल और उनका उचित प्रयोग।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● स्थानीय धातु-उद्योग केन्द्र का प्रेक्षण कराकर पारस्परिक परिचर्चा करायी जाएगी। ● लोहा, तांबा, चांदी, सोना, सीसा, जस्ता आदि धातुओं के प्रयोग तथा इनकी उपादेयता व उपयोगिता को स्पष्ट करेंगे। इनका चित्रण भी कराया जाएगा।	● ज्ञान एवं बोध पर आधारित लिखित परीक्षण।
प्रयोगात्मक : ● पिछली कक्षा में प्रयुक्त औजारों के अतिरिक्त हालोइंग तथा रेजिंग हैमर्स का प्रयोग। ● माडल- माडल उपयोगी हो तथा बाजार में बिकने योग्य हो। टीन के माडलों में राख झाड़ने वाली तश्तरियां तथा रकाबियां पीतल की बनायी जाए। सजावट करना, एचिंग वर्क।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● क्रियात्मक कार्यों द्वारा प्रायोगिक कार्य सम्पादित किया जाएगा।	● अनुप्रयोगात्मक लिखित/ मौखिक प्रश्नों द्वारा मूल्यांकन।
संबंधित कला :- ● खण्ड-अ : काष्ठ कला के समान ● खण्ड-ब : ❖ हालोइंग तथा रेजिंग हैमर्स, निहाई, बिग आयरन, चिमटा, कांटी आदि के चित्र बनाना। ❖ विभिन्न क्रियाओं के चित्र। ❖ माडलों के आइसोमैट्रिक दृश्य तथा डाइग्राम तैयार करना। ❖ माडलों की डिजाइन बनाना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● क्रियात्मक कार्यों द्वारा प्रायोगिक कार्य सम्पादित किया जाएगा।	● क्रियात्मक कार्यों का परीक्षण तैयार माडलों के परीक्षण द्वारा मूल्यांकन।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
● धातुएं हमारे लिए बड़ी उपयोगी होती हैं; इनसे अनेकों वस्तुएं बनायी जाती हैं। **सैद्धान्तिक :-** ❖ लोहे तथा तांबे को उनके खनिज रूप से शोधन। इन खनिजों का भारत में वितरण। ❖ राज्य में धातु-उद्योग। ❖ काम में आने वाले यंत्रों का उचित प्रयोग तथा उनका रख-रखाव।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक कक्षा में धातु का प्रदर्शन करते हुए उनमें शोधन वितरण, धातु उद्योग पर परिचर्चा करते हुए कार्य में प्रयुक्त यंत्रों का प्रयोग व रख-रखाव पर परिचर्चा करेगा।	● लिखित/मौखिक वस्तुनिष्ठ परीक्षण
प्रयोगात्मक : ● लोहे तथा पीतल से वस्तुएं बनाना तथा फिटिंग। लोहे की चादर में विभिन्न प्रकार के जोड़, हालोइंग, सिंकिंग/पीतल का पक्का टांका लगाना तथा लोटे में साधारण फिटिंग। ● रेती, कैलीपर्स, सेंटर पंच का प्रयोग। ● माडल- नहाने का टब, सींचने का हजारा, पीतल के बर्तन, मेज के लैम्प आदि। ● फिटिंग के कार्य, बी ब्लाक तथा कैलीपर्स। ● सजावट- वुलीवर्क तथा मीने का काम।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● पीतल व लोहे के पक्के टांके लगाने का प्रदर्शन करेगा तथा छात्र अनुशीलन करेंगे। ● शिक्षक प्रायोगिक कार्य के अन्तर्गत नहाने का टब, सींचने का हजारा, बर्तन, मेज के लैम्प आदि को बनाकर प्रदर्शित करेगा।	● अनुप्रयोगात्मक प्रश्नों द्वारा परीक्षण ● प्रायोगिक कार्यों द्वारा परीक्षण
संबंधित कला : ● खण्ड-अ : काष्ठकला के समान। ● खण्ड-ब : ❖ रेती, वाइसेज, विक आइरल, सुम्मी, धौंकनी सहित भट्टी, हैण्डवाइस तथा प्लायर्स आदि के चित्र बनाना। ❖ विभिन्न क्रियाओं के चित्र। ❖ वर्किंग डायग्राम तथा माडलों के आर्थोग्राफिक प्रोजेक्शनल चित्र। ❖ माडलों की डिजाइन बनाना। ❖ मीनाकारी के लिए डिजाइन बनाना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक द्वारा चित्र का प्रदर्शन। छात्रों द्वारा अनुशीलन।	● व्यावहारिक, क्रियात्मक परीक्षण।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
● चमड़े से बनी दैनिक जीवन के लिए उपयोगी वस्तुएं : **सैद्धान्तिक :** ❖ नापने वाले यंत्रों का प्रयोग। ❖ कच्चा तथा पक्का चमड़ा, अच्छे चमड़े की किस्में एवं गुण, खाल से चमड़ा बनाने का तरीका। ❖ विभिन्न रंगों का प्रयोग, आलेखन के प्रकार, अच्छे आलेखन के प्रमुख सिद्धांत, नमूना बनाने में सावधानियां। ❖ प्राचीन काल में चमड़े का प्रयोग, कच्चे माल के साधन, तैयार वस्तुओं के बेचने के बाजार।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक चर्मकला में प्रयुक्त होने वाले यंत्रों की पहचान कराकर बच्चों से उनकी सूची बनवाएगा। उपकरणों के प्रयोग के विषय में पारस्परिक चर्चा अथवा वार्तालाप किया जाएगा।	● बोध, अनुप्रयोग पर आधारित परीक्षण। ● क्रियात्मक परीक्षण।
प्रयोगात्मक कार्य : ● कैंची, चाकू, पंचिग मशीनें, आइलेट तथा बटन लगाने वाली मशीन, सूजा और हथौड़ा आदि यंत्रों का प्रयोग और देखभाल। ● फीता काटना, फीते को पीटना, विभिन्न प्रकार की सिलाइयां। ● कागज के नमूने बनाने तथा साधारण नमूने जैसे कंघादानी, कैंची दानी, बटुए आदि। ● पेटो, कालर, बटन, नाट्स तथा फीते बनाना। खाल तथा चमड़े को रंगना। ● माडलिंग, ब्लाइंग, टूलिंग, किनारी डालना तथा अन्य तरीकों से सजाना। ● पालिश करना। ● सुए से सीना। ● साधारण मरम्मत। ● साधारण चप्पल बनाना। ● आइलेट तथा प्रेस बटन को ठीक करना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● क्रियात्मक कार्यों का सम्पादन कराते हुए बच्चों को करके सीखने का अवसर मिल सकेगा।	● क्रियात्मक परीक्षण द्वारा व्यक्तिगत एवं सामूहिक परीक्षण किया जाएगा।
संबंधित कला : ● भाग-अ : ❖ जैसा कि काष्ठ कला में दिया गया है। ● भाग-ब : ❖ पेयरिंग नाइफ, सूजा, नेलपुलर आदि का चित्र बनाना। ❖ विभिन्न माडलों के नमूने खींचना और काटना। ❖ नमूने को सजाने के लिए आलेखन बनाना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● अध्यापक क्रियात्मक कार्यों के अंतर्गत पेपरिंग नाइफ, सूजा एवं नेलपुलर की क्रियाविधि से छात्रों को अवगत कराएगा।	● क्रियात्मक परीक्षण द्वारा व्यक्तिगत एवं सामूहिक परीक्षण किया जाएगा।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
● चमड़े से बनी वस्तुएं हमारे दैनिक जीवन में बड़ी उपयोगी होती हैं। जिन्हें थोड़े प्रयास से बना लेते हैं। **सैद्धान्तिक :** ❖ चमड़े के प्रकार, मोरक्को, स्वीड, सेमोएस, ग्लेसबकरी की खाल, घड़ियाल की खाल, लिजर्डफर आदि की पहचान। ❖ गाय तथा सुअर का चमड़ा तथा उनके गुण। ❖ चमड़े के स्थान पर काम आने वाली वस्तुएें- रेक्सीन, प्लास्टिक, लेटरेट आदि। ❖ खाल से चमड़ा बनाना। ❖ चमड़े की वस्तुओं का विभाजन। ❖ चमड़े को सुरक्षित रखना। ❖ कार्य करने की त्रुटियां। ❖ बनी वस्तुओं का विज्ञापन, बिक्री एवं प्रदर्शनी। ❖ मूल्य निर्धारण तथा हिसाब रखना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● स्थानीय चर्म-उद्योग केन्द्र का प्रेक्षण कराकर पारस्परिक परिचर्चा करायी जाएगी। ● रेक्सीन, खाल, प्लास्टिक एवं लेटरेट का प्रयोग करते हुए शिक्षक इनकी उपादेयता/उपयोगिता कर स्पष्ट करेगा।	● ज्ञान एवं बोध पर आधारित परीक्षण। ● अनुप्रयोगात्मक लिखित/ मौखिक प्रश्नों द्वारा मूल्यांकन।
प्रयोगात्मक कार्य : ● यंत्रों का प्रयोग, विभिन्न प्रकार के सूजे, पेयरिंग नाइफ, पंच लगाने की मशीन, नेलपुलर। ● माडलों का बनाना जैसे- नोटबुक कवर, कलम, पेंसिल केस, इम्ब्रायडरी केस, होल्डाल बैग, बटुआ। ● बच्चों के जूते बनाना। ● चमड़ा रंगना। ● नागरा जूता बनाना तथा सजाना। ● माडलिंग, ब्लाइंग टूटिंग, अमली, नक्काशी, वार्टिन का नाम। ● सुनहरी सिलाई का कार्य। ● पेस्ट बनाना। ● तल्ले तथा एड़ी लगाना	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● क्रियात्मक कार्य द्वारा प्रायोगिक कार्य सम्पादित किया जाएगा।	● क्रियात्मक परीक्षण आदि।
संबंधित कला : ● भाग-अ : जैसाकि काठष्कला में हैं। ● भाग-ब: ❖ चाकू, पेंच, बटन लगाने वाली मशीन आदि का चित्र बनाना। ❖ नमूनों को सजाने के लिए विभिन्न प्रकार के आलेखन तैयार करना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● चर्म-उद्योग केन्द्र में प्रयुक्त यंत्रों एवं मशीनों के द्वारा विषय वस्तु का चित्रण किया जाएगा।	● अनुप्रयोगात्मक परीक्षण।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
● दैनिक जीवन में हम चमड़े से बनी अनेक वस्तुओं का प्रयोग करते हैं, उनकी देखभाल व मरम्मत हमें स्वयं करनी चाहिए- **सैद्धान्तिक :** ❖ जानवरों की आयु के अनुसार चमड़े की मजबूती में अन्तर तथा अच्छे चमड़े की पहचान। ❖ खाल के विभिन्न हिस्सों के गुण, चमड़े तथा टिकिंग पर उनका प्रभाव। ❖ चमड़ा तथा चिपकाने की वस्तुओं को तैयार करना। ❖ भरने और गद्दे बनाना। ❖ जूतों को चमकाना। ❖ हाथ तथा मशीन की वस्तुएं। ❖ वस्तुओं की प्रदर्शनी लगाना। ❖ मूल्य निकालना। ❖ चमड़े के सामान का आयात व निर्यात तथा सरकारी संस्था का प्रबन्ध करना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक कक्षा में चर्म कार्य का प्रदर्शन करते हुए खाल के विभिन्न हिस्सों के गुण, चमड़े पर टिकिंगकर उसके प्रभाव का अध्ययन करते हुए हाथ तथा मशीन द्वारा कार्य का प्रदर्शन करेगा। ● उत्पादित वस्तुओं को प्रदर्शनी हेतु तैयार करना, मूल्य निकालना, चमड़े के आयात/निर्यात संबंधी सरकारी संख्याओं का प्रबन्ध करेगा।	● लिखित/मौखिक वस्तुनिष्ठ परीक्षण ● वैषयिक परीक्षण द्वारा मूल्यांकन।
प्रयोगात्मक : ● कैंची, पेयरिंग नाइफ, किनारे चमकाने के यंत्र, ग्ल्यु लास्टस सीने की मशीने आदि यंत्रों की देखभाल तथा उनका प्रयोग। ● चमड़े के साथ कार्डबोर्ड का प्रयोग। संदूक तथा सूटकेश बनाना, चमड़े की जिल्दसाजी। ❖ लकड़ी तथा धातु की वस्तुओं को चमड़े से मढ़ना, आभूषण आदि के लिए विशेष प्रकार के डिब्बे बनाना। ❖ जूते के ऊपरी भाग के नमूने तैयार करना तथा उनको मशीन से पूरा करना। ❖ नाप लेना तथा पेशावरी सैडिल न्यूकट लो फ्लोर आदि बनाना। ❖ रासायनिक पदार्थों से रंगना। ❖ जूतों को चमकाने के पदार्थ। ❖ जूतों की मरम्मत करना। ❖ भरकर खिलौने बनाना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● क्रियात्मक कार्य के अन्तर्गत संदूक/सूटकेश तथा चमड़े की जिल्दसाजी का कार्य प्रदर्शित करेगा तथा छात्र अनुशीलन करेंगे। ● रासायनिक पदार्थों से रंगना, जूते को चमकाने के पदार्थ, जूते की मरम्मत का प्रदर्शन करेगा। छात्र अनुशीलन करेंगे।	● अनुप्रयोगात्मक परीक्षण द्वारा मूल्यांकन।
संबंधित कला : ● खण्ड-अ : काष्ठ कला के समान ● खण्ड-ब : ❖ कैंची मशीन के विभिन्न भागों के चित्र। ❖ तैयार माडलों के वर्किंग डाइग्राम ❖ नमूनों के लिए आलेखन तथा उनके चित्र	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● नमूनों के लिए आलेखन तथा उनके चित्र खींचकर प्रदर्शनात्मक कार्य। छात्रों द्वारा अनुशीलन।	● व्यावहारिक/क्रियात्मक परीक्षण।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
● कलात्मक एवं आकर्षक सिलाई से सौन्दर्यानुभूति होती है। ❖ विधिवत सुई पकड़ना तथा सुई में तागा डालने का ज्ञान। ❖ विधिवत सुई चलाने का ज्ञान। ❖ सिलाई करते समय उचित आसन का प्रयोग। ❖ कपड़ा काटने एवं सिलने में प्रयोग होने वाले उपकरणों का उचित प्रयोग का ज्ञान।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● स्थानीय सिलाई केन्द्र का प्रेक्षण कराकर प्रयुक्त होने वाली मशीनों तथा उपकरणों के प्रयोग का शिक्षक ज्ञान कराएगा। छात्र पारस्परिक परिचर्चा करेंगे।	● अभ्यास प्रेक्षण। ● मौखिक/लिखित/क्रियात्मक कार्य।
● सिलाई द्वारा दैनिक जीवन की मूलभूत आवश्यकता की पूर्ति होती है। ❖ ड्राफ्टिंग तथा काटना। ❖ रूमाल, मेजपोश, तकिया का गिलाफ, बैग, थैले, बच्चों के झबले काटने का सिद्धान्त। ❖ विभिन्न कपड़ों का ज्ञान, नाप, नाप लेने की विधि अभ्यास। ❖ नाप के अनुसार कपड़े काटना, सीखते समय वस्त्र के लिए प्रयोगार्थ कपड़े का ज्ञान।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक कक्षा में नाप लेकर, रेखाचित्र बनाकर, पेपर पर कटिंग करके, वस्त्र को सिलकर आदर्श नमूना प्रस्तुत करेगा छात्र अनुशीलन करेंगे।	● निर्मित वस्तु के मूल्यांकन द्वारा। ● मौखिक/लिखित प्रश्नों द्वारा। ● क्रियात्मक कार्य द्वारा।
● मिल्टन कपड़े पर मिल्टन चाक तथा स्क्वायर द्वारा वस्त्रों के चित्र खींचना तथा अखबार/बांसी कागज पर नाप के अनुसार ड्राफ्टिंग कटिंग का अभ्यास करना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक कक्षा में नाप लेकर, रेखाचित्र बनाकर, पेपर पर कटिंग करके, वस्त्र को सिलकर आदर्श नमूना प्रस्तुत करेगा छात्र अनुशीलन करेंगे।	● अभ्यास/क्रियात्मक कार्य द्वारा।
● कागज पर कटाई- कागज पर पूरे नाप के अनुसार ड्राइंग बनाकर काटना, इसी ड्राफ्टिंग के द्वारा कपड़े पर निशान लगाना। सिले हुए रूमाल, गिलाफ, थैलों आदि की फिनिशिंग देकर बेचने योग्य बनाना।		
संबंधित कला : ● जैसा कि काष्ठ कला। ● नाप के अनुसार आस्तीन, कॉलर, जेब की विभिन्न प्रकार की ड्राफ्टिंग तैयार करना।		● प्रेक्षण क्रियात्मक कार्य द्वारा।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
● मशीन पर सिलाई का ज्ञान, कागज पर रेखाएं खींचकर सीधी तथा घुमावदार बखिया करने का ज्ञान अभ्यास। ❖ स्वनिर्मित, मशीन के उपयोग का ज्ञान व अभ्यास। ❖ सिलाई मशीन के विभिन्न भागों का नाम तथा कार्यों का ज्ञान। ❖ सिलाई मशीन के विभिन्न भागों का नाम तथा कार्यों का ज्ञान। ❖ मशीन के पुर्जों को साफ करना तथा पुन: लगाना। ● काटना तथा ड्राफ्टिंग- ❖ साधारण पायजामा, जांघिया, पेटीकोट, बनियाइन, फ्राक। इन कपड़ों का मिल्टन कपड़े पर विभिन्न मापों से खींचने का ज्ञान।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● स्थानीय सिलाई केन्द्रों का प्रेक्षण कराकर विभिन्न सिलाई मशीनों का प्रयोग करने की विधि का ज्ञान कराएगा। पारस्परिक परिचर्चा कराएगा।	● अभ्यास प्रेक्षण।
● वस्त्रों के लिए नए-नए डिजाइनों का निर्माण का प्रयोग- ❖ झबला, बनियाइन तथा पायजामा बनाना। ❖ वस्त्रों की सिलाई करना, फिनिशिंग, इस्त्री करना, वस्त्रों की कीमत लगाना। ❖ ड्राइंगकापी पर वस्त्रों की ड्राफ्टिंग स्केल द्वारा नापों के अनुसार बनाना व अभ्यास। ❖ झालरों, पाइपिंग तथा विभिन्न सजावटी टांकों द्वारा वस्त्रों को सजाना। ❖ कागज पर कटाई- शेष वस्त्रों की ड्राफ्टिंग करने का पूर्ण अभ्यास- खाके को कागज पर खींचकर उन्हें काटना तथा अभ्यास। सिलाई-काटने के पश्चात् वस्त्र को कच्ची सिलाई द्वारा सीना तथा मशीन की सिलाई करना। इस्त्री करना, तह लगाना तथा बेचना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● स्थानीय रेडीमेड वस्त्रों के विक्रय केन्द्रों का प्रेक्षण कराकर विभिन्न प्रकार के वस्त्रों के डिजाइन का अवलोकन कराकर संबंधित परिचर्चा कराएगा। ● इस्त्री के प्रकार व बिजली की इस्त्री करते समय सावधानी तथा विभिन्न वस्त्रों पर इस्त्री करते की सावधानी पर चर्चा कराएगा।	● मौखिक/लिखित अभ्यास प्रश्नोत्तर ● निरीक्षण, निर्मितवस्तु का निरीक्षण
संबंधित कला : ● भाग-अ : जैसा काष्ठ कला में है। ● भाग-ब : ❖ विभिन्न वस्त्रों हेतु नर-नारियों का चित्रण करना। ❖ वस्त्रों के लिए डिजाइनों का निर्माण करना। ❖ झालरों, किनारों को स्टिचों द्वारा डिजाइनों का निर्माण करना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● विविध प्रकार के झालरों स्टिचों द्वारा बने डिजाइनों का प्रेक्षण कराना, परिचर्चा तथा प्रयोग।	● क्रियात्मक कार्य का, निर्मित वस्तु का मौखिक प्रश्न द्वारा।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
● कपड़ों की सिलाई करना एक रूचिकर कार्य है- ❖ सिलाई मशीन को सुरक्षित रखने का उपाय। ❖ मशीन के दोष, उन्हें ठीक करना। ❖ विभिन्न प्रकार के कपड़ों को आवश्यकतानुसार श्रिंक करना। ❖ इस्त्री का प्रयोग, सावधानी, विभिन्न वस्त्रों पर इस्त्री करना। ❖ वस्त्रों को पहनाकर ट्राई कर, फिटिंग करना, उनके दोष मालूम करके सुधारना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● मशीन के पुर्जों को खोलकर उनकी सफाई तथा पुनः लगाने का अभ्यास कराया जाए। ● फिटिंग हेतु शिक्षिका द्वारा डमी पर फिटिंग करने हेतु स्थानीय सिलाई केन्द्रों का निरीक्षण कराना, परिचर्चा।	● छात्रों द्वारा निर्मित कार्यों का निरीक्षण करना, बोधात्मक प्रश्नों, अनुप्रयोगात्मक प्रश्नों द्वारा।
● ड्राइंग- वस्त्रों की नाप लेना, ड्राफ्टिंग करना, काटना आदि का अभ्यास हो जाने पर अभ्यास पुस्तिका पर एक निश्चित नाप के अनुसार इनकी ड्राइंग खींचना तथा अभ्यास।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● शिक्षक वस्त्रों की नाप लेकर, कागज पर मानक बनाकर, कटिंग करके उसके अनुसार कपड़े पर निशान लगाना. काटना तथा सिलना आदि क्रियाएं करके छात्रों को प्रदर्शित करेगा।	● मौखिक एवं लिखित प्रश्नों द्वारा कौशलात्मक।
● कागज पर कटाई- मिल्टन से कपड़े पर विभिन्न प्रकार के आकार तथा रेखाएं बनाने का अभ्यास।		● मौखिक एवं लिखित प्रश्नों द्वारा कौशलात्मक।
● सिलाई- कपड़े पर कागज की ड्राफ्टिंग के आधार पर कटिंग बिछाकर कपड़े की कटिंग करना तथा कच्चे टांकों से सिलाई करना, फिटिंग के पश्चात् मशीन की सिलाई करना।		● क्रियात्मक कार्यों के प्रेक्षण द्वारा।
● इस्त्री करके तह लगाना- प्रत्येक छात्र द्वारा इस्त्री तथा तह लगाकर इस प्रकार तैयार किया जाए कि बेचने योग्य लगे।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● इस्त्री तैयार करने की पहचान कराना। इसे करने के अभ्यास कराना। स्थानीय परिचर्चा।	● प्रयोगात्मक कार्य का अभ्यास कराकर।
संबंधित कला : ● भाग-अ : जैसा कि काष्ठ कला में है ● भाग-ब : कलात्मक रंगों द्वारा विचारात्मक, भावात्मक तथा वैज्ञानिक विकास होता है। ❖ फ्राक, ब्लाउज तथा ओवरकोट आदि के लिए पत्तियों, पुष्पों, पक्षियों, जानवरों, बच्चों के आकारों का प्रयोग करते हुए ऐप्लिक डिजाइन बनाना। ❖ ब्लाउज, फ्राक आदि के लिए स्टपड रिलीफ डिजाइन बनाना। ❖ बच्चों तथा प्रौढ़ों के पहनावे की दृष्टि से रंग विरोधी तथा सहयोगी का मेल कराना।	प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा- ● प्राकृतिक दृश्यों को देखकर अनुकरण करना। ● डिजाइन बुक का अवलोकन करके उसके अनुसार अनुकरण करके स्वतः डिजाइन बनाना।	● प्रेक्षण लिखित कार्यों द्वारा अभ्यास कराकर अनुप्रयोगात्मक प्रश्नों द्वारा। ● बोधात्मक प्रश्नों द्वारा लिखित/मौखिक रूप में।

गृह शिल्प

गृह शिल्प के सामान्य उद्देश्य-

1. बच्चों में स्वस्थ आदतों का विकास।
2. बच्चों को विभिन्न रोगों का ज्ञान देना और उनसे बचने के उपाय बताना।
3. आकस्मिक दुर्घटनाओं के समय आवश्यक प्राथमिक सहायता देने का ज्ञान देना।
4. घर के विभिन्न कक्षों और उनमें पाये जाने वाले सामानों की सजावट, सफाई एवं रख-रखाव का ज्ञान देना।
5. भोजन पकाते और खाते समय स्वच्छ आदतों का निर्माण करना।
6. घरेलू काम-काज करने में आत्मविश्वास की भावना जागृत करना और रचनात्मक प्रवृत्ति का विकास करना।
7. सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, धुलाई आदि सिखाना तथा इनके द्वारा बच्चों में स्वयं कार्य करने की आदत का विकास करना।
8. श्रम का महत्व बताना और रचनात्मक प्रवृत्ति का विकास करना।
9. खाद्य पदार्थों में पाये जाने वाले तत्वों का ज्ञान देकर संतुलित आहार के बारे में बताना।
10. प्रदूषण का ज्ञान देकर रोगों से बचने का उपाय बताना, शुद्ध वायु, जल आदि का महत्व बताना तथा शुद्ध वातावरण में रहने का लोगों का परिचय कराना, पर्यावरण को स्वच्छ रखने की आवश्यकता का ज्ञान देना।
11. बढ़ती जनसंख्या का रहन-सहन स्तर पर प्रभाव बताना व छोटे परिवार के लोगों से परिचित कराना।
12. छात्रों को व्यक्तिगत तथा सामूहिक रूप से शारीरिक श्रम के लिये तैयार कराकर देश की उन्नति का ज्ञान देना।
13. समाज का उपयोगी सदस्य बनने की इच्छा जागृत करना तथा सामाजिक हित के लिये प्रयास करना।
14. सीखकर कमाना के द्वारा उत्पादन कार्यों में भाग लेने हेतु उत्साहित करना।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
स्वास्थ्य : ● अच्छे स्वास्थ्य का अर्थ लक्षण, सुखी परिवार की नींव, अच्छा स्वास्थ्य।	● अच्छे स्वास्थ्य संबंधी गीत, कहानी कविताएं, चर्चाएं आदि।	● स्वच्छता का तुलनात्मक निरीक्षण एवं प्रश्नोत्तर।
स्वच्छता : ● घर की आवश्यकता, घर के विभिन्न कमरों की सफाई के प्रतिदिन और समय-समय पर घर की वस्तुओं का उचित रख-रखाव। ● सार्वजनिक स्थानों की सफाई का महत्व, स्वास्थ्य और सुखी जीवन के लिये आस-पास की सफाई।	● विद्यालयों के निकट कुछ घरों का भ्रमण तथा उनमें पायी जाने वाली कमियों और अच्छाइयों की ओर उनके ध्यान आकृष्ट कराना। ● सार्वजनिक स्थानों का भ्रमण।	● प्रश्नोत्तर एवं व्यवहार प्रेषण।
पोषण : ● भोजन की आवश्यकता, भोजन पकाकर खाने से लाभ, पकाने की विधियां, कच्चे खाये जाने वाले भोज्य पदार्थों की उपयोगिता। ● स्वस्थ जीवन के लिये संतुलित आहार।	● विभिन्न विधियों द्वारा भोजन पकाने का अभ्यास करना। ● कच्चे खाये जाने वाले भोज्य पदार्थों तथा उसमें पाये जाने वाले पोषक तत्वों की सूची, चर्चा, निरीक्षण।	● भोजन पकाने की विभिन्न विधियों के गुण और दोषों की चर्चा।
रोग : ● कुछ सामान्य रोगों के कारण तथा बचाव के उपाय। जैसे- 1. पेट का केंचुआ, 2. हैजा ● स्वास्थ्य के लिये अच्छी आदतों का निर्माण	● अच्छी आदतों के गुण-दोष पर चर्चा।	● निरीक्षण के आधार पर प्रश्नोत्तर।
प्रदूषण : ● अर्थ, कारण, हानियां एवं रोकने के उपाय। ● जल स्रोतों की सुरक्षा, स्वास्थ्य के लिए स्वच्छ जल का महत्व, जल दूषित होने के कारण	● दूषित जल वाले स्थान का भ्रमण कर उसका ज्ञान देना।	● निरीक्षण के आधार पर प्रश्नोत्तर।
प्राथमिक चिकित्सा : ● प्राथमिक चिकित्सा का अर्थ और आवश्यकता। ● मधुमक्खी एवं बिच्छू का डंक मारना, कुत्ता एवं सांप के काटने पर प्राथमिक उपचार।	● कविता, कहानी और अभिनय।	● निरीक्षण एवं प्रश्नोत्तर।
सिलाई : ● पूर्व सीखे गए टांकों का अभ्यास उल्टी बखिया, काज बनाना, पेबन्द लगाना, रफू करना, प्लीट्स डालना। ● लड़की की बॉडी, पेटीकोट एवं लड़के के लिए जाँघियां बनाना, झबला बनाना।	● विभिन्न टांकों का अभ्यास। ● अपना बॉडी, पेटीकोट एवं जाँघिया काटकर सिलने का अभ्यास करना।	● निरीक्षण एवं प्रश्नोत्तर।
कढ़ाई : ● कढ़ाई के विभिन्न टांकों द्वारा वस्त्रों की सजावट। ● लेजीडेजी स्टिच, स्टेम स्टिच, चेन स्टिच, बटन होल स्टिच द्वारा सिले हुए बॉडी, पेटीकोट पर नमूना बनाना।	● सीखे हुए वस्त्रों पर विभिन्न कढ़ाई के टांकों से कढ़ाई करने का अभ्यास कराना।	● निरीक्षण एवं प्रश्नोत्तर।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन प्रविधि
बुनाई : ● मोतीदाना की बुनाई, फन्दे बढ़ाना और घटाना, कोई दो प्रकार की टोपी बनाना।	● मोतीदाना बनाने का अभ्यास करना। ● फन्दे घटाने, बढ़ाने का अभ्यास कराना, टोपी बनाने का अभ्यास कराना।	● अभ्यास, निरीक्षण एवं प्रश्नोत्तर।
पाककला : ● पाकशाला के प्रबन्ध, पाकशाला की सामग्री, ईंधन के प्रकार व मितव्ययिता। ● गीली व सूखी वस्तुओं के नाप तौल का ज्ञान। ● दाल, चावल, चाय, साबूदाना, सब्जियों का सूप बनाना।	● गीली वस्तुओं के नाप तौल का अभ्यास कराना। ● विभिन्न भोज्य पदार्थों को बनाने का क्रियात्मक अभ्यास कराना।	● निरीक्षण एवं प्रश्नोत्तर।
गृह प्रबन्ध : ● घरेलू वस्तुओं की दैनिक सफाई, स्टील के बर्तनों की सफाई।	● विभिन्न घरेलू वस्तुओं की दैनिक सफाई की सूची बनाना। स्टील के बर्तनों की सफाई का अभ्यास कराना।	● निरीक्षण एवं प्रश्नोत्तर।
धुलाई कला : ● धुलाई की आवश्यकता, सूती वस्त्रों की धुलाई।	● सूती वस्त्र धोने का क्रियात्मक अभ्यास कराना।	● निरीक्षण एवं प्रश्नोत्तर।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
स्वास्थ्य : ● कुपोषण से होने वाली बीमारियां, आंख की बीमारियां, रक्त अल्पता, घेंघा एवं चर्मरोग।	● बच्चों द्वारा खाए जाने वाले पदार्थों की सूची, चार्ट, चित्र बनाना। ● खाद्य पदार्थों पर चर्चा।	● प्रश्नोत्तर
स्वच्छता : ● शुद्ध व ताजी हवा, स्वच्छ जल व भोजन स्वस्थ रहने के लिए आवश्यक है। ● आस-पास के वातावरण का स्वास्थ्य पर प्रभाव, स्वच्छ जल, शुद्ध वायु एवं स्वच्छ भोजन के अभाव का स्वास्थ्य पर प्रभाव, आस-पास की सफाई स्वच्छ जल, स्वास्थ्य और सुखी जीवन की आवश्यक शर्तें हैं।	● कक्षा में जलवायु, भोजन के लिए दूषित होने तथा उनके दूषित होने से बचाने के संबंध में चर्चा। ● स्वच्छता हेतु गीत एवं कविता द्वारा ज्ञान कराना।	● प्रश्नोत्तर
पोषण : ● स्वस्थ शरीर के लिए संतुलित आहार की आवश्यकता, अर्थ एवं महत्व, भोजन के पौष्टिक तत्व जैसे कार्बोहाइड्रेट, वसा, विटामिन, खनिज लवण का साधारण ज्ञान। ● मौसमी तथा स्थानीय भोज्य पदार्थों का सेवन और उनकी उपयोगिता।	● भोज्य पदार्थों तथा उनमें पाए जाने वाले पोषक तत्वों की सूची तथा चार्ट तैयार करना। ● स्थानीय एवं मौसमी भोज्य पदार्थों की सूची तैयार करना।	● प्रश्नोत्तर
पाचन संबंधी रोग : ● जैसे अतिसार और पेचिस रोग के कारण लक्षण तथा बचने के उपाय।	● भोजन तथा पाच संबंध सावधानियां एवं आदतों पर चर्चा करना।	● प्रश्नोत्तर
प्रदूषण : ● वायु प्रदूषण एवं ध्वनि प्रदूषण का अर्थ, कारण, हानियां एवं रोकने के उपाय।	● विद्यालय में वृक्षारोपण कार्यक्रम। ● निकट के घरों में जाकर धुएं के निकास की व्यवस्था का निरीक्षण। ● भ्रमण, चर्चा एवं चार्ट बनाना।	● प्रश्नोत्तर

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
● संसाधनों के अंधाधुन्ध, अनियोजित उपयोग से पर्यावरण प्रदूषण का व्यक्तिगत एवं समुदाय पर कुप्रभाव।		
प्राथमिक उपचार : ● उपचार पेटिका (First Aid Box) के प्रयोग का ज्ञान व वस्तु की आवश्यकता। ● घरेलू वस्तुओं का प्राथमिक उपचार में प्रयोग।	● प्रदर्शन, प्रयोग व वार्तालाप द्वारा उपचार पेटिका के उपकरणों व दवाओं की जानकारी कराना। ● प्राथमिक चिकित्सा की घरेलू वस्तुओं को संग्रहीत कराकर उनका प्रदर्शन व परिचर्चा।	● बोध प्रश्न, प्रश्नोत्तर तथा अभिनयात्मक प्रयोग व प्रदर्शन द्वारा।
सिलाई : ● वस्त्र बनाने के लिए आवश्यक नापों को लेना, लगने वाले कपड़े का आकलन करना। ● वस्त्रों को काटना, सिलना-पैजामा, पेटीकोट तथा बाडी पेटीकोट। ● आवश्यक नापें लेना। ● घर की सिलाई के लाभ।	● प्रदर्शन, परिचर्चा द्वारा वस्त्र की आवश्यक नाप लेना, आकलन करना। ● वस्त्रों को काटने तथा सिलने का आदर्श रूप प्रस्तुत कर कागज पर काटने का अभ्यास कराया जाए तथा वस्त्र पर काटने व सिलने का अभ्यास कराया जाए। ● परिचर्चा, वार्तालाप द्वारा घर पर वस्त्र सिले जाने से होने वाले लाभों की जानकारी कराना।	● बोध प्रश्न कराए जाएं। ● अखबार/बासी कागज पर वस्त्र की ड्राफ्टिंग व कटिंग। ● सत्रीय कार्य द्वारा वस्त्रों को सिलवाकर। ● प्रश्नोत्तर
कढ़ाई : ● वस्त्र पर नमूना ट्रेस करना तथा स्वाभाविक रंगों से कढ़ाई करना।	● प्रदर्शन द्वारा शिक्षक नमूना ट्रेस करके कढ़ाई करना दिखाएगी।	● नमूना ट्रेस कर कढ़ाई कराकर तथा प्रश्नोत्तर परिचर्चा द्वारा।
बुनाई : ● बच्चों के मोजे, पुलोवर बनाना। ● विभिन्न प्रकार के चार नमूने बनाना। ● जाली बनाना। ● क्रोशिया द्वारा चेन (जंजीरा) किनारे के दो साधारण नमूने बनाना।	● प्रदर्शनी व दुकानों से विभिन्न प्रकार के वस्त्रों की जानकारी कराकर मोजे बिनने हेतु स्वयं बोले बिनकर प्रदर्शित करना तथा उनसे बिनवाना। ● चार प्रकार के नमूनों को स्वयं बनाकर प्रदर्शित करना। ● क्रोशिया द्वारा चेन तथा किनारे पर बनाए जाने वाले नमूनों को बनाकर प्रदर्शित करते हुए वार्तालाप द्वारा स्पष्ट कराना तथा छात्रों से मोजा, पुलोवर नमूने आदि बनवाना।	● छात्र/छात्राओं से बुनवाकर। ● बोध प्रश्नों द्वारा।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
पाक कला : ● रोटी ● सूखी व रसेदार दो-दो सब्जियां ● खिचड़ी, तहरी, चाय बनाना ● भोजन परोसना	● पाक कला परिचर्चा कराकर महत्व को बताना। ● रोटी, सब्जी, तहरी, खिचड़ी, चाय को प्रदर्शन द्वारा। ● भोजन परोसने हेतु आवश्यक बिन्दुओं को परिचर्चा व वार्तालाप द्वारा स्पष्ट कराते हुए भोजन परोसने का प्रदर्शन करना/कराना।	● भोज्य पदार्थों को पकवाकर। ● भोजन परोस कर। ● प्रश्नों द्वारा। ● तुलानात्मक निरीक्षण।
गृह प्रबन्ध : ● खटमल, मक्खी, मच्छर, जूं तथा दीमक को नष्ट करने के उपाय। ● किटाणुनाशक तथा कृमिनाशक वस्तुओं का प्रयोग। ● धोबी तथा बाजार का हिसाब रखना।	● परिचर्चा, वार्तालाप द्वारा किटाणुओं को नष्ट करने के उपायों की जानकारी कराना। ● विभिन्न प्रकार के कीटनाशक तथा कृमिनाशक दवाओं का प्रदर्शन तथा उनके प्रयोग से अवगत कराना। ● हिसाब की सारणी तैयार कराना। ● परिचर्चा कराना तथा हिसाब रखने से होने वाले लाभों का ज्ञान कराना।	● प्रश्नोत्तर। ● प्रश्नोत्तर। ● सारणी तैयार कराना। ● निरीक्षण करना।
धुलाई : ● ऊनी, रेशमी वस्त्र रीठा व डिटर्जेन्ट से धोना व इस्त्री करना।	● प्रदर्शन द्वारा ऊनी, रेशमी वस्त्रों की रीठे व डिटरर्जेन्ट से धुलाई करने की विधि का ज्ञान कराया जाए। ● वस्त्रों पर इस्त्री करने की विधि हेतु परिचर्चा कराते हुए इस्त्री करके जानकारी दी जाए।	● वस्त्रों की धुलाई कराकर। ● धुलाई में प्रयुक्त आवश्यक उपकरणों की सूची बनवाकर। ● प्रश्नोत्तर।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
स्वास्थ्य : ● वृद्धि निगरानी अर्थ, महत्व। ● प्रतिरक्षण का महत्व। ● प्रतिरक्षण टीकों की सूची। ● कुपोषण से होने वाली बीमारियां सूखारोग, कोशियरकर (एनीमिया) रक्ताल्पता आदि।	● वार्तालाप कराया जाए। इसके द्वारा प्रतिरक्षा के महत्व, टीकों की सूची तैयार कराई जाए। उन्हें आस पास के अस्पताल में ले जाकार वीक्षण कराकर परिचर्चा कराया जाए तथा महत्व को स्पष्ट कराया जाए। ● परिचर्चा द्वारा कुपोषण द्वारा होने वाली हानियों की जानकारी कराई जाए तथा उनसे होने वाली विभिन्न बीमारियों के लक्षण को बताते हुए उनसे बचने हेतु जागरूक बनाया जाए। स्वस्थ व रक्ताल्पता की तुलना कराकर वार्तालाप द्वारा रोग के लक्षणों से अवगत कराया जाए।	● प्रश्नोत्तर द्वारा। ● टीकों की सूची बनवाकर। ● प्रश्नोत्तर द्वारा।
स्वच्छता : ● व्यक्तिगत एवं पर्यावरणीय स्वच्छता का ज्ञान तथा स्वास्थ्य से संबंध। ● प्रतिदिन के प्रयोग में आने वाले आवश्यक सामानों की सफाई व सुरक्षा का महत्व। ● सफाई व स्वास्थ्य सुखी जीवन की आवश्यक शर्तें हैं।	● परिचर्चा द्वारा व्यक्तिगत व पर्यावरणीय स्वच्छता का ज्ञान तथा स्वास्थ्य से संबंध को स्पष्ट कराएं। ● प्रतिदिन प्रयुक्त किए जाने वाले आवश्यक सामानों की सफाई व सुरक्षा पर परिचर्चा द्वारा सफाई, सुरक्षा के महत्व से अवगत कराएं। सामानों की सूची बनाई जाए। घर, पास-पड़ोस तथा विद्यालय की सफाई कराई जाए। ● वार्तालाप द्वारा सफाई व सुखी जीवन की शर्तों का ज्ञान कराया जाए।	● प्रश्नोत्तर ● निरीक्षण ● निबन्ध लेखन द्वारा।
पोषण : ● खाद्य पदार्थों का संरक्षण, प्रकार, विधियों, संरक्षण करने के कारण व लाभ। ● भविष्य के लिए खाद्य पदार्थों की सुरक्षा मानव मूल्य है। यह समाज कल्याण के लिए आवश्यक है।	● स्थानीय उपलब्ध खाद्य पदार्थों की जानकारी हेतु निरीक्षण, भ्रमण एवं परिचर्चा कराएं। ● आवश्यकता से अधिक खाद्य पदार्थों को विभिन्न विधियों द्वारा संरक्षण करने की जानकारी प्रदर्शन व परिचर्चा द्वारा विभिन्न पदार्थों के संरक्षण का ज्ञान कराया जाए। ● बिना मौसम के वस्तुओं को प्राप्त करने हेतु वार्तालाप द्वारा जानकारी कराएं। ● संरक्षित करने वाले रासायनिक पदार्थों की सूची तैयार कराएं।	● विभिन्न प्रकार के फलों तथा सब्जियों को संरक्षित कराकर। ● प्रश्नोत्तर द्वारा। ● निबन्ध लेखन।
सामान्य बीमारियां : ● मलेरिया, फाइलेरिया, श्वसन संबंधी रोग के कारण, लक्षण एवं उपाय। ● अच्छा स्वास्थ्य सुखी परिवार की नींव है।	● परिचर्चा द्वारा सामान्य बीमारियों के होने के कारणों, लक्षणों एवं उपायों से अवगत कराया जाए। ● मक्खी, मच्छर द्वारा फैलने वाले रोगों से संबंधित चार्ट तैयार कराया जाए। ● श्वसन अंगों का चार्ट बनवाया जाए।	● प्रश्नोत्तर ● वार्तालाप
प्रदूषण : ● खाद्य पदार्थों में मिलावट। ● मिलावट से हानियां।	● प्रदर्शन व निरीक्षण कराकर परिचर्चा कराएं तथा खाद्य पदार्थों में की जाने वाली मिलावट की जानकारी दें व जागरूकता उत्पन्न करें। ● वार्तालाप द्वारा खाद्य पदार्थों में मिलावट संबंधी हानियों की जानकारी प्राप्त कराएं। ● सरकार द्वारा प्राप्त कराई जाने वाली सुविधाओं का उपयोग एवं जानकारी प्राप्त कराने हेतु जागरूकता उत्पन्न कराना।	● प्रश्नोत्तर ● निरीक्षण द्वारा ● लेख लिखाकर

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
प्राथमिक उपचार : ● निर्जलीकरण, तेज ज्वर, लू लगना, जलना, झुलसना, सिर में चोट, हड्डी का टूटना। ● व्यक्ति तथा समाज के स्वास्थ्य के प्रति दायित्व की भावना होना आवश्यक है।	● परिचर्चा द्वारा रोग व दुर्घटना संबंधी प्राथमिक उपचार की महत्ता व जानकारी कराएं। ● प्रदर्शन व अभिनयात्मक प्रदर्शन द्वारा विभिन्न प्रकार के प्राथमिक उपचार की जानकारी कराएं। ● जीवन रक्षक घोल बनाना। ● आम का पना बनवाना। ● विभिन्न प्रकार की पट्टी बांधने का अभ्यास कराना। ● जलने व झुलसने संबंधी उपचार हेतु कक्षा में प्रदर्शन कर जानकारी कराएं।	● अभिनयात्मक प्रदर्शन द्वारा। ● प्रयोग कराके ● प्रयोग कराके ● निबन्ध लेखन द्वारा
सिलाई : ● किसी भी पैटर्न को अपने नाप में परिवर्तित करना। ● काटना, सिलना- लड़की का फ्राक, कुर्ता, सलवार। ● सिलाई मशीन का उपयोग और उसकी साधारण देखभाल। ● विभिन्न वस्त्रों के लिए कपड़ों का चुनना।	● परिचर्चा कराके शिक्षक किसी एक पैटर्न को नाप के अनुसार परिवर्तन करने की युक्ति प्रायोगिक रूप से स्पष्ट करेगा। ● प्रयोग, प्रदर्शन द्वारा शिक्षक विभिन्न वस्त्रों का आदर्श नमूने के रूप में प्रदर्शित कर काटने व सिलने हेतु निर्देशित करेगा। ● परिचर्चा तथा प्रदर्शन द्वारा सिलाई मशीन के उपयोग की जानकारी देगा। ● वार्तालाप कराकर साधारण देखभाल करने हेतु जानकारी तथा स्थानों को बताएगा। ● निरीक्षण तथा परिचर्चा द्वारा विभिन्न वस्त्रों के लिए कपड़ों के चयन हेतु कौशल विकसित करेगा तथा छात्रों से चयनित कराने का अभ्यास कराएगा। ● विभिन्न प्रकार के कपड़ों के नमूनों का चार्ट तैयार कराना।	● प्रयोगात्मक ● प्रश्नोत्तर ● प्रायोगिक कार्यो द्वारा ● मौखिक तथा लिखित प्रश्नोत्तर ● निरीक्षण द्वारा पहचान कराना। ● प्रश्नोत्तर
कढ़ाई : ● रंगों के मेल का ज्ञान देते हुए कढ़ाई का नमूना बनाना।	● विभिन्न रंगों के प्रदर्शन द्वारा परिचर्चा कराते हुए रंगों व इनके मेल का ज्ञान कराना। ● कढ़ाई हेतु नमूने का निर्माण कराने हेतु नमूना निर्माण करके प्रदर्शित करेगा।	● तुलनात्मक निरीक्षण ● प्रश्नोत्तर ● नमूना निर्माण कराकर
बुनाई और क्रोशिया बुनाई : ● कार्डीगन बनाना, क्रोशिया द्वारा शाल बनाना।	● प्रदर्शनी तथा बाजार का निरीक्षण कराना। ● नमूने रूप में कार्डिगन तथा शाल डिजाइन का प्रदर्शन करके उन्हें बनाने हेतु प्रेरित करना।	● नमूना निर्माण कराकर
पाक कला : ● पूरी, कचौड़ी, पराठा, हलवा, खीर, नाश्ते के लिए कोई दो नमकीन वस्तुएं, दो मिठाई उपलब्ध सुविधानुसार बनाना।	● प्रयोग, प्रदर्शन, परिचर्चा द्वारा निर्दिष्ट वस्तुओं को बनाने का प्रदर्शन करके उन्हें बना लेने की जानकारी कराना। ● नाश्ते हेतु - मीठी तथा नमकीन खाद्य सामग्री का प्रदर्शन व बनाने का ज्ञान देना।	● मौखिक प्रश्न ● प्रयोगात्मक कार्य

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
गृह प्रबन्ध : ● बैठक के कमरों की सजावट और रखरखाव। ● घर तथा विद्यालय में व्यवहारिकता का ज्ञान। ● यात्रा की तैयारी। ● आवश्यकतानुसार पत्र लिखना।	● निरीक्षण द्वारा आदर्श बैठक का अवलोकन कराना। ● आदर्श बैठक कक्ष की सजावट को चित्र-प्रदर्शन व खाका बनाकर प्रदर्शित करना। ● वार्तालाप द्वारा सजावट के सिद्धान्तों व सामानों के रख-रखाव की जानकारी कराना। ● परिचर्चा द्वारा घर तथा विद्यालय में किए जाने वाले अच्छे व्यवहारों से अवगत कराएं। ● यात्रा की तैयारी हेतु परिचर्चा कराएं। ● वार्तालाप द्वारा विभिन्न बिन्दुओं की जानकारी दें। ● सुख-दु:ख तथा कुशल समाचार जानने हेतु परिचर्चा कराएं तथा विभिन्न प्रकार के पत्रों के लेखन की जानकारी कराएं।	● खाका बनाना। ● प्रश्नोत्तर द्वारा ● प्रश्नोत्तर ● मौखिक प्रश्न ● निबन्ध लेखन ● पत्र लेखन ● निरीक्षण ● प्रश्नोत्तर
धुलाई : ● कठोर व मृदु जल में अन्तर, मृदु जल की उपयोगिता। ● तीन प्रकार के कलफ तैयार करना। ● धुले वस्त्रों में नील, कलफ का प्रयोग कर इस्त्री करना।	● मृदु व कठोर जल का प्रदर्शन करें। ● परिचर्चा कराकर अन्तर स्पष्ट कराते हुए मृदु जल की उपयोगिता से अवगत कराएं। ● कलफ बनाने का प्रदर्शन पर परिचर्चा कराएं व कलफ बनाने हेतु सामग्री, विधि आदि की जानकारी दें। ● धुले वस्त्रों में उचित नील, कलफ व इस्त्री का प्रयोग प्रदर्शन कर स्पष्ट करें। ● आवश्यक सामग्री व सावधानियों की जानकारी दें।	● प्रयोगात्मक कार्य द्वारा। ● प्रयोगात्मक कार्य द्वारा। ● प्रयोगात्मक कार्य द्वारा। ● प्रयोगात्मक कार्य द्वारा। ● प्रयोगात्मक कार्य द्वारा।

अध्यापक हेतु आवश्यक समर्थन (विभिन्न शिल्पों के शिक्षण हेतु)

1. प्रशिक्षण के द्वारा अध्यापकों के ज्ञान, कौशल एवं अभिवृत्तियों में परिवर्तन अपेक्षित है।
2. समय-समय पर अनुस्थापन एवं पुनर्स्थापन प्रशिक्षण आवश्यक है।
3. शिक्षण संदर्शिकाओं एवं सेवाकालीन प्रशिक्षणों के द्वारा अध्यापकों के ज्ञान, कौशलस्तर को उन्नत किया जा सकता है।
4. शिक्षकों के सामान्य ज्ञान संवर्धन एवं संशोधन हेतु समय-समय पर प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन करके ज्ञान स्तर को अद्यतन किया जा सकता है।
5. शिक्षक संदर्शिकाओं का शिक्षकों द्वारा उपयोग किया जाना समीचीन है।
6. नित्यश: ज्ञान के क्षेत्र में होने वाले परिवर्तनों एवं परिवर्धनों से शिक्षकों को अवगत होना चाहिए।
7. सेवापूर्ण एवं सेवाकालीन प्रशिक्षणों के द्वारा अध्यापकों के मानसिक स्तर को उपयुक्त बनाया जा सकता है।
8. शिक्षक पाठ्येतर साहित्यों का अध्ययन करके अपने ज्ञान, कौशल एवं अभिवृत्तियों में आवश्यक सुधार ला सकते हैं।
9. शिक्षण के नये आयामों से अध्यापकों को परिचित ही होना चाहिए।
10. शिक्षण एक कला है अस्तु इस कला में निपुणता एवं पारंगतता हेतु व्यवहृत नूतन शिक्षण प्राद्योगिकी का कुशलतापूर्वक प्रयोग हेतु निरन्तर अभ्यास एवं प्रयोग की आवश्यकता है।
11. अध्यापक स्वत: ज्ञान पिपासु बने तभी अपने छात्रों को उपयुक्त ज्ञान प्रदान कराने में सहयोगी हो सकते हैं।
12. आवश्यक सामग्रियों तथा उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।

शारीरिक शिक्षा, खेल तथा योगासन

शिक्षण सामान्य उद्देश्य :

शिक्षा का उद्देश्य बालक का शारीरिक, मानसिक, भावात्मक एवं सामाजिक अर्थात् सर्वांगीण विकास है। अतः बालक को 'समग्र शिक्षा' देना शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य हो जाता है। इस उद्देश्य की प्राप्ति केवल मस्तिष्क में पुस्तकीय ज्ञान भर देने से नहीं होगा, वरन् मस्तिष्क के साथ-साथ शरीर का संतुलन तथा सुन्दर विकास एवं इन दोनों का आपस में समन्वय अत्यन्त आवश्यक है। इसी कारण शारीरिक शिक्षा अब सार्वभौमिक रूप से सामान्य शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग मान ली गयी है। बालक को शरीर से स्वस्थ, मानसिक रूप से जागरूक, भावात्मक रूप से दृढ़ तथा सामाजिक दृष्टि से एक योग्य नागरिक बनाने के लिए उसके व्यक्तित्व के समन्वित विकास में शारीरिक शिक्षा सामान्य शिक्षा से कम महत्वपूर्ण नहीं है।

उद्देश्य :

1. स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का भाव विकसित करना।
2. खेल-भावना का विकास करना।
3. स्वस्थ स्पर्द्धा की भावना जागृत करना।
4. साथियों के मध्य सौहार्द एवं सहयोग की भावना विकसित करना।
5. शरीर की मांस-पेशियों को सशक्त बनाना तथा शारीरिक स्फूर्ति बढ़ाना।
6. योगासन द्वारा शरीर के आन्तरिक अवयवों को शक्ति-सम्पन्न करना।
7. सम्पूर्ण शरीर को लचीला बनाना।
8. पाचन तन्त्र को क्रियाशील बनाना।
9. देश की रक्षा हेतु स्वस्थ नागरिकों का निर्माण करना।
10. खेल द्वारा मनोरंजन प्रदान करना।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
प्रारम्भिक क्रियाएं		
● इधर-उधर दौड़ना	● यह क्रिया खुले मैदान में शिक्षक/शिक्षिका के संकेत पर होगी। बच्चे किसी भी प्रकार की कक्षा सजावट में खड़े होंगे। जैसे- गोले में दौड़ाकर, मैदान में इधर-उधर दौड़ाकर करायी जा सकती है।	● क्रियाओं के बीच में शिक्षक/ शिक्षिका द्वारा अवलोकन एवं सुधार कराया जाए।
● बाहु का व्यायाम	● दोनों हाथ सामने तानना, वापस लाना, दाएँ-बाएँ तानना, वापस लाना। ● व्यायाम सावधान की अवस्था में होगा।	● शिक्षक द्वारा सतत् निरीक्षण एवं सुधार करना।
● पैर का व्यायाम	● कमर कस अवस्था में बायाँ पैर सामने तानना, वापस लाना, दायाँ पैर सामने तानना, वापस लाना, हाथ नीचे करना।	● शिक्षक द्वारा सतत् निरीक्षण एवं सुधार करना।
● धड़ का व्यायाम	● हाथ कन्धे मोड़ अवस्था से धड़ बाएँ मोड़ना, वापस लाना। धड़ दाएँ मोड़ना, वापस लाना। हाथ नीचे करना।	● शिक्षक द्वारा सतत् निरीक्षण एवं सुधार करना।
● स्फूर्तिदायक व्यायाम	● पैर कूद खोलते हुये सिर के ऊपर दोनों हाथ से ताली बजाना। ● पैर मिलाते हुए दोनों हाथ नीचे लाना। **नोट** : शिक्षक इस व्यायाम तालिका के अतिरिक्त स्वयं नई तालिकाएं बनाकर व्यायाम करा सकते हैं।	● शिक्षक द्वारा सतत् निरीक्षण एवं सुधार करना।
कौशल के अभ्यास :		
● कम तथा लंबी दूरी की दौड़	● सीधे मैदान में खड़े होकर दौड़ का आरम्भ करना, दौड़ने की सही अवस्था सिखाना, पहले धीमी तथा फिर तेज गति से दौड़ना सिखाना, काऊच विधि से स्टार्ट लेना सिखाना।	● बच्चों के दौड़ते समय शिक्षक उनकी त्रुटि में सुधार करेंगे।
● लम्बी कूद	● उछाल पर दोनों पैरों को मिलाकर खड़े होना, हाथों को झुलाते हुए पीछे से सामने लाकर शरीर ऊपर उठाना, उछाल लेते हुये पिट पर गिरना	● पिट पर गिरते समय बच्चों को सही निर्देश देना।
● ऊंची कूद	● बच्चों को कद अनुसार हाई जम्प पोल पर बार निपिल ऊचाईयों में रखकर उछाल दिलाना, खड़े-खड़े उछाल दिलाना, एक पैर से उछाल दिलाना तथा दोनों पैरों से उछाल देना।	● उछाल लेकर पिट पर गिरने की सही स्थिति का मूल्यांकन करना।
● दूरी पर फेंकना	● फेंकने के विभिन्न उपकरण जैसे- गोला, चक्का, भाला तथा हैमर आदि को फेंकने की निश्चित दूरी पर बच्चों को खड़ा करके बारी-बारी उनसे फेंकवाना प्रत्येक बच्चे की फेंकी गयी दूरी को नापना।	● फेंकते समय बच्चों को कौशल का अभ्यास करना।
● रस्सी कूदना (केवल बालिका के लिए)	● बालिकाओं को सूत की बनी रस्सी के कूदने को कहना। निश्चित संख्या में रस्सी कुदवाना, एक पैर से रस्सी कुदवाना, दोनों पेर से रस्सी कुदवाना, लम्बी रस्सी से सामूहिक रूप में रस्सी कुदवाना	● शिक्षक द्वारा सतत् निरीक्षण कार्य किया जायेगा।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
योगासन :		
● गरूड़ासन	● इस आसन में दोनों पैरों को क्रास बनाकर पंजे को पिडली पर फंसाना, दोनों बाजू से क्रास बनाकर नमस्कार की मुद्रा बनाना, आसन को उल्टे क्रम में खोलना।	● शिक्षक द्वारा निरीक्षण करना कि आसन धीरे-धीरे पूरा किये जाए।
● द्विपाद हस्तासन	● दोनों हाथों को धीरे-धीरे श्वास भरते हुये दाएँ-बाएँ फैलाना तथा सर के ऊपर तानना, धड़ को झुकाते हुए दोनों हाथों से टखने पकड़ना तथा इसी समय श्वास छोड़ना। इसी प्रकार उल्टा क्रम से आसन खोलना।	● शिक्षक देखे कि टखने पकड़ते हुए बच्चों का घुटना न मुड़ने पाए।
● भुजंगासन	● पेट के बल लेटकर हाथों को अगल-बगल कोहनी से मोड़कर कन्धे के पास रखना पैर मिले रहें। श्वास लेते हुए कमर तक धड़ को उठाना। गर्दन पीछे डालना, श्वास छोड़ते हुये वापस आना।	● शिक्षक द्वारा बच्चे के आसन का अवलोकर करना तथा त्रुटि में सुधार करना।
● उत्कुट आसन	● दोनों हाथों को कंधे की सीध में फैलाकर एड़ी ऊपर उठाना। धीरे-धीरे श्वास निकालते हुए नीचे बैठना, कूल्हे एड़ी को नहीं छुएंगे। हाथ कंधे की सीध में ही रहेंगे। फिर श्वास निकालते हुए हाथ व एड़ी वापस लाना।	● शिक्षक द्वारा बच्चे के आसन का अवलोकन करना तथा त्रुटि में सुधार करना।
● सूर्य नमस्कार	सूर्य नमस्कार की बारह अवस्था पहले धीरे-धीरे फिर तेज गति से करना। ● हाथ नमस्कार की मुद्रा से श्वास लेते हुए हाथ तथा धड़ को पीछे ले जाना। ● श्वास निकालते हुए हाथों से झुककर पैरों के सामने हथेली से जमीन छूना, घुटने सीधे रहना। ● बायाँ पैर पीछे ले जाना, बाएँ पैर का घुटना सीने के पास तथा दोनों हाथ दाएँ-बाएँ रखना और गहरी श्वास लेना। ● दायाँ पैर पीछे ले जाना, सिर से पंजे तक पूरे शरीर का ढाल बनाना तथा धीरे-धीरे श्वास निकालना। ● धड़ को पीछे ले जाते हुए एड़ी पर कूल्हे रखना, हाथों को सामने जमीन पर रखते हुए माथा ज़मीन पर रखना, श्वास क्रिया साधारण रहेगी। ● धड़ को सामने लाते हुए हाथों, माथा, सीना, घुटने तथा दोनों पंजों को जमीन पर रखना। श्वास क्रिया साधारण रहेगी। ● भुजंगासन लगाकर श्वास अन्दर लेना (आसन नं. 3) ● हाथों को धड़ से ऊपर उठाते हुए शरीर से पर्वत का आकार बनाना। कूल्हे ऊपर, एड़ी पंजा जमीन पर। श्वास बाहर निकालना। ● बायाँ पैर आगे रखते हुए सूर्यनमस्कार की नं.-3 की अवस्था लगाना श्वास लेना। ● सूर्य नमस्कार की नं. 2 की अवस्था लगाना साथ ही श्वास बाहर निकालना। ● सूर्य नमस्कार की नं. 1 की अवस्था लगाना श्वास अन्दर लेना। ● सूर्य नमस्कार की तैयारी अवस्था लगाना तथा श्वास बाहर करना।	● शिक्षक द्वारा बच्चे के आसन का अवलोकन करना तथा त्रुटि में सुधार करना।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
जिमनास्टिक : ***फर्श पर व्यायाम***		
● फारवर्ड रोल	● मोटी चटाई या गद्दे के सिरों पर बच्चे खड़े होंगे। प्रत्येक बच्चा चटाई पर झुकते हुए सिर को अन्दर ले जाकर शरीर का भार हथेलियों पर डालकर गर्दन और पीठ के बल आगे रोल करेगा। रोल करते समय घुटने मुड़े रहेंगे।	● रोल करते समय शिक्षक को गर्दन व पीठ का सहारा देना होगा।
● मेंढ़क चाल	● दोनों हाथों एवं पैरों पर फुदकते हुए आगे बैठना।	● शिक्षक द्वारा सतत् मूल्यांकन होना।
● एयरो ड्राइव	● सामने पैरों से 6 मी. की दूरी पर रुमाल रखकर सीधे खड़े हों। दायां हाथ सामने की ओर तिरछा ऊपर उठाना। बायां बाजू पीछे की ओर नीचे बायी टांग को उठाते हुए धड़ को आगे झुकाकर रुमाल उठाना।	● शिक्षक द्वारा सतत् मूल्यांकन होना।
● चूजा चाल	● घुटनों के बल उकडू बैठकर हाथों को घुटनों के नीचे से गोलाकार पकड़कर इस स्थिति में पंजों के बल चलना।	
उपकरण पर व्यायाम		
● बीम पर	● बीम पर बारी-बारी बच्चों का चढ़ना, तालबद्ध कदम से चलना, बीम पर से उतरना।	● शरीर सन्तुलन से सावधानी रखने के लिए शिक्षक द्वारा सतत् मूल्यांकन।
● वोल्टिंग हार्स	● वोल्टिंग हार्स से साधारण कूद, घुटने ऊपर उठाते हुए कूदना, थ्रो वाल्ट तथा हेन्ड स्प्रिंग।	● शरीर सन्तुलन से सावधानी रखने के लिए शिक्षक द्वारा सतत् मूल्यांकन।
● पिरामिड	● सात तथा नौ बच्चों द्वारा पिरामिड बनवाना।	● शरीर सन्तुलन से सावधानी रखने के लिए शिक्षक द्वारा सतत् मूल्यांकन।
लेजिम :		
● लेजिम स्कन्ध	● लेजिम को बाएँ हाथ में ले जाकर बाएँ कन्धे पर रखना। लकड़ी को हैन्डल पीछे तथा लोहे के छल्ले सामने रहेंगे। दौड़ते कूदते समय चलते समय लोहे की छड़ बाएं हाथ से पकड़ी जाएगी।	● शरीर द्वारा बच्चों की त्रुटियों का सुधार करना।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
● आराम की अवस्था	● लोहे की छड़ से दाएँ हाथ से पकड़ना और दाएँ ओर लटके रहना।	● शिक्षक द्वारा बच्चों की त्रुटियों का सुधार करना।
● होशियार	● यह कार्य 2 की गिनती में होगा। एक कहने पर लोहे की छड़ को दाएं हाथ से पकड़ना। दो कहने पर बाएं कन्धे से तानकर सामने खड़े रुप में पकड़ना, हैन्डिल आगे छड़ सीने की ओर रहेगी।	● शिक्षक द्वारा बच्चों की त्रुटियों का सुधार करना।
● दाएँ-बाएँ हाथ हरकत	● होशियार की अवस्था से लेजिम को दायीं ओर मुंह के सामने दोनों हाथों से खोलना, हाथ तो रहेंगे, निगाह (दृष्टि) लेज़िम के बीच में रहेगी। ● वापस होशियार की अवस्था में आना। ● नं. एक की क्रिया को बायीं ओर करना। ● वापस होशियार की अवस्था में आना (यह कार्य १६ की गिनती में होगा)	● शिक्षक द्वारा बच्चों को सतत् निरीक्षण एवं सुधार
● दाएँ-बाएँ पांव हरकत	होशियार अवस्था के साथ घुटनों को समकोण तक उठाते हुए पंजें का मुंह जमीन की ओर। ● दायाँ पैर बायीं ओर नीचे लाते हुए रखना, लेजिम जमीन से १५ सेमी ऊपर खोलना। ● लेजिम होशियार की अवस्था में लाना तथा अब बाएं घुटने से समकोण बनाना। ● दायीं ओर नीचे झुकते हुए बाएँ पैर को नीचे रखते हुए १५ सेमी जमीन से ऊपर लेजिम को खोलना। ● लेजिम शुरू की अवस्था में लाना (यही कार्य १६ की गिनती में होगा।)	● शिक्षक द्वारा बच्चों को सतत् निरीक्षण एवं सुधार
● झुकना हरकत	● दायाँ पैर ऊपर उठा हो, लेजिम होशियार अवस्था से समकोण पर धड़ नीचे झुकाते हुए दाएँ पैर नीचे रखना तथा बाएँ पैर के सामने लेजिम खोलना। लेजिम बन्द करते हुए घुमाकर दाएँ पैर के सामने खोलना। यह चार की संख्या में होगा।	● शिक्षक द्वारा बच्चों को सतत् निरीक्षण एवं सुधार
मार्चिंग :		
● सावधान	● दोनों पैरों को एड़ी को मिलाना, पंजे सामने से ३-४ इंच के फासले पर रहेंगे। हाथ बगल से सटे रहेंगे। गर्दन सीधे शरीर स्थिर तथा नजर सामने होगी।	● शिक्षक द्वारा बच्चों को सतत् निरीक्षण एवं सुधार ।
● विश्राम	● बायाँ पैर 12 इंच की दूरी पर बायीं ओर रखना, दोनों हाथ पीछे ले जाकर दाएँ हाथ की हथेली से बाएँ हाथ की हथेली रखना तथा शरीर का भार दोनों पैरों पर बराबर लाना।	● शिक्षक द्वारा बच्चों को सतत् निरीक्षण एवं सुधार ।
● आराम से	● यदि विश्राम की अवस्था में देर तक रहना है तो यह आदेश देना। इसमें विश्राम की अवस्था में ही शरीर ढीला छोड़ दिया जाता है।	● शिक्षक द्वारा बच्चों को सतत् निरीक्षण एवं सुधार ।
● जैसे-थे	● यदि कोई क्रिया या अवस्था सही न हो तो उसी अवस्था में वापस आना।	● शिक्षक द्वारा बच्चों को सतत् निरीक्षण एवं सुधार ।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
● बैठ जाओ	● इस आदेश पर उछलकर दोनों पैरों के क्रास बनाते हुए आलथी पालथी में बैठ जाना। यह क्रिया 2 की गिनती में होगी।	● शिक्षक द्वारा बच्चों को सतत् निरीक्षण एवं सुधार
● खड़े हो	● धड़ को ऊपर उठाते हुए छोटी कूद में खड़े होना साथ ही सावधान की अवस्था में आना। यह क्रिया 2 की संख्या में होगी।	● शिक्षक द्वारा बच्चों को सतत् निरीक्षण एवं सुधार
● दाएँ-मुड़	● सावधान से दायीं ओर दाएँ पैर की एड़ी घुमाना फिर बाएँ पैर को उठाकर दाएँ पंजे के साथ मिलाकर रखना। यह कार्य चार की संख्या में होगा।	● शिक्षक द्वारा बच्चों को सतत् निरीक्षण एवं सुधार
● बाएँ-मुड़	● इस आदेश पर सावधान से बायीं ओर बाएँ पैर की एड़ी घुमाना तथा दाएँ पैर के पंजे को उठाकर बाएँ पैर के साथ मिलाकर सावधान की अवस्था में खड़े होना। कार्य चार की संख्या में होगा।	● शिक्षक द्वारा बच्चों को सतत् निरीक्षण एवं सुधार ।
● पीछे-मुड़	● सावधान से दाएं पैर की एड़ी को पीछे घुमाते हुए बाएं पैर को उठाकर दाएं पैर से मिलाकर रखना, यह क्रिया चार की संख्या में होगी।	● शिक्षक द्वारा बच्चों को सतत् निरीक्षण एवं सुधार ।
● आधा दाएँ या बाएँ मुड़ना	● यह क्रिया दाएँ या बाएँ मुड़ के जैसे ही होगी परन्तु धड़ अपने स्थान से 45^0 के कोण पर मुड़ेगा।	● शिक्षक द्वारा बच्चों को सतत् निरीक्षण एवं सुधार ।
● सलामी-दो	● सावधान की अवस्था में दाएँ हाथ की दायीं ओर से गोलाकार रूप में घुमाकर चुस्ती से हथेली को माथे तक ले जाना, पांचों उंगलियां मिली रहेंगी। तर्जनी उंगली का सिरा आंख से एक इंच ऊपर रहेगा कोहनी कंधे की सीध में होगी। ● बहुत कम समय में हाथ शीघ्रता से नीचे लाना।	● शिक्षक द्वारा बच्चों को सतत् निरीक्षण एवं सुधार ।
● कक्षा-एक लाइन-बन	● इस आदेश पर पहला बालक शिक्षक के सामने सावधान की अवस्था में खड़ा होगा, अन्य बच्चों को कद के अनुसार उसके बायीं ओर कन्धे से कन्धा मिलाकर खड़े हो जायेंगे। छोटे बालक शिक्षक के बायीं ओर तथा लम्बे बालक शिक्षक के दायीं ओर खड़े होंगे।	● शिक्षक द्वारा बच्चों को सतत् निरीक्षण एवं सुधार ।
● गिनती-कर	● गिनती कर के आदेश में शिक्षक यह भी बताएगा कि कितनी की संख्या में गिनती होगी, गिनती दायीं ओर अर्थात् छोटे बच्चों की ओर से आरम्भ होगी तथा 1, 2, 3, 4 के पश्चात् बच्चा पुनः 1 की गिनती बोलेगा। इस प्रकार सम्पूर्ण कक्षा 4 लाइन में विभक्त हो जाएगी।	● शिक्षक द्वारा बच्चों को सतत् निरीक्षण एवं सुधार ।
तैराकी :		
● तैरने के प्रारम्भिक अभ्यास	● कमर तक पानी में बालक को ले जाना। घुटनों को मोड़ना जिससे पानी गले और ठुड्डी तक आ जाए। बालक को यह एहसास कराना कि पानी शरीर को किस प्रकार ऊपर उठाता है और सहारा देता है।	● शिक्षक को स्वयं बालक के साथ तैराकी करना तथा बालक की उत्साह क्षमता का मूल्यांकन करना।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
● पानी के अन्दर श्वास व्यायाम	● हाथों को घुटनों पर रखकर आगे झुकाते हुए चेहरे को पानी में डालना तथा साथ ही पानी के अन्दर श्वास रोकने का अभ्यास कराना। फिर एक गहरी सांस से धीरे-धीरे नाक तथा मुंह द्वारा पानी निकालना। ● कमर तक पानी में शरीर को आगे झुकाना, हाथ, घुटना तथा चेहरा पानी के अन्दर करना। चेहरे को एक ओर मोड़ते हुए मुंह से सांस लेना, पानी केअन्दर ही सांस बाहर निकालना। यह क्रिया नाक तथा मुंह के द्वारा होगी, इस व्यायाम को बार-बार दोहराना।	● शिक्षक को स्वयं बालक के साथ तैराकी करना तथा बालक की उत्साह क्षमता का मूल्यांकन करना।
लोकगीत व लोक नृत्य:		
● कोई भी स्थानीय लोकगीत एवं लोकनृत्य सिखाया जा सकता है।	● प्रथम लोकगीत को टुकड़ों में गाकर गाना सिखाना। ● लोकगीत के भावों के आधार पर सरल तथा सुबोध नृत्य क्रियाएं संख्या में सिखाना। उसका अभ्यास कराना। ● नृत्य क्रियाओं को संख्या में सिखाने के पश्चात् उसे गीत के बोलों के साथ सिखाना। अभ्यास कराना।	● शिक्षक को नृत्य के कदमताल स्वयं करके दिखाना तथा सतत् मूल्यांकन करना।
● राष्ट्रगान	● राष्ट्रगान का इतिहास तथा शब्द अर्थ बताना। सही विधि से गाने की स्थिति बताना, निर्धारित समय 52 सेकेन्ड के अंदर गाने का अभ्यास कराना।	● शिक्षक द्वारा गाना गाने का सतत् मूल्यांकन
● देशप्रेम गीत व भावगीत	● देशप्रेम भावना का एक गीत लिखाना, गीत को सर्वप्रथम व्यक्त करने के लिए संख्या में नृत्य सिखाना, जैसे कदम ताल या मार्चिंग करते हुए गीत के बोलों को हाथ, पैर एवं चेहरे से उसके भाव व्यक्त करना।	● शिक्षक द्वारा गाना गाने का सतत् मूल्यांकन
छोटे खेल :		
● चोर और शाह	● इस खेल में 2 या 4 की संख्या में चोर बनाए जाते हैं। शेष खिलाड़ी मैदान में इधर-उधर बिखर जाते हैं। प्रत्येक चोर अधिक से अधिक खिलाड़ियों को छूने का प्रयत्न करेगा, यदि खिलाड़ी चोर द्वारा छू लिया जाए तो वह अपनी जगह बैठ जाता है। जब कोई शाह खिलाड़ी उसे छू ले तो वह पुन: उठकर दौड़ने लगता है। इस प्रकार खेल चलता रहता है।	● शिक्षक द्वारा खेल का निरीक्षण कि खेल पूर्णत: नियम के साथ खेला जाए।
● छुआ-छुअव्वल	● यह खेल इसी प्रकार खेला जाता है जिस प्रकार साधारण छुआ छुअव्वल खेल होता है। इसमें चोर खिलाड़ी को हाथ से छूने के बजाय, किसी कोड़े से मारता है फिर वह कोड़े को जमीन पर गिरने के बाद खिलाड़ियों में शामिल हो जाता है। जिस खिलाड़ी को कोड़ा लगा था वह कोड़ा उठाकर दूसरे खिलाड़ी को क्रोड़ा मारने का प्रयत्न करेगा। इसी प्रकार खेल चलेगा।	● शिक्षक द्वारा खेल का निरीक्षण कि खेल पूर्णत: नियम के साथ खेला जाए।
● मैं आया तू भाग	● दो बच्चो को छोड़कर कक्षा के सभी बच्चे 2 के ज़ोड़े में एक घेरे में एक दूसरे के पीछे खड़े हो जाते हैं। बचे हुए दोनों खिलाड़ी में एक शाह और दूसरा चोर बनता है। चोर खिलाड़ी पहले खिलाड़ी का पीछा करता है जो घेरे में खड़े खिलाड़ी के बाहर से भागता हुआ किसी जोड़े के आगे खड़ा हो जाता है उस जोड़े का पीछे वाला खिलाड़ी दौड़ने वाले को छू लेता है तो वह दौड़ाने वाला चोर बच जाता है तथा पीछा करने वाला अब दौड़ने लगता है। इस प्रकार खेल चलता रहता है।	● शिक्षक द्वारा खेल का निरीक्षण कि खेल पूर्णत: नियम के साथ खेला जाए।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
• पागल वाला	• सभी बच्चे मैदान में खड़े होते हैं। शिक्षक द्वारा एक टेनिस गेंद हवा में उछाली जाती है सभी बच्चे गेंद को पकड़ने की कोशिश करते हैं जो बच्चा सफल होता है वह गेंद उठाकर दूसरे बच्चों को मारता है। अब कोई भी गेंद उठा सकता है ओर वह दूसरे बच्चों को मारेगा। इस प्रकार खेल चलता रहता है।	• शिक्षक द्वारा खेल का निरीक्षण कि खेल पूर्णत: नियम के साथ खेला जाए।
• जोड़ी ढूंढ़	• इस खेल में खेलने वाले विषम संख्या में होते हैं। सभी बच्चे मैदान में फैल जाते हैं। वे इधर-उधर चलते फिरते या दौड़ते रहते हैं। शिक्षक द्वारा संकेत मिलने पर प्रत्येक बच्चा अपने साथी के साथ जोड़ा बनाने का प्रयास कर उससे अपनी पीठ जोड़कर खड़ा हो जाता है। जो अपना साथी नहीं ढूंढ पाता उसे काला निशान मिलता है। किसी बच्चे को तीन बार काला निशान मिलने पर दंड मिलता है।	• शिक्षक द्वारा खेल का निरीक्षण कि खेल पूर्णत: नियम के साथ खेला जाए।
बड़े खेल :		
• लंगड़ी	• इस खेल में आयु वर्ग के अनुसार 35x35 या 40x40 फीट का वर्गाकार मैदान चाहिए। इसके किसी एक कोने पर 2.5 फीट लम्बा व चौड़ा द्वार बनाया जाता है। 9-9 खिलाड़ी की दो टीम होती है। एक टीम आक्रमण करती है तो दूसरी बचाव करती है। *टास द्वारा निर्णय लिया जायेगा कि* कौन सी टीम बचाव या आक्रमण लेती है। दोनों पक्षों के लिए दो-दो पाली होती है। प्रत्येक पाली सात मिनट की होती है। बचाव पक्ष के खिलाड़ी प्रथम बार में 3 के समूह में मैदान में प्रवेश करते हैं। आक्रमण पक्ष का एक खिलाड़ी लंगड़ी से दौड़ाता हुआ उन्हें छूकर आऊट करने का प्रयत्न करता है। यदि बचाव पक्ष के खिलाड़ी का पांव वर्गाकार मेदान के बाहर हो जाता है तो वह भी आऊट होगा। आक्रमणकर्ता बाहर होता है तो बचाव को 10 अंक मिलते हैं यदि वह बचाव पक्ष के खिलाड़ी को आऊट करता है तो उसको 10 अंक मिलेंगे। प्रत्येक टीम दो बार आक्रमण और दो बार बचाव करती है।	• शिक्षक द्वारा खेल का अवलोकन एवं मूल्यांकन • खेल पूर्णत: नियम से खेला जाना चाहिए।
• कबड्डी	• यह खेल सात-सात खिलाड़ियों की दो टीमों के मध्य खेला जाता है। 15-15 मिनट की दो पाली होती है और दोनों के बीच 5 मिनट का अन्तराल होता है। इसका मैदान कक्षा 6 से 8 तक के बच्चों के लिए 6.5 मी. लम्बा तथा 6.50 मी. चौड़ा है। मैदान मध्य से 2 भागों में बंटा होता है। मध्य रेखा से 2.50 मी. दोनों ओर बॉक लाइन होती है जिसे आक्रमक खिलाड़ी पार करना जरूरी रहता है। बारी-बारी प्रत्येक दल के खिलाड़ी कबड्डी शब्द का एक श्वास में उच्चारण करते हुए विरोधी टीम के मैदान में जाता है। उनको छूकर आऊट करने का प्रयत्न करता हैं ऐसा करने पर उस टीम को अंक प्राप्त होते हैं। परन्तु यदि वह बचाव पक्ष की टीम के बालकों द्वारा पकड़ लिया जाता है और वह छुड़ाकर सुरक्षित अपने मैदान में नहीं आ पाता तो स्वयं आऊट माना जाता है यदि एक टीम के सारे खिलाड़ी आऊट हो जाते हैं तो विरोधी टीक को 2 अंक अतिरिक्त मिलते हैं जिन्हें लोना कहा जाता है। 15 मिनट का समय समाप्त हाने पर पाली बदल ली जाती है। समय के अन्त पर जिस टीम के अंक अधिक होते हैं वह विजयी घोषित होती है।	• शिक्षक द्वारा खेल का अवलोकन एवं मूल्यांकन। • खेल पूर्णत: नियम से खेला जाना चाहिए।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
विभिन्न खेलों के मूलभूत कौशल सिखाना :		
• कबड्डी	• केन्ट, रेड, हाथ की पकड़, पैर की पकड़, हाथ से छूना, पैर से छूना, मध्य रेखा को छूना, छूने के पश्चात् सुरक्षित अपने पाले में लौटना आदि का कौशल सिखाने का अभ्यास निरन्तर कराया जाय तत्पश्चात् नियमों में सरलता लाते हुए खेल खिलाना।	• शिक्षक द्वारा सतत् निरीक्षण की कौशल सीखने में त्रुटि न हों, त्रुटियों का सुधार भी करना।
• खो-खो	• वर्ग में बैठने तथा उठने की स्थिति, क्रास लेन छोड़ने की तकनीक, खो देने की तकनीक, धावक द्वारा चकमा देने की तकनीक, इन तकनीकों को निरन्तर अभ्यास कराना तथा नियमों में ढिलाई के साथ खेल अभ्यास।	• शिक्षक द्वारा सतत् निरीक्षण की कौशल सीखने में त्रुटि न हों, त्रुटियों का सुधार भी करना।
• फुटबाल	• किक, पैर से गेंद मारना, स्थिर, हिलती, चलती, लुढ़कती तथा तेज चलती गेंद पर किक मारना, पांव के भीतरी एवं बाहरी भाग से गेंद रोकना, सामने से आती हवा में आती गेंद को पांव से रोकना, सीधा एवं तिरछा पास, थ्रो इन, गेंद पकड़ना, पैरों की स्थिति। सरल नियमों के साथ खेल का अभ्यास करना।	• शिक्षक द्वारा सतत् निरीक्षण की कौशल सीखने में त्रुटि न हों, त्रुटियों का सुधार भी करना।
• हाकी	• स्टिक पकड़ना, गेंद को हिट करना, रोकने की तकनीक, सामने से तथा बगल से आती गेंद को रोकना, पुश तकनीक, स्थिर तथा लुढ़कती गेंद पर पुश करना, आगे पास, तिरछा पास तथा नियमों में ढिलाई के साथ सम्पूर्ण खेल का अभ्यास कराना।	• शिक्षक द्वारा सतत् निरीक्षण की कौशल सीखने में त्रुटि न हों, त्रुटियों का सुधार भी करना।
• बॉस्केट बॉल	• गेंद पकड़ना, ड्रिबल खड़े एवं चलते हुए करना, पासिंग, दोनों हाथ से, ऊपर पास दोनों हाथ इप्पा पास, शूटिंग तकनीक, खड़े होकर दो कदम लेकर, दोनों हाथ सीने पर रखकर शूटिंग, गेंद प्राप्त तथा सरल नियमों के साथ खेल का अभ्यास करना।	• शिक्षक द्वारा सतत् निरीक्षण की कौशल सीखने में त्रुटि न हों, त्रुटियों का सुधार भी करना।
• वाली बॉल	• सर्विस तकनीक, अन्डर हैन्ड, गेंद नेट के ऊपर मारना, गेंद प्राप्त करते समय खड़े रहने की स्थिति, स्थिर अवस्था में हाथ ऊपर कर पास देना, आगे पीछे दाएं बाएं कदम लेते हुए पास देना, नेट की ऊंचाई कम करते हुए सरल नियमों द्वारा खेल अभ्यास।	• शिक्षक द्वारा सतत् निरीक्षण की कौशल सीखने में त्रुटि न हों, त्रुटियों का सुधार भी करना।
• बैडमिंटन	• रैकेट पकड़ना, सर्विस तकनीक, शटल काक लौटाना, दबाकर लौटाना तथा नियमों से अवगत कराते हुए सरल नियमों द्वारा खेल अभ्यास कराना।	• शिक्षक द्वारा सतत् निरीक्षण की कौशल सीखने में त्रुटि न हों, त्रुटियों का सुधार भी करना।
• टेबिल टेनिस	• बैट पकड़ना, सर्विस तकनीक, गेंद लौटाना तथा सरल नियमों के साथ पूरे खेल का अभ्यास करना।	• शिक्षक द्वारा सतत् निरीक्षण की कौशल सीखने में त्रुटि न हों, त्रुटियों का सुधार भी करना।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
प्रारम्भिक क्रियाएं :		
● कक्षा 6 में जो क्रियाएं दी गई हैं वही समस्त क्रियाएं करना।	● कक्षा 6 में बताई गयी विधि के अनुसार ही कराया जायेगा।	● शिक्षक द्वारा सतत् मूल्यांकन
व्यायाम :		
● बाहु का व्यायाम	● सावधानी से दोनों हाथ दाएँ बाएँ तानना, ऊपर तानना, पुन: दाएं बाएं तानना हाथ नीचे करना, यह क्रिया चार की संख्या में होगी।	● शिक्षक द्वारा सतत् मूल्यांकन
● पैर का व्यायाम	● कमरकस अवस्था से बाएँ पैर को सामने तानना, लंज करना, सीधे होना, पैर वापस लाना, यही क्रिया दाएं पैर से भी होगी। कार्य चार की संख्या में कराया जाएगा।	● शिक्षक द्वारा सतत् मूल्यांकन
● धड़ का व्यायाम	● कमरकस अवस्था में धड़ सामने झुकाना, सीधे होना, धड़ पीछे झुकाना, सीधे होना, हाथ नीचे करना, कार्य चार की संख्या में होगा।	● शिक्षक द्वारा सतत् मूल्यांकन
● स्फूर्तिदायक व्यायाम	● पैर कूद खोलते हुए हाथ दाएँ बाएँ तानना, पैर कूद मिलाते हुए हाथ नीचे करना, यह क्रिया चार की संख्या में होगी।	● शिक्षक द्वारा सतत् मूल्यांकन
● विशेष कौशल के अभ्यास	● शिक्षक किसी भी दूसरी प्रकार के व्यायाम को तालिका में सम्मिलित कर सकता है।	● शिक्षक द्वारा सतत् मूल्यांकन
धावन प्रतियोगिता :		
● कम तथा लंबी दूरी की प्रतियोगिता	● खड़े होकर दौड़ का आरम्भ देना ● हाथ पैर की सही स्थिति दौड़ के समय रहना ● पंजों पर दौड़ने का अभ्यास कराना ● रफ्तार तेज बढ़ने पर बल देना ● दो या कई छात्राओं के बीच प्रतियोगिताएं कराना।	● शिक्षक द्वारा सुधार कार्य निरन्तर कराया जाएगा।
● मैदानी प्रतियोगिता, लम्बी कूद	● छोटी या तेज दौड़ या पहुँच ● उछाल लेना ● हवा में उड़ना ● पिट पर गिरना	● शिक्षक द्वारा सतत् निरीक्षण एवं कार्य का मूल्यांकन।

विषय- शारीरिक शिक्षा, खेल तथा योगासन

अध्यापक के लिए आवश्यक समर्थन :

1. शारीरिक शिक्षा से संबंधित प्रारम्भिक क्रियाओं का उचित प्रशिक्षण अध्यापकों को दिया जाए।
2. कौशलात्मक अभ्यास जैसे- लम्बी कूद, दूरी तक दौड़, लम्बी कूद, ऊंची कूद, गोला फेंक, रस्सी कूद आदि क्रियाओं के आयोजन हेतु अध्यापकों को समय-समय पर उचित प्रशिक्षण दिया जाए।
3. योगासन में कुशल प्रशिक्षकों द्वारा अध्यापकों को प्रशिक्षण दिलवाया जाए।
4. आसनों से संबंधित चार्ट और मॉडल अध्यापकों को उपलब्ध कराया जाए।
5. जिम्नास्टिक के अभ्यास हेतु मोटे गद्दे, मोटी चटाई, बीम, बोल्टिंग, पिरामिड आदि उपलब्ध कराए जाएं।
6. संदर्शिकाएँ तथा विशिष्ट साहित्य शिक्षकों को उपलब्ध कराया जाए।

स्काउट/गाइड

सामान्य उद्देश्य :

1. शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक तथा चारित्रिक विकास के साथ बच्चों के समग्र व्यक्तित्व का विकास करना।
2. बच्चों के अन्त:करण को संस्कारयुक्त बनाकर सच्ची मानवता का विकास करना।
3. व्यक्तित्व परिष्कार एवं नैतिक शिक्षा - साधना, संयम, धैर्य, परोपकार की भावना के विकास हेतु अवसर प्रदान करना।
4. ईश्वर में आस्था विकसित करते हुए विश्वबंधुत्व की भावना का विकास करना।
5. विश्व शान्ति स्थापित करने के प्रति सचेष्ट करना।
6. समाजसेवा तथा देश सेवा की भावना विकसित करना।
7. स्काउट/गाइड के नियमों एवं प्रतिज्ञाओं में निहित आदर्शों को ग्रहण करने की क्षमता विकसित करना।
8. 'करके सीखो' की भावना जागृत करते हुए स्वावलम्बी बनाना।
9. प्राकृतिक वातावरण से सामीप्य स्थापित करने का अवसर उपलब्ध कराना।
10. कर्तव्य परायणता सेवाभाव, श्रमनिष्ठा, उत्तरदायित्व निर्वहन की भावना जागृत करना।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण		मूल्यांकन
● स्काउट मास्टर/गाइड कैप्टन को स्काउट्स तथा गाइड्स का प्रेरणा स्रोत बनना	● स्काउटिंग/गाइडिंग की उत्पत्ति का विस्तृत ज्ञान ● स्काउट/गाइड नियम और प्रतिज्ञा ● स्काउट/गाइड सिद्धान्त, चिह्न, प्रणाम और बायां हाथ मिलाना। ● नित्य घर पर भलाई का कार्य और न्यूनतम एक माह तक दैन्दिनी लिखना। ● स्काउट/गाइड गणवेश के भागों और पहनने की ठीक विधि का ज्ञान। ● राष्ट्रीय, भारत स्काउट और गाइड, विश्व स्काउट गाइड ध्वज की बनावट और महत्व का ज्ञान। ● राष्ट्र-गान उचित विधि से गाना। ● प्रार्थना और ध्वजगीत ठीक विधि से गाना। ● न्यूनतम दल/कम्पनी की चार बैठकों में प्रतिभाग **विशेष** : प्रवेश के विषयों से सन्तुष्ट होने पर स्काउट मास्टर/गाइड कैप्टन छात्र/छात्रा का दीक्षा संस्कार करेंगे।	● टोली प्रणाली के माध्यम से प्रशिक्षण ● सभी प्रकार के ध्वजों का प्रदर्शन ● कैसेट्स-टेप से गानों का अभ्यास।	● स्व मूल्यांकन। ● स्काउट मास्टर/गाइड कैप्टन द्वारा सतत् निरीक्षण। ● सीनियर स्काउट्स सीनियर गाइड्स का सानिध्य।
● प्रथम सोपान परीक्षा	● पेट्रोल, उसका झण्डा, सिंहनाद, गीत की जानकारी। ● स्वास्थ्य के नियमों की सामान्य जानकारी, बी.पी. की 6 कसरतें या 6 आसन या सूर्य नमस्कार का नियमित अभ्यास। ● हाथ और सीटी के संकेतों का ज्ञान और उनका अभ्यास। ● खोज के चिह्नों की जानकारी और एक मार्ग का अनुसरण। ● रस्सी के सिरे को सुरक्षित करना। ● निम्न गांठों को बांधना और उनके उपयोग जानना। ❖1. रीफ नाट 2. जुलाहा बन्ध 3. खूंटा फांस 4. लघुकर 5. ध्रुव गांठ 6. मछुआ गांठ 7. एक गोल फन्दा और दो अर्द्ध फांस ● ट्रुप/कम्पनी के ट्रुप गेम में भाग लेना।	● स्काउट/गाइड को प्रेरित करना। ● उपयुक्त प्रशिक्षण सामग्री उपलब्ध कराना। ● समाज के अन्य वर्ग का सहयोग प्राप्त करना।	● परीक्षा मासिक, लिखित एवं प्रायोगिक ● निरीक्षण तथा प्रेक्षण

	● सामान्य हलचल और साधारण व्यायाम का चुस्त रहने के निमित्त अभ्यास। ● प्राथमिक उपचार- प्राथमिक सहायता बाक्स की वस्तुओं की सूची का ज्ञान, रोलर और ट्रैंगुलर पट्टी, सस्पेंशन स्लिंग के प्रयोग का प्रदर्शन, कटने और खुरचने पर प्राथमिक उपचार करना। ● पेट्रोल/कम्पनी की दो बाहरी स्थान की बैठकों में या एक दिन की हाइक में भाग लेना। ● घर में लाभदायक कोई गैजेट या दस्तकारी की वस्तु बनाना। ● स्वच्छ रखने के लिए किसी पार्क, पानी का स्थान, बस स्टेशन, कोई सार्वजनिक स्थल या भवन चुनना व एक सप्ताह का कार्य करना। अथवा मच्छरों व मक्खियों के पनपने के स्थान का निरीक्षण और न्यूनतम एक माह तक सफाई देखना। गाइड्स के लिए- अपने माता पिता की सहायता से खाना बनाना, पानी का भण्डारण, सफाई का घरेलू उत्तरदायित्व समझाना।		
	● निम्नांकित कार्यों में किन्हीं दो में भाग लेना:- ❖ प्राकृतिक अध्ययन परियोजना पर अपने टोली नायक के साथ कार्य करना। ❖ अपने स्काउट मास्टर/गाइड कैप्टन से विचार-विमर्श करके स्काउट/गाइड नियम के किसी एक बिन्दु के अन्तर्गत सेवा कार्य करना और एक सप्ताह के अन्दर उसकी आख्या प्रस्तुत करना। ❖ गांव पंचायत, विकास क्षेत्र कार्यालय और नगरपालिका कार्यालय का भ्रमण और स्वैच्छिक संगठनों द्वारा की जाने वाली मुख्य सेवाओं का ज्ञान देकर अपने स्काउट मास्टर/गाइड कैप्टन को दस दिन के अन्दर आख्या प्रस्तुत करना। ● दीक्षित स्काउट/गाइड के रूप में 9 माह की सेवा। **विशेष:** प्रथम सोपान के विषयों को सफलतापूर्वक पूर्ण कर लेने पर स्काउट मास्टर/गाइड कैप्टन की संस्तुति पर कक्षा 6 से प्रोन्नति पाने के लिए स्थानीय/जिला संस्था भारत स्काउट्स और गाइड्स द्वारा विद्यार्थी को प्रथम सोपान का बैज तथा प्रमाण पत्र दिया जाएगा।		

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
द्वितीय सोपान परीक्षा :	**पायनियरिंक** ● लट्ठा फांस, रोलिंग हिच, मार लाइन स्पाइक/लीवर हिच अष्टाकार बन्धन, सादा, वर्गाकार और कर्णाकार बन्धन का प्रदर्शन जानना। शिविर के चार साधारण औजारों के प्रयोग किए जाने का प्रदर्शन करना।	● समाज सेवा शिविर में प्रतिभाग ● व्यावहारिक ज्ञान ● सामुदायिक कार्यों में अभिरूचि व सहभागिता।
	आग ● अधिक से अधिक दो तीलियों से खुले में लकड़ी जलाना और किरोसिन/गैस स्टोव को जलाना व स्वच्छ रखना। ● आग से सुरक्षा के उपाय जानना। ● आग बुझाने के लिए बाल्टी की जंजीर विधि का ज्ञान। ● सूखी घास में आग लगने को रोकने का उपाय। ● गैस स्राव की स्थिति में उपाय।	
	भोजन बनाना ● खुले में लकड़ी की आग पर या स्टोव पर दो व्यक्तियों के लिए दो प्रकार का सादा पदार्थ पकाना और अपनी टोली के लिए काफी या चाय बनाना।	
	कम्पास ● कम्पास का प्रायोगिक ज्ञान और 16 दिशाओं को जानना। ● रात्रि में ध्रुव तारा समूह द्वारा उत्तर दिशा का ज्ञान। ● कदम, वियरिंग और मानचित्र मापन की जानकारी।	
	प्राथमिक सहायता ● सेंट जान स्लिंग का प्रदर्शन। ● सद्यः स्ट्रेचर। ● दस मीटर तक जीवन रक्षक डोरी फेंकना। ● जलने और झुलसने, डंक लगने और नक्सीर का उपचार।	
	● अपने स्काउट मास्टर/गाइड कैप्टन को अपने घर व स्कूल के अच्छे व्यवहार के लिए सन्तुष्ट करना।	
	अनुमान लगाना ● सद्यः यंत्र (काम चलाऊ विधि) की सहायता से 100 मीटर तक की दो दूरियां/चौड़ाई का अनुमान लगाना। ● ट्रुप/कम्पनी के गेम में भाग लेना।	

	सिगनैलिंग ● फ्लैग/डिस्क/बजर विधियों में एक विधि से मोर्स सिगनैलिंग अथवा सीमाफोर सिगनैलिंग का ज्ञान व प्रदर्शन। ● अपनी गाइड कम्पनी की चार प्रार्थना सभाओं में भाग लेना।	
	दक्षता पदक ● निम्नांकित में एक दक्षता पदक प्राप्त करना- ❖ 1. रसोइया 2. पशुमित्र 3. माली 4. हैण्डीमैन/हैण्डीवोमैन 5. साइकिलिस्ट 6. लाण्डरर/लाण्ड्रेस। ● स्काउट कौशल का उपयोग करते हुए अपने समुदाय में एक माह तक स्काउटमास्टर द्वारा प्रायोजित सघन कार्य के लिए अपनी टोली/ग्रुप में प्रतिभाग करना।	
	निम्न से दो पूर्ण करना ● अपनी विरासत व संस्कृति की जानकारी तथा लागबुक तैयार करना। ● अपने प्रधानाचार्य के परामर्श से पेट्रोल के साथ कोई विकास योजना अपने स्कूल में चलाना। ● समाजसेवा शिविर में भाग लेना। ● किसी जातीय मेले में सेवा कार्य। ● अपने माता-पिता या पड़ोसियों से प्रदूषण समस्या पर वार्तालाप करना और उसकी रिपोर्ट लिखना।	
	● प्रथम सोपान स्काउट/गाइड के रूप में नौ माह की सेवा।	
	विषय: द्वितीय सोपान विषयों को सफलतापूर्वक पूर्ण कर लेने पर जिला बैज कमेटी द्वारा नियुक्त स्वतंत्र परीक्षकों की संस्तुति पर द्वितीय सोपान का बैज व प्रमाणपत्र कक्षा सात से प्रोन्नति पाने के लिए स्थानीय/जिला संस्था भारत स्काउट्स और गाइड्स द्वारा प्रदान किया जाएगा।	

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
तृतीय सोपान परीक्षा :	**शिविर कला** ● प्रथम सोपान में सीखी अन्य विधि से रस्सी के सिरे को सुरक्षित करना। ● खिंच खुलनी, फायरमैन, कुर्सी गांठ, भारवाहक गांठ, आई, बैक, शार्ट (Eye, Back, Short Splice) गांठ लगाना।	● सतत् निरीक्षण ● स्वमूल्यांकन ● प्रशिक्षण शिविर ● प्रायोगिक कार्य
	तैरना ● 50 मीटर तैरना। ● तैरने में सुरक्षा नियमों की जानकारी। ● मांस पेशियों की ऐंठन की चिकित्सा का ज्ञान।	
	अनुमान ● कोई दो ऊंचाई/गहराई बताना जो 30 मीटर से अधिक न हो। ● दो वजन का अनुमान लगाना जो 2 किलो से अधिक न हो। ● दो भिन्न प्रकार की चीजों का संख्यात्मक अनुमान। यथा- सिक्के, पत्थर, बिस्कुट आदि	
	प्राथमिक सहायता ● सदमा, बेहोशी, गला घुटना का उपचार। ● भुजा, कालर बोन या टांग की हड्डी की साधारण टूट का उपचार। ● मिर्गी आने पर और बिजली स्पर्श का उपचार। ● मुंह से मुंह विधि द्वारा बनावटी सांस देना।	
	नक्शा बनाना ● नक्शा पढ़ना, पैमाने की जानकारी, कन्वेन्शनल चिह्न, कण्टूर या ग्रिड की जानकारी, टूरिस्ट और सर्वे नक्शे को पढ़ना व नक्शे के अनुसार किसी मार्ग पर जाना या किसी में ले जाना। ● ट्रैंगुलेशन, प्लेन टेबिल और रोड ट्रैवर्स विधि से नक्शाा बनाना।	
	पायनियरिंग ● चाकू और कुल्हाड़ी का प्रयोग और उनसे सुरक्षा के नियमों की जानकारी। ● दो टोली पायनियरिंग परियोजनाओं का निर्माण और उनके प्रयोग किए जाने का प्रदर्शन। ● एक रात्रि के दल/कम्पनी शिविर में भाग लेना।	
	हाइक ● दूसरे स्काउट/गाइड के साथ साइकिल से क्रमश: 30 किमी/25 किमी या 10 किमी की पैदल हाइक करना और दस दिन के अन्दर स्काउट मास्टर/गाइड कैप्टन को आख्या प्रस्तुत करना।	

	भोजन बनाना ● चार व्यक्तियों के लिए खुले में भोजन बनाना।	
	● एकदल की साहसिक यात्रा में भाग लेना।	
	● एक (नाइट) रात्रि-खेल में भाग लेना।	
	सिगनलिंग ● मोर्स/सीमाफोर विधि से 30/25 शब्दों का सन्देश भेजना व प्राप्त करना।	
	● निम्नांकित प्रत्येक ग्रुप से एक दक्षता पदक उत्तीर्ण करना : ❖ ग्रुप क : नागरिक सुरक्षा, पायनियर, विश्व संरक्षण, सामुदायिक कार्यकर्ता। ❖ ग्रुप ख : नागरिक, बुक बाइण्डर, नेचुरलिस्ट, पाथ फाइण्डर	
	● निम्नांकित में किसी एक को पूरा करना और उसकी लागबुक तैयार करना: ❖ अपने ग्रुप/कम्पनी में राष्ट्रीय एकता पर वार्ता करना। ❖ ट्रुप कैम्प-फायर में वार्ता और प्रोफेट की कहानी सुनाना। ❖ अपने पेट्रोल काउंसिल में स्काउटिंग के माध्यम से राष्ट्रीय एकता विकसित किए जाने के स्रोत पर चर्चा। ❖ अपनी टोली को किसी निकट के एक ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक, औद्योगिक महत्व के स्थान पर ले जाना और उसके महत्व पर वार्ता करना।	
	● भारतवर्ष में स्काउटिंग/गाइडिंग के विकास के संबंध में ज्ञान।	
	● द्वितीय सोपान के रूप में 9 माह की सेवा।	
	विशेष : तृतीय सोपान का बैज और प्रमाण-पत्र जिला बैज कमेटी द्वारा नियुक्त स्वतंत्र परीक्षकों की संस्तुति पर मण्डल स्थिति सहायक प्रादेशिक संगठन कमिश्नर (स्काउट/गाइड) और सहायक प्रादेशिक आयुक्त (स्काउट/गाइड) द्वारा दिया जाएगा। प्रमाण-पत्र में कार्य का मूल्यांकन क ख ग श्रेणी में अंकित होगा।	

नैतिक शिक्षा

सामान्य उद्देश्य :

1. नैतिकता का तात्पर्य एवं उसके महत्व का बोध कराना।
2. परिवार, समाज, देश तथा समग्र मानवता के प्रति कर्तव्य का बोध कराना।
3. विभिन्न धर्मों के प्रति समझ तथा सहिष्णुता का विकास करना।
4. व्यक्तित्व परिष्कार एवं नैतिक शिक्षा के प्रमुख अंग- साधना, संयम, स्वाध्याय और सेवा का बोध कराना।
5. सामाजिक, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्वबन्धुत्व की भावना जागृत करना।
6. ईश्वरीय व्यवस्था में विश्वास जागृत करना।
7. समस्त प्राणि-जगत के प्रति दया तथा प्रेम की भावना जागृत करना।
8. न्यायप्रियता, सत्यता, ईमानदारी तथा सदाचार के गुणों का विकास करना।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
ईश्वर और देशनिष्ठ :- ● ईश्वर की आराधना ● देशभक्ति गीत	● ईश वन्दना से शिक्षण कार्य प्रारम्भ किया जाए। ● ब्रह्म मुहूर्त में जागरण तथा ईश्वर (धर्म) का ध्यान करने की आदत डालना। ● उपदेश, कहानी, भजन एवं वाचन के माध्यम से। ● देशभक्ति गीत, राष्ट्रगान, वीरगाथा एवं प्रहसन आदि का व्यावहारिक प्रदर्शन। ● विद्यालय परिसर में शहीदों की मूर्तियां, चित्र एवं उनके जीवन वृत्त तथा संस्मरणों का उल्लेख किया जाए।	● प्रश्नोत्तर विधि। ● वाद-विवाद प्रतियोगिता। ● चित्र संकलन एवं पोस्टर प्रतियोगिता।
विश्व बन्धुत्व एवं विश्व मित्रता:- ● विश्व शान्ति में योगदान। ● मानवीय गुणों का विकास करना।	● छात्र को 'ईश्वर एक है' का बोध कराना। शिक्षक उदाहरण प्रस्तुत करें। ● छात्र को प्राणिमात्र से प्रेम करने की प्रेरणा दी जाए तथा वर्ण, लिंग, रंग, छोटे, बड़े को एक समान सम्मान देने की प्रेरणाभाव उद्धरण द्वारा स्पष्ट किया जाना। ● प्रतिदिन एक भलाई का कार्य करने के लिए छात्रों को प्रेरित करना।	● मौखिक प्रश्न। ● व्यावहारिक, क्रियात्मक कार्य।
आत्मचिंतन एवं बोध :- ● शिष्टाचार की बातों का आत्मसात करना। ● शिष्टाचार का पालन।	● शिष्टाचार के नियमों का पालन करने के लिए छात्र को उत्प्रेरित करना। ● महापुरुषों के आदर्शो का उद्धरण देते हुए छात्रों का उनके अनुरूप बनने की प्रेरणा देना।	● शिक्षक/अभिभावक संघ की बैठक में चर्चा।
व्यक्तित्व परिष्कार एवं नैतिक शिक्षा:- ● स्वस्थ तन, स्वस्थ मन, उत्तम चरित्र।	● छात्रों में साधना, संयम, स्वाध्याय और सेवाभावना करने का अवसर प्रदान करना। ● सफाई, अभियान, खेलकूद, पी.टी., हस्तकला प्रदर्शनी एवं प्रतियोगिता आयोजन करना।	● छात्रों में अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन का प्रेक्षण। ● लघु प्रश्नोत्तरी।
लोकतंत्र/प्रजातंत्र के प्रति समादर:- ● बालसभा ● बाल संसद ● खेल परिषद	● शिक्षक द्वारा विद्यालय में छात्रों को अपने मताधिकार का प्रयोग करके बाल सभा आदि का गठन कराना। ● सप्ताहान्त में बालसभा की नियमित बैठक का होना।	● प्रश्नोत्तरी विधि
पर्यावरण :- ● पर्यावरण-परिचय ● प्रदूषण से उपाय	● कक्षा में छात्रों को उद्धरण देकर पर्यावरण की सामान्य जानकारी कराते हुए जलवायु, ध्वनि प्रदूषण की महत्ता पर प्रकाश डालना। ● अपने घर पर तथा विद्यालय परिसर में वृक्षारोपण करने के लिए प्रेरित करना।	● व्यावहारिक एवं प्रायोगिक कार्यों द्वारा।
श्रमनिष्ठा :- ● कार्य के प्रति लगाव ● कार्य का सतत प्रचलन	● अपने घर के कमरों तथा विद्यालय कक्ष को स्वच्छ रखने के लिए प्रतिदिन श्रमदान करवाना। ● श्रमदान से व्यक्तिगत लाभ एवं अध्ययनशील होना।	● प्रतियोगिता

कृतज्ञता एवं सहिष्णुता :- ● ईश्वर के प्रति ● राष्ट्र के प्रति ● समाज के प्रति	● छात्रों में कृतज्ञता के गुण का विकास करने के लिए पशु-पक्षियों में कृतज्ञता के गुण का उदाहरण प्रस्तुत करना। ● महापुरुषों की जीवनियां तथा अन्य स्रोतों से प्राप्त उपयुक्त प्रसंग एवं सामुदायिक कार्यों में सहभागिता का अवसर देना	● मौखिक प्रश्नोत्तर ● छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन का प्रेक्षण
भारतीयता का भाव :- ● सांस्कृतिक विरासत की अनुभूति	● छात्रों में भारतीय होने तथा युग-युग से चली आ रही सांस्कृतिक विरासत के प्रति गौरव की भावना जागृत करने के लिए नाटक, वाद-संवाद की प्रस्तुति कराना।	● कक्षा का सौन्दर्यीकरण एवं चित्रों का प्रस्तुतिकरण।
प्रमुख धर्मो का ज्ञान :- ● समान समादर की प्रवृत्ति ● समारोहों में प्रतिभागिता	● विद्यालय में 'सर्व धर्म प्रार्थना' का आयोजन करके सभी धर्मों के अनुयायी को प्रतिनिधित्व देना यथा हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आदि धर्मो की प्रार्थना करने छात्रों द्वारा कराना/सामूहिक खेल एवं क्रियाकलाप। ● धार्मिक स्थलों का भ्रमण एवं सन्तों का उपदेश व्यवहारों पर कराना।	● संस्कारों में परिवर्तन का आभास।
संरक्षण की भावना :- ● उपाय ● वातावरण का सृजन	● मानव, पशुपक्षी, प्राकृतिक साधनों की आपसी निर्भरता उजागर करने वाली कहानी, नाटक, वाद-संवाद की प्रस्तुति कराना। ● शिक्षक छात्रों का ध्यान वर्षा कम होने तथा देर से होने की ओर आकृष्ट कराएं, मिट्टी के कटाव, सिंचाई की समस्या आदि को सामने रखें। ग्रामीण विद्युतीकरण की जानकारी।	● मौखिक प्रश्न ● लेख, वाद-विवाद प्रतियोगिता, देशाटन, भ्रमण।
राष्ट्रीय सम्पत्ति :- ● संसाधन का विकास	● सार्वजनिक सेवा तथा सुविधाओं से संबंधित भवनों, वाहनों एवं अन्य सम्पदा को क्षति से बचाने के उपायों के बारे में जानकारी देने और वांछनीय प्रवृत्ति विकसित करने हेतु उपयुक्त सामग्री या प्रेरक प्रसंग। ● शिक्षक द्वारा वार्ता का प्रस्तुतीकरण, वार्तालाप तथा विचार-विमर्श में छात्रों की सहभागिता।	● छात्रों के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन का प्रेक्षण।
● विद्यालय ● आचार्य ● समाज	● विद्यालय की व्यवस्था और वातावरण का सृजन संस्कारमय हो। ● आचार्य का व्यक्तित्व प्रभावशाली, भ्रातृत्व-भाव युक्त, नेतृत्व की क्षमता, आत्मीयता का भाव, अनुशासनशील, संस्कार युक्त हो जो छात्रों के लिए प्रेरणा स्रोत एवं अनुकरणीय हो। ● समाज में छात्रों की सहभागिता सुनिश्चित कराने की संकल्पना को साकार करना । ● माता-पिता, भाई-बहिन आदि पारिवारिक सदस्यों के प्रतिसमादर का भाव उत्पन्न कराया जाना।	● सामुदायिक विकास कार्यों में सहभागिता। ● श्रम के प्रति निष्ठा, बडो का सत्कार-प्रवृत्ति, अनुशासन की भावना का प्रेक्षण।
● हानियां ● उपाय	● छात्रों को मादक द्रव्यों के सेवन से दूर रहने के लिए उत्प्रेरित करने के लिए शिक्षक द्वारा वार्ता, कहानी, वर्णन शैली में पाठ का प्रस्तुतीकरण।	● प्रश्नोत्तर ● वाद-विवाद प्रतियोगिता ● पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता
● वास्तविकता ज्ञान ● तर्कपूर्ण चिंतन, रूढ़िगत संस्कारों का उन्मूलन।	● शिक्षक द्वारा पाठ का प्रस्तुतीकरण, संबंधित योग्यताओं के विकास में सहायक उपयुक्त प्रसंग, पढ़ी या सुनी हुई बात की प्रमाणिकता जान लेने पर ही उसे स्वीकार की प्रवृत्ति उत्पन्न करना। ● छात्रों द्वारा पठन तथा विचार विमर्श में सहभागिता, अन्य विश्वासों तथा रूढ़िगत संस्कारों का उन्मूलन, तर्कपूर्ण चिंतन एवं क्षमता विकसित करना।	● प्रश्नोत्तर ● छात्रों के व्यवहार तथा कार्य शैली

विषय - नैतिक शिक्षा

अध्यापक के लिए आवश्यक समर्थन :

1. भजन एवं ईश्वरीय सत्ता का बोध कराने वाले साहित्य एवं कैसेट शिक्षकों को उपलब्ध कराए जाएं।
2. राष्ट्रीय गीतों तथा विशिष्ट प्रकार के चित्रों के संग्रह एवं संकलन की प्रवृत्ति शिक्षकों में विकसित की जाए।
3. पर्यटन से संबंधित विभिन्न प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध करायी जाएं।
4. अभिभावकों का सहयोग उपलब्ध कराया जाए।
5. श्रमदान से संबंधित विभिन्न प्रकार की सामग्रियाँ एवं उपकरण उपलब्ध कराए जाएं।
6. अनेक प्रकार के पर्यावरणीय प्रदूषणों की जानकारी करायी जाए।
7. समय-समय पर विशिष्ट संस्थाओं में भेजकर विषय से संबंधित प्रशिक्षण कराए जाएं।

पर्यावरणीय अध्ययन

सामान्य उद्देश्य :

1. पर्यावरण के प्रति चेतना विकसित करना।
2. प्राकृतिक सम्पदा एवं वन्य-जीवन को सुरक्षित रखने की चेतना जागृत करना।
3. पर्यावरण संरक्षण हेतु आवश्यक अभिवृत्तियों एवं कोशलों का विकास करना।
4. पर्यावरणीय-प्रदूषण तथा उससे उत्पन्न समस्याओं से अवगत कराना एवं उसके निवारण के उपायों की जानकारी देना।
5. पर्यावरण में उपस्थित विभिन्न घटकों तथा जीवजगत की पारस्परिक निर्भरता की जानकारी कराना।
6. पर्यावरण एवं जनसंख्या वृद्धि के सम्बन्ध को स्पष्ट करना।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
● पर्यावरण-तात्पर्य ❖ पर्यावरण के विभिन्न घटक- वायु, जल, भूमि, पशु, पक्षी, कीट, वृक्ष, वनस्पतियां।	● पास-पड़ोस के खेतों, टीलों, बाग-बगीचों, तालाबों, विभिन्न प्रकार के पशु-पक्षी, कीट-पतंगों एवं वनस्पतियों का अवलोकन कराएं। इनके महत्व, उपयोग आदि की जानकारी कराएं।	● वार्तालाप एवं बोध प्रश्नों द्वारा।
● मानव जीव, प्राकृतिक पर्यावरण तथा अन्य जीव-जन्तुओं की अन्तनिर्भरता। ● मानव निर्मित पर्यावरण-भवन, खेत, नहरें, सड़कें, औद्योगिक प्रतिष्ठान तथा इनका जन-जीवन प्रभाव।	● परिवेश में उपलब्ध मानव-निर्मित वस्तुओं का निरीक्षण कराएं, उनके विषय में परिचर्चा कराएं एवं उनके जन-जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों की जानकारी कराएं।	● वार्तालाप, निबंध-लेखन एवं प्रश्नोत्तर।
● शुद्ध वायु- आवश्यकता एवं महत्व, वायु प्रदूषण, वायु प्रदूषण को रोकने के उपाय, वायु प्रदूषण रोकने में वृक्षों का महत्व।	● शुद्ध वायु की आवश्यकता का बोध कराएं ● वायु-प्रदूषण के कारणों की जानकारी दें एवं वायु-प्रदूषण को रोकने में वृक्षों के महत्व पर परिचर्चा कराएं तथा वायु-प्रदूषण को दूर करने के उपायों की जानकारी दें।	● परिचर्चा, बोध प्रश्न।
● पर्यावरण संतुलन में पशु-पक्षियों का योगदान।	● पर्यावरण संतुलन में पशु-पक्षियों के योगदान पर परिचर्चा एवं भ्रमण द्वारा अवलोकन कराकर विषय को स्पष्ट करें।	● परिचर्चा, बोध प्रश्न।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
● स्थानीय पर्यावरण तथा उसका अविवेकपूर्ण दोहन- ❖कृषि, आवास एवं अन्य कार्यों के लिए वनों का विनाश। ❖प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग एवं उसके दुष्परिणाम।	● स्थानीय परिवेश में उपलब्ध संसाधनों की जानकारी दी जाए एवं निरीक्षण कराया जाए और उनके अविवेकपूर्ण दोहन और दुरूपयोग पर परिचर्चा करायी जाए। ● प्राकृतिक संसाधनों के दुरुपयोग से होने वाली हानियों का बोध कराया जाए।	● परिचर्चा, वार्तालाप एवं बोध प्रश्न।
● विभिन्न प्रकार के जलस्रोत, जल के विभिन्न उपयोग- पेड़-पौधों, जीव-जन्तुओं तथा मानव के लिए- ❖शुद्ध जल का महत्व। ❖जलस्रोतों का उचित प्रयोग। ❖जल प्रदूषण एवं जल को साफ रखने के उपाय तथा पेयजल का शुद्धीकरण।	● विभिन्न जलस्रोतों का अवलोकन कराएं तथा परिचर्चा द्वारा जल का प्राणि/वनस्पति जगत के लिए महत्व बताएँ। ● जल के विभिन्न उपयोगों पर वार्तालाप करवाकर जानकारी दें। ● जल-प्रदूषण वाले क्षेत्रों का निरीक्षण एवं जल साफ करने की विभिन्न विधियों तथा पेयजल के शुद्धकरण पर परिचर्चा कराएं।	● परिचर्चा, वार्तालाप एवं बोध प्रश्न। ● पेयजल शुद्धीकरण हेतु चार घड़ों वाले प्रयोग कराएं और प्रश्नोत्तर करें।
● परिस्थितिकी संतुलन में वनस्पतियों का योगदान- ❖ चरागाह एवं अन्य वनस्पतियों का संरक्षण। ❖वनस्पति संरक्षण के उपाय। ❖वनस्पतियों का मानव से संबंध।	● स्थानीय वनस्पतियों तथा धरातलीय स्थिति का निरीक्षण कराएं एवं आधारित विभेदों को स्पष्ट करें एवं वृक्षारोपण कराएं।	● बोध प्रश्न, वार्तालाप, निबंध -लेखन।

प्रकरण/ उप प्रकरण	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया-विधि, युक्तियां, अपेक्षित उपकरण	मूल्यांकन
● मृदा प्रदूषण की समस्या- ❖बंजर भूमि का उपयोग। ❖वृक्षों का महत्व। ❖वृक्षारोपण। ❖वृक्षों का संरक्षण। ❖प्रदूषण की समस्या। ❖जनसंख्या-नियंत्रण।	● स्थानीय वनों एवं भूमि का निरीक्षण कराएं। ● वनों की कटाई से होने वाली हानियों पर परिचर्चा कराएं एवं वृक्षारोपण के महत्व की जानकारी दें। ● प्रदूषण की समस्या एवं जनसंख्या वृद्धि पर परिचर्चा के माध्यम से जनसंख्या वृद्धि से होने वाली हानियों का बोध कराएं।	● बोध प्रश्न/वार्तालाप्प/ प/ प/ 'प/ निबंध लेखन।
● वनों का पर्यावरणीय संतुलन एवं राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के योगदान- ❖वनों की वर्तमान दशा। ❖वनों के विदोहन से होने वाली हानियाँ। ❖वन-संवर्द्धन एवं सामाजिक वानिकी। ❖कृषि आधारित उद्योग-धंधे, साग - सब्जियां, फल-उद्योग एवं फल संरक्षण।	● वनों की वर्तमान दशा, वृक्षों के कटान पर परिचर्चा कराएँ तथा वनों के विदोहन से होने वाली हानियों की जानकारी दें। ● वनों के महत्व पर लेख लिखाएँ। ● सामाजिक वानिकी एवं फल संरक्षण आदि के महत्व पर परिचर्चा कराएँ।	● बोध प्रश्न/निबंध--ले-ले-ले-लेखन वार्तालाप।
● पर्यावरणीय संतुलन में पशु-पक्षियों, कीट-पतंगों का योगदान। ● पालतु पशु, दुधारू पशु से होने वाले लाभ।	● स्थानीय परिवेश में पाए जाने वाले पशु-पक्षियों, कीट-पतंगों का अवलोकन कराएँ तथा उनके पर्यावरणीय संतुलन में योगदान पर परिचर्चा कराएं। ● दुधारू एवं अन्य पालतू पशुओं के बारे में जानकारी दें तथा उनसे होने वाले लाभों पर वार्ता/परिचर्चा कराएँ।	● बोध प्रश्न, वार्तालाप,ाप,ाप,ाप, निबं -लेखन।

DOC, No D-11052
Date 23-04-2001

संशोधन विवरण

पृष्ठ सं०	स्तम्भ सं०	लाइन सं०	अशुद्ध	शुद्ध
1	2	3	4	5
1	–	16	अभारी	आभारी
2	2	15	तेलुगु	तेलगू
2	–	–	कलाश	कलांशों
2	5	7	कुकुट	कुक्कुट
4	–	9	महववपूर्ण	महत्वपूर्ण
4	–	13,12,18,24	सर्जनात्मक	सृजनात्मक
4	–	34	बपने	अपने
5	–	7	बाधार	आधार
7	3	15	चरित	चरित्र
8	47	3	निबन्धप	निबन्धन
8	4	44	अनुप्राश	अनुप्रास
9	–	17	पिभिन्न	विभिन्न
9	–	15	पाठ्पुस्तक	पाठ्यपुस्तक
9	–	24	टेलीकोन	टेलीफोन
10	–	30	गद्य कवियों की	पद्य कवियों की
11	–	1	हैं/हैं	है/है
11	–	12	हें	है
11	–	16	समरोह	समारोह
13	3	13	कठन	कठिन
13	3	22	सम्बनधी	सम्बन्धी
17	–	17	अग्रजी	अंग्रेजी
17	5	11	श्यामपट्ट	श्यामपट
18	3	27	''	''
18	3	32	विध	विधि
18	4	27	छत्राओं	छात्राओं
19	1	24	रूचकों	रूपकों को
21	3	18	वास्तिविक	वास्तविक
21	2	1	एवं लिखित .... करना	स्तम्भ एक के अन्त में पढ़ा जाये
21	2	4	Its	It's
25	2	16	the,block	,the block
25	2	37	manjeet	Manjeet
26	2	7	may	many
26	2	20,21	have-Have	has-Has
27	2	45	rable	Table
28	2	1	Wisest	the wisest
29	2	24	Sine	Since
30	2	5	the	The
30	2	19	pharases	phrases
30	2	46	did't	didn't
31	2	19	far	for
31	2	47	singing	singing,
34	5	11	श्मपट	श्यामपट
35	4	9	श्यामपट	श्यामपट पर
37	–	3	पुर्नबोधात्मक	पुनर्बोधात्मक
37	–	7	परिविश	परिवेश
39	3	7	संकृत	संस्कृत
41	–	2	पुर्नबोधात्मक	पुनर्बोधात्मक
41	–	14	अनुददायी	आनन्ददायी
43	2	29	आवकाश	अवकाश
43	4	38	अुक	बुक
43	5	5	प्राधानाचार्य	प्रधानाचार्य
46	–	3	पुर्नबोधात्मक	पुनर्बोधात्मक
46	–	9	कहानसिया	कहानियां
54	2	18	समूह ज्ञान	समूहगान
54	1	26	लिर्पा	लिपि
54	2	30	आहार	आहार तथा
54	4	11	तुजनात्मक	तुलनात्मक
55	1	4	प्रस्तु	प्रस्तुत
56	2	34	कहाननियां	कहानियां
58	1	23	योगयता	योग्यता
58	1	28	प्रवलि	प्रवृत्ति
59	1	34	व्याकराणिकक	व्याकरणिक
61	–	2	मं	में
61	–	12	धार्म	धर्म
62	2	6	सूनना	सुनना
62	2	20	अंशों को	अंशों का
62	3	20	सीनो	स्थानों
71	1	16	मधुकथा	लघुकथा
71	1	19वीं पंक्ति हटाना है	–	19वीं पंक्ति नहीं पढ़ना है
75	–	11	कृति	प्रति
76	3	3	आधाा	आधारित
79	1	32	प्रकृति को	प्रकृति का
79	2	10	परिचिय	परिचय
82	2	20	अंशों को	अंशों का
89	3	13	समाज	समास
93	2	20	परविार	परिवार
94	1	24	तार्कसंगत	तर्कसंगत
97	2	20	को लेखना	का लेखन
97	4	5	दिखााकर	दिखाकर
97	2	21	व्याकण	व्याकरण
113	2	11	बनाकार	बनाकर
113	3	29	अनुच्छेव	अनुच्छेद
114	3	5	तेयरी	तैयारी
119	1	19	वविषयवस्तु	विषयवस्तु
121	1	31	अथ्र	अर्थ
122	1	12	अनुध्येय	अनुच्छेद
143	–	10	विद्युत	विद्युत

पृष्ठ सं०	स्तम्भ सं०	लाइन सं०	अशुद्ध	शुद्ध
1	2	3	4	5
143	-	15	जेये	जैसे
145	4	5,6,	-	नहीं पढ़ना है।
146	-	सबसे ऊपर	पृथककरण	पृथक्करण
147	3	13	प्रदर्शल	प्रदर्शन
147	4	8	परिचर्या	परिचर्चा
151	1	2	निश्यित	निश्चित
153	2	4	सेंसियान	सेल्सियस
155	2	5	आकशी	आकाशीय
156	-	7	महत्वपूर्ण	महत्वपूर्ण
164	3	7	पिस्तौन	पिस्तौल
165	2	1	निशयत	निश्चित
176	2	6	तड़त	तड़ित
184	2	17	के	को
180	2	8	उत्पति	उत्पत्ति
180	2	18	प्रामाणिक	प्रमाणिक
180	2	22	निद्रव	निर्द्रव
181	2	4	अधिकतमक	अधिकतम
182	2	11	प्रकाश	प्रकाशित केन्द्र
183	3	12	विघृत	विद्युत
183	3	20	बच्चे	बचे
183	3	21	आलपीन	आलपिन
183	3	21	सूई	सुई
185	2	9	पावन	पावर
188	3	17	श्वसनागों	श्वसनांगों
189	2	18	ह्मास	ह्रास
189	2	19	आदान	आधान
189	3	9	प्रतयेक	प्रत्येक
189	4	8	का माध्याम	के माध्यम
190	2	4	जन्मजाता	जन्मजात
190	2	17	स्त्रव	स्राव
190	2	24	सतता	सतत्ता
190	2	40	हें	हैं
190	3	20	प्रजजनन	प्रजनन
191	2	6	उपजग्ध	उपलब्ध
191	3	1	प्रकृतिक	प्राकृतिक
191	3	13	पौध	पौधे
192	2	1	प्राकृति	प्राकृतिक
193	2	7	प्रापत	प्राप्त
193	2	21	सुधार	सुधार
193	2	27	कीटानाशकों	कीटनाशकों
193	2	32	कुकुट	कुक्कुट
193	3	14,15	खेल	खेत,खेत,खेत
193	3	18	कुकुटशाला	कुक्कुटशाला
194	3	5	पारिचर्चा एवं	परिचर्चा एवं
194	"	"	परिचर्चा	पृच्छायें

पृष्ठ सं०	स्तम्भ सं०	लाइन सं०	अशुद्ध	शुद्ध
1	2	3	4	5
197	3	13	स्त्रोतों	स्रोतों
200	2	15	समान्ताद	सामन्तवाद
211	3	14	अक्षांस	अक्षांश
211	सबसे ओर दायीं ओर		-क्षा-6	कक्षा-6
211	2	28	निच्च	निम्न
212	3	17	देखों	देशों
213	5	2	आक्षांश	अक्षांश
215	4	1	जोड़ों	जोड़ो
219	1	13	प्रकार	परकार
221	1	17	श्रृंखला	श्रृखला
221	2	3	डिबे	डिब्बे
221	2	23	आकृतिकया	आकृतियां
223	2	आखिरी लाईन	Welth	Wealth
224	2	11	आकृतिकयां	आकृतियों
224	2	17	फूटबाल	फुटबाल
225	4	3	सामाग्री	सामग्री
225	2	18	धुओं	धुआं
227	-	14	विकति	विकसित
228	2	4	विलाव	विलावल
228	1	24	स्वाथ्य	स्वास्थ्य
230	2	11	स्मरूप	स्वरूप
231	1	19	देहेज	दहेज
232	4	13	प्रदाना	प्रदान
236	-	6	सौंदर्याप्रियता	सौन्दर्यप्रियता
250	1,2	16,8	रक्वैश	स्क्वैश
252	1	18	जमुनापानी	जमुनापारी
256	1,2,3	13,7,8	यौन	मौन
258	2	4	वस्तुओं	वस्तुओं
260	1	17	तय	तथा
265	1	12	नलकुप	नलकूप
269	1	8	खानी	रूखानी
271	1	18	पूर्वक	पूर्व
273	1	35	पुननिर्माण	पुनर्निमाण
274	1	24	उच्चत	उच्च
281	3	1	बोधा	बोध
294	2	9	पाच	पाच्य
296	2	5	किटाणुओं	कीटाणुओं
300	-	4	शिक्षण	शिक्षक
308	-	-	हाने	होने
308	2	20	मेदान	मैदान
308	2	36	टीक	टीम
318	-	-	स्थिति	स्थित
323	-	4	कोशलों	कौशलों

संशोधन विवरण

पृष्ठ सं0	स्तम्भ सं0	लाइन सं0	अशुद्ध	शुद्ध
1	2	3	4	5
6	3	9	सांस्कृति	सांस्कृतिक
7	4	3	घब्ना	घटना
7	3	34	कानी	कहानी
10	-	12	धार्मनिरपेक्षता	धर्मनिरपेक्षता
10	-	30	महत्वपूर्णविद्या	महत्वपूर्ण विधा
11	-	13	हे	है
11	-	16	पत्रानुसार	पात्रानुसार
11	-	31	जीवन	जीवनी
14	3	10	प्रसगचर्चा	प्रसंगचर्चा
14	4	8	घटनाप्रधान	घटना-प्रधान
14	4	8	देकर	देखकर
15	3	23	मार्गे	मार्ग
15	3	24	धोर्य	धैर्य
16	3	10	चित्रात्क	चित्रात्मक
16	3	30	व्याकरणकि	व्याकरणिक
16	4	03	गुणपों	गुणों
17	-	10	पठ्न	पठन
17	-	13	अधिगन	अधिगम
17	-	13	पाट्यक्रम	पाठ्यक्रम
18	4	24	मूल्यांन	मूल्यांकन
21	4	01	स्टेटचर्च	स्ट्रक्चर्ज
22	3	4	बिन्दु-6 में	बिन्दु-5 में
23	3	1-6	बिन्दु-12 में	बिन्दु-11 में
24	3	15	संक्रियात्मक	सक्रियात्मक
28	2	14	प्रस्तवित	प्रस्तावित
29	4	4	स्ट्रकचर्ज्जा	स्ट्रक्चर्ज
30	2		did't	did'nt
30	2	5o	do	do.
31	2	4	Presm	Prem
31	2	8	him	Delete
31	2	17	seake	snake
34	2	4	एमझना	समझना
35	5	31	संस्त्रत	संस्कृत
36	5	30	पटी	पट्टी
39	4	13,14	ेखा के नीचे	रेखा के ऊपर
40	3	3, 5	आकारान्त	उकारान्त
40	3	7	पुल्लिुग	पुल्लिंग
41	4	6	प्रत्पांत	प्रत्ययांत
44	4	18	रचनों	रचनायें
46	5	4	वाव्य	वाक्य
46	5	6	ब्व्य ा	अव्यय
47	-	12	सभपदा	सम्पदा
48	-	3	वाजेह	वाज़ेह
48	-	4	काबलियत	क़ाबलियत
48	-	6	कौमी	क़ौमी
48	-	7	नजरियों	नज़रियों
48	2	4	लवो-लहजे	लबो-लहजे
48	2	11	हिफाजत	हिफ़ाजत
48	3	8	जुबानी	ज़बानी
49	1	3	मुसमल्लिक	मुत्ताल्लिक
49	3	3	इस्म/आम	इस्म-आम
50	1	2	वाजेह	वाज़ेह
50	1	4	नजरियो	नज़रियो
50	1	6	कौमी	क़ौमी
50	2	1	जुबानी	ज़बानी
50	2	9	तहजीब	तहज़ीब
50	2	10,11	हिफ़ाजत	हिफ़ाजत
50	2	25	तारीख	तारीख़
50	8	28	खामियों	ख़ामियों
51	1	3	काबलियत	क़ाबलियत
52	1	3	जुबान	ज़बान
52	1	14	कौमी	क़ौमी
52	2	11	गरज	ग़रज़
52	2	13	नज्मों	नज़्मो
52	4	2	जरिए	ज़रिए
52	4	18	जुबानी	ज़बानी
65	-	20	दुष्टिकोण	दृष्टिकोण
66	4	8	पूत्रि	पूर्ति
68	4	2	कोइ	कोई
69	-	1	सीान	सीन
71	3	3	ईतादि	इत्यादि
71	2	30	को	का
73	2	23	लधुलेख	लघुलेख
78	1	25	सुधरता	सुघड़ता
82	3	4	कोइ	कोई
82	3	6	कवता	कविता
88	3	22,23	दिया जा सकता	दी जा सकती
110	2	16	काक	का
110	3	4	सथान	स्थान
110	3	14	अभ्यासं	अभ्यास
110	4	7	वसतु	वस्तु
110	4	10	वाकय	वाक्य
111	1	6	योगयता	योग्यता
111	3	10	सर्बोधात	सर्बोधित
111	3	19	द्वाारा	द्वारा
111	3	4	अजजाए	अजज़ाए
111	3	22	शिखक	शिक्षक
111	2	32	उच्चरण	उच्चारण
112	1	14	आसदि	आदि
112	2	11	वर्णल	वर्णन
113	3	10	वर्णल	वर्णन
113	1	4	सम्पाग	सम्पर्क
113	2	4	उच्चरण	उच्चारण
113	2	16	इकाइयों	इकाइयों से
114	1	3	समझला	समझना
114	1	15	क्षमतर	क्षमता
114	1	28	गम	राग
114	1	29	योगयता	योग्यता
114	2	14	देख्कर	देखकर
114	2	16	सीखे	सीखी
114	2	23	निबन्धी	निबन्ध
114	3	05	तयरी	तैयारी
114	3	11	निबन्धा	निबन्ध
114	4	9	खेलों	खेलों
115	1	9	समझला	समझना
115	2	9	मुजक्कर	मुज़क्कर
115	2	10	तारीफ	तारीफ़
115	2	10	गदान	गर्दन
115	2	13,14	हर्फ	हर्फ़
115	2	13	मजरूर	मज़रूर

1	2	3	4	5
115	2	14	हर्फ इस्तफहाम	हर्फ़ इस्तेफ़हाम
115	2	15	मुब्तेदा	मुब्तदा
116	-	-	फारसी	फ़ारसी
118	2	10	जिद अलफज	ज़िदअल्फ़ाज़
118	2	13	मुजक्कर	मुज़क्कर
118	2	14	मुजाफ्	मंजाफ़
118	2	17	अजाज	अजज़ाए
118	2	17	सिफल जमीर	सिफ़तज़मीर
118	2	18	सिफत	सिफ़त
118	3	5	अजजाए	अजज़ाए
120	2	16	हरूफइजाफाजार	हरूफ़ेइज़ाफ़ाज़ार
120	2	18	मुजक्कर	मुज़क्कर
120	2	19	मनकी	मनफ़ी
120	2	20	जिद	ज़िद
120	2	22,23	माजी	माज़ी
122	2	32	हर्फे	हर्फ़े
126	3	12	गणक	गुणक
127	3	9	स्व्यं	स्वयं
128	3	7	समीरकण	समीकरण
131	2	4	आवश्यता	आवश्यकता
131	2	36	घातकों	घातांकों
131	3	8	Q#0	Q — 0
132	2	2	पुनावृत्ति	पुनरावृत्ति
132	2	27	$a^2+ay^2+bx^2+by^2$	$ax^2+ay^2+bx^2+by^2$
132	2	31	गुणखण्ड	गुणनखण्ड
133	2	43	खण्उ	खण्ड
133	3	9	आऊट्स	आउट्स
133	4	1	निर्माण	△निर्माण
134	2	12	खींचला	खींचना
134	1	6	विभिल्ल	विभिन्न
136	2	28	$(a-b)^3=a^3-b^3$ $-3ab+(a-b)$	$(a-b)^3=a^3-b^3$ $-3ab(a-b)$
136	1	17	में स्थापित	स्थापित
137	2	18	समीकरणें	समीकरणों
137	3	15	सहायतस	सहायता
139	2	1	निम्नालिखित	निम्नलिखित
140	2	7	स्वच्छजा	स्वच्छता
141	-	2	विकाय	विकास
141	-	12	ईमादारी	ईमानदारी
142	-	9	प्रकार उर्जा	प्रकार, ऊर्जा
143	-	12	जीवत	जीवन
144	2	1	जीवत	जीवन
144	3	8	ऊर्जा ।।	ऊर्जा
145	2	15	चल	जल
145	3	23	पोषक	पोषण
146	2	9	उलको	उनको
146	2	12	क्रिस्टनल	क्रिस्टलन
146	2	13	सेन्ट्रीययूगडान	सेन्ट्रीक्यूगेशन
146	2	22	अप-अपवर्त्य	उप-अपवर्त्य
146	2	26	क्षेत्रफल की सतह	सतह की क्षेत्रफल
146	2	30	(मीटर)	घनमीटर
147	2	12	अनपानित	अनुमानित
148	2	3	अव्यवस्था	अवस्था
149	2	10	कब	कम
151	3	8	आर्तरिक	आंतरिक
151	2	25	नाड़िया	नाड़ियाँ

1	2	3	4	5
152	2	6	अवयव	अवयव आक्सीजन,
154	2	36	पौधो	पौधे
154	2	40	बनाते	बनते
156	3	5	पिज्ञान	विज्ञान
156	3	8	शस्त्रगारो	शस्त्रागारों
156	3	10	संस्थाना	संस्थानों
156	3	17	विवेचला	विवेचना
158	4	1	प्रश्नातर	प्रश्नोत्तर
158	2	19	अम्ल में की उपस्थिति(धामुओं)	अम्ल में हाइड्रोजन की उपस्थिति (धातुओं
159	3	17	स्प्रिअ	स्प्रिट
159	3	20	क्लैमप	क्लैम्प
159	2	21	होतो	होता
159	2	35	परे	पारे
160	2	5	विधिया	विधियाँ
160	2	10,12	संवाहन	संवहन
161	2	2	निर्तिम	निर्मित
161	2	7	उनछाया	उपछाया
161	2	19	बले	बने
162	2	7,8	आधार	आघात
162	2	17,27	ध्वलि	ध्वनि
163	2	10	आवेशे	आवेशों
163	3	2	प्रदर्शल	प्रदर्शन
163	4	1	प्रदर्शल	प्रदर्शन
163	2	11	कुचाला	कुचालक
164	2	3	गतिच	गतिज
164	3	15	उपकरणें	उपकरणों
165	2	16	पादक	पादप
164	3	11	निकने	निकले
165	3	11	माइस्क्रोप	माइक्रोस्कोप
165	2	21	पौध	पौधे
165	3	21	परिर्चा	परिचर्चा
165	3	22	संरना	संरचना
166	2	10	O_2N_2	O_2,N_2
166	2	31	वाष्पन	वाष्प
166	2	2	अवयी तत्वा	अवयवी तत्व
166	2	3	आयतानुसार 2.1	आयतनानुसार 2:1
166	2	39	निष्काषित	निष्कासित
167	2	6	O_2N_2	O_2,N_2
167	2	2	जलवष्प	जलवाष्प
167	2	25	सक	से
168	3	1	निरीक्ष्णधा न अुभव	निरीक्षण, अनुभव
168	2	15	पोधों	पौधों
169	3	25	लभदायक	लाभदायक
169	3	14	चाटूस	चार्ट्स
169	2	18	सये	से
169	2	33	पेंट्स	पेट्स (पालतू जन्तु)
171	2	30	स्वार्सय	स्वास्थ्य
172	2	17	मिट्टटी	मिट्टी
172	3	8	काकर्यशाला	कार्यशाला
173	2	3,5	कार्बन यौगिक	कार्बनिक यौगिक
173	2	17	सटिलीन	एसिटिलीन
173	3	9	गोलिया	गोलियाँ
173	3	13	भृठो	भट्ठों
174	2	1	पेट से लियम	पेट्रोलियम
174	2	10	आवन	आसवन

NIEPA DC
D11052